स्वाधीनता की ओर



विक्टर क्रावचैन्को

स्वाधीनता की ओर

लेखक :

विक्टर क्रावचैन्को

(I CHOSE FREEDOM)

अनुवादक :

सीताराम गोयल

प्राची प्रकाशन

१२, चौरंघी स्क्वायर,

कलकत्ता

स्वाधीनता की ओर

लेखक :

विक्टर क्रावचैन्को

(I CHOSE FREEDOM)

अनुवादक :

सीताराम गोयल

प्रा ची प्र का श न

१२, चौरंघी स्कायर,

कलकत्ता

प्रकाशक—
प्राची प्रकाशन
१२, चौरंघी स्क्वायर,
कलकत्ता

मार्च १९५४

मूल्य दो रुपया

मुद्रक—
उमादत्त शर्मा
रत्नाकर प्रेस
११-ए, सैयदसाली लेन,
कलकत्ता

भूमिका

प्रस्तुत पुस्तक पहिले-पहल १९४६ के फरवरी में संयुक्तराष्ट्र अमेरिकामें छपी थी। पुस्तकने जो धूम मचाई उसको देख कर स्वयं क्रावचैन्को महाशय चकित हो गए। तुरन्त ही इंगलैण्डसे एक नया संस्करण निकला और फ्रांस, स्विट्जरलैण्ड, नार्वे, स्वीडन, डेनमार्क, इटली, हालैण्ड, स्पेन, पुर्तगाल, चीन, अर्जेण्टाइन और ब्राजीलमें भी इसके अनुवाद छप गए। कनाडासे इसका एक अनुवाद युक्रेनियन भाषामें छपा। जिस समय हमने इस पुस्तकको हिन्दी, बंगला और उर्दूमें छापनेकी तैयारी की, उस समय जर्मनी, आष्ट्रिया, जापान, कोरिया तथा मिस्रसे इसके अनुवाद प्रकाशित होने वाले थे। स्वीडनसे एस्तोनियन भाषामें एक दूसरा संस्करण छपने वाला था। हमारे तीनों अनुवाद जनताके सामने प्रस्तुत हैं। अस्तु।

मेरे अपने जीवनसे इस पुस्तकका एक बहुत बड़ा सम्बन्ध है। १९४३ में ब "भारतीय" कम्युनिस्ट पार्टीने रणदिवेकी नई नीतिका अवलम्बन करके हमारे नये प्रजातन्त्र पर हल्ला बोला, तो मैं भी कम्युनिस्ट पार्टीमें नाम लिखवानेके लिए तैयार हो गया था। कम्युनिस्ट पार्टीका समर्थक तो मैं कई साल पहिले ही बन चुका था, किन्तु पी. सी. जोशीकी नीति समझमें न आनेके कारण पार्टीका सदस्य बननेकी प्रेरणा मुझे नहीं मिली थी। मेरे एक और मित्र भी पार्टीके समर्थक थे और वे पी. सी. जोशीकी टैक्टिक्स् मुझे समझाते रहते थे। जब पार्टीने पी. सी. जोशीको "पथभ्रष्ट" बतला कर रणदिवेको सिंहासनारूढ़ किया तो मेरे मित्रको अच्छा नहीं लगा। वे नहीं चाहते थे कि पार्टी हिंसाका मार्ग अपनाए। मैं उनसे कहता रहता था कि हिंसाके सिवाय कम्युनिष्ट पार्टीके लिए दूसरा कोई रास्ता ही नहीं होता और जब तक पार्टी हिंसा नहीं अपनाती तब तक मिथ्याचार करती रहती है। उस समय तक मैंने केवल मार्क्सको पढ़ा था। लेनिन और स्टालिनको अपने

जैसे ही चेले मान कर पढ़नेकी प्रवृत्ति मुझे उस समय तक नहीं हुई थी। इस लिए टैक्टिक्सके सिद्धान्तसे मेरा परिचय नहीं था। मार्क्स बेचारेने तो कभी टैक्टिक्सकी बात की नहीं।

हाँ, रूस पर मुझे पूरा विश्वास था। मैं रूसके उन समाधिस्थ भक्तोंमेंसे था जिनके अनुसार कोई ऐसा पदार्थ नहीं जो उस देवभूमिमें पैदा नहीं होता, कोई ऐसा सुख नहीं जो वहाँ सबको एक समान उपलब्ध नहीं; और राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक अथवा सांस्कृतिक कोई ऐसी व्यवस्था अथवा ऐसा तत्त्व नहीं जिसको रूसने सिद्ध नहीं किया। मैं सबके सामने गला फाड़-फाड़ कर कहा करता कि बीसवीं सदीमें जो व्यक्ति कम्युनिस्ट नहीं है, वह या तो घोर मूर्ख है अथवा बेईमान और बदमाश। अर्थात् या तो उसको मालूम नहीं कि मानवताका सर्वाङ्गीण कल्याण किस पथ पर चल कर हो सकता है या वह जानबूझ कर मानवताके साथ द्रोह करता है।

पार्टीमें रणदिवेकी नीतिकी विजय होनेके दो-तीन महीने बाद मेरे उपरोक्त मित्रने एक दिन क्रावचैन्कोकी यह पुस्तक पढ़नेके लिए मुझसे अनुरोध किया। वे स्वयं इसे पढ़कर बहुत कुछ डगमगा गए थे, किन्तु मैंने घृणाके साथ यह पुस्तक पढ़नेसे इन्कार कर दिया। मैंने कहा : "आखिरी सांसें लेने वाला पूँजीवाद न जाने क्या-क्या खुराफात छापता रहता है और मैं वह सब पढ़कर अपना समय बरबाद करना नहीं चाहता।" मैं पार्टीमें भर्ती होनेकी तैयारी करने लगा। किन्तु सहसा बंगालकी सरकारने पार्टीको गैर-कानूनी ठहरा दिया और मैं उस "सौभाग्य" से वञ्चित रह गया। इस प्रकार १९४९ का ग्रीष्म-काल आ पहुँचा। 'स्टेट्समैन' में एक दिन मैंने यह समाचार पढ़ा कि क्रावचैन्कोकी पुस्तकको लेकर पेरिसमें कोई मुकदमा चल रहा है। न जाने क्यों, तुरन्त ही मैंने 'मान्चैस्टर गार्डियन' में इस मुकदमेकी कार्रवाई पढ़नी शुरू कर दी।

मुकदमा क्रावचैन्कोने चलाया था। फ्रैंच भाषामें क्रावचैन्कोकी पुस्तकका

अनुवाद छपते ही फ्रांसकी कम्युनिस्ट पार्टी तिलमिला उठी और पार्टीके पत्रोंमें लेखक तथा पुस्तक पर अनेक आक्षेप होने लगे। अन्तमें कम्युनिस्ट पत्रिका 'लै लैतरे फ्रांशे'के १३ नवम्बर १९४७ वाले अंकमें सिम टामसके नामसे एक लम्बा लेख प्रकाशित हुआ। लेखकने कहा कि वह अमेरिकाका नागरिक है, कई कारणोंसे अपना असली नाम नहीं बता सकता, किन्तु क्रावचैन्को-की पुस्तकका सारा भेद वह जानता है। फिर लेखकने दावा किया कि क्रावचैन्को वास्तवमें एक शराबी, झूठा, मक्कार और अशिक्षित रूसी है जिसको अमेरिकाकी खुफिया पुलिसने डालर देकर बहका लिया है; कि प्रस्तुत पुस्तक वास्तवमें अमेरिकाकी पुलिसने लिखवा कर तैयार की है और क्रावचैन्कोने डालर लेकर उसपर केवल अपने हस्ताक्षर किए हैं; कि क्रावचैन्को वास्तवमें पुस्तकका लेखक होता तो इस तरह छुपता न फिरता बल्कि जनताके सामने आकर डंकेकी चोट पर सारी बातें कहता; कि क्रावचैन्को एक देश-द्रोही है जिसने महायुद्धके दिनोंमें रूसका विरोध करके हिटलरका समर्थन किया और इस प्रकार फ्रांसके मुक्ति-संग्रामको भी संकटमें डाल दिया, इत्यादि इत्यादि। क्रावचैन्कोने तुरन्त ही 'लै लैतरे फ्रांशे'के सम्पादक तथा प्रकाशक पर मान-हानिका दावा कर दिया और कहा कि वह उस लेखके लेखक सिम टामसके सामने पेरिसकी अदालतमें खड़ा होकर सारी बातोंका सप्रमाण जवाब देनाचाहता है।

२४ जनवरी १९४९ के दिन जब मामला सुननेके लिए पेरिसमें अदालत बैठी तो क्रावचैन्को सशरीर उपस्थित हो गया, किन्तु सिम टामस साहबका कोई पता नहीं लगा। प्रतिवादी पक्ष यही कहता रहा कि अमेरिकाकी सरकारसे डरकर टामस महाशय गवाही देने नहीं आ सकते। किन्तु मज़ेकी बात यह थी कि प्रतिवादी पक्षकी ओरसे गवाही देने वाले काहन इत्यादि कई अमेरिकन कम्युनिस्टोंको अमेरिकन सरकारका वैसा कोई भय नहीं लगा! क्रावचैन्कोने देखा कि प्रतिवादका सारा भार वास्तवमें पेरिस-स्थित सोवियत् दूतावासने अपने ऊपर लिया हुआ है और गवाही देनेके लिए उसके अनेकों

पुराने परिचित एवं सहकारी लोग रूससे आकर पेरिसमें टिके हैं। इसके सिवाय यूरोपसे कम्युनिस्टों और कम्युनिस्ट-समर्थकोंका दलबल आकर क्रावचैन्को की धज्जियाँ उड़ानेकी पूरी तैयारी किए बैठा था। फिर भी क्रावचैन्कोने जमकर मुकदमा लड़ा और उसकी जीत हुई। ४ एप्रिल १९४९ को अपना फैसला सुनाते हुए जजने कहा :

" 'लै लैतरे फ्रैंशे' के सम्पादकने सिम टामस पर अन्धविश्वास करके जो लेख छाप दिया, उसमें कही बातोंको वे सिद्ध नहीं कर सके हैं। अदालतमें क्रावचैन्कोकी बोलचाल, हावभाव, उत्तर देनेकी क्षमता, और वाक्पटुता देख कर कोई भी समझ सकता है कि वे अनपढ़ गँवार नहीं, बल्कि एक अत्यन्त सुसंस्कृत व्यक्ति हैं जिनमें अवश्य ही ऐसी पुस्तक लिखनेकी योग्यता होनी चाहिए। प्रतिवादी पक्षने अपनी गवाहीमें कोई ठोस प्रमाण देनेकी अपेक्षा पुस्तकका विश्लेषण करके ही अपनी बात सिद्ध करनेकी चेष्टा की है। उनकी गवाही सुनकर ऐसा लगा कि उन्होंने प्रमाण देखे बिना ही अपनी बातें कह दी थीं और मुकदमा दायर होनेके बाद ही वे प्रमाण खोजनेकी चेष्टामें लगे हैं। इसके विपरीत वादीने अदालतके सामने पुस्तककी जो हस्तलिपि प्रस्तुत की है उसको देखते हुए, तथा जो गवाह पेश किए उनकी बातें सुनकर, अदालतको यही विश्वास होता है कि वे ही पुस्तकके लेखक हैं तथा रूसके विषयमें कही हुई उनकी बातोंमें सचाई है।

"इसलिए अदालतका यह फैसला है कि 'लै लैतरे फ्रैंशे' के सम्पादक तथा प्रकाशक डेढ़ लाख फ्रैंक हरजाना क्रावचैन्कोको दें, डेढ़ लाख फ्रैंक जुरमाना अदालतमें जमा करें, मुकदमेमें वादीने जो खर्च उठाया है वह सब अपनी जेबसे अदा करें और अदालतके फैसलेको 'लै लैतरे फ्रैंशे' के मुखपृष्ठ पर उतने ही मोटे अक्षरोंमें छापें, जितने मोटे अक्षरोंमें कि वह पत्रिका साधारणतः छपती है।"

अदालतका फैसला पढ़नेसे पहिले ही मैं बुरी तरह हिल उठा था। अदालतमें हुई बातें पढ़कर मुझे ऐसा लगा कि कम्युनिस्ट-पक्ष कोई ठोस बात

न कहकर केवल गाली दिए जा रहा है, जब कि क्रावचैन्कोकी ओरसे कोई भी बात बिना प्रमाण और तर्कके नहीं कही जा रही। मेरे मनमें प्रश्न उठा कि क्या गालियोंके सिवाय कम्युनिस्ट-पक्षके पास कोई युक्ति-तर्क नहीं रहा, क्या सोवियत् रूसकी सरकार और अन्तर्राष्ट्रीय कम्युनिस्ट-संस्था एक साधारण व्यक्तिकी बातोंका ठीक-ठीक उत्तर नहीं दे सकती ? और एक दिन मैंने स्वयं क्रावचैन्को की पुस्तक अपने मित्रसे लेकर पढ़ डाली। मेरे रोंगटे खड़े हो गए। विश्वास छटपटाने लगा। मैंने धड़ाधड़ मास्कोमें छपी कम्युनिस्ट पुस्तकोंका अध्ययन करना शुरू कर दिया। और मैंने देखा कि बेचारे क्रावचैन्कोने अपनी पुस्तकमें जो कुछ कहा है, उसका सबसे सबल प्रमाण तो मास्कोसे छपी किताबोंमें विद्यमान है। साथ ही एक और भेद मुझपर खुला। मैंने देखा कि मेरी ही तरह रूसके अन्य भक्त भी रूसमें छपी पुस्तकें नहीं पढ़ते, बल्कि हफ्ते-दो-हफ्ते तक जो लोग रूसकी तीर्थ-यात्रा कर आते हैं, उन्हींकी बातोंपर अपना विश्वास टिकाए रहते हैं। क्रावचैन्कोके मुकदमेमें उन तीर्थ-यात्रियोंने किस प्रकार छाती फुलाकर गवाही देना शुरू किया और किस प्रकार भरी अदालतमें क्रावचैन्कोने सिद्ध कर दिखाया कि वे सब-के-सब काठके उल्लू हैं—जो सोवियत् सरकारका आतिथ्य ग्रहण करके अपनी बुद्धि और ईमान बेच चुके हैं—यह मैं पहिले ही समझ चुका था। मुझे अपने ऊपर बहुत ग्लानि हुई। इतने दिन तक मैं एक घोर कुत्सित व्यवस्थाका समर्थन करता आया था और न जाने मैंने और कितनोंको स्वदेशसे घृणा और विदेशसे प्रेम करना सिखाया था।

उसके बाद किस प्रकार मैंने मार्क्स, लेनिन और स्टालिनकी कृतियोंको एक बार फिर पढ़ा, किस प्रकार दार्शनिक और ऐतिहासिक स्तरपर अपने सामने प्रस्तुत प्रश्नोंका नए सिरेसे उत्तर खोजा, किस प्रकार भारतीय संस्कृति की उस अमूल्य निधिको—जो मैंने एक बार पाकर ठुकरा दी थी—फिरसे अपनाया ; और किस प्रकार बापूके मानव-प्रेम, श्री अरविन्दके तत्त्व-दर्शन और योग तथा महादेवी वर्माकी कविता द्वारा अपने छिन्न-भिन्न व्यक्तित्व

का पुनर्निर्माण किया — वह एक लम्बी कहानी है, जो और किसी दिन, अन्यत्र कहूँगा।

यहाँ अपना एक और अनुभव बता देना चाहता हूँ। ज्योंही मैंने कम्युनिज्मके विरुद्ध आवाज उठाई, त्योंही मुझपर भी वैसे ही प्रहार होने लगे, जैसे कि क्रावचैन्को पर होते हुए मैं देख चुका था। मेरे अनेक मित्र ऐसे थे जिन्होंने कम्युनिज्मकी दीक्षा मुझसे पाई थी और जो जीवनमें मेरे बहुत निकट थे। अचानक सबने मिलकर मेरी छिछालेदर शुरू कर दी। कहने लगे कि मैं बंगाल सरकारका पुराना गुप्तचर हूँ, जो कम्युनिस्ट होनेका ढोंग बनाकर पार्टी में प्रवेश पाना चाहता था, किन्तु जिसे पार्टीने ठुकरा दिया; कि मैं अमेरिका का वेतनभोगी दलाल हूँ, जिसने डालरके लोभमें अपना ईमान बेच डाला; कि मैं एक शराबी, कबाबी, जुआचोर हूँ, जो रुपएके लिए सब कुछ कर सकता है। मुझे क्रोध नहीं आया। मैं जान गया था कि कम्युनिस्टोंके पास आज सिवाय गन्दी गाली-गलौजके और कुछ नहीं है। हाँ, एक बातसे मेरे मनको ठेस पहुँची। मैंने देखा कि अपने-आपको कम्युनिस्ट-विरोधी कहनेवाले बहुत से लोग भी कम्युनिस्टोंके साथ मिलकर मुझपर आक्षेप करने लगे। मेरी समझमें यही आया कि उन लोगोंके अन्तरमें सत्यके प्रति आस्थाकी अपेक्षा कम्युनिस्टोंका भय अधिक है। यदि कम्युनिज्मकी भारतमें विजय हुई, तो उसका एकमात्र कारण यह कायरता ही होगी। अन्यथा इस देशके माननीय व्यक्ति यदि कम्युनिस्टोंकी गालियोंसे डरे बिना कम्युनिज्मके विरुद्ध अपना स्वर ऊँचा करें, तो कम्युनिस्ट बेचारे किस खेतकी मूली हैं।

कलकत्ता
८ मार्च, १९५४

सीताराम गोयल

स्वाधीनता की ओर

प्रथम अध्याय

रात में भाग-दौड़

उस रात जब मैं टैक्सीमें बैठकर अपने किरायेके मकानसे यूनियन स्टेशन[1] की ओर भाग रहा था तो प्रत्येक क्षण एक भयानक आशंकाके बोझसे युगाकार हो चला। वे लम्बी सड़कें और काले, ऊँचे मकान मुझे खानेको दौड़ रहे थे। वाशिंगटनमें मैं सात मास बिता चुका था। उन्हीं सड़कोंपर दर्जनों बार आया गया था; किसी दिन भी मैंने एक आँख उठाकर ध्यानसे उधर नहीं देखा था। किन्तु उस रात सब कुछ बदल गया। क्योंकि उस रात मैं जान बचाकर भाग रहा था।

कई दिन तक अपने कमीशनके दफ्तरमें मैं सिरदर्द और कमजोरीका बहाना बनाता रहा था। उस दिन सुबह मैंने कुछ लोगोंसे यह भी कह दिया था कि मुझे घरपर रहकर आराम करना चाहिए इसलिए शायद सोमवारको दफ्तर न आऊँ। मैं चाहता था कि मेरे बारेमें खोज-खबर उठे उसके पहले एक दो दिन मुझे निकल भागनेके लिए मिल जाएं।

मार्चके महीनेका वेतन लेकर मैंने अपने दो चार और बिल भी पास करा लिए थे। सब लेकर मेरे प्रायः तीस डालर और पावने रह गए थे। मैं चाहता था कि कोई पीछे चलकर मुझपर रुपए पैसेके सम्बन्धमें लांछन

१ वाशिंगटनका सबसे बड़ा रेलवे स्टेशन।

न लगाने पाए। उनके लिए यह कहना आसान था कि रुपएका गोल-माल करके मैं छुपता फिरता हूं। मैंने अपने कागज-पत्तर भी सहेजकर जमा दिए ताकि मेरे बाद जो भी वह काम संभाले उसको कोई कष्ट न हो।

पीछे चलकर जब मेरे भाग निकलनेकी खबर वाशिंगटन और न्यूयार्कके समाचार पत्रोंमें छपी तो मेरे कुछ साथियोंको वे आखिरी क्षण याद आए होंगे। उन्होंने याद किया होगा कि उस दिन मेरे हाथ मिलानेमें एक अजीब प्यारसा था। उस वक्त उन्होंने समझा होगा कि उस दिन मैं उनसे विदा ले रहा था। इस स्वाधीन अमेरिकामें भी मैं फिर कभी उनमेंसे किसीके साथ नहीं मिल सकूँगा। साथ-साथ काम करते-करते उनमेंसे कुछ लोग तो मेरे अत्यन्त निकट आ गए थे। मुंहसे बोले बिना भी हम एक दूसरेको समझने लगे थे। यदि मैं उनसे गले मिलकर विदा ले पाता तो मेरे मनका कुछ बोझ उतर जाता। किन्तु....

रात शीतल थी। तारिका विहीन। स्टेशनपर पहुँचते-पहुँचते मेरा अन्तर भयसे भर गया। यदि किसी साथीने मुझे देख लिया और ऊपर-वालोंको खबर दे दी, तो मैं क्या करूँगा? मैंने तो किसी यात्राका जिक्र किसीसे किया नहीं था। तो फिर ये दो-दो सूटकेस लेकर कहाँ जा रहा हूं? कोई भी पूछ सकता था। और कामरेड सैरोफ अथवा जेनरल रोडेन्कोको मेरे भागनेका भेद पहलेसे ही मालूम हो चुका हो तो?

सोवियत् रूसके अधिकारी सदा ऊंची क्लासमें सफर करते हैं। इस लिए मैं तीसरे दरजेमें बैठा। वहां किसी परिचितसे भेंट होनेका भय नहीं रह गया। भीड़से भरे उस अन्धेरे डिब्बेमें मैं अपने विचारोंको सुलझाने लगा। बहुत दिनसे मैं जानता था कि मुझे इस प्रकार भागना पड़ेगा। महीनों तक मैं तैयारी करता रहा था, इस दिन की मैंने बाट जोही थी। मिथ्याचार, ईर्ष्या, द्वेष और धांधलीके वातावरणमें मेरा दम घुट चला था। मैं मुक्ति चाहता था। अपने देशके शासकवर्गका एक

व्यक्ति होनेके नाते उस वर्गके पापोंसे मेरी गर्दन झुकी जाती थी। मैं उन पापोंका प्रायश्चित करना चाहता था। किन्तु अब, जब कि मैं निकल भागा, तो मेरे अन्तरमें न उल्लास था, न नई स्वाधीनताका समारोह। एक वेदनामय शून्यताकी अनुभूति ही मुझे हुई।

सोचने लगा कि मैंने अपनी जीवन-नौकाकी पतवारें तोड़ डाली हैं। फिरसे उन पतवारोंको पाना असम्भव है। जो किनारा मैं छोड़ चुका उधर कभी नहीं लौट पाऊँगा। आजके बाद मेरा न कोई देश होगा, न परिवार, न बन्धु-बान्धव। जिन अपने प्यारोंको जीवन भर चाहा है, जिनका दुःख-सुख सदा मेरे लिए अपना रहा है, उनके मुख फिर कभी नहीं देख पाऊँगा। मानों वे सब मर गए हों। साथ ही मेरे भीतर भी कुछ मर गया। वह कुछ जो कि मूल्यवान था। अब जीवन भर यह एकाकीपन, यह शून्यता, यह वेदना लेकर मैं घूमूंगा........

जहाँतक मातृभूमिका सवाल है, मैं एकबारगी पराया हो चुका हूँ। जिस सरकारकी सेवामें मैंने इतने दिन खून-पसीना एक किया है वही सरकार अब मुझे मौतकी सज़ा देगी। उस सरकारके गुप्तचर जीवन भर मेरा पीछा करेंगे। उनको हुक्म मिलते ही वे मेरे प्राण भी ले लेंगे। और ये अमेरिकन लोग जिनके भीतर मुझे जीवन भर काटना है—ये भला क्या समझेंगे कि सोवियत् तानाशाहीके विरुद्ध एक रूसी कम्युनिस्ट का विद्रोह क्या मायने रखता है। इन लोगोंने कभी तानाशाही देखी नहीं। ये तो एकदम नादान हैं।

मेरे देशमें जिस किसीने भी मेरे साथ काम किया है, उसीके जीवनमें लाञ्छना और सन्देहकी छाया घिर आएगी। जिन्होंने मुझसे प्यार किया है उनकी विडम्बनाकी तो मैं सोच ही नहीं सकता। मुझे भुलाकर ही वे जीते रह सकेंगे। नहीं, उन्हें कहना होगा कि मैं उनका कोई नहीं होता, कि मेरे जैसे बदमाशसे उनका कभी कोई वास्ता नहीं

था। अपने दिनोंमें मैंने भी यह सब किया था। मेरे जिन बन्धु-बान्धवों पर सोवियत् सरकारकी क्रूर दृष्टि पड़ी थी उनको अपना माननेसे मैंने भी तो इन्कार किया था।

आज मेरे सामने एक निर्मम सवाल उपस्थित था। अपनी अन्तरात्माकी दुहाई देकर तथा सत्यका प्रचार करनेके लिए, क्या मेरे लिए यह उचित था कि रूसमें फँसे अपने बन्धु-बान्धवोंकी जान मुसीबतमें डाल दूँ? मैं जानता था कि मेरा भाई कौन्स्टैन्स्टाइन जिसको मैं बहुत चाहता था, अब जिन्दा नहीं है। नाज़ी आक्रमणकारियोंसे स्वदेशकी रक्षा करते-करते कॉकेशसकी समर-भूमिमें उसने प्राण अर्पण किए थे। हाँ, मेरी बूढ़ी माँ अभी-अभी जर्मन गुलामखानेसे छूटकर आई थी। क्या उस एकाकी और असहाय अबलासे सोवियत् सरकार मेरा बदला चुकाना चाहेगी। एक और भी व्यक्ति था। वह नारी जो कभी तीन वर्ष तक मेरी पत्नी रही थी। किन्तु उसको तो मेरे अन्तरद्वन्द्वका कोई आभास नहीं था, न ही वह जानती थी कि एक दिन मैं भाग निकलूंगा। तब क्या......

ये सब विचार मेरे मनमें किलबिला रहे थे जब कि मैं न्यूयार्क पहुँचा। सुबहके तीन बजे थे। इतवारका दिन सामने था। मैंने नगरके एक मैलेसे होटलमें जाकर एक इटालियन नाम बताकर कमरा किराएसे लिया। कमरा तंग, तारीक और डरावना-सा था। मानो आत्महत्याकी प्रेरणा देनेके लिए ही वह कमरा बनाया गया हो। मैंने भीतरसे ताला बन्द कर लिया और बिजलीके मन्द प्रकाशमें मैं वह बयान लिखने लगा जो कि कुछ दिन पश्चात् अमेरिकाके समाचार-पत्रोंमें छपनेवाला था।

इन दिनोंमें यदि किसीने मेरा व्यवहार देखा होता, यदि कोई जान लेता कि रातोंको मैं सो नहीं पा रहा हूँ, कि मैं वाशिंगटनसे चोरी-चोरी भाग निकला हूँ और न्यूयार्कमें छुपा बैठा हूँ, तो उसको विश्वास हो जाता

कि मैंने कोई भयानक अपराध किया है और मैं पुलिससे बचना चाहता हूँ। किन्तु न तो मैंने खून किया था, न डाका डाला था। मैंने तो केवल अपनी सरकारकी नौकरी छोड़नेका फैसला किया था। कोई अमेरिकन भला क्योंकर समझ पाता कि रूस जैसी तानाशाहीमें इससे बढ़ कर कोई अपराध नहीं हो सकता। इस धरती पर जिसको भगवान मानना प्रत्येक रूसीका कर्तव्य है, उसीके विरुद्ध मैंने विद्रोह किया था। अब भला मुझे जीनेका भी क्या अधिकार था। मेरे मुख पर कालिख लग चुकी थी और रूसका कोई भी नागरिक मेरे साथ बातचीत करके अपने लिये मृत्युदण्ड खोज सकता था।

मेरी हरकत तो मामूली नहीं थी। मैं एक पुराना कम्युनिस्ट था और रूसकी नौकरशाहीका एक उच्चपदस्थ अधिकारी भी। मैंने जो कुछ किया था वह किसी मामूली प्रेरणाका परिणाम नहीं था। न जाने कब, क्यों, किस प्रकार मेरे मानसके निगूढ़ स्तरोंमें एक विद्रोहकी भावना जागी होगी। उस भावनाको मैं कुचल नहीं सका। वह बढ़ती ही गई। इसी कारण मैं यह कदम उठा पाया। इसलिए मुझे अपने विद्रोहका कारण खोजनेके लिए अपनी जीवन-गाथा टटोलनी पड़ी।

तीन अप्रैल १९४४ के दिन कई पत्रकारोंसे मेरी बात हुई। सोमवारका दिन था। उसी रात न्यूयार्क टाइम्सके मुखपृष्ठ पर मेरी बात छप गई। यह बहुत अच्छा हुआ। इसीलिए शायद मेरे प्राण भी बच गए। अमेरिकन जनताको विदित होनेसे पहले यदि रूसी दूतावासको मेरी खबर लग जाती तो वे अमेरिकन सरकारको कह देते कि मैं एक जर्मन जासूस हूँ जिसको पकड़ कर तुरन्त रूस भेजा जाना चाहिए। किन्तु अमेरिकाकी जनता जब मेरी कहानी जान गई तो रूसी दूतावासके हथकण्डे बेकार हो गए।

न्यूयार्क टाइम्समें मोटे-मोटे अक्षरोंमें छपा कि एक रूसी अफ्सरने अपना पदत्याग किया है। फिर मेरी कहानीका सारांश इस प्रकार दिया :

"कल एक रूसी अफ्सर विक्टर क्रावचैंकोने अपने पदसे त्यागपत्र देते समय बयान दिया है कि रूसकी सरकार अमेरिका और ब्रिटेनके साथ मैत्रीका बहाना करके एक दोहरी चाल चल रही है। क्रावचैंकोका अभियोग है कि स्टालिन सरकारने रूसी जनताको राजनैतिक तथा नागरिक अधिकारोंसे वंचित किया है। साथ ही क्रावचैंकोने अमेरिकन जनमतकी शरण भी मांगी है।

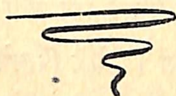
"क्रावचैंको रूसकी लाल सेनाका कप्तान है और अमेरिकामें भेजे जानेके पूर्व कई कारखानोंका डायरेक्टर रह चुका है। उसके पूर्व वह रूसकी सबसे बड़ी प्रान्तीय सरकारका एक उच्चपदस्थ कर्मचारी था। वह १९२९ में कम्युनिस्ट पार्टीमें भरती हुआ था और तबसे किसी-न-किसी महत्वके पद पर रहता आया है।"

उसके बाद उस लम्बे बयानके टुकड़े छपे जो मैंने रविवारको लिख कर तैयार किया था। मैंने वह बयान अपने सीनेके खूनसे लिखा था। लेकिन छापाखानेकी स्याहीमें छुपा वह खून कोई नहीं देख सका।

उस बयानके द्वारा मैं अमेरिकन जनता तथा अपने देशवासियोंको समझाना चाहता था कि क्यों मैंने वैसा किया। मैं लिखता रहा, काटता रहा और फिर लिखता रहा। बात बहुत टेढ़ी थी। एक जीवन भरके द्वन्द्वको समझानेके लिए मैं भाषा कहाँसे लाता। सोवियत् यूनियनसे विद्रोह करके मैंने समस्त प्रकारकी तानाशाहियों पर युद्धका डंका बजाया था। यह सब अकस्मात् नहीं हुआ था। उस समय तककी मेरी अनुभूति और विचारोंमें इस विद्रोहके अंकुर विद्यमान थे।

अपनी बात समझानेके लिए मुझे अपने बाल्यकालमें जाना होगा, जब कि नीपर नदीके किनारे खेलते-खेलते मेरे हृदयमें न्यायकी भावना

जागी थी। किशोरावस्थाके उन दिनोंको याद करना पड़ेगा जब कि मेरे यूक्रेनके नगरों और देहातोंमें विप्लव और गृहयुद्धकी आग फैली थी। जवान होकर मैं कम्युनिस्ट बना और मैंने पार्टीमें सदस्यता प्राप्त की थी। और फिर मेरे अन्तरमें शंका और ग्लानि उपजी थी। उन भावनाओंको दबाकर मैंने वर्षों तक अपनी मिटती हुई श्रद्धाको बचाना चाहा था। उन सब बातोंको आज याद करना होगा। मुझे केवल अपनी ही नहीं बल्कि रूसकी कहानी कहनी होगी—उस रूसकी कहानी जिससे कि मेरी कहानीका घनिष्ठ सम्बन्ध रहा है।



दूसरा अध्याय

रूसमें मेरा बचपन

(१)

आन्द्री फ्यादोरोविच क्रावचैंकोके हम तीन पुत्र थे—सबसे बड़े कॉन्स्टेन्टाइन, मझला मैं और सबसे छोटा यूजीन। हमारे लिए १९०५ की क्रान्ति एक व्यक्तिगत अनुभूतिसे परेकी बात रही थी। क्रान्तिकी पराजय हुई तो भी हमारे मन नहीं हारे। हम सभाओंमें गए, हमने दंगा-फसादमें भाग लिया। मेरे पिताके पीछे तो पुलिस पड़ी थी। उन दिनों हमने वे बड़े-बड़े नाम पहले-पहल सुने जो आगे चल रूसका इतिहास बनानेवाले थे। किन्तु हमारे निकट तो हमारे पिता ही क्रांतिके नायक थे। पिताजी रेलवेकी वर्कशापमें काम करते थे और हड़तालकी कमिटीमें उनका भी नाम था। वे आखिर तक जम कर लड़े और क्रान्तिकी पराजयके बाद उन्होंने विद्रोहका मूल्य भी खूब महंगा चुकाया। बचपनमें वे बारबार हमें क्रान्तिके दिनोंकी कहानियाँ सुनाते थे और हम क्रान्तिको अपने जीवनकी ही एक घटना मानने लगे थे।

उस अक्तूबरकी एक रातको पिताजी हड़ताल कमिटिकी सभामें बैठे थे कि पुलिसका धावा हुआ। यदि पिताजी पकड़े जाते तो कुछ अन्य विद्रोहियोंके साथ उनको भी फाँसीपर चढ़ना होता। किन्तु वे बचकर

निकल भागे। शहर छोड़नेके पहले उनका जी नहीं माना कि परिवारसे मिले बिना चले जाएं। आधी रातको वे मकानोंके सायोंमें छुपते छुपते हमारे घर तक पहुँचे। और मकानके पास आकर उनका दिल बैठ गया। घरके सब चिराग़ जल रहे थे और भीतरसे चलने-फिरनेकी आवाज़ आ रही थी। उनको विश्वास हो गया कि पुलिस खानातलाशी कर रही है। एक खिड़कीमेंसे झांककर उन्होंने देखा तो भूल मालूम पड़ी। नानीने आहट पाते ही द्वार खोल दिया, और बोली—"चुपचाप भीतर आ जाओ। बड़ा लड़का तो सो रहा है। और एक और लड़का हुआ है।"

वह लड़का मैं था। वह रात मेरे जन्मकी रात थी। चारों ओर मारकाट मची थी, गोलियाँ चल रही थीं, खून बह रहा था और एक हाहाकारसे वातावरण दारुण हो उठा था। सहसा मैं भी जोर-जोरसे चिल्लाने लगा। मां जाग उठीं। पिताजीने मेरा नाम उस दिन "विद्रोही" रख दिया। मैं बड़ा हो गया और और देशमें क्रान्ति सफल हो गई तब भी वे बार-बार मुझे "विद्रोही" कहकर पुकारते रहे। किन्तु अब उनके स्वरमें व्यंग भर उठता था। उस व्यंगकी मेरे मानस पर चोट पड़ती थी। हाँ, वे उस चोटको कभी नहीं देख पाए।

मेरे जीवनके प्रथम नौ वर्षोंमें पिताजी मेरे लिए एक प्रकारसे अजनबी थे। वे पुलिसके चंगुलसे कभी इतने दिन नहीं बचे रहे कि मैं उनसे घुलमिल जाता। बीच-बीचमें वे आते रहते थे और मैं उनके आनेकी बाट जोहा करता। कौन्स्टेन्टाइन कभी-कभी खबर ले आता था। वह कहता था—"देखो विट्या, पिताजी कोई चोर डाकू नहीं हैं। वे तो राजनैतिक आसामी हैं।"

"हाँ, कोट्या"—मैं बिना समझे ही हामी भर देता था।

एक क्रिसमसकी रात मुझे याद है। तब मैं तीन सालका था। नानी सुबकती हुई आई और हमसे कहा कि हम अपने पितासे मिल लें।

क्रिसमस वृक्षपर मोमबत्तियां जल रहीं थीं, किन्तु मां रोते-रोते पिताजीका सामान बांध रही थी। नानी हमें देवमन्दिरमें ले गई और अपनी प्रार्थना कहकर उसने धरतीपर माथा टेक दिया। पिताजीने आकर मुझे गोदमें उठाया और बार-बार मेरा मुख चूमा। उनके चेहरेपर दाढ़ी मोंछ नहीं थी। बाहर दरवाजेपर एक पुलिसका सिपाही खड़ा आँसू बहा रहा था। उसका भी दिल हिल गया था। पीछे चलकर मुझे बताया गया था कि पिताजी छुपकर दिन काट रहे थे और क्रिसमसमें हमसे मिलने आये थे। पुलिस जानती थी कि त्योहारके दिन फरार आसामी अपने घर आया करते हैं। इसीलिये उन्होंने पिताजीको धर दबाया था। पिताजीको अपना सामान बांधनेके लिए एक घण्टा मिला था।

मैं उस समय बहुत छोटा था इसलिए मुझे कभी सोचना नहीं पड़ा कि जीविका कमानेवालेके जेलमें जानेपर हमारे परिवारका खरच किस प्रकार चलता था। यूजीन भी पैदा हो चुका था। पिताजीके संगीसाथी थोड़ी बहुत सतायता करते रहते थे। कभी-कभी बाबाके घरसे भी कुछ खाने-पीनेका सामान आ जाता था। हमारे कपड़े सदा फटे रहते थे और मां दूसरोंके लिए रातदिन कपड़े सीती रहती थी। उन दिनों मैं यह सब नहीं समझ सका था। आज जानता हूँ कि कितने कष्टसे वह कुछ कमाती थी।

मैं प्रायः छः वर्षका था। एक रात मुझे नींद नहीं आई। मैंने चुपकेसे उठकर मांके कमरेका द्वार खोल डाला। मैंने देखा कि तेलके दीपकके तले मां सिलाईकी मशीन पर सिर झुकाए काम कर रही है। आज भी जब कभी मांको याद करता हूं तो उसकी वही मूर्ति मेरे सामने आ जाती है। उसने दांतसे धागा काटा, कपड़ा एक ओर रख दिया और मुझे गोदमें लेकर बोली—

"तुम अच्छे लड़के हो। समझदार भी। तुम सब समझ जाओगे। आज नहीं तो कुछ दिन पीछे। मैं कितना ही काम क्यों न करूँ, इतने पेट पालना सम्भव नहीं है, मेरे लाल! इसके सिवाय तुम्हारे पिताके लिये भी तो सामान भेजना पड़ता है। कुछ दिन पीछे तुम अपने बाबाके घर चले जाओगे तो सब ठीक हो जाएगा। सब लोग तुम्हें प्यार करते हैं। तुम स्कूलमें पढ़ने जाओगे और बीच-बीचमें हम तुमसे मिलने आया करेंगे। कल तुम्हारी बूआ यहाँ आकर तुम्हें ले जाएंगी। अब जाओ, सो रहो।"

मांने मुझे गोदमेंसे उठा दिया। उसकी आँखोंमें आँसू छलछला रहे थ।

(२)

बाबाका नगर एक शान्त सुन्दर बस्ती थी। एक ओर नीपर नदी बहती थी और दूसरी ओर था एक घना जंगल। वहाँ दो-तीन ईंटे बनानेके भट्टे तथा दो-तीन लोहे-पीतलके छोटे-छोटे कारखाने बन चुके थे। फिर भी देहातका वातावरण ही अधिक था। प्रायः सभी घरोंके आसपास बाग-बगीचे लगे थे। बाबा, दादी और उनकी लड़की शूराकी गुजरके लिए एक साधारणसी पेन्शन और दो-तीन छोटे-छोटे घरोंका किराया काफी थे। हमारे बगीचेमें बारहों महीने साग सब्जी, फल-फूल होते रहते थे। दादीको बगीचे पर अभिमान था। फलोंका मुरब्बा डालते-डालते वे थकती ही नहीं थीं।

जिस समय मैं उनके पास गया उस समय बाबा प्रायः अस्सी वर्षके हो चुके थे। वे मझले कदके मजबूत और रौबदार आदमी थे। मुख पर सफेद दाढ़ीको खूब बना संवार कर रखते थे। वे १८७४ के युद्धमें तुर्कोंके विरुद्ध लड़े थे और बहुत दिन तक सेनामें रहकर रिटायर हुए थे।

दादी एक सुन्दर, सलोनी-सी स्त्री थीं। नानासे बारह बरस छोटी। उनकी आँखोंमें सदा एक चमक मिलती थी और मुख पर मुसकान-सी। बाबा और हम सबकी देख-रेख वे इस प्रकार करतीं थी, मानो हम सब बच्चे हों जिनको बहलाना-फुसलाना पड़ता है।

सरदीकी रातोंमें हम सब आग जलाकर बैठा करते थे। बाबा तुर्क और कुर्द लोगोंके साथ युद्धोंकी कहानी सुनाते थे। यदि उनके पुराने साथी भी बैठकमें मौजूद होते तो वे अपने उन कारनामोंको बखानते थे जिनके कारण रूसके सम्राटका ध्यान भी उनकी ओर गया था। और बार-बार कहते-कहते उनके वही कारनामे बहुत बढ़-चढ़ गए थे। रविवारके दिन बाबा बड़े ठाठसे अपनी फौजी वरदी पहनते थे, अपने बिल्ले लगाते थे और बूटों पर पालिश करके उन्हें शीशेकी तरह चमका देते थे। फिर अपने बड़े, मजबूत हाथमें मेरा छोटा-सा हाथ थाम कर वे गिरजा जाते थे। अभिमानके मारे मेरी छाती फूल उठती थी।

बाबाको भी अपने पोते पर अभिमान था, चाहे अपने कड़े स्वभावके कारण इस विषयमें वे कहते-सुनते कुछ न हों। बाबाका प्रथम पुत्र आन्द्रे पुलिसका आसामी था, जेलमें जाता रहता था, इसलिए उसका नाम कोई कभी बाबाके सामने नहीं लेता था। बाबाको अपने पुत्रसे प्यार था, किन्तु उनकी समझमें नहीं आता था कि आन्द्रे ज़ारको गालियाँ क्यों देता है। वे कहते थे : "सारा जीवन मैंने एक अच्छे सैनिककी हैसियतसे गुजार दिया। और मरते दम तक मैं नहीं बदलूंगा। मैं काम करता हूँ, भगवानकी पूजा करता हूँ और मुझे कोई शिकायत नहीं। किन्तु न जाने आन्द्रे क्या चाहता है। मेरी तो कभी समझमें नहीं आएगा।"

दादी और शूरा जानती थी कि ऐसी बातें करते-करते वे रोने लगेंगे। इसलिए वे भरसक बात बदलनेकी कोशिश करती थीं।

बाबाको मछली पकड़नेका बहुत शौक था। नीपर नदी एक प्रकारसे उनका दूसरा घर था। नदीकी धारामें हमारी नाव बहती रहती और पानीमें कांटा डालकर बाबा मुझे कहानियाँ सुनाते रहते कि किस प्रकार किसी युद्धमें हजारों तुर्क मारे गए और रूसी लोग लूटका माल लेकर सीना तानते हुए लौटे। जब सूरज चढ़ने लगता तो हम किसी पेड़ोंके झुरमुटमें अपनी नाव बाँध कर पानीमें तैरते और खेलते हुए यह भूल जाते थे कि हमारी अवस्थाओंमें सत्तर सालका अन्तर है।

हमारे घरमें एक फौजी अनुशासनका वातावरण रहता था। बाबा काम करना अपना कर्त्तव्य समझते थे, काम करनेकी आवश्यकता न हो, तो भी। हम रातको बहुत शीघ्र ही सो जाते थे और प्रातःकाल जल्दी उठकर बागीचेमें काम तथा ढोरोंकी देखरेख करते थे। स्कूल जानेके दिनोंमें भी नाश्तेके पूर्व मुझे कुछ-न-कुछ काम करना पड़ता था। बाबाके लिए पढ़ाई-लिखाईका कोई विशेष महत्व नहीं था। उन्होंने मुझेसिखाया था कि चाहे कैसा ही मौसम हो मुझे एक पुरुषकी तरह खुली हवामें बरफसे ठण्डे पानीमें स्नान करना चाहिए। उनका आदेश था कि शरीर पर कोई भी यातना आ पड़े, मेरे मुख पर दुःखका भाव नहीं उमड़ना चाहिए।

स्कूलमें कुछ लोगोंको मैंने मित्र बनाया। सारे जीवनके मित्र। स्कूलमें देर तक पढ़ाई होती थी और घर पर भी काम करनेके लिए दिया जाता था। काममें सुस्ती अथवा गैरहाजिरीके लिए मारपीट भी एक साधारण बात थी और लड़कोंमें शिक्षाका एक अनिवार्य अंग मानी जाती थी। अच्छे घरके लड़कोंसे कहा जाता था कि खानाबदोश लोगोंसे हेलमेल न करें। किन्तु मैं तो छुप-छुपकर उनसे मिलता था। सैदमान नामके एक खानाबदोशसे मेरी गाढ़ी दोस्ती भी हो गई और मैं उनके कबीलेका एक सदस्य बन गया। एक दिन नीपर नदी पर जमी हुई बरफ

पर हम दोनों स्केटिंग कर रहे थे कि बरफ टूट गई। सैदमानने बरफीले पानीमें डुबकी लगाकर मुझे निकाला। हमारी दोस्ती और भी गाढ़ी हो गई।

प्रथम महायुद्ध आरम्भ हुआ तब मैं नौ वर्षका था। सहसा जीवनमें दिलचस्प घटनाओंका तांता लग गया। सैनिक लोग, भाषण, रोदन, गायन—ये सब रोजकी बातें थीं। प्रत्येक दिन मानो पर्व बन गया। हमारे शिक्षक पुस्तक पढ़ाना भूल गए और हमें देशभक्तिके पाठ पढ़ाने लगे। जिन स्त्रियोंके पति और पुत्र युद्धमें जाते थे वे रोती थीं और हाथ मलती थीं। दादीको भी रोना पड़ा। किन्तु बाबा मानो जवान हो गए। वे अब रोज अपनी वरदी पहनने लगे और युद्धके सम्बन्धमें समारोहोंमें भाग लेने लगे। वे सिर हिलाकर कहते, थे : "हाय जनरल कोबलीफ जिन्दा नहीं हैं, वरना जर्मनोंके दाँत खट्टे कर देते। उनके सामने तो तुर्क भी नहीं ठहर सकते थे।"

अगस्त १६१४ में जब एक दिन हम मछली पकड़ कर लौटे तो किसीने द्वार खटखटाया। दादीने द्वार खोला और भर्राई आवाजमें चिल्ला उठी, "आन्द्रे ! देखो बच्चो कौन आया है ! आन्द्रे, आन्द्रे !" मैंने जाकर देखा, मेरे पिता खड़े थे। वे साफ-सुथरे कपड़े पहने थे। दाढ़ी एक डाक्टरकी तरह तराशी हुई थी। मुझे वे कद के कुछ छोटे लगे और चेहरे पर वह पुरानी उत्फुल्लता भी मिट चली थी। फिर भी मुझे उनको देखकर बड़ी प्रसन्नता हुई, क्योंकि अबकी बार मुझे उनसे निकटताका अनुभव हुआ।

युद्ध शुरू होनेपर जारने कई प्रकारके राजनैतिक बन्दियोंको मुक्त किया था। मेरे पिता भी उनमेंसे एक थे। बाबाको बहुत खुशी हुई। किन्तु सांझ होते-होते पुत्रके प्रति उनकी शिकायतें लौट आईं। कहने लगे : "आन्द्रे, मैं जानना चाहता हूं कि यह सब खुराफात तुम

क्यों करते रहे हो ? तुम एक साधारण अपराधी की तरह जेलमें सड़ना क्यों पसन्द करते हो ? आखिर तुम चाहते क्या हो ? क्या तुम्हारी स्त्री और बच्चोंके प्रति तुम्हारे दायित्वका तुम्हें कोई बोध नहीं ?"

पिताजी धैर्यपूर्वक सब सुनते रहे। उनका मुख कठोर हो चला, किन्तु आँखोंमें चमक भर आई। आज भी उनकी गम्भीर वाणी मुझे याद है। वे बोले :

"मैं बतलाता हूँ कि मुझे क्या चाहिए, पिताजी। आशा है आप मेरी बात समझ सकेंगे। आपकी रायकी मैं कद्र करता हूं। मैं चाहता हूं कि सब लोग स्वतन्त्र और सुखी हों, सब मानव प्राणी एक मानवोचित जीवन बिताएं। मैं राजनैतिक निरंकुशता और आर्थिक दासताका अन्त करना चाहता हूँ। विश्वास कीजिए कि मेरे सगे-सम्बन्धियोंका दुःख मुझे भी सताता है। किन्तु मैं जानता हूं कि एक पीढ़ीके लोगोंने यदि अपने सुख सन्तोषका बलिदान कर दिया तो आनेवाली पीढ़ियाँ अधिक सुख और सभ्यताका जीवन प्राप्त कर सकेंगी।

"आप मुझे समझनेकी कोशिश कीजिए, पिताजी। आप धर्मप्राण आदमी हैं, आप भगवानकी पूजा करते हैं, सन्तोंको मानते हैं। क्या सन्तोंने कुत्सितका त्याग करते समय और समुचितको अपनाते समय अपने स्त्री-बच्चोंके दुःख-सुखकी बात सोची थीं ? हमारे प्यारे रूसमें आज अन्धकार छाया है। जनता अज्ञ और मूढ़ है, इस कारण जनताका शोषण होता है। किन्तु हम रूसको एक सुन्दर देश बना सकते हैं जहाँ न मालिक होगा, न गुलाम, जहाँ सब बराबर होंगे।"

पिताजी बाबासे बात कर रहे थे, किन्तु मुझे ऐसा लगा जैसे सब कुछ मुझे सुना रहे हों। मैं मन-ही-मन अत्यन्त भावप्रवण हो उठा। पिताजीने अपनी बात खत्म करते हुए मेरी ओर देखकर कहा : "आपने

मेरे बच्चोंका सवाल उठाया। मेरा खयाल है कि जो खून खराबी हमने की है उसके परिणामस्वरूप, हमारे ही नहीं, देशके समस्त बच्चे सुखका जीवन व्यतीत कर सकेंगे।"

उस रातको जब मैं सोने लगा तो मानो मेरे पिता मेरे कानमें कह रहे थे : "मैं चाहता हूं कि जीवन भर तुम मेरी बातें याद रक्खो। कभी मत भूलना कि तुम कौन हो। हमेशा स्वाधीनताके लिए जमकर लड़ते रहना। स्वाधीनताके बिना जीवनके कोई मायने नहीं। मेरा कुछ भी अन्त हो, तुम पढ़ते रहना, काम करते रहना और मेरे आदर्शके लिए लड़ते रहना। हम इन्सान हैं, हैवान नहीं। और यदि हम इन्सान हैं तो हम किसीके गुलाम नहीं रह सकते। यदि मैं और मेरे साथी इस युद्धमें काम आ जाएं, तो मेरे बच्चे, तुम लोग हमारा काम संभालकर उसे आगे बढ़ाना।"

कई महीने तक मुझे समय काटना मुश्किल हो गया। मैं अपने माता पिता और भाइयोंसे मिलना चाहता था। मांके पत्र आते रहते थे। वह खुश थी। पिता फिरसे कमाने लगे थे और मांको सीना-पिरोना नहीं करना पड़ता था। मां लिखती रहती थी कि हमारा घर बिल्कुल बदल गया है। छुट्टियाँ नजदीक आईं तो मैं आनन्दसे नाच उठा। और मैं घर गया। स्टेशनपर सारा परिवार मुझे लेने आया, सबने मुझे चूमा, गले लगाया, मुझसे बातें कीं। घर तक पहुँचते-पहुँचते मैं अपने भाइयोंसे हिलमिल गया। हममें खूब घुट-घुटकर बातें हुईं। मांने मुझ परसे एक क्षण भी आँखें नहीं हटाईं। बार-बार कहती रहीं : "बिट्या, तुम कितने अच्छे लगते हो। कितने बड़े हो गए हो। पुरुषसे लगते हो। मोटे ताजे हो गए हो ना।"

बाबाके घर लौटकर मैं अठारह महीने और वहाँ ठहरा। १९१६ में मेरी प्राथमिक शिक्षा पूरी हो गई। परीक्षाफल आनेपर एक समारोह

हुआ। बड़े लोगों की तरह मेरी हजामत बनवाई गई। बाबाने मुझे पतलून और दूसरे पहननेके कपड़े भेंट किए। मेरे सपने सत्य बन रहे थे और मुझे बहुत अच्छा लग रहा था।

अगले दिन मैं अपने पिताके नगरमें लौट आया। दो तीन महीने बाद मैंने हाई स्कूलमें नाम लिखा लिया। हमारा सारा परिवार अब एक साथ रहता था। पहले-पहल ऐसा हुआ था। यूजीन प्राथमिक स्कूलमें पढ़ रहा था और कौन्स्टैन्टाइन हाई स्कूलकी दूसरी कक्षामें था। पिताजी सौ सवा सौ रूबल महीनेमें कमा लेते थे और हमारे जीवनमें सुख और शान्ति सभी कुछ थे। मां सदासे अधिक प्रसन्न और सुन्दर दीख पड़ती थी, किन्तु पिताकी शान्तिकी ओटमें भी मैं एक बेचैनी देख सकता था। हम लोगोंमें एक वही थे जो समझ पाते थे कि रूसके ऊपर फिर एक तूफान उठनेवाला है।



तीसरा अध्याय

शान और भुखमरी

१९१६ का शीतकाल बीतते-बीतते ज़ारशाही लड़खड़ाने लगी। युद्धमें रूसकी पराजय हो रही थी और जनताका आक्रोश बढ़ता जा रहा था। सेनाका अनुशासन भंग हो रहा था और दलके दल सैनिक युद्ध-भूमिसे भाग रहे थे। हमारे नगरमें भी तरह-तरहकी अफवाहें फैल रहीं थीं। हम सुनते कि एक बदमाश साधु रासपुटिनका ज़ारपर बहुत प्रभाव है, कि राज्यके बड़े-बड़े अधिकारी रिश्वतखोर हैं, कि भूखे लोग जगह-जगह दंगा फसाद कर रहे हैं, कि ज़ारीनाके चारों ओर ऐसे लोग हैं जो जर्मनीसे सहानुभूति रखते हैं और युद्धमें जर्मनीकी पराजय देखना नहीं चाहते।

पिताजी देर तक कारखानेमें काम करते थे। फिर भी सांझके समय उनको मुँह धोने और चाय पीनेका समय नहीं मिलता था। वे सभाओंमें जाते थे जहाँ वाद-विवाद होता था और जहाँ पेट्रोग्राड[1] तथा कीव[2]से

---

१ जारशाहीके समय रूसकी राजधानी। आजकल उसका नाम लेनिनग्राड है।

२ रूसके यक्रेन प्रान्तकी राजधानी।

लोग नए समाचार लेकर आते रहते थे। हमारा घर तो एक धर्मशाला बन गया, जिसमें सब तरफसे सब किस्मके लोग आकर ठहरते थे। फिर भी पिताजी अपने तीन पुत्रोंसे बातें करनेका टाइम निकाल ही लेते थे। साथ बैठकर हमलोग टालस्टाय, हर्जन और दूसरे लेखकोंकी पुस्तकें पढ़ते थे। पिताजी अपनी बातें कहते-कहते पुस्तकोंमेंसे पढ़-पढ़कर कुछ सुनाते जाते थे। उनके आदर्शवादने मुझे हिला दिया। उनके मनमें वे सब विश्वास एक धार्मिक विश्वासकी तरह जड़ पकड़े हुए थे।

मार्च १९१७ के पहले दिनोंमें तूफान फट पड़ा। तूफानको आया देखकर उन लोगोंको भी विस्मय हुआ, जिनको कि उसके आनेका पक्का विश्वास था। अभी तक वे लोग छुप-छुपकर क्रान्तिकी बात करते थे। अब क्रान्तिकी दीव्य किन्तु डरावनी मूर्ति सबके सामने आ खड़ी हुई। जीवनकी चाल ही बदलने लगी। स्कूल और कारखानोंमें जैसे किसीको दिलचस्पी ही न रही हो। हमारे नगरके लोग बरफसे ढकी सड़कों और गलियोंमें भीड़ लगाने लगे। जलूस निकलने लगे, हो-हल्ला होने लगा। बातें करते-करते कोई थकनेका नाम नहीं लेता था। मानो युग-युगसे जनताका गला रुंधा हुआ हो और अब अवसर पाकर सब लोग अपनी सारी बातें एक साथ कहने पर तुल गए हों। सभी प्रकारकी बातें होती थीं—मूर्खतापूर्ण, गम्भीर और घृणित भी।

शहरके चौकोंमें मंच खड़े हो गए जिन पर लगातार वक्ता लोग खड़े रहते थे। जिन स्त्री-पुरुषोंने कभी एक शब्द भी खुलकर न कहा था वे अब चीत्कार कर उठे। सभ्य और शिक्षित लोग अब मजदूरों और सैनिकोंकी बातें सुनते थे। सुननेवाले किसीकी तारीफ करते थे, किसीको गाली देते थे। एक दिन मेरे पिताका भाषण हुआ। चारों ओर झण्डे लहरा रहे थे। सब लोग पिताजीके नामसे परिचित थे। किन्तु मैंने पहले-पहल उनको जनताके सामने बोलते हुए सुना था। मेरा मन

उल्लाससे भर उठा। बोलते-बोलते वे कुछ ऐसे बदल गए कि अपने पिताके रूपमें उनको पहिचानना मेरे लिए कठिन हो गया। वक्तृता समाप्त होनेपर वे मंचसे नीचे उतरे तो मैंने भीड़में धकापेल करते हुए आगे बढ़कर उनको अभिनन्दन जताया। वे विश्वासके स्वरमें बोले : "देखो बिट्या, अब जनताको स्वाधीन जीवन प्राप्त होगा। इस दिनके लिए सारा खून पसीना बहाना जरूरी था।"

मुझे ऐसा लगा जैसे वे अपना मन समझा रहे हों। उनके कारण परिवारको बहुत कुछ दुःख-संताप तथा दरिद्रताका सामना करना पड़ा था। शीघ्र ही क्रान्तिका प्रथम उल्लास गाली-गलौज तथा पारस्परिक झगड़ोंमें बदलने लगा। उत्साहके साथ साथ अविश्वास और अभियोग फैलने लगे। वाद-विवाद करते-करते क्रान्तिकारी लोग घूँसाबाजी करते थे, ईंट पत्थर फेंकते थे और गोली भी चला बैठते थे। भोजन कम मिलने लगा। लकड़ी, कोयला, किरासीन इत्यादि नदारदसे हो गए। कारखाने रुक-रुककर चल रहे थे। कई तो एकबारगी बन्द ही हो गए। पिताजी यह सब देखकर निराश होने लगे। उनका बोलना बन्द हो चला। जिन दिनों वे मौतके मुँहमें जानेसे नहीं डरते थे, उन दिनों उनका स्वभाव शान्त था। अब वे चिड़चिड़े होने लगे। मैं उनकी सभा सोसाइटियोंके बारेमें प्रश्न पूछता तो उनको अच्छा नहीं लगता था। कह देते थे :

"ये सब पेचीदा मामले हैं। अभी ये सब समझने लायक उमर तुम्हारी नहीं है, बेटा। सत्ताके लिए संघर्ष चल रहा है। मैं नहीं चाहता कि कोई एक पार्टी सारी सत्ता हथिया ले। वह बुरा होगा, चाहे विजयी पार्टीके सिद्धान्त कितने ही अच्छे क्यों न हों। इसका मतलब होगा पुराने शासकोंके स्थानमें कुछ नए शासकोंका आगमन। नए शासक भी बलात्कार करेंगे, जनताकी कुछ नहीं चलेगी। ऐसी

व्यवस्थाके लिए तो हम क्रान्तिकारियोंने अपने प्राण उत्सर्ग नहीं किए थे।"

एक दिन हम एक सभामें गए जहाँपर मैनशेविक, बाँल्शेविक, कैडेट पार्टीके सदस्य तथा अन्य कई लोग बोले। सुनकर पिताजीको सन्तोष नहीं हुआ। दुखी होकर बोले :

"मैं तो जारशाहीका तख्ता उलटनेके लिए लड़ा था। स्वाधीनता और सम्पन्नताके लिए लड़ा था। यह हिंसा और विद्वेष मुझे बिल्कुल पसन्द नहीं। देशमें स्वतन्त्र चुनाव होने चाहिएँ और कई पार्टियोंको धारा सभामें पहुँचना चाहिए। यदि एक पार्टीका आधिपत्य हो गया तो सब कुछ स्वाहा हो जाएगा।"

"आप क्या हैं पिताजी ? मैनशेविक, बाल्शेविक, समाजवादी, क्रान्तिकारी अथवा और कुछ ?"—मैंने पूछा।

"इनमेंसे कोई भी नहीं हूँ, बेटा ! एक बात कभी मत भूलना। सत्ता प्राप्त करनेके पूर्व कोई पार्टी जो नारे लगाती है, उनसे कभी भी उस नीतिको नहीं समझा जा सकता जो कि वह पार्टी सत्ता प्राप्त करनेके उपरान्त अपनाएगी। नारे चाहे कितने ही आकर्षक क्यों न हों।"

पिताजी कुछ और मजदूर प्रचारकोंके साथ रूमानियाकी ओर चले गए। वे वहीं थे जब कि लेनिन ट्राट्स्कीकी अध्यक्षतामें बाल्शेविकोंने क्रान्ति और सरकार, दोनों हथिया लिए। वे लौटकर आए तो कहने लगे कि युद्ध समाप्त हो गया, क्योंकि सिपाही लोग अपने हथियार फेंक कर घरोंकी ओर चल निकले हैं। सब ओर भुखमरी बढ़ती जा रही थी और कपड़े और कोयला न होनेके कारण लोग सरदीसे ठिठुर रहे थे। दुकानोंमें सामान नहीं मिलता था और कीमतें बढ़ जानेके कारण रुपयेका मूल्य गिर रहा था। नगरके जीवनमें गली साफ करनेवाले, टेलीफोन, पानी और ट्राम बस अत्यन्त आवश्यक होते हैं। हम सब इन साधनोंके

आदी हो चुके थे। किन्तु धीरे-धीरे ये सब साधन दुर्लभ होने लगे। बीमारी फैलने लगी और घर-घर मातम छा गया।

एक तेलकी डिब्बी जलाकर मैं नानीके लिये कहानियाँ पढ़ा करता था। दादीको नेक्रासोव, टॉल्स्टाय तथा तुर्गनीवमें दिलचस्पी थी। एक रातको मैं पढ़ रहा था, तो नानीने मेरी ओर अपना हाथ बढ़ाकर मेरा हाथ थाम लिया। मैं पढ़ता रहा। नानीकी पकड़ ढीली पड़ने लगी, तो मैंने सोचा कि वे सो गई हैं। चुपचाप कमरेसे निकल जाने के पूर्व मैंने एक बार उनका मुख देखा। उनकी आँखें पथराई हुई थीं। मैं चीत्कारकर उठा और घरके और सब लोग भागकर उस कमरेमें इकट्ठे हो गए। नानी चल बसी थीं।

उत्तरकी ओर रूस प्रदेशमें सोवियत् सरकार दो-तीन मासमें गठित हो गई। किन्तु अन्य प्रदेशोंमें, विशेषकर यूक्रेनमें, गृहयुद्ध और मारकाट कई वर्ष तक चलते रहे। हमारे शहरमें ही कभी किसीकी सरकार बनती थी, कभी किसी की। एक ही मासमें, कई बार तो एक ही सप्ताहमें, कई बार सरकारें बदलती थीं। हम यह बात ही भूलने लगे कि सरकारके भी कुछ मायने होते हैं। कई महीने तक तो जर्मन फौज पड़ी रही। फिर रूसी फौजकी टुकड़ियाँ इधर-उधर घूमकर लूटपाट करने लगी। जीवनका साधारण क्रम प्रायः बन्द हो गया। फिर भी हमलोग जीते रहे। जीवनकी साध सब प्रकारके हंगामोंसे बाजी ले गई।

(२)

नीपर नदीके तट पर ईलिन नामक जमींदारी हमारे प्रदेशमें सबसे धनवान और प्रसिद्ध थी। वह हजारों एकड़ उपजाऊ भूमि पर बसी थी, जिसके अन्तर्गत जंगल, चरागाहें, बगीचे, घुड़साल और गोशालाएँ थीं। जमींदार एक सुन्दर हवेलीमें रहता था जहाँ तक जानेके लिए

बजरीकी चौड़ी सड़क बनी थी। सड़कके दोनों ओर घने वृक्ष लगे थे। क्रान्तिके बाद जमींदारीके समस्त खेत किसानोंमें बाँट दिये गए। किन्तु जमींदारीके मकान, बगीचे, कुछ खेत और मछलीके तालाब इत्यादि पर हमारे शहरके मजदूर संघने अधिकार जमा कर वहां एक कम्यून[१] बना डाला। वहाँ प्रायः पाँचसौ परिवार रहने लगे। हमारा परिवार भी उनमेंसे एक था। मैंने वहाँ चार साल बिताए। जब मैं वहाँसे निकला तो मेरी आयु सतरह सालकी थी। शहरमें उत्पादन प्रायः बन्द हो चुका था। बेकारी और भुखमरी सब तरफ फैली थी, इसलिए कम्यूनमें जाकर एक प्रकारसे हमने अपनी जान बचाई।

पिताजीसे बार-बार अनुरोध किया गया कि कम्युनिस्ट पार्टीके सदस्य बन जाएँ। उन्होंने इन्कार कर दिया। कहने लगे कि वे तानाशाही और आतंकका समर्थन नहीं कर सकते, भले ही कोई लाल झण्डा लेकर ही ये काम क्यों न करे। उन्होंने देखा कि बाल्शेविक पार्टीको सत्तारूढ़ पाकर अधिकाधिक मजदूर और बुद्धिवादी उसमें भरती होने लगे हैं। इनमेंसे अधिकतरने जारके विरुद्ध संघर्षमें तटस्थता दिखाई थी। पिताजी इस बात पर और भी दृढ़ हो गए कि वे ऐसे अवसरवादियोंका साथ नहीं देंगे।

नगरके मजदूर कम्यूनका काम जिस उत्साहसे करते थे, उसमें पागलपनका भी एक अंश था। वे दिखाना चाहते थे कि क्रान्तिके लिए उन्होंने बेकार बलिदान नहीं किए हैं। किसान लोग इन मजदूरोंका मज़ाक उड़ाते थे और कहते थे कि कम्युनिस्ट भला क्या खेती करेंगे। हम बच्चोंके लिए तो कम्यूनका जीवन खूब मजेदार था। देहातका वातावरण और साथियोंके साथ मिल-जुलकर काम करना बहुत अच्छा लगता

१. उस बस्तीका नाम जहाँ कि सम्पत्ति इत्यादि पर वहाँके निवासियोंका सम्मिलित अधिकार रहता है।

था। हमारे माता-पिता चिन्तित रहते थे कि हमारी पढ़ाई-लिखाई नहीं हो रही है, और कभी-कभी हमको शिक्षित करनेकी चेष्टाएँ भी होती थीं, किन्तु हमको उधरकी कोई फिक्र नहीं हुई। तैरना, मछली पकड़ना, नाव चलाना, खेल-कूद और इधर-उधर घूमना, ये ही हमारे कुछ काम थे जो फ़ुरसत पाते ही हम करने लगते थे। अधिकतर तो कम्यूनके धन्धोंसे हमें फ़ुरसत ही नहीं मिलती थी।

गृहयुद्धकी आग भी हमारे चारों ओर जल रही थी और कई बार तो हमारा कम्यून ही नष्ट होते-होते बचा। कोन्स्टैनटाइन और मैं हथियार लेकर जब पिताजी तथा अन्य बड़े लोगोंके साथ कम्यूनके बचावमें लड़ते थे तो गर्वसे हमारा सीना तन जाता था। यूजीन भी बन्दूक उठाना सीख गया था। कभी तो कम्युनिस्ट फौज, कभी कम्युनिस्ट-विरोधी फौज और कभी कोई और फौज हमारे कम्यून पर धावा बोलती रहती थी। वे खाना, कम्बल और बहुत बार घोड़े मांगते थे। हमारे पास जो कुछ फालतू होता वह हम दे देते थे और साथ-ही-साथ जता देते थे कि जबरदस्तीकी कोशिश की तो हम लड़नेको भी तैयार हैं। इस प्रकार कम्यून पर कोई भारी आक्रमण नहीं हुआ।

(३)

१६२० की शरद ऋतुमें मैं और कोन्स्टैनटाइन एक कृषि पाठशालामें भरती हो गए। यह पाठशाला हमारे जिलेके एक बड़े जमींदारने बनाई थी। एक सुन्दर झीलके किनारे बड़े बढ़िया मकानोंमें पढ़ाई होती थी। लूट-पाटके दिनोंमें पाठशालाका काफी नुकसान हुआ। कई मकान तोड़-फोड़कर बेकार कर दिये गए। ईंधन न मिलनेसे लोगोंने पाठशालाका फर्नीचर, दरवाजे, यहाँ तक कि छतोंकी कड़ियाँ तक उतार कर जला डालीं। पाठशाला भी बेकार हो गई। किन्तु पाठशालाके अध्यापक अपने स्थान पर बने रहे। कुछ नए अध्यापक भी आ पहुँचे और सब

प्रकारकी त्रुटियाँ होते हुए भी प्रायः छ सौ छात्र वहाँ कृषि-सम्बन्धी आधुनिक ज्ञान प्राप्त करने लगे। पाठशालाके खेतोंमें जो कुछ उपजता था उसीपर सबकी गुजर किसी प्रकार हो जाती थी। दुःख-तकलीफके दिनोंमें हम सब, अध्यापक और छात्र, एक-दूसरेके अत्यन्त निकट आ गए। पाठशाला वैसे तो सोवियत् सरकारके अधीन थी, किन्तु अभी तक पढ़ाईमें राजनीतिका समावेश नहीं हुआ था। हम रूसकी धरतीसे अधिक अनाज और फल-फूल उपजानेके लिए भरसक प्रयत्न कर रहे थे और इससे अधिक आशा क्रान्तिने उन दिनों हम पर नहीं लगाई थी।

हम दोनों भाई और एक तीसरा छात्र फ्योडोर एक साथ ही एक किसानके घर रहने लगे। सरदी गुजर गई और बसन्त आनेपर क्लासकी पढ़ाईके साथ-साथ बाहर खेतोंमें भी काम होने लगा। उन दिनों मैंने जो कुछ सीखा वह उस समय मुझे बहुत अच्छा नहीं लगा, किन्तु पीछे चलकर मेरे बहुत काम आया। कृषि-विज्ञानकी टूटी-फूटी बातें समूही-करणके दिनोंमें मेरा एकमात्र सहारा बन गईं।

भोजनकी समस्या दिन-पर-दिन कठोर होती जा रही थी। रुपयेकी तो कोई कीमत ही नहीं रह गई थी। वस्तुओंका विनिमय करके ही सब काम चलता था। कम्यूनसे भी कुछ पानेकी आशा नहीं थी। ज्यों-ज्यों कम्यूनवालोंके सुनहरी स्वप्न असफल होते गए, उनका पारस्परिक मतभेद और गाली-गलौज भी बढ़ता गया। लोग कम्यून छोड़कर भागने लगे। भोजनकी तंगी बढ़ते-बढ़ते यहाँ तक पहुँची कि राशनिंग लगाना पड़ा।

मैं अब सोलह वर्षका हो गया था। हमारे कम्यूनसे कुछ कोस दूर एक छोटा-सा लोहेका कारखाना था। वहाँ एक तालेके कारीगरका शागिर्द बन कर मैं कुछ कमाने लग गया। जीवनमें पहलीबार मैं वेतनकी आशासे कड़ा शारीरिक श्रम करने लगा था। मुझे ऐसा लगने लगा कि

मैं बड़ा हो गया हूं। रोज ही मैं तेलमें सने गन्दे कपड़े पहन कर बेहद थका-मांदा अपने घर लौटता था।

गृहयुद्ध प्रायः मिट चुका था और सोवियत् सरकारका सिक्का जम गया था। कम्युनिस्ट पार्टीके सदस्य प्रायः हमारे कारखानेमें आकर भाषण देने लगे। बड़ी आयुके मजदूर तो उनकी बातों पर कम ध्यान देते थे, किन्तु हम नौजवान लड़के-लड़कियाँ उनपर लट्टू होने लगे। चारों तरफ निराशा और अभाव फैले थे। उनकी बातें सुनकर हमारे मनमें एक आशा जाग उठती थी। हमारे कारखानेकी क्लबमें हमने लेनिन, ट्राट्स्की, मार्क्स और एंजिल्सके फोटो लटकाए और दीवारोंपर नारे लिख डाले। मैं सारे भाषण खूब तत्परतासे सुनता था और बीच-बीचमें उठ कर सवाल भी पूछ लेता था। वर्तमानकी कठिनाइयोंके बीच एक उज्ज्वल भविष्यका आकर्षण अनोखा था। मेरा मन कोई गहन विश्वास पानेके लिए तड़पने लगा। हमारे घरमें अविश्वासका वातावरण था। पिताजी कम्युनिस्टोंकी क्रूरताकी निन्दा किया करते थे। मैं उनकी बात समझता था। किन्तु धीरे-धीरे मुझे विश्वास होने लगा कि उनके माप-दण्ड बहुत संकीर्ण हैं, कि उनका आदर्शवाद पुराना पड़कर ठण्डा हो चुका है।

मैं पिताजीको नए जीवनकी ओर खींचना चाहता था। कई बार मैंने उनसे कहा—"आप हमारी क्लबमें आकर भाषण क्यों नहीं सुनते !"

उन्होंने उदास होकर उत्तर दिया—"वे मुझे भला क्या सिखाएंगे। जितना वे जानते हैं उतना तो मैं भुला चुका हूँ। नहीं भाई, बस मेहर-बानी है। अण्डेसे मुर्गी भला क्या सीखेगी ?"

१९२१ की गर्मियोंमें जोरका अकाल पड़ा और साथ ही महामारी भी फैल गई। करोड़ों आदमियोंने प्राण खोए। गृहयुद्धके कई वर्षोंका दुःख-दर्द झेलकर हम भुखमरीके कराल पाशमें फंस गए। वोल्गाके

प्रदेशोंमें अकालका कोप सबसे अधिक था। किन्तु उसकी लपटें नीपरके पार भी आ पहुंची। जहाँ गृहयुद्धमें सबसे अधिक रक्तपात हुआ था, वहीं अकाल भी सबसे अधिक पड़ा। मानो धरती रक्त पीते-पीते विद्रोह कर उठी थी। उन दिनोंकी विभीषिकाका वर्णन करनेके लिए मेरे पास शब्द नहीं हैं। घोड़े, कुत्ते, बिल्लियां, घरके पालतू जानवर—सबपर हमारी भूखी आँख पड़ने लगीं। जो जानवर मनुष्योंने नहीं मारे वे भूखों मर गए और अधिकारियोंके मना करनेपर भी उन मुर्दोंको सबने खाया। वृक्षोंकी छाल नोंच-नोंचकर हमने चाय और सूप उबाले। कच्चा चमड़ा चबा-चबाकर लोगोंने जीवनसे चिमटना चाहा। खेतोंमें एक हरी पत्ती अथवा घासका तिनका नहीं बच पाया। अफवाहें फैलने लगीं कि किसान अपने घरके मरे आदमियोंको खाने लगे हैं। सब-की-सब अफवाहें झूठी नहीं थीं। चारों ओर महाकालका ताण्डव हो रहा था। हम सबको अपनी अपनी फिक्र पड़ी थी। और दूसरोंकी चिंता करनेकी क्षमता ही हम गवां बैठे।

मैं हट्टा-कट्टा और मजबूत था, इसलिए कम भोजनमें भी काम चला लेता था। मैं कम्यूनके एक और लड़के सेन्याको साथ लेकर भोजनकी खोजमें पोल्टावा प्रान्त तक जा पहुँचा। हमने अपने साथ पुराने कपड़े, चाँदीके चम्मच, छोटे-मोटे गहने, ब्रुश और घरकी अन्य चीज बस्त सब ले लीं। सबके बदलेमें हम भोजन संग्रह करना चाहते थे। रुपए की तो कानी कौड़ी भी कीमत नहीं थी, इसलिए चीज बस्त देकर ही कुछ भोजन पानेकी आशा हम रखते थे।

भटकते हुए हम पृलुकी नगरमें पहुँचे। और भी हमारे जैसे सैकड़ों वहाँ आए हुए थे और भोजनके लिए खूब संघर्ष चल रहा था। हम दिन भर धरती पर अपनी चीजें बिछाकर आने-जानेवाले किसानोंसे प्रार्थना करते रहते थे कि हमारी ओर ध्यान दें। संध्या समय हम आस-

पासके गांवोंमें जाकर दर-दर की ठोकर खाते थे। हम कम उमरके थे इस वजहसे बहुतोंको हमपर तरस आ जाता था। मैं यूक्रेनियन भाषा बोल सकता था। इस कारण भी अधिक सफलता मिली। और जब मैं भोजनकी गठरी बांधकर घर लौटा तो मेरा ऐसा स्वागत हुआ जैसे नैपोलियन बोनापार्ट विश्वविजय करके आया हो। इसके बाद मैं कई बार इसी तरहसे भोजनकी खोजमें निकला। नानीका सोनेका क्रास, हमारा आखिरी गहना, भी मैं बेच आया। हम बहुत दिन उसे छातीसे लगाए रहे थे। आशा थी कि शायद उसे बेचे बिना ही काम चल जाए। इन्हीं दिनों अमेरिकासे सहायता पहुँची। अधिकतर खाद्य सामग्री वोल्गाके प्रदेशोंमें बांटी गई। हमारे इलाकेमें भी कुछ अमेरिकन भोजन पहुँचा। खेतोंमें नई फसल लहलहाने लगी और जीवन फिरसे लौट आया। मैं फिर उस लोहेके कारखानेपर जाकर अपना पुराना काम करने लगा।

चौथा अध्याय

लाल जवानी

१९२२ की ग्रीष्म ऋतुमें नयी फसल पक गई। हम अपने मुर्दे गाड़ चुके थे और कोई उन बुरे दिनोंकी याद करना नहीं चाहता था। इन्हीं दिनों हमारी क्लबमें एक कम्युनिस्टका भाषण हुआ। उसने कहा : "देशको कोयले, लोहे तथा तेलकी आवश्यकता है। हमारा भविष्य उन्हींपर टिका है। आपमेंसे जिसको क्रान्तिसे प्रेम है उसे चाहिए कि कारखानों और खानोंपर जाकर काम करें।" सेन्या और मैंने एक दूसरे की ओर देखा। हम दोनोंके मनमें एक ही प्रेरणा जागी थी।

हम कोयलेकी खान पर जाकर काम करने लगे। पहिली रात हमने अन्धेरी बैरकोंमें बिताई, जहाँ कई सौ आदमी काठके नंगे तख्तोंपर सो रहे थे। दीवारोंसे सटाकर, ऊपर नीचे, तख्तोंकी दो लाइनें बनाई गईं थीं। पसीने और बासी भोजनकी बदबू तथा सस्ते तमाकूका धुआँ चारों ओर फैले थे। हम लम्बी यात्रामें थककर चूर हो चुके थे, इस लिए पड़कर सो रहे। सुबह उठे तो देखा कि हमारे सूटकेस गायब हैं। हमारे पास अब वे पुराने और मैले कपड़े बचे थे, जिनको पहिनकर हमने सफर किया था। हम खानमजदूरोंकी बस्तीमें घूमने निकले तो हमारा दिल और भी बैठ गया। बस्ती क्या, बस एक संकरी-सी गली थी जिसके दोनों ओर टीन और काठके घरौंदे बने थे। निहायत गंदी।

चारों ओर कोयलेकी राख छाई थी। हम "समाजवाद" सृष्टि करनेके जो सपने लेकर घरसे चले थे, वे विलीन होने लगे। फिर भी हमने मन समझाया और दो-तीन दिनमें हमारा उत्साह लौट आया।

सेन्या एक खानमें काम करने लगा। मुझे पढ़ा-लिखा देखकर आफिसका काम दिया गया। पढ़े-लिखे लोग वहाँ बहुत ही कम थे। कई महीने तक तो हम उन्हीं सड़ी बैरकोंमें रहते रहे। सब नए आनेवालोंको वहीं स्थान दिया जाता था। फिर हमने एक मकानमें कमरा किराए पर ले लिया। मकानमें पुराने खान-मजदूर रहते थे। धीरे-धीरे मुझे वहाँकी गन्दगी और धूलकी आदत पड़ गई और उस नए जीवनमें रस आने लगा। वहाँ सोवियत् साम्राज्यके कोने-कोनेसे सब जातियों और समाजोंके लोग आकर काम कर रहे थे। बैरकोंका जीवन भद्दा और ऊबड़-खाबड़ था। पुरुष लोग शराब पीकर मारपीट करते रहते थे। कई तो जूआ खेलते और शोर मचाते थे। जूएमें मजदूर लोग अपना वेतन ही नहीं बल्कि जूते और कम्बल तक गंवा देते थे। क्लब, पाठशाला और वाचनालयमें गम्भीर प्रकृतिके दस-पाँच लोग ही जाते थे।

मेरे जीवनमें क्लबका विशेष स्थान था। गृहयुद्ध और अकालके दिनोंमें मेरा पढ़ना छूट गया था। अब फिरसे मैं पुस्तकोंमें समय बिताने लगा। पुस्तकालयकी पुस्तकें तो थी हीं, हम एक दूसरेसे मांगकर भी किताबें पढ़ते थे। प्रतिदिन सांझको और छुट्टीके रोज सारा दिन मैं रसायनशास्त्र, गणित एवं पदार्थ-विज्ञानकी पुस्तकें पढ़ता रहता था अथवा कोयला खोदनेके सम्बन्धमें टेकनीकल लैक्चर सुनने चला जाता। आज कम्युनिस्ट पार्टीके मेम्बरकी हैसियतसे अपना इतिहास दोहराता हूँ तो सबसे पहिले मुझे साथी लाजारेफकी याद आती है। उसीने मुझे कम्युनिस्ट बनाया था। उसने क्लबमें समाजवाद पर कई लैक्चर दिए थे।

मुझे युवकसंघमें नाम लिखाना चाहिए। उमर आनेपर पार्टीमें ले लिया जाऊंगा। कहने लगा कि पार्टी और पार्टीका प्रोग्राम सर्वांग सम्पूर्ण नहीं है, किन्तु पार्टीमें रूसके चुने हुए आदमी हैं। प्रोग्रामसे अधिक महत्व उन आदमियोंको देना चाहिए।

"यदि तुम्हारे जैसे समझदार, आदर्शवादी नवयुवक पार्टीसे किनारा करते तो पार्टीका क्या होता, तुम सोच सकते हो" लाजारेफने कहा "हमारे निकट आकर हमारे काममें हाथ बटाओ। तुम्हारी देशभक्ति देखकर दूसरोंका उत्साह बढ़ेगा। अपने चारों ओर देखो कि क्या हो रहा है—जूआ, शराबखोरी, हायहाय, गंदगी। इनके स्थानमें सफाई, पुस्तकें और आनन्दका वातावरण होना चाहिए! तुम समझ सकते हो कि हमारे सामने कितना बड़ा काम है, हमारे दायित्वका बोझ कितना भारी है। हमें गले सड़े, गंदे भूतकालको मिटाना है। भूतकालकी छाया अभी भी सर्वत्र विद्यमान है। उसे धो पोंछकर साफ करनेके लिए हमें अच्छे आदमियोंकी जरूरत है। समाजवादके नारे लगानेसे हमारा काम समाप्त नहीं हो जाता। हमें जनतामें शिक्षा, संस्कार और प्रकाश फैलाकर एक नया जीवन तैयार करना है।"

इसके पूर्व भी कम्युनिस्टोंने मुझपर जोर डाला था। किन्तु यह नई भाषा थी, जिसने मेरे बचपनके आदर्शवादको फिरसे जगा दिया। मैं लाजारेफसे विवाद करता रहा। मैंने कहा कि विचार करके देखूंगा। किन्तु मन-ही-मन मैं उसका मुरीद हो चुका था और पार्टीमें जानेका फैसला मैंने कर लिया था।

कुछ दिन बाद लाजारेफ मास्को चला गया। खानके बहुतसे साधारण मजदूर, आफिसके कर्मचारी तथा वहाँके उच्च अधिकारी स्टेशनपर उसे विदा करने गए थे। मैं भी उनमें शामिल था। मुझे देखकर लाजारेफ चिल्लाया—"इधर आओ, विट्या। मैंने सुना है कि तुम

युवकसंघमें शामिल हो गए हो। बहुत अच्छा किया। मुबारकबाद। किन्तु मुझे पहिलसे बता देते तो मैं तुम्हारी सिफारिश कर देता।"

"सो तो ठीक ही है। किन्तु मैं अपने बलपर ही सब करना चाहता हूं, किसीकी सिफारिशके बिना।"

"तुम ठीक कहते हो। यह लो, एक छोटा-सा उपहार जो मैंने विशेष तौरपर तुम्हारे लिए बचाकर रखा था।"

वह एक किताब थी। मैंने सोचा मार्क्स अथवा लेनिनकी लिखी हुई होगी। किन्तु घर लौटते हुए मैंने देखा कि शेक्सपीयरके तीन नाटकोंका संग्रह है। लाजारेफ पक्का कम्युनिस्ट था, किन्तु मार्क्स और लेनिनमें अगाध श्रद्धाके साथ-साथ टॉल्स्टायका मैत्री भाव और शेक्सपीयर की रसात्मक भावना भी उसने जगाई थी। मैं सोचने लगा कि क्या यह समन्वय टिकेगा? क्या लाजारेफ की जीत होगी?

नए जीवनमें एक लगन थी, एक उद्देश्यका आभास और एक आदर्शके लिए बलिदानकी भावना। मुझे विश्वास हो गया कि मैं उन चन्द आदमियोंमेंसे हूं, जिनको इतिहासने इसलिए चुना है कि वे रूस तथा समस्त संसारको अन्धेरेसे निकाल कर समाजवादके प्रकाशमें ला खड़ा करें। पाठकोंको यह डींग-सी लगेगी। किन्तु उन दिनों हमारा ऐसा ही विश्वास था और ऐसी ही बातें हम किया करते थे। चुना हुआ व्यक्ति होनेके नाते मुझे कुछ अधिकार भी मिले। मुझे दूसरोंसे अधिक काम करना पड़ता था। रुपए-पैसेसे दूर रहकर सब प्रकारकी व्यक्तिगत महत्वाकांक्षाको त्यागना पड़ा था। हर वक्त मैं कहता रहता था कि मैं युवक-संघका सदस्य आगे हूँ, एक व्यक्ति पीछे। इसके सिवाय मैं एक उद्योगके क्षेत्रमें काम करता था, जिसके कारण मेरी आत्म-तृप्तिकी भावना और भी दृढ़ हो गई।

उसकी आयु तीसेक बरसकी होगी। किसी युनिवर्सिटीमें अध्यापक था। लम्बा, पतला, साफ सुथरे वस्त्रोंसे सज्जित। वह अपनी सीधी भाषामें बात किया करता, मार्क्स और लेनिनके उद्धरण देनेकी उसे आदत नहीं थी। वह नेकटाई बांधता था जिसको क्रान्तिके बाद बूर्जुआ[1] जीवनका प्रतीक माना जाता था। उसे देखकर हमें भी कुछ बूर्जुआ आदतें बनाए रखनेका साहस होने लगा।

एक दिन मैं पुस्तकालयमें बैठा पढ़नेमें मग्न था कि किसीने पीछेसे कहा—"क्या पढ़ रहे हो। मैं जानना चाहता हूँ।" मैंने मुड़कर देखा। साथी लाजारेफ खड़ा था। मैंने मुस्कराकर कुछ लजाते हुए कहा—"अनातोले फ्रांसकी एक पुस्तक है!"

"अच्छा। अनातोले फ्रांस पढ़ते हो। रूसके किसी पुराने या नए लेखककी किताबें क्यों नहीं पढ़ते?" उसने पूछा।

"अनातोले फ्रांसमें बहुत कुछ ऐसा है जो मुझे किसी सोवियत् लेखकमें नहीं मिलता। फ्रांस बहुत गूढ़ है, फिर भी अत्यन्त ईमान्दार। रूसकी पुरानी पुस्तकें तो मैं पढ़ता ही हूं। किन्तु नए लेखक तो राजनीति बघारनेके सिवाय कुछ नहीं जानते। जीवनसे जैसे उनका कोई सम्पर्क ही नहीं।"

"बहुत खूब। किसी रातको मिलो। बातें करेंगे। मेरे कमरेमें चले आओ। परिचय भी बढ़ जायगा।"

कई दिन बाद में उससे मिला। स्वयंसेवाका दिन था। उस दिन मजदूर बिना वेतन लिए ही काम करते थे। हम एक सड़क पर पड़े कोयलेके पहाड़को हटाकर रास्ता साफ कर रहे थे। लाजारेफ भी मज-

१. गैरकम्युनिस्टोंके लिए प्रयुक्त कम्युनिस्ट शब्द। मुसलमान जैसे गैरमुसलमानको काफिर कहते हैं।

दूरके कपड़े पहिनकर बेलचा चला रहा था। मुझे देखकर उसने अभिवादन जताया। मैं बहुत खुश हुआ। उसी सांझको पुस्तकालयमें हमारी दोबारा भट हुई। उसने फिर पूछा कि मैं क्या पढ़ रहा हूँ। मैंने उत्तर दिया कि चरनिशेवस्की की पुस्तक "क्या कर" पढ़ रहा हूं। वह खुश होकर बोला "अच्छी किताब है"।

"हाँ। उसका यह सवाल कि हम क्या करें बार-बार मेरे सामने आता है।" मैंने कहा

"उस सवालका उत्तर करोड़ों मनुष्योंने लेनिनसे पाया है। उसके पूर्व वही उत्तर मार्क्सने दिया था। क्या तुमने मार्क्स और लेनिनको पढ़ा है ?"

"लेनिन थोड़ा बहुत पढ़ा है। मार्क्स बिल्कुल नहीं। हां पार्टीका साहित्य मैं पढता रहता हूं, किन्तु मुझे ऐसा नहीं लगता कि वहाँसे मैं अपने प्रश्नका उत्तर पा सकूँगा।"

लाजारेफ मुस्कुराने लगा। फिर बोला—"चलो मेरे कमरेमें। चाय पीएंगे, कुछ खाएंगे। फिर बातें होंगी। खुलकर। वहां किसीका हरज नहीं होगा।"

कमरा साफ-सुथरा और प्रकाशमान था। खाटपर तोशक बिछी थी। मेज पर पुस्तकें सजी थीं। एक सुन्दर रंगोले गमलेमें गुलदस्ता खिला था। दीवारपर लेनिन और मार्क्सके फोटो टंगे थे। उन दोनों फोटोके बीच टॉल्स्टॉयका प्रसिद्ध फोटो था, बुढ़ापेका चित्र जिसमें किसानके कपड़े पहिनकर टॉलस्टाय कमरबन्दमें अंगूठे लगाए खड़ा है। टाल्स्टॉयका फोटो वहाँ देखकर मैं बहुत प्रभावित हुआ। हम घंटों बैठे बातें करते रहे। पुस्तकोंके बारेमें, पार्टी और देशके भविष्यके बारेमें। लाजारेफने मुझे समझाया कि मुझे उन अल्पसंख्यक लोगोंमें स्थान खोजना चाहिए जो कि कम्युनिस्ट पार्टीके सदस्य हैं। तुरन्त ही

मुझे यह शब्दजाल बुरा लगा। ये लोग दिलकी बात क्यों नहीं कहते? इजवेस्तिया[1] और प्रावदा[2]में छपे सम्पादकीय क्यों दोहरा रहे हैं? तूफानमें घर लौटते समय सेन्या आदिसे बातें हुई तो मुझे मालूम हुआ कि उनको भी वह लफ्फाजी पसन्द नहीं आयी थी। वक्ताओंने जो कुछ कहा उसमें हमारे दिलोंकी बातें नहीं थीं। वे मरे हुए नेताकी बात कह रहे थे, हम अपने मनोंमें कुछ सुनना चाहते थे। लेनिन हमारे लिए एक नेता मात्र नहीं था। लेनिन हमारे अन्तरकी समस्त आशाओंका केन्द्र बन चुका था।

कई दिन पीछे हमने अखबारोंमें वह शपथ पढ़ी जो स्टालिनने रैड स्कायरमें लेनिनकी अर्थीके पास खड़े होकर ग्रहण की थी। संक्षेपमें, किन्तु धर्मग्रन्थोंकी भाषामें, स्टालिनने मृत नेताकी दिखाई राह पर चलने का व्रत लिया था। उसकी बातोंने मेरा अन्तर छू लिया। स्टालिन हमारी पार्टीकी सर्वशक्तिमान पौलिटब्यूरोका सदस्य था, पार्टीका जेनरल सेक्रेटरी भी और नए शासनके आरम्भसे ही वह एक महत्वकी व्यक्ति रहा था। मुझे किन्तु पहले पहल उसी दिन स्टालिनके अस्तित्वका ज्ञान हुआ। अभी तक उसकी तसवीर हमारी दीवारों पर नहीं टंगी थी। उस दिनके बाद स्टालिनका नाम इतना फैला और इतना बढ़ गया कि आज उस दिनकी कल्पना ही करना कठिन है जब कि स्टालिनके नामको कोई जानता न था।

(२)

मैंने खान पर काम करनेमें केवल एक वर्ष बिताया था। किन्तु उस जीवनका मोह छोड़ना मुशकिल हो गया। जिस दिन मैं खान पर

---

१. रूसकी सरकारका मुखपत्र।

२. रूसकी कम्युनिस्ट पार्टीका मुखपत्र।

आया था उस दिन यदि कोई मुझसे कहता कि उस मटमैली जगह, वहाँके ऊबड़खाबड़ लोग और कठोर परिश्रम मुझे एक दिन इतने अच्छे लगने लगेंगे तो निश्चय ही मैं उसको पागल ठहराता। किन्तु धीरे-धीरे मेरी भावनाएँ एक खान मजदूर जैसी हो गईं। उस जीवनके भीतर पैठकर मैंने उसकी हारें और कटुताएँ सहानुभूतिके साथ स्वीकार कर लीं। अब मैं बाहरी दृष्टिसे उस जीवनका द्रष्टा नहीं रह गया था। कोयलेकी खानोंमें वह जीवन मैं कभी नहीं भुला सका हूँ। खान मजदूरोंको मैं सदा अपना समझता रहता हूँ।

सांझ हुए मैं कम्यूनमें पहुँचा। मेरा कुत्ता रेंकर मुझे सड़क पर ही मिल गया और उल्लाससे नाचने लगा। मैंने घरकी खिड़कीमेंसे झाँक कर देखा कि माँ पढ़ रही हैं। वह कुछ बूढ़ी हो गई थी। कुछ अधिक दुबली और कमजोर भी। मैंने धीरेसे द्वार खोलकर बनावटी स्वरमें कहा :

"क्या श्रीमती क्रावचैन्कों यहाँ रहती हैं ?"

माँने मुझे तुरन्त पहिचान लिया और खुशीके आँसू बहाने लगीं। रात होते-होते मैं वहाँकी सब खबरोंसे अवगत हो गया। कम्यून प्रायः मर चुका था। केवल तीन परिवार अभी तक कम्यूनकी धरती पर खेती कर रहे थे। कम्यूनके मकान और मैदानोंकी देख-रेख न होनेके कारण अन्धेरा और उदासी सब ओर छाए थे। जहाँ-तहाँ छतें टूटी हुई थीं, और दरवाजे टूट कर लटक गए थे। दीवारों और छतोंमेंसे लकड़ीके शहतीर निकाल कर लोगोंने ईंधनकी तरह जला डाले थे। आप-पासके किसानोंने कहा कि कम्युनिस्ट क्या खेती-बाड़ी करेंगे, वे तो केवल पकड़-धकड़ मचाना और टैक्स एंठना जानते हैं।

कारखानेमें मुझे मजदूरोंने घेर लिया और वे अनेक सवाल पूछने लगे। मैंने अपनी समझके अनुसार उत्तर देने शुरू कर दिए। कई

मनोविनोदके लिए तो अब समय ही नहीं रहा। जीवनमें कर्त्तव्य-ही-कर्त्तव्य बच रहे। वक्तृताएं, नाटक, पार्टीके साहित्यका पठन-पाठन। हम कहते रहते थे कि हमारे बीचसे ही नए लेनिन और बुखारिन जन्म लेंगे। हम नेतृत्व सम्भालनेके लिए अपने-आपको तैयार कर रहे थे। हम एक नए प्रकारके धर्मके पण्डे थे। पार्टीने जब देखा कि मैं धारा-वाहिक रूपमें लिख और बोल सकता हूँ तो मुझे अनेक काम संभाले गए। सब प्रकारकी कमिटियोंका मैं मेम्बर बना। पार्टीके बाहरके लोगोंमें प्रचारका काम मेरे हिस्से आया। और सब प्रकारके जलसे-जलूसोंमें मुझे सबसे आगे रहना पड़ा। ये जलसे-जलूस रोज ही होते रहते थे। कोयलेको और देशोंमें कोयला ही कहते हैं। हमने उसे एक नया नाम दिया—क्रान्तिके इञ्जिनका ईंधन।

लाजारेफके सिफारिश करने पर मुझे खान पर काम मिल गया था। इसलिए सेन्या अब मुझे क्लर्क कह कर नहीं पुकार सकता था। हम कई मजदूरोंने मिलकर एक टोली बनाई जो एकसाथ काम करती थी और इकट्ठा वेतन पाती थी। हम कड़े-से-कड़ा काम अपने सिर लेकर अपना उत्साह दिखाना चाहते थे। हमने एक नया नारा भी बना डाला—"जो कुछ आवश्यक है वह कठिन हो तो भी किया जाना चाहिए।" एक दिन हमारे नारेकी परीक्षा हो गई। एक खानमें पानी भर गया था। लकड़ीके लठ्ठे लगाकर खानको गिरनेसे रोका गया और काम बराबर चलता रहा। हमने कहा कि हमारी टोली उस खानमें काम करेगी ताकि दूसरे मजदूरोंके सामने उदाहरण पेश हो। मजदूरोंमें अधिकतर लोग चीनी और टार्टर लोग थे। मैं घुटनों तक पानीमें खड़ा होकर काम करने लगा। पानी बरफ-सा ठण्डा था। अचानक मानों चारों ओर प्रलय मच गई। एक भयभरा चीत्कार खानमें गूँज उठा। शायद वह मेरा ही चीत्कार था। हमारी खान ढहने लगी थी।

इसके बाद जब मैंने आँखें खोली तो मैं हस्पतालके एक बिस्तर पर पड़ा था।

हस्पतालमें मैंने जो दो मास बिताए वे मेरे यौवनके सबसे सुखी दिनोंमेंसे कुछ दिन थे। मेरी कहानी एक वीरगाथा बनकर चारों ओर फैल गई। डाक्टरोंने मुझे कम-से-कम एक साल तक खान पर लौटनेसे मना कर दिया और सरकारका भी वैसा ही आदेश पाकर मैं मजबूर हो गया। मैं खानके आफिसमें क्लर्क बनना नहीं चाहता था, इसलिए मैं अपने कम्यूनमें वापिस लौट आनेकी तैयारी करने लगा। इन्हीं दिनों समाचार मिला कि लेनिनकी मृत्यु हो गई है। २४ जनवरी १९२४ को लेनिनने देह त्याग किया था। हमारे सारे प्रदेशमें गहन शोक छा गया। इस शोकमें राजनैतिक मतामतका समावेश नहीं था। हमारे सीधे-सादे मजदूरों और नौजवानोंके लिए लेनिन एक आशादीप बन चुका था। हमारा विश्वास था कि ये सब दुःख झेलकर हम एक स्वर्णिम भविष्यकी तैयारी कर रहे हैं। लेनिनकी मृत्युको हम सबने व्यक्तिगत तौर पर महसूस किया।

एक बड़े जलूसके साथ तीन मील चलकर मैं एक विराट शोक सभामें गया। सांझका समय था, बरफ पड़ रही थी। शीतल बयार छुरीकी तरह हड्डियोंमें घुसी जाती थी। मंच पर लाल और काले कपड़े मढ़े गए थे, किन्तु शीघ्र ही बरफसे सब कुछ ढक गया। एकके-बाद-एक वक्ताने वायुकी सांय-सांयको अपने स्वरमें डुबाकर सरकारी शब्दोंमें शोक निवेदन किया। खारकोवसे आए एक प्रतिनिधि चीत्कार करके बोले: "साथियो! खान मजदूरो! लेनिन मर गए। किन्तु लेनिनका काम चल रहा है। मजदूर-क्रान्तिका नेता, संसारके मजदूरोंका रहबर, मार्क्स और एन्जेल्सका सर्वश्रेष्ठ शिष्य.........

दिन पीछे मैंने कारखानेकी क्लबमें खान मजदूरोंके जीवन-सम्बन्धी एक भाषण भी दिया। लकड़ी काट कर मैंने खलियानकी मरम्मत कर डाली और शहरमें पिताजीसे मिलने चला गया। पिताजी और यूजीन लोहेके कारखानेमें काम करते थे और मैंने भी कारखानेकी प्रयोगशालामें काम करना शुरू कर दिया। पिताजी कम्युनिस्टोंसे समझौता नहीं कर पाए थे। वे मानते थे कि बहुतसे कम्युनिस्ट ईमान्दार और नेक हैं, किन्तु क्रान्तिके बाद जो कुछ हो रहा था वह उन्हें पसन्द नहीं आया। उन्होंने जवानीमें जो सपने देखे थे वे धूलमें मिले जाते थे। उन्होंने मुझे पार्टीका काम करनेसे कभी नहीं रोका, किन्तु कभी-कभी रुष्ट होकर वे कह बैठते थे कि अधिकारी लोगोंके मौज मजे और गरीब मजदूरोंकी दुर्दशा देखो। कहते थे :

"बेटा, हम एकता और समताकी बात किया करते थे। लेकिन कामरेडको देखो, बंगला, मोटरकार, बढ़िया कपड़े लेकर मौज करता है। और देखो इन बैरकोंकी ओर जहाँ गांवसे आनेवाले नए मजदूरोंको मछलियोंकी तरह ठूंसा गया है। अफसरोंके रेस्तरांमें सफाई है, खाना अच्छा मिलता है। लेकिन मजदूरोंके रेस्तरांमें जो कुछ भी मिल जाए ठीक समझा जाता है।"

"थोड़े दिन तसल्ली रक्खो, पिताजी, एकसाथ इतनी समस्याएँ कैसे सुलझ सकती है" —मैं तर्क करता था।

"मुझे समस्याओंके बारेमें सब मालूम है। लेकिन यह जो जनता और शासकवर्गके बीच भेदकी खाई बढ़ती जा रही है, घटती नहीं, इसको मैं क्या समझूं? सत्ता बहुत भयानक वस्तु होती है, बेटा।"

प्रयोगशालासे शीघ्र ही मुझे रोलिंग मिलमें भेजा गया और एक वर्ष पूरा होनेके पूर्व ही मैं फोरमैन बन गया। मेरी आय बढ़ गई और परिवारको सांस लेनेका अवसर मिला। कारखानेमें मैं अधिकतर अधि-

कारी और ऊँचे कर्मचारीवर्गसे मिलता रहता था। पिताने कहा था कि जनताके दृष्टिकोणसे ही सदा मुझे देखना चाहिए। मैं भी बात समझता और मानता था। फिर भी धीरे-धीरे उन नेता लोगोंकी आँखोंसे ही मैं रूसके जीवनको देखनेका आदी हो गया। यूजीन अथवा कौंस्टैन-टाइनमें कोई राजनैतिक उत्साह नहीं था। यूजीन ताना देकर कहता था :—

"भैया, तुममें एक कम्युनिस्ट अधिकारी बननेकी क्षमता है। पिताजीकी लम्बी-चौड़ी हाँक सुनकर अपने रास्तेसे मत हट जाना।"

हमारे पन्दरह सौ मील लम्बे सीमान्त पर जहाँ मध्य एशियामें फैला रूसका साम्राज्य ईरान, अफगानिस्तान, काश्मीर और भारतसे मिलता है, एक लम्बा संघर्ष चल चुका था। बार-बार विद्रोही लोगोंको दबाया जाता था, पर बार-बार वे फिर लूट-पाट और हत्याकाण्ड करते रहते थे। हमारे समाचार-पत्रोंमें विद्रोहियोंके अत्याचारोंकी रोमांचकारी कहानियाँ छपती थीं। हमें बताया जाता था कि वे सब क्रूर और हत्यारे हैं जो मुस्लिम मुल्लोंके उकसाने पर खून-खराबी कर रहे हैं। उनको पदच्युत अमीरों और ब्रिटिश साम्राज्यवादके एजेण्ट कहा जाता था। उनकी क्रूरताकी कोई सीमा नहीं थी। वे रूसी कैदियोंको गर्दन तक धरतीमें गाड़ देते थे ताकि वे गरमी और प्याससे तड़प-तड़प कर प्राण दें और कीड़े और पक्षी उनको नोंच लें।

किन्तु बातें कुछ संदिग्ध लगने लगीं। हम सोचने लगे कि एक व्यवस्थित और सुसजित सेनासे कोरे लुटेरे और डाकू लोग इतने दिन तक क्योंकर लड़ सकते हैं। और फिर लुटेरोंसे इस्लामके मौलवी और ब्रिटिश सरकार क्यों सांठगांठ करने लगी। घटनास्थल हमलोगोंसे बहुत दूर पर था। अचानक वह सब देखनेका अवसर हमें मिल गया। हमारे जिलेसे दो दर्जन लोगोंको उस प्रदेशमें जानेका आदेश मिला। मैं भी

उनमेंसे एक था। गर्वसे हमारी छातियाँ फूल उठीं। गाते-हँसते हम गाड़ी पर सवार हो गए।

रास्तेमें कई दिन तक हम बाकूमें ठहरे। वह तेलका खजाना था। वहाँ आधुनिक शिल्पोद्योग और एशियाकी पुरानी सभ्यता टकरा रहे थे। वहाँकी आबादीमें रूसी और मंगोल लोग थे। अधिकतर लोग पाश्चात्य ढंगके कपड़े पहनते थे, किन्तु मध्यपूर्वके रंगीन लिबास और कजकि़स्तानके लम्बे चोगे और तुर्रेदार टोपियाँ भी दीख पड़ती थीं। मुसलमानोंकी तंग तारीक बस्तियोंमें मैंने पहिले-पहल बुर्कानशीन औरतें देखीं। वे चलती थीं तो ऐसा लगता था जैसे बोरे लुढक रहे हों।

बाकूमें ही मैंने सर्व प्रथम समुद्रके दर्शन किए। समुद्रसे दूर रहने-वालोंके लिए समुद्र सदा एक नई चीज बनी रहती है। बाकूमें देशके अन्य प्रदेशोंसे सैकड़ों और रंगरूट हमारे साथ मिल गए। एक छोटेसे जहाजमें बैठकर हमने कैस्पियन सागरको पार किया। फिर हम अशखा-बादके लिए गाड़ी पर सवार हो गए। अशखाबाद तो प्रायः एशियाका शहर था। कच्ची, संकरी गलियाँ, जिनके दोनों ओर दीवारें जिनमें एक भी खिड़की नहीं थी। बीच-बीचमें चौक जिनपर कभी-कभी तो छत पड़ी होती थी। चौकोंमें खूब भीड़ और शोरगुल होता था। बाजारोंमें लोहार, चमार और दूसरे दस्तकार बैठे हथौड़ा इत्यादि चलाते रहते थे।

अशखाबादसे मोटरोंमें बैठकर हम ईरानकी सीमापर पहुंचाए गए। वहाँ हमें सात-आठ महीने बिताने थे। ज़ारके सिपाहियोंके लिए बनी बैरकोंमें ही हमको भी रक्खा गया। ईरानकी उत्तरी सीमापर पहाड़ोंकी एक शृङ्खला है, उन्हींकी तहलटीमें हमारे कैम्प थे। मैं तो तुरन्त ही कैम्पसे निकलनेवाले समाचारपत्रके सम्पादकीय विभागमें काम करने लगा। सिपाहियोंमें हम कम्युनिस्ट लोग गिने-चुने थे और हम अपने

दायित्वको बहुत गम्भीर मानते थे। सेनामें आजादी और अनुशासन दोनों ही पूरे थे। हम अफसर लोगों तथा हमारे रहन सहनकी नुक्ताचीनी कर सकते थे। अफसरोंका नाम भी कभी-कभी पत्रमें छाप डालते थे।

हमारी ट्रेनिंग समाप्त होनेपर हमें विद्रोहियोंके विरुद्ध रातमें छापे मारनेके लिए भेजा जाने लगा। सीमान्तके दोनों ओर हमारे गुप्तचर काफी संख्यामें थे और वे हमें विद्रोहियोंकी खोज-खबर देते रहते थे। हमारे गुप्तचर ईरानी और अफगानी होटलोंमें बैठकर हजारों पते की बातें सुन लेते थे।

बहुत बार तो हमारी किसी विद्रोहीसे मुठभेड़ नहीं होती थी। बहुत बार गोली चलकर रह जाती। एक बार हमारी पार्टीको जमकर युद्ध करना पड़ा। अन्धेरी रात थी, पानी बरस रहा था, दुश्मन दिखाई नहीं देता था। दोनों तरफके कुछ लोग मारे गए तथा घायल हुए। थोड़े दिन बाद मैं और कई अन्य लोग एक दूसरी मुहिम पर भेजे गए। वहाँ पहलेसे रहनेवाले लोग बहुत प्रसन्न हुए। हमारे पहुँचनेका मतलब था कि उनको घर जानेकी छुट्टी मिल जाएगी। एक तो कीवका रहने-वाला किसान था। उसका एक घोड़ा था, सुन्दर और तेज रफ्तार। नाम रख छोड़ा था लार्ड कर्जन। पता नहीं क्यों। घोड़ेको छोड़ते हुए उसका दिल टूटने लगा। मुझसे उसने वायदा करवाया कि मैं लार्ड कर्जनको अच्छी तरहसे रक्खूँगा। बोला—"इसके साथ अच्छा व्यवहार करोगे तो सगे भाईकी तरह वह तुम्हारा साथ देगा। उसमें आदमियोंसे अधिक समझ बूझ है"

लार्ड कर्जनने बहुत बार मेरी जान बचाई। बहुत जमाकर पाँव रखता था। किन्तु उसीके कारण मुझे फौजसे छुट्टी भी मिली। एक रातको देर तक मैं पहरा दे रहा था। मेरे साथ एक और सिपाही था। दूरसे हमने खटका सुनां। मैंने "हाल्ट" चिल्लाकर घोड़ा दौड़ा दिया।

कर्जनको ठोकर लगी और मैं धरती पर आ गिरा। मेरे साथीने जो कुछ पीछे था आवाजें लगाई किन्तु कोई उत्तर न पा सका। खोजते-खोजते उसे मेरा घोड़ा तो मिल गया, किन्तु मैं नहीं मिला। निराश होकर वह कैम्पमें लौट गया। कई घंटे बाद खोज करनेवालोंके एक दस्तेने मुझे एक पानीके गढ़ेमेंसे निकाला। मैं बेहोश था और खूब चोट लगी थी।

कई हफ्ते तक मैं अशखाबादके मिलिटरी हस्पतालमें पड़ा दर्दसे कराहता रहा। जब सफर करने लायक हो गया तो कीफ चला आया और वहाँके हस्पतालमें एक मास बिताया। दो मास तक मुझे कीफके सैनेटोरियममें आराम करनेकी इजाजत मिली और फिर मैं फोरमैन बनकर अपने कारखानेपर लौट आया। इस समय १९२८ की ग्रीष्मऋतु थी और मैं तेईस बरसका हो गया था।



पाचवाँ अध्याय

नया जीवन

किसी महान नाटकमें काम करनेवाले साधारण अभिनेता नहीं समझ सकते कि वह नाटक कितना महत्वशील है। १६२८ के आरम्भमें मैं एक ऐसा ही अभिनेता था। मनमें उत्साह था, मस्तिष्कमें नए विचारों-का तूफान और नए युगसे नई आशाएं। उन दिनों मेरा देश एक महान क्रान्तिमेंसे होकर गुजर रहा था। स्टालिन और उसके साथी पौलिटब्यूरो तथा, किसी हद तक समस्त पार्टीके भीतर, अपने प्रति-द्वन्द्वियोंसे जूझ रहे थे। वे इस बातपर तुले थे कि रूसमेंसे पूंजीवादके आर्थिक और मानसिक ध्वंसावशेष भी साफ कर दिए जाएं और रूसमें एक ढंगसे कारखाने खड़े किए जाएं तथा खेतीका समूहीकरण हो।

यह एक ऐसा युग था जब कि दुविधाके लिए कोई स्थान नहीं रह गया था। जो कुछ भी पार्टीके मतके विरुद्ध था उसका उच्छेदन करना हमारा धर्म बन गया था। पार्टी लाइन ही हमारा एकमात्र धर्म था जिसके सामने हमें अपने व्यक्तिगत स्वार्थ और मनोरथ, सब त्यागने पड़ते थ। हमारे जीवनका एकमात्र ध्येय था मशीनें बनाना और अधिक मशीनें बनाना। करोड़ों लोगोंको उनकी इच्छा रहते न रहते उनके पुराने काम धन्धोंपरसे हटाकर कारखानोंपर लाया गया। उनको पूरा

खाना नहीं मिलता था, तनपर पूरे कपड़े भी नहीं थे और न थी उनके मनमें किसी स्वर्गकी झांकी। मैं उनके दुःख दर्दको आँखोंसे देखकर भी नहीं देख पाया। मैं तो युवकसंघ और लाल फौजका सिपाही होनेके कारण भविष्यके सपनोंमें डूबा था।

चारों ओर अनेक कमियां थीं और दुःख दर्द भी बहुत था। किन्तु साथ ही साथ एक उमंग और आशाकी आग भी जल रही थी। देशका भविष्य हम सबको बहुत उज्ज्वल लगता था, इसलिए हम पार्टीमें भरती होने लगे। मैं भी इन्हीं दिनों पार्टीका सदस्य बना। उन दिनों एक प्रकारका पागलपन मुझपर छाया रहता था, इसलिए आजकी कड़ुवाहट मनमें उपजनेके बाद उन दिनोंको मैं तोलना नहीं चाहता। उन दिनों मेरे जीवनमें प्रभाव था और था जीतोड़ परिश्रम। वे लोग जो काममें हाथ न बँटाकर बाहर खड़े खड़े नुक्ताचीनी करते रहते थे, उनसे मुझे बेहद चिढ़ थी।

मैं फोरमैनकी हैसियतसे रोलिंग मिलमें काम करता था। खूब जी लगाकर। उच्च अधिकारियों और प्रभावशाली कम्युनिस्टोंमें उठता-बैठता था। कारखानेके पत्रका सम्पादन भार भी मेरे कन्धों पर था। किन्तु कामसे मैं कभी नहीं थका। गरमी और शोरगुलसे भरे कारखानेमें काम करनेके बाद सांझको मैंने कभी आराम करनेकी बात नहीं सोची। सारा समय सभा-सोसाइटी, लिखना-पढ़ना तथा समाज-सेवामें लगा देता था। थकना तो बूर्जुवा बीमारी समझता था। अखबार और रेडियो नए युगके नारे लगाते रहते थे। पूञ्जीवादी देशोंको पीछे छोड़कर आगे बढ़ जाओ! अपने देशमें नित नए उद्योग खड़े करो! कुलक[1] किसानोंके वर्गका नाश करो! इत्यादि, इत्यादि।

---

१. रूसके खाते-पीते किसान जिनको स्टालिनने मिटा डाला।

क्रेमलीनसे हुक्मनामे आते थे। उनके विरुद्ध शंका उठाना ऐसा समझा जाता था मानों कोई भूकम्पके विरुद्ध शंका उठा रहा हो। हम तो नतमस्तक होकर सब आदेश मान लेते थे। हमको जो राजनैतिक शिक्षा मिलती रहती थी उसमें सरकारी आदेशोंको भी समझाया जाता था। मैं नहीं कह सकता कि वे आदेश देते समय क्रेमलीनके अधिकारी भी वही बातें सोचते थे जो कि हमें बताई जाती थीं। किन्तु हमारे मनको तो तसल्ली हो ही जाती थी।

तब तक मुझे कभी भी खुफिया पुलिससे पाला नहीं पड़ा था। इसलिए मेरे वास्ते खुफिया पुलिसका मानों अस्तित्व ही नहीं था। इसके सिवाय मैं यह भी मानता था कि देशके जीवनमें ऐसे कठिन समयमें सरकारको सब लोगों पर कड़ी नज़र तो रखनी ही चाहिए। केवल बूढ़े लोग जो जमाना देख चुके थे जानते थे कि देश किधर जा रहा है। वे बड़बड़ाते थे तो हम लोग हंसकर कह देते थे कि उनकी बुद्धि सठिया गई है।

समय-समय स्थानीय कम्युनिस्ट मुझे पार्टीमें नाम लिखानेके लिए कहते रहते थे। उनका कहना था कि मैं उनके साथ मिलकर काम कर रहा हूँ और एक नए जीवनके लिए उनके संग्राममें भाग ले रहा हूं, तो उनकी पार्टीसे किस बातको लेकर अलग रहना चाहता हूं। मैं उनकी बात मानता था। फिर भी मैं चाहता था कि पार्टीमें उस समय भर्ती होऊं जब कि मेरे मनमें कोई शंका न रह जाए और पत्थर की जात होकर समाजवादी संसारके नवनिर्माणमें खून पसीना एक कर सकूं। आखिरकार जब मैं अपने पितासे कहने गया कि मैं पार्टीमें भर्ती होना चाहता हूँ तो न जाने क्यों मुझे लाज सी लगी। वे बोले :

"मैं तो जानता था कि एक दिन आगे पीछे तुम पार्टीमें जाओगे ही। मैं देखता रहा हूं कि तुम राजनैतिक क्षेत्रमें अधिकाधिक धंसते जा रहे हो। तुम राजनीतिकी ही पुस्तकें पढ़ते हो और लिखते हो तो केवल

राजनैतिक लेख। किन्तु इससे मैं खुश हूँ, यह तो मैं नहीं कहूँगा। तुम जानते हो कि हमारे चारों ओर कितना अन्याय फैल रहा है, किस प्रकार शासक और शासित वर्गोंमें भेद बढ़ता जा रहा है। मैं जानना चाहता हूँ कि इस विषयमें तुम्हारा क्या मत है। तुमने क्या कुछ सोचा समझा है?"

"आपके प्रश्न सुनकर मुझे खुशी हुई, पिताजी"—मैंने उत्तर दिया—"मैं सब कुछ साफ-साफ ही बताऊँगा। मेरे ऊपर आपके बहुत अहसान है, मैंने आपसे बहुत-कुछ सीखा है। आपकी ईमान्दारी और आपके क्रान्तिकारी जीवनके प्रति मुझमें श्रद्धा है। किन्तु मैं चाहता हूँ कि आप मुझे समझनेकी कोशिश करें। मैं चौबीस बरसका हो गया। मैंने जिन लोगोंके बीच काम किया है और जीवन बिताया है, वे सब नए युगके लोग हैं, जो नए विचारोंमें विश्वास रखते हैं, जो हमारे देश का भविष्य बनानेके लिए बड़े-बड़े मनसूबे रखते हैं। मैं पार्टीके निकट एक दिनमें तो पहुँचा नहीं। मैंने धीरे-धीरे ही पार्टीमें विश्वास करना सीखा है। अब मैं एक पार्टीके सदस्यका-सा मनोभाव रखता हूँ।

"मैं जानता हूँ कि रोजमर्राके हमारे जीवनमें बहुत-सी कमियाँ हैं। आपा-धापी, कमीनापन और दुःख-दर्द—कुछ भी मेरी आँखोंसे छुपा नहीं। आपकी तरह मुझे भी वह सब खटकता है। किन्तु मैं सोचता हूँ कि ये सब ऐसी बातें हैं जो बीत जाएँगी। एक पिछड़े हुए समाज को आधुनिक समाज बनानेका काम बहुत बड़ा है। उस कामको करते समय भूलें और अन्याय तो होंगे ही। लेकिन मैं नहीं चाहता कि एक ओर खड़ा-खड़ा मीन-मेख निकालता रहूँ। मैं पार्टीके भीतर जाकर ईमान्दारीसे काम करना चाहता हूँ। वहाँ मैं बेईमानीके विरुद्ध लड़ सकता हूँ और ईमान्दारीका साथ दे सकता हूँ।

"मैंने बहुत सोच-विचार कर ही यह क़दम उठाया है। समय ही बता सकेगा कि पार्टी ठीक दिशामें जा रही है या नहीं। मैं, किन्तु, पार्टीके उद्देश्योंमें विश्वास रखता हूँ और उनकी पूर्तिके लिए अपना सर्वस्व देना चाहता हूँ। आखिर आप भी चाहते हैं कि देशमें शिल्पोद्योगकी उन्नति हो। आप घोड़ेके स्थानमें ट्रैक्टरसे खेती करनेका विरोध नहीं करेंगे। यदि किसान अपनी मर्जीसे सामूहिक खेतियोंमें शामिल होना चाहें, तो आप भी उनकी पीठ ठोकेंगे।"

पिताजीकी दृष्टि कठोर हो उठी। किन्तु उस दृष्टिमें क्रोध नहीं था। कहने लगे :—

"ठीक कहते हो। मैं इन बातोंका विरोध नहीं करता, बेटा! और तुम्हारी भावनाको भी मैं समझता हूँ। वास्तवमें तो जवानीमें जैसा मैं था, वैसे ही तुम हो। अपनी जवानीमें मैं भी तो यही सोचता करता रहा हूँ। अपनी अन्तरात्माकी आवाज़ सुनकर मैंने अपनी, अपनो पत्नी अथवा बच्चोंकी परवाह कभी नहीं की। मैं कहता था कि किसी विश्वासके न होनेसे तो अन्धविश्वास ही अच्छा। तुमको गोर्कीकी वाणी याद है—'यदि तुम मानते हो, तो भगवान है ; नहीं मानते, तो नहीं है'। मैं अपने दिलसे यही चाहता हूँ कि तुम सदा सफल रहो। तुमपर कभी आफ़त न आए।

"किन्तु जनतासे कभी दूर न होना, बेटा! तुम बड़े-बड़े ओहदे प्राप्त करके यह मत समझ बैठना कि तुम बड़े कामके आदमी हो गए हो। सदा यही देखते रहना कि जनताके जीवनमें अधिक सुख, सम्पन्नता और स्वाधीनता आए कि नहीं। तुम जनताके निकट जाकर उसको समझनेकी कोशिश करते रहना, उसकी सहायता करते रहना। मैं तुम्हारा एहसान मानूँगा। नारोंके चक्करमें कभी मत आना, बेटा! राजनैतिक लोग बढ़-बढ़कर बातें किया करते हैं। तुम उनकी करतूतों

पर ध्यान देना। क्रेमलीनमें बैठे नेता लोग सिद्धान्तके पहाड़ खड़े कर देंगे। किन्तु मैं तो व्यवहारमें उन सिद्धान्तोंको परखनेका आदी हूँ। भगवान करे तुम्हें कभी अपना विश्वास न खोना पड़े।"

कुछ रुककर वे फिर बोले—"कौन कह सकता है! शायद तुम और हमारे दूसरे बच्चे जनताके जीवनमें सुख और स्वाधीनता जुटानेमें सफल हो जाओ।"

"मुझे पक्का विश्वास है, पिताजी!"—मैंने कहा।

मैं पिताकी उन बातोंको पार्टीमें रहते हुए और काम करते हुए कभी नहीं भूला। मुझे ऐसा लगता रहा है जैसे पिताजी मेरा काम देख रहे हैं, मेरा आचरण परख रहे हैं। १९२९ के बीचमें मैं पार्टीमें भरती हो गया। मुझे वह अपने जीवनकी सबसे बड़ी घटना लगी। नए रूसके खास लोगोंमें अब मेरी गिनती थी। अब मैं एक व्यक्ति नहीं रह गया था जो चाहे जैसी बातें सोचे, चाहे जो कहे और करे और चाहे जिनके साथ नाता जोड़े। मेरा सारा जीवन अब एक आदर्शकी भेंट चढ़ चुका था। मैं अब एक ऐसी कठोर अनुशासनवाली सेनाका सिपाही था, जिसमें नेताकी बात मानना ही सबसे ऊँचा कर्त्तव्य है। गलत लोगोंसे मिलना, गलत बातें सुनना अब मेरे लिए एकबारगी निषिद्ध था।

(२)

१९२८ में शाख्टीका मामला हुआ और सारे समाचार-पत्रोंमें उनका शोर मच गया। कोयलेकी खानोंमें काम करने वाले कुछ इञ्जीनियरों पर मास्कोमें मुकदमा चलाया गया। रूसी और विदेशी पत्रकार कचहरीमें बैठे थे और कैमरा तथा रेडियोके द्वारा कचहरीकी कार्रवाई सारे देशको सुनाई जा रही थी। क्रेमलीन जनतासे कह रही थी: "देखिये, अब आप समझ सकते हैं कि हमारे देशमें इतना अभाव क्यों रहा है।

पूँजीवादके गुप्तचर, पुराने युगके ध्वंसावशेष, जान-बूझकर हमारे कारखानोंमें दुर्घटनाएँ खड़ी करके हमारे उत्पादनको गिराते रहे हैं।"

यह था पहला झूठा मुकदमा। पीछे चलकर यह रोजका किस्सा हो गया। इन सब मुकदमोंमें अभियुक्त लोग चुपचाप अपने अपराध स्वीकार कर लेते थे। शाख्टीके मुकदमेमें कुछ अभियुक्तोंने अपराध माननेसे इन्कार किया था। पीछे चलकर कभी ऐसा नहीं होने दिया गया। सरकार चाहती थी कि पुराने इञ्जीनियरोंको हटाकर नए इञ्जीनियर तैयार किये जाएँ, जिनको भूतकालकी कोई याद न हो और जो पार्टी तथा सरकारके पूर्णतया भक्त हों। ये नए इञ्जीनियर पार्टीके सदस्योंके भीतरसे तैयार करनेकी योजना बनाई गई और हजारों पार्टी मेम्बरों तथा ट्रेड यूनियनोंके सदस्योंको आदेश दिया गया कि नई यूनिवर्सिटियोंमें जाकर पढ़ें। यह सर्वशक्तिमान पॉलिटब्यूरोका आदेश था।

१९३० में पार्टीकी केन्द्रीय व्यवस्थापक समितिके कुछ लोग हमारे कारखानेमें भी छानबीन करने आए। मुझे डायरेक्टरके कमरेमें बुलाया गया। महागनीके बड़े टेबिल पर टेलीफूनोंका जाल बिछा था। उस दिन डायरेक्टरकी टेबिल पर एक नवागन्तुक बैठा था। उसका फोटो मैंने देखा था, इसलिये पहिचान गया कि पार्टीके प्रमुख नेताओंमें-से एक आदमी है। उसका नाम था आर्केडी रोजेन गोल्ट्ज़। मुझे देखकर बोला—"क्या खबर है कामरेड क्रावचैंकों।" उसने उठकर हाथ मिलाया और फिर कहने लगा—"मैंने तुमको इसलिये बुलाया है कि मैंने तुम्हारे कामकी तारीफ सुनी है। तुम उत्पादन बढ़ाना चाहते हो। बहुत अच्छी बात है। तुम समाचार-पत्रोंमें भी खूब अच्छा लिखते हो। क्या तुम्हें कुछ चाहिये?"

"नहीं, कुछ नहीं। धन्यवाद।"

"तो अपने बारेमें कुछ बताइये।"

मैंने संक्षेपमें अपना जीवन-इतिहास उन्हें बता दिया। क्रान्तिकारी परिवारमें जन्म। कम्यूनमें काम। कोयलेकी खानोंमें मजदूरी और युवक-संघमें प्रवेश। लाल-सेनामें नौकरी। यह कहानी मुझे बहुत बार बतानी पड़ी है। अपनी जीवन-गाथाको बार-बार सुनाना सोवियत् रूसमें एक साधारण घटना है।

रोजेनगोल्ट्ज् सुनते रहे और मुझे ध्यानसे देखते रहे। फिर बोले—"तुम नौजवान आदमी हो। पच्चीस बरसके भी नहीं हुए हो। पार्टीको इञ्जीनियरोंकी जरूरत है। क्या तुम आगे पढ़ना चाहते हो? मैं तुमको किसी टेक्नीकल स्कूलमें कुछ सालके लिये भेज दूँगा। उसके बदलेमें तुम पार्टीकी सेवा करते रहना। पार्टीको अपनी निजी स्कीमके अनुसार शिल्पोद्योग खड़े करनेके लिये अपने निजके इञ्जीनियर चाहियें।"

"धन्यवाद। मैं तो देशके लिये जो कुछ भी कर सकता हूँ, खुशीसे करूँगा।"

अगले दिन सर्गी ओर्डझोनिकिड्ज़े कारखानेमें आ धमका। अचानक हमने देखा कि कारखानेके अफसरों और प्रान्तके अधिकारियोंसे घिरा वह हमारे डिपार्टमेंटमें आ रहा है। शायद स्टालिनको वहाँ देखकर ही मुझे अधिक ताज्जुब होता। ओर्डझोनिकिड्ज़े स्टालिनका अन्तरंग मित्र था, मजदूर-किसान विभागका कमीसार और पार्टीकी केन्द्रीय व्यवस्थापिका समितिका मुख्य। डायरेक्टरने मुझसे परिचय करा दिया।

"हाँ, मैंने तुम्हारा नाम सुना है।" ओर्डझोनिकिड्ज़ेने हाथ बढ़ाकर कहा—"काम कैसा चल रहा है?"

"अच्छा हो रहा है।"—मैंने कहा—"किन्तु और अधिक अच्छा हो सकता है।"

"बहुत खूब। अधिक अच्छा बनानेके लिये हम क्या कर सकते हैं?"

"दो-चार शब्दोंमें कहना तो बहुत कठिन है।"

"शरमाओ नहीं। बोलो।"

"तो देखिये कामरेड, हमारे पास मशीनें बहुत ज्यादा हैं और एक-दूसरेका काम देखनेवाले लोग भी अधिक हैं। मैंने क्रान्तिके पूर्व इस कारखानेका हिसाब देखा है। क्रान्तिके बाद ३५ प्रतिशत स्टाफ बढ़ चुका है। मुझे कहीं भूल मालूम पड़ती है। लोग मुफ्तमें एक-दूसरेके काममें बाधा डालते हैं। सब लोगोंके ऊपर उत्पादनका उत्तरदायित्व है, इसका मतलब है कि किसी पर भी उत्तरदायित्व नहीं। हमारा काम कम होता है, खर्च ज्यादा। क्या कारण है कि पूँजीपति इसी कारखानेसे नफा कमाते थे और हमको नुकसान हो रहा है? मजदूर तो उतना ही काम कर रहे हैं, जितना पहिले करते थे। इसका मतलब यह हुआ कि हमारेमें ही कुछ कमी है।"

मैं जोशमें आकर यह सब कह गया। देखा कि कारखानेके अफसरोंका मुँह लाल होता जा रहा है। डायरेक्टरने खाँस कर मुझे टोका। पार्टी और ट्रेड यूनियनके प्रतिनिधि फड़फड़ाने लगे। हमारे विभागमें काम बन्द हो गया और कोई चिल्लाकर बोला :—"बहुत अच्छे, विक्टर, बहुत अच्छे।"

"हाँ" मैं शब्दोंके प्रवाहमें बहता हुआ कहने लगा "शोर तो बहुत मचता है, काम कुछ नहीं होता। अनुशासन इसीलिए कमजोर है कि बहुतसे लोग अनुशासन लादनेमें लगे हुए हैं। यहाँ जरूरत है कि एक आदमीका दायित्व हो और उसीका अनुशासन। चारों तरफसे इतनी दखल अन्दाज़ी नहीं होनी चाहिए।"

"बहुत खूब" वह बोला "और तुम्हारी बात ठीक है। हमारा नेता भी ऐसा ही सोचता है। तुमको जाकर और अध्ययन करना चाहिए।"

वह हाथ मिलाकर चल पड़ा और पीछे-पीछे सहमे हुए और लोग भी चलने लगे। दो कदम पर वह मुड़कर फिर बोला—"यदि तुमको कभी कोई काम हो या मुसीबतका सामना हो तो मुझे खबर कर देना। मैं तुम्हारी सहायता करूँगा।"

पीछे बुरे दिनोंमें मैंने उसके वायदेका फायदा उठाया। उसी दिन मुझे ऐसा लगा जैसे ओर्डझोनिकिड्जेने मुझे अपना बेटा बना लिया है। इस प्रकार सर्वशक्तिमान लोगोंके बीच मुझे एक त्राता मिल गया। १९३७ तक वह जिन्दा था। तब तक मुझे कभी भय नहीं लगा। मेरे भीतर यह विश्वास बना रहा कि मैं स्टालिनके मित्रको जानता हूं और इसी कारण मुझमें साहस बना रहा। मेरे माता-पिता और भाई-बहिनको भी मेरे सौभाग्य पर हर्ष हुआ। माँको कभी यह अच्छा नहीं लगा था कि मैं भी पिताजीकी तरह फोरमैन रह कर जीवन बिता दूं। वह मन-ही-मन दुःख मानती रहती थी कि क्रान्तिके कारण मेरी शिक्षा बन्द हो गई। अब मुझे इञ्जीनियर बननेके लिए तैयार होना था और मन-ही-मन वह फूल उठी। पिताजी भी बहुत खुश हुए। एक दिन मैंने सुना कि गर्वके साथ वे अपने दोस्तोंसे कह रहे हैं—"मेरा बेटा अब इञ्जीनियर बनेगा।"

मैंने प्रवेश-परीक्षाके लिए कई महीने तक किताबें रटीं। फिर १९३१ के आरम्भमें ही मैं खारकोवके टेकनीकल ईन्स्टीच्यूटमें भरती हो गया।



छठा अध्याय
खारकोवमें छात्र

मैं पचीस बरसका होकर फिर छात्र बन गया। राज्यकी मुझपर मेहरबानी थी। मुझे जो छात्रवृत्ति मिलती थी वह जीवन बिताने के लिए काफी थी। किन्तु भूख और सरदी फिर मेरे साथी बन गए। इन्स्टीच्यूटमें भानमतीका कुनबा जुड़ा था। आदमी, औरतें, लड़के, लड़कियाँ। अधिकतर छात्र बीस बरसके ऊपर थे और बहुतसे तीस भी पार कर चुके थे। कुछ ऐसे लोग थे जो कि बड़े परिवारोंमें जन्म लेकर शिक्षा-दीक्षा पा चुके थे। उनके साथ पढ़ने बैठे नौजवान मजदूर जिनके लिए यह नयी शिक्षा एक चमत्कार था, और उत्पीड़न भी। टेकनीकल सूझ-बूझ वाले लोगोंकी पलटन तैयार करनेके लिए कारखानों, खानों, आफिसों, खेतियों और सेनासे खोज-खोजकर योग्य लोग निकाले गए थे। खारकोवके रहनेवाले भी कुछ छात्र थे जो अपने परिवारोंके साथ रहते थे। और मध्य एशियासे आए हुए ऐसे लोग भी थे जिन्होंने पहले कभी पाश्चात्यका कोई नगर ही नहीं देखा था। युद्धसे लौटे हुए रणबांकुरे और कम्युनिस्ट पार्टीके चतुर राजनीतिज्ञ—सभी एक साथ मिलकर इञ्जीनियर बननेकी तैयारी करने लगे।

शायद ही इतनी लगनके साथ और कहीं पर छात्रोंने अपनी पढ़ाई की हो। हमको ऐसा लगता था मानों एक घना जङ्गल साफ करते हुए

हम रास्ता निकाल रहे हैं, मानों किसी प्रतिपक्षी सेना पर आक्रमण करके उसे नीचा दिखा रहे हैं। साधारणतया स्कूल, कालिजमें जो एक विद्वत्ताका शान्त वातावरण देखनेको मिलता है, वह वहाँ नहीं था। हजारों छात्रोंके रहनेके लिए एक बहुत बड़ा होस्टल बना था। एक-एक कमरेमें चार, पाँच अथवा अधिक लोग रहते थे। सरदीमें ठण्डसे बचनेका कोई उपाय नहीं था और गरमीमें लू झुलस देती थी। कभी-कभी तो सरदी इतनी अधिक होती थी कि पानी जम जाता था। हम लकड़ीके टुकड़े, टूटा फर्नीचर, पुराने अखबार इत्यादि जलाकर अपने कमरेका स्टोव गरम करते थे। स्टोव छोटा था और उसकी चिमनी जिसमें बहुतसे जोड़ थे खिड़कीमेंसे बाहर निकलती थी। शायद छत तक चिमनी बनानेका सामान न मिला हो। इस प्रकार भूख और सर्दीसे लड़ते हुए हम पढ़ते रहते थे, बहस करते थे और अपने देशके औद्योगिक भविष्यके स्वप्न देखा करते थे।

लड़कियाँ अलगसे रहती थीं, हालांकि हम लोग खूब मिलते-जुलते थे और साथ-साथ बैठकर पढ़ने-लिखने पर भी कोई रोक-टोक नहीं थी। बहुतसे लोगोंमें प्रेम-सम्बन्ध हो गया। कोई आकर हमको इस सम्बन्धमें उपदेश नहीं देता था। फिर भी हम सब सदाचारी बने रहे। छात्रोंमें बड़ी गम्भीरता थी और जो दुःख-दर्द झेलकर वे एक मंजिलकी ओर बढ़ रहे थे, उसके बीच छिछोरेपनकी गुञ्जायश नहीं थी।

मेरे कमरेमें चार लोग और थे। एलेक्सी कारनौखोव, जार्ज विगुरा, वान्या अवदाशचैन्को और पावेल पाखोल्किन। हम सब पार्टी के सदस्य थे, जिनको विशेष तौर पर यहाँ लाया गया था। युवक-संघकी केन्द्रीय-समितिका सदस्य होनेके कारण एलेक्सी तो एक प्रकारसे बड़ा आदमी था। गठा हुआ बदन, भूरे बाल और भूरी आँखें जिनसे

ईमान्दारी टपकती थी—वह देखनेमें और चरित्रका भी अच्छा था। उस जैसे खरे स्पष्ट-वक्ता और तीक्ष्ण बुद्धि रखनेवाले लोग कम्युनिस्ट पार्टीमें कम ही थे। अपनी पदवीके कारण उसमें कोई अकड़ हमने कभी नहीं देखी। स्कूल और अन्य मामलोंको लेकर वह सबसे खुलकर बातचीत करता था।

हमारी पढ़ाई-लिखाईमें टेकनीकल शिक्षासे भी ऊपरका स्थान राजनैतिक शिक्षाको दिया गया था। सरकार हमको केवल इञ्जीनियर ही नहीं, कम्युनिस्ट इञ्जीनियर बनाना चाहती थी। गणित अथवा विज्ञानमें फेल होना कोई बड़ी बात नहीं मानी जाती थी। किन्तु जो मार्क्स, एन्जेल्स तथा स्टालिनके लेख पढ़कर उनमें पारङ्गत नहीं हो पाते थे, उनको इन्स्टीच्यूटसे निकाल दिया जाता था। हम पाँचों साथी हवाई जहाज बनानेकी शिक्षा पा रहे थे। हवाबाज़ीको सरकार बहुत महत्व देती थी। हममेंसे केवल एक व्यक्तिको ही इस सम्बन्धमें पहिले से कुछ ज्ञान था। फिर भी हम सब अपने आपको बड़ा भाग्यशाली मानने लगे। हमारे बीच मतभेद हो जाते, कहा-सुनी भी हम कर लेते; किन्तु एक बन्धुत्वका भाव दृढ़ हो गया था। जब हममेंसे किसीको अपनी प्रेमिकासे मिलने जाना होता, तो सब उसकी सहायता करते थे। कोई अच्छी-सी नेकटाई देता, कोई अपना साफ कमीज और पतलून आगे रख देता और जरूरत होने पर हम अपनी अंटिया झाड़कर रुपए-पैसे भी जुटा देते थे।

इन्स्टीच्यूटका अपना समाचार-पत्र था। मैं तुरन्त ही उसका सहसम्पादक बन गया। हमारे होस्टलके विषयमें अनेकों शिकायतें आती थीं, जो हम पत्रमें छाप देते थे। राशन थोड़ा था, रसोई खराब बनती थी, कपड़े धोनेका उचित प्रबन्ध नहीं था, सब ओर गन्दगी और अव्यवस्था फैली रहती थी। हम इन सब बातोंको लेकर खूब टीका-

टिप्पणी करते रहते थे। आखिरकार पार्टी और युवकसंघने मिलकर छात्रोंकी एक बड़ी सभा बुलाई। हमारी छोटी बैठकमें पहिले ही फैसला हो चुका था कि क्या प्रस्ताव रक्खा जाए। मैंने खड़ा होकर सुझाया कि होस्टलका सब दायित्व और प्रबन्ध स्वयं छात्रोंको संभालना चाहिये। एलेक्सीने प्रस्ताव पेश किया कि मुझे ही वह समस्त भार उसी समय अपने ऊपर ले लेना चाहिये। इस बात पर एक सुन्दर लड़की, जिसको मैंने पहिले कभी नहीं देखा था, उठकर बोली कि वह कुछ कहना चाहती है। उसने कहा—

"मैं कामरेड क्रावचैन्कोके चुने जानेका अनुमोदन करती हूँ। मैं आठ सालसे उसको जानती हूँ और मुझे विश्वास है कि वह बहुत लायक आदमी है।"

वह लड़की वास्तवमें बहुत सुन्दर थी। कुछ भरे हुए शरीरकी। बहुत साफ कपड़े पहने हुए थे। बोलनेके ढङ्गमें साहस और आत्म-विश्वास टपकते थे। सभामें बैठा-बैठा मैं सोचने लगा कि न जाने वह कौन है और मुझे कैसे जानती है। मुझे होस्टलका प्रबन्धक चुन लिया गया। सभाके बाद मैं भागकर उस लड़कीके पास पहुँचा। वह शरारत भरी हँसी-हँसकर बोली—"क्या खबर है, कामरेड। मैं जानती हूँ कि तुम मुझे नहीं पहिचानते, लेकिन मैं तुम्हें पहिचानती हूँ।"

"तो अपना भेद मुझे भी बता दो।"—मैंने कहा।

"मेरा नाम पाशा है। कुछ याद आया ?"

"पाशा ? माफ करना, मुझे कुछ याद नहीं।"

"तो एक बात और याद दिलाती हूँ। कोयलेकी खान पर मैं वैगन धकेलती थी।"

"मुझे सब कुछ याद आ गया।" मैं विस्मित होकर बोला—"ओहो। तुम वही पाशा हो।"

हम दोनों हँसने लगे और मैंने खुशीके मारे उसे छातीसे लगा लिया। मैंने एलेक्सीको आवाज देकर कहा—"लो पाशासे मिलो। पिछली बार मैं जब इससे मिला था, तो यह फटे-चिथड़े पहनती थी और कोयले-सी काली थी।"

"और अनपढ़ गँवार भी।"—पाशाने अपनी ओरसे जोड़ दिया।

"हाँ। और अब देखो तो इसको। एक छात्रा है। सब प्रकारसे सुसंस्कृत। कोयलेकी कालीके पीछे क्या रूप छिपा था यार। क्रान्ति की सफलताकी यह निशानी है।"

सचमुच उस लड़कीमें आश्चर्यजनक परिवर्तन हुआ था। खानमें मैंने उसे देखा तो वह एक गँवार, झगड़ालू, किसानकी लड़की थी जिसके पाँवमें चिथड़े लिपटे थे और लम्बे बालोंकी दो चोटियाँ कमर पर झूल रही थीं। अब तो उसके हाव-भाव अथवा बातचीतमें उस पुराने जीवन की कोई झलक ही नहीं देखी जा सकती थी। उस समय मुझे ऐसा लगा था जैसे वह पिंजरेमें बन्द जंगली जानवर हो, जो कि उसे सभ्य बनानेकी चेष्टायें पसन्द नहीं करता।

एलेक्सी और पाशामें गहरी दोस्ती हो गई। मैं अपने आपको उस दोस्तीका पहरेदार समझने लगा। खारकोव नगरकी सोवियत् तथा स्थानीय पार्टीकी सहायतासे हमारे होस्टलमें सुधार होने लगे। राशन बढ़ाया गया। ईंधन भी अधिक मिलने लगा। हमने मिलकर चारों ओर सफाई करना शुरू कर दिया। एक नाईकी दूकान खोली गई, उसके साथ ही लड़कियोंके लिये सौन्दर्य-सज्जाका प्रबन्ध भी किया गया। इन सब कामोंके लिये चारों ओर मेरी तारीफ होने लगी। किन्तु इतने सब सुधार होने पर भी हमारा जीवन कठोर ही बना रहा। हमारी अपनी तकलीफें तो थीं ही, किन्तु हमारे चारों ओर शहर और देहातमें हालत बुरी होती जा रही थी। हम खुलकर बातें नहीं कर सकते थे,

सबको सरकारका भय लगता था। फिर भी हम जानते थे कि हमारे चारों ओर क्या हो रहा है।

अफवाहें आती थीं कि किसानोंको बहुत बेरहमीके साथ मारा जा रहा है। हम प्रायः नित्य ही देखते थे कि किसानोंसे ठसाठस भरी माल गाड़ियाँ उत्तरकी ओर जा रही हैं। उन बेचारोंको उनके घरोंसे निकालकर बेगारके लिये साइबेरिया भेजा जा रहा था। कम्युनिस्ट कार्यकर्त्ताओंकी हत्याएँ हो रही थीं और बदलेमें गाँवके गाँव उजाड़े जाते थे। गाँव भरके लोगोंको इकट्ठा करके गोली मार दी जाती थी। किसान अपने ढोरोंको मारकर अपना विद्रोह जता रहे थे। वे नहीं चाहते थे कि उनकी खेतियाँ छीनकर समूहीकरण किया जाए। सरकार ने घोषणा की थी कि इस प्रकार ढोरोंके मारनेवालोंको मौतकी सजा मिलेगी। हमको विश्वास हो गया कि अफवाहें झूठी नहीं हैं।

शहरके स्टेशनों पर तिल धरनेको स्थान नहीं रहा। भूखे और फटेहाल किसान देहातसे भाग-भागकर शहरमें आ घुसे। यतीम बच्चे जो गृहयुद्धमें हमने देखे थे फिर चारों ओर दिखाई देने लगे। गलियोंमें भिखमंगे फिरने लगे। इनमें अधिकतर देहातके लोग थे। किन्तु कुछ शहरके रहनेवाले भी। समाचार-पत्रोंमें खबरें छप रही थीं कि रूसमें क्या-क्या महान् काम हो रहे हैं। रेलवे लाइनें बन गईं, कारखाने खुल गए, खेतियोंका समूहीकरण हो गया, इत्यादि इत्यादि। स्टालिनके नाम जनताकी ओरसे धन्यवाद जताते हुए हजारों पत्र छपते थे। दूर-दूर देशोंसे, यहाँ तक कि आस्ट्रेलिया तथा अमेरिका तकसे, प्रतिनिधिमण्डल आकर रूसमें होनेवाले चमत्कार देख जाते थे और पागलोंकी तरह सोवियत् सरकारके गुण गाने लगते थे। हम रूसमें रहनेवालोंकी कभी समझमें नहीं आया है कि बाहरसे आनेवाले ये लोग इतने अन्धे क्यों होते हैं और क्यों नहीं वे तड़क-भड़कके पीछे छुपा कोढ़ भी देख पाते!

न जाने क्या सत्य था और क्या मिथ्या। एक ओर थी भुखमरी, गाँव-गाँवमें घोर आतंक, यतीम बच्चोंकी फौज—और दूसरी ओर हमारे कारनामोंके अमूर्त आँकड़े। क्या ये दोनों बातें एक ही जटिल सत्यके दो पक्ष थे? ऐसे सवाल न तो खुलकर पूछे जा सकते थे और न कोई उनका उत्तर ही दे सकता था। किन्तु एकान्तमें मैं और एलेक्सी बैठ कर ये ही प्रश्न दोहराते थे। हमारी तरह रूसके अन्य करोड़ों लोग भी वे ही प्रश्न पूछ रहे थे।

अचानक खारकोवमें मेरे निवासका अन्त आ गया। मुझसे बिना पूछे ही एक हुक्म जारी कर दिया गया। कहा गया कि मुझे हवाई जहाजकी कारीगरी सीखना छोड़कर धातु-विज्ञान सीखना होगा। इसके लिए पहिले मुझे लेनिनग्राडके एक इन्स्टीच्यूटमें भरती होना था और फिर अपने जन्मस्थान पर ही एक दूसरे स्कूलमें। एक दिन केन्द्रीय कमिटिके दफ्तरमें बुला कर एक अधिकारी मुझसे कहने लगा:—"कामरेड क्रावचैन्को, पार्टीने एक नया प्रस्ताव पास किया है, जिसके अनुसार पूर्वप्राप्त अनुभवके आधार पर ही इञ्जीनियरिंगकी शिक्षा सबको मिलेगी। तुम एक लोहेके कारखानेमें काम करते थे। करते थे न?"

"हाँ"

"तो ठीक है। तुमको भला हवाई जहाजकी कारीगरी क्यों सिखाई जाए। तुम धातु-विज्ञान समझते हो, उसी तरफ तुममें अधिक क्षमता है।"

"लेकिन मुझे तो हवाई जहाजकी कारीगरी ही अच्छी लगती है" मैंने डरते-डरते कहा।

"हो सकता है, किन्तु वह तो तुम्हारी व्यक्तिगत दिलचस्पीकी बात हुई।" फिर एक कर्मचारीकी ओर देखकर वह बोला "तुम कामरेड क्रावचैन्कोको दूसरे इन्स्टीच्यूटमें भेजनेका इन्तजाम कर दो।"

वहाँसे लौटकर घण्टों तक मैं पार्कमें टहलता रहा। मेरे भीतर सब कुछ उलझ-पुलझ गया था। चारों ओर बसन्तका रंग छाया था। किन्तु मैं तो उधर ध्यान ही नहीं दे सका। मन समझाना जरूरी था कि पार्टीका आदेश अवश्य न्यायपूर्ण है।

———

सातवां अध्याय

मशीनकी जीत

मुझे घर पर लौटा देख कर मेरे माता-पिता तथा भाई बहुत प्रसन्न हुए। मैं खूब जी लगाकर पढ़ने लगा। साथ ही पार्टीका काम भी करता रहता था। मनमें असन्तोष बटोरनेके लिए मेरे पास समय ही नहीं रह गया। अपनी आमदनी कुछ बढ़ानेके लिए मैंने कुछ समयके लिए वहाँके स्कूलमें पढ़ाना भी शुरू कर दिया। माँ कहती रहती थी कि मैं काम कर-करके मरा जा रहा हूँ।

पिताके घरमें रहते हुए और सीधे-साधे मजदूरोंसे मिल कर, मुझे हमारे देहातोंमें होनेवाली दुर्दशाका ज्ञान होने लगा। हम कम्युनिस्ट लोग आपसमें बात करते थे तो गाँवके सम्बन्धमें या तो चर्चा ही नहीं उठाते थे, अथवा उस विषयमें पार्टीके नारे लगा कर रह जाते थे। नग्न सत्यको एक शब्दजालसे ढक कर हम किसी तरह अपना मन समझा लेते थे। लेकिन साधारण मजदूरोंको ऐसा करनेकी जरूरत नहीं थी। उनमेंसे अधिकतर कुछ दिन पहिले स्वयं किसान थे और किसानोंसे नाता-रिश्ता तो प्रायः सभीका था। वे हमारी तरह तटस्थ रहकर वह सब नहीं देख सकते थे। उनके लिए वह जुल्म, हत्याएं, भुखमरी और मौत ऐसी घटनाएँ नहीं थी जिनको सुन लिया और भूल गए। प्रत्येक घटनाके

साथ उनका कोई-न-कोई सगा-सम्बन्धी जुड़ा रहता था। बहुत बार वे मुझे बताते थे कि गाँवके लोग आदमियोंके मुर्दे खाने लगे हैं। मैं उनकी बात हँस कर उड़ा देता था। किन्तु मेरा मन भयसे भर जाता था।

इन्स्टीच्यूटके भीतर भी उस आतंकका वातावरण असर करने लगा। हमें बार-बार कहा जाता था कि पार्टीके विरोधी, देश-द्रोही, ट्राट्स्की के दूत इत्यादि अफवाहें फैला रहे हैं, जिनसे हमको खबरदार रहना चाहिए। किन्तु अफवाहें बन्द न हुईं। जितना ही उनको दबानेकी कोशिश की जाती थी, उतनी ही वे अधिक फैलती थीं। दो हजार छात्रोंमें तरह-तरहकी काना-फूसी होती रहती थी! पार्टीके चुने-चुने सदस्योंको बहुतसे विशेष काम सौंपकर गाँवोंमें भेजा भी जाता था। ऐसे एक व्यक्तिको मैं जानता था। वह तभी गाँवसे लौटकर आया था। मैंने उसको देखकर कहा—

"तुम ऐसे लग रहे हो, जैसे तुमने भूत देखे हों।"

"हाँ, भूत ही देखे हैं।"—वह सिर नीचा करके बोला।

मैंने और पूछताछ नहीं की। मैं समझ गया कि वह अपनी बात किसीको बताकर दिलका बोझ हटाना चाहता है। और मैं भाग निकला! जानता था कि उसकी बातें सुनकर मेरे लिए पार्टीकी सदस्यता एक नैतिक द्वन्द्व बन जाएगी।

रूसके प्रत्येक कारखाने, स्कूल, कॉलेज तथा दफ्तरकी तरह, हमारे इन्स्टीच्यूटमें भी खुफिया पुलिसका एक दफ्तर था। कॉमरेड लेबेद उसका मुखिया था। जब वह किसीको दफ्तरके भीतर बुलाता था, तो जानेवालेकी घिग्गी बँध जाती थी। हममें से कोई नहीं जानता था कि उस लोहेके दरवाजेके पीछे क्या होता रहता है। हाँ, इतना हमें मालूम था कि प्रत्येक छात्रके सम्बन्धमें वहाँ एक फाइल है, जिसमें उसके प्रत्येक

काम, बोल-चाल तथा व्यवहारकी रिपोर्ट लिखी जाती है। इसके सिवाय कुछ गुप्तचर ऐसे थे, जो इन्स्टीच्यूटके सम्बन्धमें अपनी रिपोर्ट लेबेदको न देकर सीधी प्रान्तीय अधिकारियोंके पास भेजते थे। शहरकी कम्युनिस्ट पार्टी भी अपने कुछ सदस्योंसे मुखबिरी कराके प्रान्तीय पार्टी को रिपोर्ट देती रहती थी। और इस प्रकार मुखबिरीके ये सूत्र पार्टी की केन्द्रीय कमिटी तथा पौलिटब्यूरो तक जा पहुँचते थे। स्टालिन इन सब सूत्रोंको सुलझाकर फैसले करता था। हमारी दुनिया गुप्तचरोंसे भरी थी। ऐसा लगता था, जैसे हमारे सब ओर ऐसी आँखें हैं, जो छुप-छुपकर हमारी प्रत्येक हरकतको देख लेती हैं। और ऐसे कान हैं, जो छुप-छुपकर हमारी सब बातें सुन लेते हैं। और हम जानते थे कि गुप्तचर लोग हमारे ऊपर ही नहीं, परस्पर भी एक-दूसरेपर नजर रखते हैं।

फिर भी पार्टीके विरुद्ध खबरें फैलती रहती थीं। रूसके लोग बहुत बातूनी होते हैं। वे अपना दिल खोलकर दिखाना चाहते हैं और सहानुभूति पानेकी आशा करते रहते हैं। आपसमें एक-दूसरेको भेद छुपानेकी क़सम दिलाकर हम अपने मनके सन्देह एक-दूसरेको सुनाने लगे। फिर भी डर लगता था कि हमारा कहा हुआ प्रत्येक शब्द किसी प्रकार खुफिया-पुलिसकी फाइलोंमें पहुँच जाएगा। पीछे चलकर जब मैं पुलिसके हाथोंमें पड़ा, तो मुझे यह जानकर आश्चर्य हुआ कि मित्रोंसे कही हुई साधारण बातें भी उन्हें मालूम रहती थीं। मुझसे बार-बार पुलिसने पूछा था कि मैंने दूसरोंसे जो सुना, उसकी रिपोर्ट पुलिसमें क्यों नहीं की। यदि आपके साथ कोई पार्टी अथवा सरकार के विरुद्ध बातें कर गया हो और आपने पुलिसको खबर न दी हो, तो यह समझा जाता था कि आप भी उसकी बातोंसे सहमत हैं और किसी षडयन्त्रमें शामिल हैं।

हर वक्त तो हम पार्टी और पुलिसको ध्यानमें रखकर जीते नहीं थे। अनेक सावधानी बरतने पर भी हँसी-मज़ाकमें, प्रेमालापके समय या योंही कुछ-न-कुछ ऐसी बातें मुँहसे निकल जाती थीं जो कि पार्टीको पसन्द नहीं थीं। बस ऐसी छोटी-छोटी बातोंका ढेर लगा कर लाखों फाइलें बनती रहती थीं। करोड़ों गुप्तचर ऐसी बातें इकट्ठी करनेमें लगे थे। व्यक्तिगत ईर्ष्या-द्वेषके कारण भी वे बहुत-सी बातें बनाकर कहते रहते थे। और प्रत्येक व्यक्तिके बारेमें एक कार्ड हमेशा तैयार रहता था जिसको देखते ही अधिकारी लोग उसके जीवनका कच्चा चिट्ठा समझ जाएँ। इस कार्डकी प्रतियाँ बराबर कई विभागोंमें भेजी जाती थीं। सरकार अथवा पार्टीके प्रति अश्रद्धा रखनेवालोंके विरुद्ध यह एक प्रकारका गोला-बारूद पार्टीने इकट्ठा कर रक्खा था। हम पार्टीके लोग इस नए ढङ्गकी तानाशाहीको एक नये नामसे पुकारते थे। हम कहते थे कि यह "पार्टीका गणतन्त्र" है।

(२)

जून १९३१ में कामरेड स्टालिनने रूसके आर्थिक कर्मचारियोंकी एक सभामें भाषण दिया। रूसकी अर्थव्यवस्था हिल गई और अधिकारियों तथा मजदूरोंके जीवनमें एक बड़ा परिवर्तन आ गया। उस भाषणमें उन्होंने वे छः बातें कहीं थीं जो आज सारा संसार जानता है। उनमें सबसे मुख्य बातें थीं—उद्योगमें लागतका पक्का हिसाब, प्रबन्ध-कार्यका केन्द्रीयकरण, असफलता और बरबादीके लिए प्रबन्धकर्त्ताओंका पूरा दायित्व और वेतनकी दरोंमें घोर असमानता। कुछ दिन बाद हमारे प्रान्तकी पार्टी कमिटिने मुझे बुलाया। मेरे साथ हमारे इन्स्टीच्यूटके डायरेक्टर तथा एक और छात्र भी गए। पार्टीके सेक्रेट्रीने द्वार बन्द करके हमें कहा कि वे निकोपोल नगरमें कुछ जांच-पड़ताल करना चाहते हैं। बोले "कामरेड स्टालिनके छः आदेशोंके बावजूद भी

काम ठीक तरह नहीं चल रहा। शोर तो खूब मचता है। सभाएँ भी जुड़ती हैं। किन्तु काम पीछे पड़ा रहता है। अनुशासन ढीला है और असन्तोष फैलता जा रहा है। निकापोलको ही ले लीजिए। आप जानते हैं कि वहाँ हम एक बड़ा कारख़ाना बना रहे हैं। कई करोड़ रूबलका खरच होगा।

"हम चाहते हैं कि आप तीनों वहाँ जाएँ। जितने दिन आप चाहें वहाँ ठहरें—एक हफ्ता, दो हफ्ता। फिर रिपोर्ट दीजिए कि वहाँ क्या गड़बड़ है और क्या करना चाहिए। हम आपकी रिपोर्ट पढ़ेंगे और ठीक समझी गई तो कामरेड ओर्डझोनिकिड्ज़ेके सामने पेश कर देंगे।"

निकोपोल पहुँच कर हमने देखा कि तीन साल पहलेसे वहाँ कारखाना बन रहा है। शहरसे छः मील दूर और स्टेशनसे कई मीलके फासले पर एक बड़ा-सा मैदान पड़ा था। इतनी दूर होनेके कारण मजदूरोंका काम और तकलीफें बढ़ गईं। किसीको मालूम नहीं था कि इतनी दूर जगह क्यों चुनी गई। यदि शहरके पास जगह ली जाती तो मजदूरोंके लिए रहन-सहनकी सुविधा हो जाती। कारखानेके डायरेक्टर पीटर व्राचको, अपने काम पर नए ही आए थे। इसलिए उन्होंने तुरन्त ही हमें बता दिया कि किन कठिनाइयों और मूर्खताओंके कारण वहाँ काम बिगड़ता जा रहा था। कहने लगे—"इस जगह इतना कूड़ा-कचरा और दलदल थी कि खुदाईका काम बहुत कठिन हो गया। फिर इस कारखानेके बनानेमें विविध विभागोंका कोई सन्तुलन नहीं रक्खा जा रहा। आप जानते हैं कि प्रत्येक कारखाना बहुतसे और कारखानों पर निर्भर करता है। दूसरे कारखानोंकी उत्पादन-समस्याओंको ध्यानमें रक्खे बिना ही एक और कारखाना बना डालना बड़ी बेवकूफी है। कारखाने बना कर हम खुश हो जाएं, लेकिन इस प्रकार उत्पादन तो नहीं बढ़ सकता।"

उस लम्बे-चौड़े इलाकेमें कारखानेकी बहुत-सी इमारतें बन चुकी थीं अथवा बन रही थीं। और जब हमने देखा कि जर्मनीसे मंगाई हुई बहुमूल्य मशीनें खुले मैदानमें अस्तव्यस्त पड़ी हैं और उनमें जंग लग रहा है तो हम दंग रह गए। इसके सिवाय अधूरी इमारतें बहुत थीं। कोई आधी बनी थी, किसीकी नींव ही रक्खी गई थी और सबको देखनेसे मालूम होता था कि उनको पूरा करनेका कोई इरादा नहीं है। उस कूड़ा-कबाड़ और दलदलमेंसे रास्ता निकालते हुए मैंने कहा—

"कामरेड ब्राचको, यह तो बड़ी खराब हालत है।"

"मैं जानता हूँ। किन्तु मैं क्या करूँ। एक इमारत बनाने लगता हूँ तो केन्द्रसे हुक्म आ जाता है कि सब काम छोड़कर एक नया काम पूरा करो, योजना बदल गई है। इसके सिवाय योजनाके अनुसार जो काम मजदूरोंको दिया जाता वह पूरा नहीं हो पाता। मजदूर बीमार पड़ जाते हैं, गैरहाजिर रहते हैं। फिर मजदूर तंग भी आ गए हैं। उन्हें खानेको पूरा नहीं मिलता और न ही उनके रहन-सहनका कुछ बन्दोबस्त हो पाता है"—फिर एक सन्तोषकी साँस लेकर उन्होंने बात पूरी की "मैं तो यहाँ अभी आया हूँ। जो कुछ आप देख रहे हैं वह सब पुराने कार्यकर्त्ताओंकी कारस्तानी है।"

बेचारा ब्राचको! उसको क्या मालूम था कि कुछ साल पीछे उसको इस सब गड़बड़ घोटालेका मूल्य अपनी आजादी खोकर चुकाना पड़ेगा। उस दिन मुझे भी नहीं मालूम था कि एक दिन मुझे ही निकोपोलके इस कारखानेका भार सम्भालना होगा। अपने-अपने भाग्यसे बेखबर हम उस दिन उस कबाड़खानेमें चक्कर काट रहे थे।

दूसरे दिन साँझको मैंने फैसला किया कि मजदूरोंके रहनेकी बैरकें भी देख आऊं। मेरे साथ मकान बनानेवाला चीफ इञ्जीनियर, वहाँकी पार्टीका मन्त्री और मकानोंके प्रबन्धकर्त्ता अफसर भी थे। घुटनों-घुटनों

कीचड़में चलकर हम मजदूरोंके घरोंदोंको देखने लगे। कर्मचारियोंके घरोंमें बिजली थी, किन्तु मजदूरोंके घरमें किरासीनके लैम्प तथा कच्चे तेलके दीपक किसी प्रकार उस घोर अन्धकारसे मोरचा लेनेकी चेष्टा कर रहे थे। एक बैरकमें तो बाहरसे घुप अन्धेरा मालूम पड़ा। मैंने द्वार खटखटाया। एक बूढ़े, दाढ़ीवाले मजदूरने द्वार खोला।

"नमस्कार, कामरेड। क्या हम भीतर आ सकते हैं?" पार्टीके मन्त्रीने पूछा।

"कौन हैं आप?"

"मैं पार्टीका सेक्रेट्री हूँ और मेरे साथ केन्द्रके एक प्रतिनिधि हैं।"

"बहुत अच्छा" मजदूरके स्वरमें व्यङ्ग था "इस महलमें आपका स्वागत करता हूँ। आप चूहे देखना पसन्द करते हैं, या खटमल। बदबूका तो आपको खयाल नहीं होना चाहिए।"

बैरकमें प्रायः अन्धेरा ही था। चारपाइयों पर लेटे कुछ नौजवान मजदूर धुएंदार डिब्बियोंके मन्द प्रकाशमें पढ़ रहे थे। सब मिलाकर पचास-साठ आदमी होंगे। अधिकतरने तो जैसे हमें देखा ही नहीं। दस-पाँच हमारे पास आकर शिकायतें करने लगे। हमारे पाँवके नीचे चूहे दौड़ लगा रहे थे। एक मजदूरने बिस्तर दिखा कर कहा—

"इसको आप बिस्तर कहते हैं? और ये तकिए हैं क्या? सब सड़े चिथड़े हैं।"

"चादरें कितने दिनमें बदली जाती हैं?" मैंने पूछा।

"भाग्य जागे तो आए महीने। नहीं तो दो, तीन, चार महीनेमें। बहुत-सी चादरें तो कभी बदली ही नहीं जातीं।"

"चूहों और कीड़ोंके मारे हुलिया तंग है साहब" एक और मजदूर बड़बड़ाया "इधर आइए, आपको भी दिखा दूँ।"

उसने एक लोहेकी खाटका एक सिरा पकड़ कर उठाया और पटक दिया। खटमलोंसे फर्श काला हो गया। एकबार तो भयके मारे मैं पीछे हट गया। फिर मैंने कहा—

"इन सब बातोंकी शिकायत तुमलोग क्यों नहीं करते ? चुप क्यों रहते हो ?"

"शिकायत !"—उसने त्योरी चढ़ाकर कहा—"हमारी शिकायतें बहुत सुनी जाती हैं ना ! आपकी तरह बार-बार कमीशन आते हैं और देखकर चले जाते हैं। कुछ फर्क तो पड़ता नहीं। हम काम करना चाहते हैं। हम जानते हैं, काम करना कितना जरूरी है। लेकिन हैं तो हम भी हाड़-मांथके इन्सान। पत्थरके नहीं बने हम। हाँ, उधर उस बैरकके लोगोंने इस दुर्दशाके खिलाफ़ कुछ करनेकी कोशिश की थी। उन्होंने कामपर जानेसे इन्कार कर दिया था। आप जानते हैं, उनका क्या हुआ ?"

"क्या हुआ ?"

एकदम सन्नाटा छा गया। मैंने फिर कहा—

"डरिए नहीं। कहिए। मैं नया-नया आया हूँ। सचमुच मुझे कुछ नहीं मालूम।"

"हुआ क्या, उनके नेताओंको बुलाया गया।"

"कहाँ बुलाया गया ?"

"गिरजे या मदिरालयमें नहीं। आप इतमीनान रखिए। खुफ़िया-पुलिसके दफ्तरमें उनकी पेशी हुई। और वे लौटकर वापस नहीं आए !"

"शायद उनको साइबेरिया[१] में छुट्टी मनाने भेज दिया गया है। उनको आरामकी जरूरत थी।"—एक और मजदूरने हँसकर कहा। उसकी हँसीमें कड़वाहट थी।

---

१. रूसका काला-पानी, जहाँ लोगोंको भेजकर बेगारपर लगाया जाता है।

मैं लौट आया। कमीशनके और साथियोंसे मैंने अपनी बातें कहीं। वे भी दूसरे बैरकोंमें घूमकर लौटे थे। उन्होंने भी वही हाल देखा था। रातभर मैं सो नहीं सका। करवटें बदलता रहा। जिन मजदूरोंने ताने मारे थे और शिकायतें की थीं, उनकी मुझे बहुत चिन्ता नहीं हुई। वे अभी-भी जिन्दा थे। लेकिन जो बिल्कुल उदासीन हो चले थे, जिनमें शिकायत करने और शोर मचानेकी भी क्षमता नहीं रह गई थी, उनका क्या किया जाए। वे फिरसे किस प्रकार जीवित हों? और फिर वह साइबेरिया भेजे जानेवाली कहानी। वेदना और ग्लानिसे मेरा अन्तर भर उठा। दिलपर वह बोझ लेकर ही मैं निकोपोलसे लौटा। आज मुझे यह सोचकर ताज्जुब होता है कि निकापोलका वह कारखाना बना किस तरह; क्योंकि धीरे-धीरे बनकर वह पूरा हुआ जरूर। न-जाने उसको पूरा करनेमें कितना अधिक खरचं हुआ होगा और कितने लोगोंने नरक यातनाएँ भोगी होंगी।

मेरे मनमें कई महीनेसे एक संकल्प बनता जा रहा था। निकापोल जानेके बाद वह पक्का हो गया। मैं मास्को जाकर कॉमरेड ओर्डझोनिकिड्जेसे बातें करना चाहता था। मेरी इच्छा थी कि उसके सामने बैठकर साफ-साफ सब-कुछ कह दूँ। मेरे चारों ओर नरककी सृष्टि हो रही थी। इसी समय हमारे इन्स्टीच्यूटका भी मास्कोमें कोई काम निकल आया। डायरेक्टरने मुझे भेजनेका फैसला किया। मेरा खरच सब सरकारके जिम्मे पड़ा।

(३)

स्टेशनसे मैं सीधा ओर्डझोनिकिड्जेके दफ्तरकी ओर चल पड़ा। मास्कोमें तीसरी बार आया था। इसके पूर्व मैंने कभी नहीं सोचा था कि मास्को और बाकी देशकी हालतमें इतना भारी अन्तर है। एक

ओर मास्कोमें तरह-तरहके सुधार होते जा रहे थे और दूसरी ओर बाकी देशकी हालत खराब होती जा रही थी। दिन-पर-दिन वह भेदकी खाई बढ़ती ही गई। नीपरोपेट्रोस्क् अथवा खारकोवकी तुलनामें मास्को इन्द्रपुरी दीख पड़ती थी। दुकानोंके भीतर कुछ सामान दीख पड़ता था और खरीदारोंकी कतारें बहुत लम्बी नहीं थीं। चारों ओर सरगर्मी भी दिखाई दी। एक उत्साहका वातावरण था। सड़कें साफ थीं और बड़ी सड़कोंपर तारकोल बिछाया गया था।

अपना परिचय देकर मैंने पास बनवाया और ओर्डभ्फोनिकिड्जेके सेक्रेटरीके पास जा पहुँचा। वेटिङ्ग रूममें सोलह व्यक्ति बैठे थे। सब मोटे-ताजे, बने-ठने लोग थे। कई तो विदेशी पोशाक पहने थे। सबके पास चमड़ेके बैग थे। उनको देखकर मालूम होता था कि आरामका जीवन बितानेवाले बड़े लोग हैं। निश्चय ही वे बड़े-बड़े कारखानों के डायरेक्टर तथा आर्थिक योजनाओंके स्रष्टा एवं प्रबन्धकर्त्ता लोग थे। मैं आयुमें सबसे छोटा था और मेरे कपड़े प्रायः फट चुके थे। मुझे ऐसा लगने लगा, जैसे वहाँ जाकर मैंने अनधिकार चेष्टा की हो, जैसे किसी रईसके घर कोई दरिद्र रिश्तेदार चला आया हो। उन सबने भी मुझे सन्देहभरी आँखोंसे देखा, जैसे मनमें कह रहे हों—'हमारे बीच यह अजीब जन्तु कहाँसे चला आया ?"

जब ओर्डभ्फोनिकिड्जे हँसता हुआ वहाँ पहुँचा, तो सब सम्मानमें खड़े हो गए। सेक्रेटरीने सबके साथ उसका परिचय कराना शुरू किया। कामकी बात सुन किसीसे उसने कह दिया कि किसी नीचेके अधिकारी से बातें कर ले, किसीको दूसरा वक्त दे दिया। मैंने उसको देखा था, तबसे वह कुछ मोटा हो गया था। सिर और मुखके बाल भी कुछ सफेदी पकड़ने लगे थे। किन्तु उसके हाव-भावमें अभी भी वही बन्धुताकी छाप थी। उसको देखकर विश्वास होता था। जब वह मेरे पास पहुँचा, तो

मैंने अपनी चिट्ठियाँ उसके हाथमें दे दीं। एक चिट्ठीको उसने पढ़ा, फिर मेरी तरफ देखकर बोला :

"कैसे हो, पुराने साथी! मुझे तुम अच्छी तरह याद हो, कॉमरेड क्रावचैन्को। आशा है, तुम्हारी पढ़ाई-लिखाई ठीक चल रही होगी। तुमसे बातें करना चाहता हूँ। रातको दस बजे कैसा रहेगा? ठीक। सेक्रेटरी, इस कॉमरेडको सम्भाल लो। देखो, इसे कोई तकलीफ़ नहीं होने पाए।"

कमीसारके भीतर चले जानेपर, सेक्रेटरीने बड़े तपाकसे मेरे साथ बातें कीं। अपने मालिकका रुख उसने देख लिया था। मालिक मुझपर मेहरबान था। दूसरे लोग मुझे स्पर्द्धाकी दृष्टिसे देखने लगे। इतनी छोटी-सी उम्रमें मैं इतने बड़े आदमीका कृपा-पात्र बन गया था। एक बड़ी-सी कारमें बैठाकर मुझे मैट्रोपोल होटलमें पहुँचाया गया। वहाँ मेरे लिए एक बड़ा-सा कमरा तैयार था। मैं भी अपने ऊपर गर्व करने लगा। मुझमें बड़प्पनकी बू आने लगी।

साँझके समय मैं होटलके रेस्तराँमें पहुँचा। ऊँची छतवाले एक बहुत विशाल कमरेको खूब सजाया गया था। वहाँ भीड़ लगी थी और बैण्ड बज रहा था। कमरेके बीचमें एक छोटा-सा मछलीका तालाब था, जिसके चारों ओर संगमर्मरके फर्शपर जोड़ियाँ नाच करनेमें व्यस्त थीं। मैं चौंधिया-सा गया और मुझे स्वस्थ होनेमें कुछ देर लगी। मैं सोचने लगा कि क्या यह देवपुरी भी मेरे रूसके भीतर ही है! कहीं भूलकर मैं किसी सिनेमा-घरमें तो नहीं घुस आया? मैं एकटक उन खान-पान करते और नाचते हुए लोगोंको निहारने लगा। कोई-कोई लोग रूसके कपड़े पहने हुए थे, अधिकतरकी वेश-भूषा यूरोपियन थी। कुछ औरतें बहुत ऊँची गाउन पहने हुए थीं। ऐसी औरतोंके चित्र मैंने पुस्तकोंमें देखे थे, आँखोंसे देखनेका संयोग नहीं मिला था। वहाँ बहुतसे विदेशी भी थे, जो डिनरके कपड़े पहने हुए थे।

वहाँ बैठे-बैठे मेरे मानस-पटपर निकोपोलकी बैरकें उभरने लगीं। कानोंमें उस बूढ़े मजदूरके शब्द सुन पड़े—"हमारे महलमें तशरीफ लाइए, कॉमरेड। आप क्या देखेंगे, चूहे अथवा खटमल?" मैंने उस आवाजको दबा दिया। वह दृश्य मिटा दिया। मैं मास्कोमें था। शीघ्र ही मैं अपने देशके ६-७ सर्व-शक्तिमान लोगोंमें से एकके साथ बातचीत करनेवाला था।

मिलनेके ठीक समयसे बहुत पहिले मैं दफ्तरके वेटिङ्ग-रूममें जा बैठा। दस बजनेसे कुछ पहिले सेक्रेटरी आ पहुँचा। बोला—"आपको और थोड़ी देर बैठना होगा। भीतर कॉमरेड बुखारिन बैठे हैं।"

कॉमरेड बुखारिन! मेरा दिल दहल गया। जैसे लेनिन मेरे सामने आ खड़ा हुआ हो। क्रान्तिके दिनोंमें लेनिन और ट्राटस्कीके बाद बुखारिनका ही नाम लिया जाता था। युवक संघमें भरती होनेकी तैयारी करनेके पूर्व मैंने उन्हींकी पुस्तक "कम्युनिज्मकी बारहखड़ी" पढ़ी थी। पिछले कुछ वर्षोंसे बुखारिनको स्टालिनने "पथभ्रष्ट" बता उसकी सारी सत्ता छीन ली थी। उसकी किताबें पढ़ना भी अब मना था। किन्तु बुखारिनके नाममें अब भी जादू था। कुछ देरमें सेक्रेटरी लौटा। मुझे भीतर आनेको कह कर बोला: "बुखारिन अभी वहीं है। कमीसारने आपसे मिलनेके लिए उसे रोक लिया है।"

दो क्षण बाद मैं बुखारिन और ओर्डझोनिकिड्जेसे हाथ मिला रहा था। कमीसार एक मेजके पीछे बैठा था। मेज पर कागज, किताबें, टेलीफोन और घण्टियोंके बटन फैले थे। मेजकी दूसरी तरफ बुखारिन और मैं उसके सामने बैठ गए। कमरा बहुत बड़ा था। दीवारों पर मार्क्स, लेनिन, स्टालिनकी बड़ी-बड़ी तस्वीरें टंगी थीं। स्टालिनका एक फोटो मेज पर रक्खा था। उस पर स्टालिनके हस्ताक्षर थे और कमीसारको भेंटमें मिला था।

कमीसार बोला : "अच्छा, कॉमरेड क्रावचैन्को, संक्षेपमें साफ-साफ बताओ कि निकोपोल कारखानेमें तुमने क्या-क्या देखा ?"

"पहले, कॉमरेड कमीसार, मैं अपने नीपरोपैट्रोस्कके कारखानेकी बातें कहना चाहता हूँ।"

"बहुत अच्छा।"

मैंने बात सोच रखी थी, इसलिए बहुत अच्छी तरह सब समझा दिया। कारखानेके कई विभागोंको बढ़ाना आवश्यक था। वहां नई मशीन भी आनी चाहिए। लेकिन नए कारखाने बनानेकी धुनमें हम पुराने कारखानोंको भुला बैठे थे। मैंने आंकड़े देकर समझाया कि यदि कुछ करोड़ रूबल खरच करके हमलोग पुराने कारखानोंका सुधार कर लें तो जितना उत्पादन बढ़ेगा, उतना नए कारखानों पर दस गुना खरच करने पर भी नहीं बढ़ सकता। बुखारिन मुस्कुराया। मेरी बातसे वह सहमत था। वह उस नई उथल-पुथलका विरोधी था। उसका मुख बन्द होनेसे पहले उसने पंचवर्षीय योजनाकी कठोर आलोचना की थी। ओर्डझोनिकिड्जे बोला :

"मैं भी मोटामोटी तुम्हारी बात मानता हूं। कुछ गौण बातों पर कुछ अधिक ध्यान देना पड़ेगा।"

उसने अपनी नोटबुकमें कुछ लिख लिया। इसके बाद मैंने निकोपोलके बारेमें कहना शुरू किया। आरम्भमें तो मैं पार्टीकी नपी-तुली भाषामें बात करता रहा। पहलेसे सोच रक्खा था कि किस प्रश्नका क्या उत्तर मुझे देना चाहिए। किन्तु बोलते-बोलते वे नारकीय बैरकें मेरी आँखोंमें घूम गईं, वहाँकी गन्दगी और दुःख-दर्दने मेरा संयम हर लिया। मेरे स्वरमें आवेश भर चला। मैंने वहाँके जीवनकी विफलता, धांधली और कठिनाईका विशद वर्णन करते-करते कहा—"कॉमरेड कमीसार, अगर मजदूरोंके रहन-सहनको सुधारने पर दो-चार करोड़

रूबल आप खरच कर दें, तो मुझे पक्का विश्वास है कि कारखानेकी लागतमें उससे अधिक बचत हो जाएगी। आदमीकी अवहेलना करके हम उसकी उत्पादन-शक्ति घटा डालते हैं और उतनी ही लागत लगा कर कम काम करा पाते हैं।"

"शाबाश"—बुखारिन कह उठा। ओर्डझोनिकिड्जेके मुख पर मुस्कान उभर आई। उसको दबाना चाह कर भी वह नहीं दबा पाया। एक घण्टा और बातें होती रहीं। एक बार कमीसारने मुझसे पूछा कि मैंने रूसके बाहर कोई देश देखा है या नहीं। मैंने उत्तर दिया—"नहीं, कभी नहीं। किन्तु अमेरिका, जर्मनी, स्वीडन इत्यादिसे जो टेकनीकल पत्रिकाएँ आती हैं, वे सब मैं नियमित रूपसे पढता हूँ।"

"जब इन्स्टीच्यूटमें तुम्हारी पढ़ाई खतम हो जाएगी, तो हम तुमको अमेरिका या जर्मनीमें भेज देंगे। अब और कामकी बातें नहीं करेंगे। तुम क्या थिएटर देखने गए थे? और अजायबघर?"

मैं जब वहाँसे लौटा, तो कुछ सन्नाटेमें आ गया था। बहुत शक्तिशाली लोगोंके पास जानेका मेरा प्रथम अवसर था और मनके भीतर गुदगुदी तो हुई ही। बाहर वेटिंग रूममें बैठे हुए लोगोंने मुझे कमीसार के कमरेसे निकलते हुए बड़ी दिलचस्पीके साथ देखा। जो आदमी एक घण्टे तक कमीसारके पास बैठा हो, उसके बड़प्पनके क्या कहने। सेक्रेटरी ने कहा:

"मुबारक हो, कामरेड! बहुत बड़े आदमी बन गए आप। ये लो बोलशोई थिएटर तथा मास्को आर्ट थिएटरके टिकट हैं। होटलमें जो खरच आपका हो रहा है, उसका बोझ हमारे सिर रहेगा। और यह लीजिए एक हजार रूबल जेब-खर्चके लिए। कमीसारने दिए हैं। जाइए, मौज कीजिए। और किसी चीजकी जरूरत हो, तो मुझे टेलीफोन कर दीजिए।"

एक बड़ी-सी मोटर मुझे फिर होटलमें छोड़ आई। रातको खाने गया, तो गाना-बजाना चल रहा था। धीरे-धीरे मेरी झिझक जाती रही और मैं महसूस करने लगा जैसे वहींका रहनेवाला हूँ। मैं थोड़ी देर पहिले ओर्डझोनिकिड्जे तथा बुखारिनसे बातें करके आया था। अब मैं सब जगह उठने-बैठने लायक था। झिझककी क्या जरूरत रह जाती। सत्ता और विलासके वातावरणमें अपने-आपको भुलाना बहुत आसान होता है। यदि मैं मास्कोमें बहुत दिन रहा होता, तो निको-पोलके मजदूरोंकी वह नरक-यातना मेरे चित्तसे उतर जाती। जेबमें काफी रुपया, चढ़नेके लिए गाड़ी, नाच-रंगका समा—कोई अपने-आपको सम्भाले भी तो भला कैसे?

कई दिन तक मैंने थिएटर, अजायबघर, पुस्तकालय तथा चित्र-प्रतिष्ठान इत्यादि देखे। संसारमें कितना ज्ञान और सौन्दर्य है, यह मैं पहले-पहल सोच सका। मुझे याद आया कि कामरेड लाजारेफ, जिन्होंने मुझे कम्युनिस्ट बनाया था, मास्कोमें हैं। मैं उनसे मिलने गया। वे बड़े तपाकसे मिले। टालस्टायकी वही पुरानी तस्वीर अब भी उनकी दीवार पर टँगी थी। मुझे बहुत खुशी हुई। मेरी बातें सुनकर कहने लगे—

"एक हजार रूबल, मोटरकार, थिएटर! हूँ! पुराने जमानेके रईस लोग भी अपने मुँहलगे नौकरोंको इसी प्रकार बहलाया करते थे। ये लोग भी वैसा ही कर रहे हैं। नाम-भर बदले हैं, बात वही है।"

"आप अन्याय कर रहे हैं, कामरेड लाजारेफ।"—मैंने जोर देकर कहा—"आप सोचिए तो, कमीसारने कितने ध्यानसे मेरी सब बातें सुनी हैं। मेरा पक्का विश्वास है कि वह गरीबोंका दुःख-दर्द समझता है और उनसे सहानुभूति रखता है। और वह समझता है, तो मेरा ख्याल है, स्टालिन भी समझता है। मेरी हिम्मत यहाँ आकर बढ़ी है।"

लाजारेफ मास्को युनिवर्सिटीमें किसी ऊँचे पदपर काम कर रहे थे। पार्टीकी बड़ी-बड़ी कमिटियोंका काम भी उन्होंने सम्भाला था। किन्तु उस दिन बातें करते-करते देखा कि वे बहुत बदल गए हैं। उनमें वह पहले-जैसी आशा और उत्साह मैंने नहीं पाए। अब मैं पार्टीकी मार्जना करता जाता था और वे शिकायत करते जाते थे। पहली बार हम मिले, तो ठीक इसका उल्टा हुआ था।

"अभी हालमें तुम गाँवकी ओर गए हो?"—सहसा वे पूछ बैठे।

"नहीं। लेकिन मुझे काफी कुछ मालूम है कि वहाँ क्या होरहा है।"

"जानना एक बात है और आँखोंसे देखना दूसरी बात। मैं अभी यूक्रेनसे लौटा हूँ। औडेसाके पास गया था। एक प्रदेशमें खेतीका समूहीकरण करना मेरे जिम्मे था। माफ करना, भाई! वहाँ जो देखा, उसके बारेमें मैं शान्त नहीं रह सकता। तुम कमीसारकी उदारताका कितना ही बखान करो......।"

लाजारेफने मुझे बताया कि स्थानीय लोग जब काम करनेमें असफल रहे और पार्टीसे निकाल दिए गए, तो मास्कोसे विश्वस्त कम्युनिस्टोंकी एक समितिको भेजा गया। वे स्वयं उस समितिके एक सदस्य थे। वहाँके किसान बहुत बिगड़े हुए थे और लड़ने-मिटनेके लिए तैयार बैठे थे। औडेसाके अधिकारियोंको आदेश दिया गया था कि आवश्यकता-नुसार सख्तीसे काम लो। किन्तु वे कुछ नहीं कर पाए। स्थिति इतनी खराब हो गई कि पौलिटब्यूरोने मौलोटोवको वहाँ भेजा। सरकारी अधिकारियोंको आदेश मिला कि क्रूर दमनसे काम लें।

"कामरेड मौलोटोवने पार्टीके रण-बाँकुरोंको बुलाया।"—लाजारेफ कहने लगे—"उनको मौलोटोवने खूब धमकाया। कहने लगे, काम पूरा होना ही चाहिए, चाहे कितनी ही जानें चली जाएँ। जब तक देश में करोड़ों छोटे-छोटे किसान रहेंगे, तब तक क्रान्तिके लिए खतरा

बना रहेगा। अपनी सम्पत्तिकी रक्षाके लिए युद्धके समय ये लोग जरूर शत्रुका साथ देंगे। नरमी अथवा पश्चात्तापके लिए कोई स्थान नहीं रहना चाहिए, इत्यादि-इत्यादि। हम उनकी बातको खूब समझ गए। और फिर हमने खूनसे वहाँकी धरतीको रंग दिया। ओ! विक्टर....।"

लाजारेफने दोनों हाथोंसे अपना मुख ढक लिया। मानो वे उन खौफनाक बातोंको भुलाना चाहते हों। राजधानीसे विदा लेनेके पूर्व मैं और भी कई परिचित लोगोंसे मिला। उनमें कई तो इस प्रकार बात करते थे, मानो पार्टीके नारे लगा रहे हों अथवा पार्टीके पत्र पढ़कर सुना रहे हों। वे सम्पन्न लोग थे। पार्टीके प्रचारने उन्हें अन्धा बना दिया था। फिर वे रहते थे मास्कोमें, जहाँ कि गाँवकी बातोंका पहुँचना एक प्रकारसे असम्भव था। कुछ और लोग लाजारेफकी तरह थे। ऊपरसे वे पार्टीकी वफादारीका दिखावा करते थे। किन्तु उनके अन्तरमें सब-कुछ जलकर राख हो चुका था। उनको देखकर मेरे मनमें जागा हुआ उत्साह बहुत कुछ ठण्डा पड़ गया। मनमें नए-नए विचार उठने लगे।

घर लौटकर मैंने सबको अपनी बातें सुनाईं, तो मनमें जोश नहीं था। मन एक ग्लानिसे भर उठा था, इसलिए मैंने किसीको नहीं बताया कि मुझे एक हजार रूबल, मोटरकी सैर और थिएटरके टिकट मिले थे।

(४)

मास्कोसे मेरे लौटनेके कई महीने बाद कात्या हमारे परिवारमें शामिल हुई। एक दिन साँझको स्कूलसे लौटकर मैं बाथरूममें जाने लगा, तो माँने मुझे टोक दिया। दबी आवाज़में बोली—"भीतर एक लड़की नहा रही है। चुप करो। पीछे सब बताऊँगी। गाँवमें तो बेटा, बहुत बुरा काण्ड हो रहा है।"

मैं अपने कमरेमें लौट गया। पीछे-पीछे माँ भी आई। संक्षेपमें माँने मुझे उस लड़कीकी कहानी बता दी। मेरी चचेरी बहिन नताशा, जो पार्टी द्वारा चलाए हुए किसी कारखानेके स्कूलमें पढ़ाती थी, कामसे लौट रही थी—रेलगाड़ीमें। एक मैली-कुचैली, चीथड़ोंमें लिपटी, दस-ग्यारह बरसकी लड़की भीख माँगनेके लिए खिड़कीके पास आ खड़ी हुई। उन दिनों सब स्टेशनोंपर ऐसे बच्चोंकी भीड़ रहती थी। लड़की का स्वर काँपता था, मुँहसे आवाज नहीं निकल रही थी। नताशाके लिए यह कोई नया दृश्य नहीं था। पर न-जाने उस लड़कीकी पथराई आँखोंमें और मुरझाए हुए चेहरेमें क्या बात थी, जो नताशाको बेतरह छू गई। वह उस यतीम लड़कीको अपने साथ ले आई।

माँने बच्चीको एकबारगी अपना लिया। हँसकर कहने लगी कि हम इतनोंका पेट पालते ही हैं, एक और पेट पालना कौन-सी बड़ी बात है। खुशी और अभिमानसे फूलकर, मैंने माँसे लिपटकर कहा :

"तुम एक माँ हो, माँ! असली माँ। मुझे बहुत खुशी है कि बच्चीको तुमने रख लिया।"

खाना खानेके कमरेमें गए, तो देखा कि कात्या धरतीपर बैठी है। उसका मुख पीला पड़ गया था और उसपर भयके चिह्न थे। इस प्रकार सिमटकर बैठी थी, जैसे धरतीमें समा जाना चाहती हो। माँने अपने कपड़े दे दिए थे। उन्हींमें लिपटी बैठी थी कात्या। थकान और भुखमरीके कारण उसका छोटा-सा मुखड़ा बूढ़ा-सा लग रहा था, किन्तु उसके नखशिख बहुत अच्छे थे। वह सुन्दर लड़की थी। मुर्देकी तरह चुपचाप वहाँ बैठी वह नीली आँखोंसे टुकर-टुकर इधर-उधर देख रही थी। मैंने उसके पास बैठकर कहा :

"हलो, कात्या। तुम इतनी गुमसुम क्यों बैठी हो? डरो नहीं। हम सब तुमको प्यार करते हैं। क्या किसीने तुमको मारा है?"

"नहीं"—उसने मरी आवाजमें केवल एक शब्द फुसफुसा दिया।

सांझके खानेके समय काल्या शरमाने लगी। उसको छुरी कांटा ठीकसे पकड़ना नहीं आता था। किन्तु भूखने शरम पर विजय पाई और वह भोजन पर टूट पड़ी। खानेके बाद जब मां बर्तन मांजने लगी तो वह बोली—"बूआ, मैं आपकी मदद करूँगी।" मेज परसे बर्तन उठाकर रसोई घरमें ले जाती हुई उस लड़कीको मैंने देखा तो पहले पहल लगा कि यह और लड़कियों जैसी ही लड़की है। मांके बड़े कपड़ोंमें कुछ स्वांगसा बना था उसका। अचानक रसोई घरमेंसे रोनेकी आवाज आई। मांने कहा—"रो लेने दो, भाई। जी हलका हो जाएगा।"

किन्तु रोना बढ़ता गया और लड़की धाड़ें मारने लगी। गांवके लोगोंका रोनेका एक तरीका बहुत पुराना है। लड़की युक्रेनियन भाषामें चीत्कार कर रही थी: "मेरी मां कहां हैं? बापू कहां है? बड़े भय्या वाल्या कहां गए?" हम रसोई घरमें गए तो देखा कि एक कुरसी पर लुढ़क कर काल्या अपने सूख कर कांटा बने हाथोंको मसल रही थी। उसके गड़े हुए गालों परसे अश्रुधारा बह रही थी। माँने उसे पुचकार कर कहा:

"रो नहीं, काल्या। यहां तुमको कोई कुछ नहीं कहेगा। तुम हमारे साथ रहना। तुम्हारे लिए हम कपड़े और जूते खरीदेंगे। तुम्हें पढ़ना-लिखना सिखाएँगे। मुझ पर विश्वास करो, बेटी। मैं तुम्हारी माँ बनूंगी।"

लेकिन लड़कीको सब्र नहीं आया। रोते-रोते वह अपनी बात कहने लगी। माँने उसे रोक कर कहा:

"अभी नहीं, बेटी। फिर कभी सुना देना।"

"नहीं। नहीं।" काल्या सुबकते हुए बोली: "मुझे अभी सब कहना है। चुप रह-रह कर मेरा दम घुट गया है। और चुप रही तो

मर जाऊँगी। एक साल हो गया, मैंने अपने परिवारको नहीं देखा है। एक पूरा साल! हम पोक्रोवनायामें रहते थे। बापू सामूहिक खेतीमें शामिल होनेसे इन्कार कर बैठे। बहुत लोगोंने आकर उन्हें समझाया, डराया, धमकाया, फिर उन्हें पकड़ कर ले गए और मारा पीटा भी। पर बापू नहीं माने। आखिर उन पर इल्जाम लगाया गया कि वे जमींदारोंके दलाल हैं।"

"तुम्हारे बापू क्या जमींदार थे? तुम जानती हो जमींदारका दलाल क्या होता है?" मैंने पूछा।

"नहीं, चाचा, मैं यह सब कुछ नहीं जानती। हमारे स्कूलमें मास्टरजीने कभी हमको ये शब्द नहीं पढ़ाए। हमारे पास एक घोड़ा था, एक गाय, एक बछड़ी, पाँच भेड़ें, कुछ सूअर और एक खलिहान। बस और कुछ नहीं। हरेक रातको सिपाही आकर बापूको गाँवकी सोवियत्के दफ्तरमें ले जाते थे। उनसे अनाज माँगा जाता था और जब बापू कहते थे कि अनाज उनके पास नहीं है, तो कोई उनकी बात पर विश्वास नहीं करता था। मैं सौगन्ध खाकर कहती हूँ कि बापू सच बोल रहे थे"—लड़कीने अपने ऊपर क्रॉसका चिन्ह बना कर कहा: "एक हफ्ते तक उन्होंने बापूको सोने नहीं दिया। रात-रात भर उनको लाठी और बन्दूकके कुन्दोंसे पीटते रहते थे। बापूकी सारी देह पर नील पड़ गए और जगह-जगह सूजन आ गई।"

कात्याने बताया कि जब अनाजका आखिरी दाना उनसे छीन लिया गया तो बापू एक सूअर मार कर शहरमें रोटी खरीदने गए। फिर बछड़ीको मारना पड़ा। सिपाही उनको फिर घसीट ले गए। कहने लगे कि सोवियत्की इजाज़तके बिना मवेशी मार कर उन्होंने घोर अपराध किया है।

"और फिर एक दिन" कात्या सुनाने लगी : "कुछ नए लोग हमारे घर आए। उनमेंसे एक तो खुफिया पुलिसका आदमी था। सोवियत्का मुखिया भी उसके साथ था। एक और आदमीने हमारे घरके सारे सामानकी एक लिस्ट कागज पर लिख डाली। फर्नीचर, हमारे कपड़े, बरतन भाण्डे, सब कुछ लिख लिए। उसके बाद छकड़ोंमें सब सामान लाद कर चल दिए। हमारे मवेशी सामूहिक खेती पर ले जाए गए।

"माँ रोई गिड़गिड़ाई, उनके पाँव पकड़ने लगी। बापू, वाल्या और बहिन शूरा भी रोए। किन्तु उनका दिल नहीं हिला। हमको हुक्म दिया गया कि कपड़े पहन कर तैयार हो जाएँ। साथमें कुछ मांस, प्याज और आलू लेनेके लिए भी कहा गया। हमें बताया गया कि किसी दूर स्थानकी यात्रा पर जाना होगा।"

आगेकी बातें कात्यासे नहीं कही गईं। एक बार वह फिर फूट फूट कर रोने लगी। किन्तु वह सारी बातें सुनाना चाहती थी। थोड़ी देर बाद उसने फिर कहना शुरू किया :

"हम सबको वे एक पुराने गिरजेमें ले गए। हमारे गाँवके और भी बहुतसे परिवार वहाँ एकत्र थे। सबके पास थोड़ा-बहुत सामान था और सबकी आँखोंसे आँसू बह रहे थे। वहाँ अन्धेरेमें हमने रात बिताई। सब रो रहे थे और प्रार्थना कर रहे थे। सुबह फौजकी एक टुकड़ी आकर प्रायः तीस परिवारोंको हाँक ले गई। सड़कके दोनों ओर गाँवके लोग खड़े थे। हमको गाँव छोड़ते देख कर वे रोने लगे। स्टेशन पर दूसरे गाँवों से भी अनेक परिवार हमारी तरह लाए गए थे। इस प्रकार वहाँ हजारों आदमी हो गए। सबको एक पुराने मकानमें ठूंस दिया गया। मेरा कुत्ता गाँवसे मेरे साथ-साथ गया था। उसको उन्होंने उस मकानमें नहीं घुसने दिया। वह बाहर खड़ा होकर रोता रहा।

"कुछ समय बाद हमको ले जाकर मालगाड़ीके डिब्बोंमें लाद दिया गया। बहुतसी मालगाड़ियाँ वहाँ खड़ी थीं। मैंने गार्डसे अपने कुत्तेके बारेमें पूछताछ की, तो एक लात खाकर चुप होना पड़ा। जब हमारे डिब्बेमें तिल धरनेको जगह न रह गई तो बाहरसे ताला लगा दिया गया। हम सब घबरा कर चीत्कार कर उठे। किन्तु भगवानके सिवाय हमारी सुनने वाला वहाँ कौन था? गाड़ी चल पड़ी। हममेंसे कोई नहीं जानता था कि हमको कहाँ ले जाया जा रहा है। कोई कहता था कि साइबेरिया जा रहे हैं, कोई सुदूर उत्तरका नाम लेता था और कोई रेगिस्तानोंकी ओर संकेत करता था। खारकोवके पास मुझे और बहिन शूराको पानी लानेके लिए बाहर निकलनेकी आज्ञा मिल गई। छोटा भाई बहुत बीमार था। माँने कुछ पैसे और एक बोतल देकर कहा कि कुछ दूध लेती आना। बड़ी मुश्किलसे गार्डने हमको जानेकी इजाजत दी। इजाजत कानूनके खिलाफ थी। स्टेशनसे कुछ दूर किसानोंकी झोंपड़ियाँ दीख पड़ी। हम भाग कर वहाँ पहुँचे। किसानोंने जब सुना कि हम कौन हैं तो वे भी रोने लगे। उन्होंने हमें कुछ खानेको दिया और बोतलमें दूध भर दिया। दूधका दाम उन्होंने नहीं लिया। हम स्टेशन लौट आए। किन्तु, हाय, हमसे देर हो गई। गाड़ी हमारी राह देखे बिना ही आगे बढ़ चुकी थी।"

कात्याने कहानी कहना बन्द करके फिर रोना शुरू कर दिया। उसे माँ बाप और भाई-बहिनकी याद आ रही थी। हम सब भी आँसू नहीं रोक पाए। माँने कात्याको चुप करनेका जितना ही प्रयत्न किया, उतना ही वह और चीत्कार करने लगी। पिताजी गुमसुम बैठे रहे। उनके मुखसे एक शब्द भी नहीं निकला। किन्तु उनकी आँखोंसे मानों खून बरस रहा था।

आगेकी कहानी कात्याकी अपनी नहीं थी। वह उन हजारों बच्चों

को कहानी थी जो उन दिनों बे-घरबार बने रूसके कोने-कोनेमें फिर रहे थे। कात्या और उसकी बहिन गाँव-गाँव घूमने लगीं। उन्होंने भीख माँगना सीखा। बिना टिकटके गाड़ीमें सफर भी वे सीख गईं। यतीमोंकी भी एक भाषा होती है। लड़कियोंको वह भाषा भी अपने-आप आ गई। एक दिन किसी शहरके बाजारमें पुलिससे बचनेके लिए भागती हुई दोनों बहनें बिछुड़ गईं। कात्या बहुत दिन तक अकेली घूमती रही। फिर उसको नताशा मिली, जो कि उसे हमारे घर ले आई। हम सबको कत्यासे प्यार हो गया और धीरे-धीरे उसका भी हमारे घरमें जी लग गया। किन्तु रातमें कभी-कभी उसका विलाप हम सुन पाते थे। उसी गाँवके स्वरमें रोती हुई वह अपने माता-पिताको पुकारती रहती थी।



आठवाँ अध्याय

गाँवमें ताण्डव

आपने मनको चोटसे बचानेके लिए आप अन्यान्य अत्याचारको देखने से इन्कार कर सकते हैं, अथवा आप बुद्धिके द्वार बन्द कर लेते हैं। किन्तु कभी-कभी चोट इतनी भरपूर पड़ती है कि बरबस आपकी आँखें खुल जाती हैं और बुद्धिको सोचना पड़ता है। तब आप पलक झपके बिना सत्यका दर्शन करने लगते हैं। कात्याके हमारे घर आनेके कई हफ्ते बाद तक मैं सत्यको देखनेसे इन्कार करता रहा। किसी-न-किसी तरह मैंने अपने विश्वासको बचाए रखा। आसपासके गाँवोंमें खेतीका एकीकरण[1] हो रहा था। मुझे वहाँ जाकर सब कुछ देखने-सुननेके अवसर मिले, तो भी मैंने जाकर देखना-सुनना नहीं चाहा। किन्तु धीरे-धीरे उस बालिकाकी यन्त्रणाने मेरे सामने समस्त रूसके किसानोंकी यन्त्रणा उपस्थित कर दी। मेरी इच्छा होने लगी कि गाँवमें जाकर सब कुछ अपनी आँखोंसे देख लूँ।

शीघ्र ही मुझे एक अवसर भी मिल गया। पार्टीकी प्रादेशिक समिति ने फैसला किया था कि पार्टीके लोगोंको अधिकाधिक संख्यामें गाँव जाना चाहिए। एक सभामें हमको सारी बातें समझाई गईं। हम प्रायः अस्सी नवजवान वहाँ इकट्ठे हुए थे। हमसे कहा गया कि अनाज

---

१. किसानोंकी जमीनें एक साथ मिलाकर सरकारी खेतियाँ बनाना।

एकत्र करने और फसलका काम सुलटानेके लिए हमारा गाँवमें जाना आवश्यक है। किन्तु वह लेक्चरबाजी सुनकर हमें ऐसा लगा मानो हम कोई घमासान लड़ाई लड़ने जा रहे हैं। हमने सोचा था कि शायद खेती-बाड़ीके सम्बन्धमें कुछ कामकी बातें बताई जाएँगी। किन्तु उनकी बातोंसे तो आग बरस रही थी। "करो या मरो" के स्वरमें सेन्ट्रल कमिटीके मेम्बर कॉमरेड हतायेविचने कहा :

"साथियो, आप लोग महीने-डेढ़-महीनेके लिए देहातमें जा रहे हैं। नीपरोपेट्रोस्क प्रदेश बहुत पीछे रह गया है। पार्टी और कॉमरेड स्टालिन ने आदेश दिया था कि बसन्तके बीतते-बीतते इस प्रदेशमें खेतीका एकीकरण हो जाना चाहिए। किन्तु ग्रीष्म काल आ गया और काम अभी भी अधूरा है। गाँवके अधिकारियोंमें प्राण फूँकनेकी जरूरत है। इसीलिए आप लोगोंको भेजा जा रहा है। गाँवमें वर्गयुद्ध बड़े जोरोंपर चल रहा है। रहम खाने और भावना दिखानेका समय चला गया। आपको दृढ़ता और साहसके साथ लड़ना होगा। मुझे विश्वास है कि आप पार्टीका आदेश मानकर हमारे प्यारे लीडर (स्टालिन) द्वारा बताए हुए पथपर आगे बढ़ेंगे।"

इसके बाद उसने कुछ धमकियाँ भी दीं। किन्तु हम सब ताली बजा रहे थे, इसलिए धमकियाँ ठीकसे नहीं सुन सके। मुझे बड़ा ताज्जुब हुआ। क्या यही बातें बतानेके लिए हम सबको इकट्ठा किया गया था? क्या केवल "बाल्शेविक दृढ़ता" लेकर ही शहरके कुछ छात्र और कारखानोंके कर्मचारी, गाँवकी इतनी बड़ी आर्थिक और राजनीतिक समस्याएँ सुलझा सकते हैं? मेरे मनमें कतरब्योंत चल रही थी। मेरे पास बैठा एक दूसरा नवयुवक मेरी ओर झुककर चुपकेसे पूछने लगा :

"कॉमरेड क्रावचेन्को, अभी तो शायद और आदेश मिलने बाकी हैं। मेरा मतलब है कि ये लोग हमें कुछ कामकी बातें भी तो बताएँगे।"

मानो वह मेरे मनकी बातें सुन रहा हो। मैं उसे ठीकसे जानता नहीं था, इसलिए उससे बातें करनेमें हिचक-सी हुई। एक अजनबीके साथ बातें करना खतरनाक साबित हो सकता था। मैंने संक्षिप्त-सा उत्तर दे दिया: "मुझे तो भाई मालूम नहीं।"

"आप सोचिए तो।"—वह कहने लगा—"मैं कभी गाँवमें नहीं रहा हूँ। मुझे गाँवके जीवनसे तनिक भी परिचय नहीं। मैं सोच ही नहीं सकता कि सेक्रेटरी साहबने ये जो बड़े-बड़े काम मुझे बताए हैं, वे सब मैं करूँगा कैसे। और यह भी मैं जानता हूँ कि काम पूरा नहीं हुआ तो हम सबको पार्टीसे निकाला जाएगा, शायद मौतके घाट भी उतार दिया जाए।"

मैंने निष्पलक नेत्रोंसे उसकी ओर देखा। मुझे उसकी ईमानदारी पर विश्वास हो गया और पहिलेके अपने सन्देह पर लाज आने लगी। सचमुच वह बहुत घबराया हुआ था। वह मेरेसे बहुत छोटा नहीं था, तो भी बच्चा-सा दीख पड़ता था। ऐसा लगता था मानो अभी अभी माँकी गोदी छोड़कर आया हो। उसने बताया कि उसका नाम सर्गी एलेक्सेयेविच स्वेतकोव है।

कुछ मिनट बाद मुझे कामरेड ब्राड्स्कीने अपने दफ्तरमें बुलाया। वह मोटा-ताजा, लम्बा-तड़ंगा आदमी था। सिर पर घने काले बाल थे। मुझे देखते ही पूछने लगा:

"कामरेड क्रावचेन्को, क्या आप गाँवके बारेमें कुछ जानते हैं?"

"मैंने गृहयुद्धके दिनोंमें एक देहाती कम्यूनमें कुछ साल बिताये थे। इसके सिवाय १९२०-२१ में एक कृषि पाठशालामें कुछ शिक्षा भी पाई थी।"

"बहुत अच्छा। ये और लोग तो गेहूँके पौदे और जङ्गली घासमें अन्तर नहीं देख सकते।"

उसने घंटी बजाई। दो और आदमी आफिसमें घुस आये। एक तो वही छात्र स्वैतकोव था। दूसरेको मैं नहीं जानता था। उसकी उम्र प्रायः चालीस वर्ष होगी! कामरेड ब्राड्स्कीने कहा :

"आप लोग हाथ मिलाइये। आप तीनोंको एक साथ काम करना है। पोडगोरोडनोये नामके गाँवमें चले जाइए। कामरेड क्रावचैंको, आपको देखना होगा कि समस्त फसलमेंसे दाने निकाले जाते हैं या नहीं और, कामरेड स्वैतकोव, आपको तथा कामरेड आर्शीनोवको मिलकर एकीकरणका काम पूरा करवाना होगा तथा अनाज एकत्र करना होगा। कामरेड आर्शीनोव आपके नेता रहेंगे।"

"आपकी टुकड़ीका समस्त भार इन पर है। ये पार्टीके पुराने कार्यकर्त्ता हैं और पुलिसमें कामकर चुके हैं।"

आर्शीनोव एक मोटा और ठिंगना आदमी था। चेहरा गोल मटोल। आँखें बहुत छोटी-छोटी। उसको देखकर मनमें भय-सा जाग उठता था। बाहर निकलकर आर्शीनोवने हमसे कहा कि गर्म कपड़े, बन सके उतना खानेका सामान और रिवाल्वर साथ ले जाना होगा। अगले दिन स्टेशनके वेटिङ्ग रूममें मिलनेके लिये हमें आदेश देकर वह एक ओर चला गया। मैं और स्वैतकोव दूसरी ओर चल पड़े।

पोडगोरोडनोएके लिये गाड़ी पर सवार होकर हम तीनोंमें जो बातें हुईं, उनमें प्रेम अथवा बन्धुताका लेश भी नहीं था। आर्शीनोवकी कमरमें उसका पिस्तौल लटक रहा था। मानों हमें कह रहा हो कि गुस्ताखी माफ नहीं की जाएगी। स्वैतकोवके प्रति अपनी उपेक्षा छुपानेका प्रयत्न आर्शीनोवने नहीं किया। साँझ होते-होते हमलोग मंजिल पर पहुँचे। बून्दें पड़नेके कारण गाँव जानेवाली सड़क पर कीचड़ हो चली थी। किसानोंने हमारी तरफ बिलकुल ध्यान नहीं दिया।

केवल आर्शीनोवकी कमरमें लटकता हुआ पिस्तौल ही उनका ध्यान आकर्षित कर सका। मैंने कहा :

"कामरेड आर्शीनोव, कृपा करके अपना पिस्तौल कोटके नीचे कर लीजिये। झूठमूठ लोगोंको डरानेसे क्या फायदा ?"

"तुम कौन होते हो मुझे टोकने वाले !"—उसने उत्तर दिया।

"कामरेड, मुझे बोलना पड़ेगा। हम तीनों एक साथ आए हैं। हरेककी बातोंमें दूसरोंका साझा है। फिर पार्टीकी बदनामीका सवाल भी उठता है। या तो आप पिस्तौलको ढक लीजिये नहीं तो मैं आपके साथ गाँवमें जानेसे इन्कार करता हूँ।"

हारकर उसने पिस्तौल ढक लिया। लेकिन फिर सारे रास्ते उसने हम दोनोंसे एक शब्द भी नहीं कहा। गाँवकी सोवियत्का आफिस एक भद्दा, टूटा-फूटा, लकड़ीका मकान था। भीतर एक किरासिनका लैम्प जल रहा था। बीसेक किसान धरतीपर बैठे थे। सबके मुखपर क्षोभ उमड़ा था। आर्शीनोवने उन सबको डाँटकर उच्च स्वरमें पूछा : "सोवियत्का प्रधान कहाँ है ?"

"वहाँ, अपने आफिसमें"—किसानोंने एक ओर संकेत करके बतलाया।

"और तुम सब यहाँ क्या कर रहे हो ? क्या बैठे-बैठे मक्खियाँ मारनेके सिवाय तुम लोग कुछ नहीं करना जानते ?"

"काम तो बहुत पड़े हैं"—एकने कहा—"लेकिन हमको यहाँ बुलाकर बैठा लिया जाता है। मुझे कहते हैं कि अनाज दो। लेकिन मैं तो खुद भीख मांगकर पेट भरता हूँ।"

आर्शीनोवने उसकी ओर नफरतकी निगाहसे देखकर कहा : "हूँ। तो मुझे इस जगह काफी काम पड़ेगा।"

उसके साथ-साथ हम आफिसमें घुसे। एक दुबला-पतला थका-सा

नौजवान मेजके पास बैठा हुआ एक बूढ़े किसानसे बातें कर रहा था। आर्शीनोवने ढोल पीटा :

"हम पार्टीकी ओरसे आए हैं! यहाँ हमें काम करना है।"

प्रधानने उठकर हाथ मिलाया और बोला : "आपका स्वागत करता हूँ।" किन्तु उसके मुखपर हर्ष नहीं था। उसने मनसे हमारा स्वागत नहीं किया। आर्शीनोवने पूछा :

"ये सब लोग बाहर बैठे क्या कर रहे हैं?"

"मैंने बुलाया है। किसानोंके साथ काम करनेमें बड़ी मुसीबत है। कहते रहते हैं कि अनाज नहीं है और ब्रह्मा भी इनसे बात नहीं बदलवा सकता। इस इलाकेमें फसल बुरी हुई है और सर्दीका मौसम सामने है। सब लोग कुछ न कुछ बचाकर रखना चाहते हैं। इनसे अनाज निकलवाना बहुत ही कठिन है। फिर ये सामूहिक[1] खेतीमें शामिल होना भी नहीं चाहते। इनको मार डालिए, लेकिन ये अपनी हठ नहीं छोड़ेंगे।"

"अच्छा, देखा जाएगा।"—आर्शीनोवने मुँह बिगाड़कर कहा।

प्रधानने एक और कर्मचारीको बुलाकर कुछ समझाया। वह कर्मचारी हम तीनोंको गाँवमें ले गया। बड़ी-बड़ी गलियोंमें मौतका सन्नाटा छाया था। कभी-कभी कोई कुत्ता भूँक उठता था। साधारण मकानोंके बीच एक बड़ी-सी हवेलीके पास पहुँचकर कर्मचारीने कहा :

"कॉमरेड आर्शीनोव, इसी जगह आपके ठहरनेका प्रबन्ध हुआ है। जगह शायद आपको पसन्द आएगी।"

फिर वह हमको आगे ले चला। एक और हवेली मिली, जिसके चारों ओर छोटा-सा बगीचा था। कुछ छोटे-छोटे घर भी बगीचेमें

---

१. सरकारी खेती, जो किसानोंकी जमीनें, हल, बैल इत्यादि एक साथ मिलाकर बनाई जाती है।

इधर-उधर बने थे। एक कुआँ था, जिसपर डोल और रस्सी पड़े थे। वह बोला : "आपलोग यहाँ ठहरिए। स्टूपैन्को परिवारने अभी-अभी सामूहिक खेतीमें नाम लिखाया है। घर साफ-सुथरा है। छोटे बच्चे भी नहीं हैं। बूढ़े लोग हैं और एक सुन्दर-सी लड़की।" लड़कीका नाम लेते समय उसने आँखें मटका दीं।

दरवाजे पर एक साठ सालका लम्बा आदमी मिला। चेहरे पर दाढ़ी नहीं थी। केवल लम्बी-लम्बी मूँछें पुराने यूक्रेनियन ढंगसे लटक रही थीं। बूढ़ेने कहा : "नहा-धोकर हमारे साथ खाना खाइएगा। भगवानने हमें बहुत नहीं दिया है, लेकिन रूखा-सूखा जो कुछ भी है आपके सामने रख देंगे।"

खानेके समय सारा परिवार इकट्ठा हुआ। लड़की प्रायः अठारह सालकी होगी। सचमुच बहुत सुन्दर थी। बुढ़ियाके मुखपर दया-माया फूटी पड़ती थी। एक आठ सालका लड़का था। हम अपना परिचय देकर उनके साथ बैठ गए। गरम-गरम यूक्रेनियन सूप हमारे सामने परोसा गया। उसमें मांस नहीं था। उसके बाद उबले हुए आलू और तरकारियाँ मिलीं। रोटीके टुकड़े बहुत पतले-पतले तराशे गए थे और सब लोग ऐसी सावधानीसे खा रहे थे मानो मन्दिरसे प्रसाद आया हो। मुझे किसानोंके जीवनसे कुछ परिचय था। मैं जानता था कि वे रोटी खूब पेटभर कर खाते हैं। मांस इत्यादि उनको बहुत बार नहीं मिलता। किन्तु यहाँ तो रोटी भी काफी नहीं थी। परिवार बहुत कठिनाईमें जान पड़ा। हम दोनों उठकर अपने कमरेमें गए और अपने साथ जो खानेका सामान लाए थे, वह लाकर परिवारके सामने रख दिया। हमारे पास कई प्रकारके समोसे, भुनी हुई मछली और मुर्गेका मांस था। उन लोगोंकी आँखें फूल गईं। हमने उनको वह सब खानेका निमन्त्रण दिया और थोड़ी देरमें हम उनसे खूब घुल-मिल गए।

मैंने देखा कि छोटा लड़का कुछ गुमसुम और उदास-सा बैठा है। मैंने बूढ़ेसे पूछा : "आपके लड़केका नाम क्या है ?"

"वह हमारा लड़का नहीं है। कैसे बताऊँ वह कौन है। समूहीकरण हो रहा है ना। उसीके कारण यह यतीम हो गया।"

"क्या मतलब ?"

"यतीम है, बस। और क्या ? किन्तु लड़केसे कुछ मत पूछिए। वह तो चोट खाकर बोलना भूल गया है।"

"क्या हुआ ? हमें बताइए तो।"

"आप पर विश्वास करके भेदकी बात कहता हूँ। आप दोनों शरीफ आदमी दीख पड़ते हैं। और फिर मैं बूढ़ा भी हो गया हूँ। अब भला डरकर क्या करूँगा। मुझे तो मरना ही है। हाँ, इस लड़कीके कारण डर लगता रहता है। मेरे कारण इसकी दुर्दशा न हो जाए।"

फिर उसने कहानी कह दी :

"हमारे घरसे दो मकान छोड़कर बोरवन परिवार रहता था। पति, पत्नी और एक बच्चा। वह बच्चा, वास्या, आपके सामने बैठा है। परिवार खूब खुशहाल था। मेहनत भी वे खूब करते थे। अच्छे आदमी थे। उनको जमींदार कहना बेईमानी है, उनके पास दो घोड़े थे, एक गाय, एक सूअर, कुछ मुर्गियाँ। बहुतोंके पास ये सब हैं। किन्तु बोरवनने सामूहिक खेतीमें शामिल होनेसे इन्कार कर दिया। उसको बहुत समझाया गया, किन्तु वह टस-से-मस न हुआ।

"बोरवनको जमींदार तथा जमींदारोंका दलाल कहते हुए एक साँझको वे उसे पकड़ने आए। स्त्री और बच्चा रोने-चिल्लाने लगे और बोरवनने पुलिसके साथ जानेसे इन्कार कर दिया। पुलिसने मार-मारकर उसे लोहू-लुहान कर दिया और गलीकी कीचड़में से घसीटकर उसे गाँव की सोवियत्में ले गए। श्रीमती बोरवन रोती-चींखती उनके पीछे-पीछे

जा रही थी। वह जनता और भगवानसे सहायता माँगती रही। बेचारी रो-रोकर कहती रही : 'अब हमारी देख-भाल कौन करेगा? ये नर-पशु शैतान तुम्हें कहाँ ले जा रहे हैं।' एक पुलिसके सिपाहीने उसे धक्का देकर कीचड़में गिरा दिया। बोरवनको पकड़कर वे स्टेशन ले गए और मालगाड़ीमें ठूँस दिया। भगवान ही जाने, अब वह कहाँ है।"

बुढ़िया और लड़की यह कहानी सुनकर रोने लगी। बूढ़ा आगे बढ़ा। कहने लगा :

"अगले दिन सुबह पड़ोसकी एक और श्रीमती बोरवनको देखने गई। किन्तु वह घरमें नहीं थी। पड़ोसिनने नाम ले-लेकर खूब पुकारा। घरमें से किसीने उत्तर नहीं दिया। हारकर पड़ोसिन खलियानमें घुस गई और वहाँ कुछ देखकर पागल सी चिल्लाती हुई भाग निकली। हम बहुतसे किसान भागकर वहाँ पहुँचे। श्रीमती बोरवन छतमें रस्सी बाँधकर लटक रही थी। उसकी देहमें प्राण नहीं थे। अभी एक महीने भर पहिले ही तो यह सब हुआ है।

"मैंने और मेरी स्त्रीने वास्याको अपने घरमें ले लिया। हमारे पास कोई छोटा बच्चा नहीं था। किन्तु एक महीना हो गया, तो भी वह बराबर रोता रहता है। रोज साँझको अपने पुराने घरमें जाकर चक्कर काटता रहता है। फिर लौटकर एक शब्द भी बोले बिना सो रहता है। बोरवन परिवारकी दुर्गति देखकर मैंने और मेरी पत्नीने फैसला किया कि हम चुपचाप सामूहिक खेतीमें शामिल हो जाएँगे। आज तो लेकिन यही कहा जाता है कि हमने खुशी-खुशी यह फैसला किया है।"

अगले दिन सुबह हम सोवियत्‌के दफ्तरमें पहुँचे, तो आर्शीनोवको वहाँ पाया। बैठा-बैठा लाल-पीला हो रहा था। उसको जिस घरमें रक्खा गया था, वहाँ पूरा खानेको नहीं मिला था। उस घरके लोगों

ने सब प्रकारकी भद्रता दिखाई, किन्तु उनके साथ हिलने-मिलनेसे किनारा काट गए।

सोवियत्‌का प्रधान, आर्शीनोव तथा मेरा साथी गाँवकी परिस्थिति समझनेके लिये एक साथ चले गए। सामूहिक खेतीके प्रधानको साथ लेकर मैं खेती-बाड़ी देखने निकल पड़ा। एक पुरानी जमींदारीके टूटे-फूटे मकानमें पहुँचे। सहनमें नई फसलके ढेर लगे थे। मुझे यह देखकर हर्ष हुआ कि फसल आखिर खेतोंसे तो उठा ली गयी है। यदि सबने दिल लगाकर काम किया, तो दस बारह दिनमें सारी फसलके दाने भी निकाले जा सकेंगे। किन्तु सन्तोषका केवल यही एकमात्र कारण था। और सब कुछ तो बिना देख-रेखके पड़ा था।

आध घण्टेमें सामूहिक खेतीका काम संभालनेवाले स्त्री-पुरुष वहाँ इकट्ठे हो गए। उनके चेहरोंपर उत्साह नहीं था। सब मानो कह रहे थे : "यह एक और अपनी टांग अड़ाने आया है। इसकी भी सुन लो। और चारा ही क्या है?"

मैंने उनको मित्र बनानेके लिये बड़े मीठे स्वरमें पूछा : "किसान भाइयो, कहो कैसा काम चल रहा है?"

"बस ठीक ही है। आप देख रहे हैं कि हम अभी भी ज़िन्दा हैं"—एक किसानने बुझे हुए स्वरमें उत्तर दिया।

"अमीर भी नहीं है, गरीब भी नहीं। सब एकसे फाक़ामस्त बन गए"—दूसरेने कहा।

मैंने ऐसा भाव धारण किया जैसे उनके वे व्यंग सुने ही न हों। मैंने कहा :

"मैं पार्टीकी प्रादेशिक-कमिटिकी ओरसे आया हूँ। फसल उठाने में, मशीनें ठीक करनेमें तथा सब तरह व्यवस्था पैदा करनेमें आपका हाथ बँटाना चाहता हूँ। किसान भाइयो, सामूहिक खेतीके प्रधानका निर्वाचन किसने किया, बताओ तो।"

"हम सब ने"—वे एक साथ बोले।

"ठीक है। तो इनकी मदद करनी चाहिये ना। नहीं तो ये मुसीबतमें पड़ जायेंगे। आप क्या नहीं जानते कि सरकार इनकी गर्दन पकड़ लेगी? अपने चारों ओर देखिये। क्या फूहड़पन फैला है। सरकार इस सबके लिये आपके प्रधान तथा आप सबको जेलमें डाल सकती है?

"लेकिन मैं आपको डराने तो आया नहीं हूँ। आपको जेलमें भेजनेसे रोटी नहीं पक जाएगी। सोचकर देखिये कि इस सब लापरवाहीके कारण नुकसान किसका हो रहा है। मेरा या आपका? मैं देहात का रहनेवाला हूँ। मेरे परिवार वाले भी किसान थे। मैंने कभी ऐसे गंदे घुड़साल, खलियान अथवा सहन नहीं देखे। मैं जानता हूँ कि आप सबके मनोंमें क्षोभ है। लेकिन इन बिचारे घोड़ों और गायोंका क्या कसूर है? इनको क्यों मारे डालते हो? सच, मुझे आपकी लापरवाही पर अफसोस होता है। मैं जानता हूँ कि आप सब बहुत अच्छे किसान हैं। आपमें किसान होनेका जो अभिमान है, उसीकी दुहाई देता हूँ।"

"शाबाश! यह साथी तो कुछ ठीक बात कह रहा है।"—एकने टीका की—"तो चलो, सब काम पर लग जाएँ। प्रधान महाशय, सभा प्रारम्भ कीजिये। प्रत्येक व्यक्तिको मालूम होना चाहिये कि उसे क्या-क्या करना है। हम सबके नाम और कामकी तारीख लिख लेंगे।"

साँझको भोजनके समय हमारे मेज़बानने मुझे बताया: "सभाके बाद मेरी कुछ आदमियोंसे बातें हुई थीं। सब कह रहे थे कि आपने कामका श्री-गणेश तो ठीक ही किया है। सब आपसे खुश हैं। विशेष कर इसलिये कि न तो आप गाली देते हैं और न डांट-डपट करते हैं।"

अगले दिन मैं बूढ़ेको लेकर खेती पर गया। देखा कि काम पूरी मुस्तैदीसे हो रहा है। खुशीके मारे मैं फूल उठा। औज़ारोंको साफ करके तेल लगाया जा रहा था। खादको उठा उठाकर खलियानों और घुड़सालोंके बाहर लाया जा रहा था और फसलको रौंदकर दाने निकालनेकी पूरी तैयारी थी। इस प्रकार एक सप्ताह बीत गया। मरम्मतका काम ढीला पड़ने लगा। कील कांटे, लोहा तथा लकड़ी इत्यादि नहीं मिल सके। किन्तु किसानोंमें अपनी सूझ-बूझ थी। इधर-उधरसे कुछ जोड़-तोड़ करके काम निकाल लिया। लेकिन हिसाब-किताब लिखनेके लिये कागज नहीं था। मैंने साथीसे कहा कि दो दिनके लिये शहर जाकर जरूरी चीजें खरीद लाए।

उस रातको घर लौटा तो देखा कि साथी एक रस्सी लिये वास्याके माप ले रहा है। मैंने देखकर भी आँखें फेर लीं। साथीका बच्चेसे प्यार हो गया था। शायद कपड़े इत्यादि लानेकी तैयारी थी। साथीको भेजकर अगले दिन मैं आर्शीनोवसे मिलने पहुँचा। उसको मालूम था कि हमारा काम बखूबी चल रहा है और हमारी सफलतासे जला बैठा था। मुझे देखते ही साथीका नाम लेकर बक-झक करने लगा। न जाने क्या क्या गालियाँ उसने मेरे साथीको दे डालीं?

इतवार को भी सारे दिन फसल का रौंदना चलता रहा। किसानों में उत्साह था। मुझे उनको समझाना नहीं पड़ा। उनमें जो अधिक धर्मप्राण थे उनको भी समझाना नहीं पड़ा कि समय बहुत थोड़ा रह गया है, इसलिए काम पूरा होना चाहिए।[1] साँझके समय एक सूटकेस और कई थैली लेकर साथी लौट आया। सारे परिवारके लिए उपहार लाया था। लड़कीके लिए किताबें, बुढ़ियाके लिए सीनेका धागा, बूढ़े के लिए तमाकू। फिर उसने सूटकेसमें से एक पतलून, एक कोट, जूते

---

१. कट्टर ईसाई इतवारको काम नहीं करते।

और बनियान इत्यादि निकालकर वास्याके सामने रख दिए। वास्याने नए कपड़े तुरन्त पहन लिए। सब उसकी ओर देखने लगे। पड़ौसके कई लोग भी उस यतीम बच्चेको खुश होता देखने चले आए। हम जबसे आए थे, तबसे पहली बार वास्या मुस्कराया।

आधी रातके बाद मैं और साथी अपने कमरेमें सोने पहुँचे, तो अकेला पाकर मैंने साथीसे पूछा कि आर्शीनोवके साथ कैसी निभ रही है? साथी बोला: "वह तो सूअरका बच्चा है, भैया। दूसरोंको दुःख देनेमें उसे मज़ा आता है। मैं तुमसे कहना नहीं चाहता था, पर अब और चुप नहीं रहा जाता। वह जानवर रातको किसानों पर जुल्म ढाता है। उन्हें जबरदस्ती घरसे बुलाकर गालियाँ देता है और पिस्तौलसे डराता है। मैंने सुना है कि वह बहुत बार पिस्तौलके कुन्देसे उन्हें मार भी बैठता है।"

"ओ! तुमने यह सब पहिले मुझे क्यों नहीं बताया? कपड़े पहिन लो। तुरन्त वहाँ चलते हैं। अभी।"

सोवियत्के मकानमें अब भी उजाला था। खिड़कीमें से प्रकाश निकल रहा था। वहाँ जाकर देखा कि किसान धरती पर बैठे हैं। दरवाजेपर एक हथियारबन्द सन्तरी था और भीतर गाँवका एक पिस्तौल-धारी सिपाही बैठा सिगरेट पी रहा था। भीतर घुसते ही मैंने दफ्तरमें से आती हुई किसानोंकी चीख-पुकार और आर्शीनोवकी गाली-गलौज सुनी। मैंने गुस्सेमें भरकर सिपाहीसे पूछा: "ये सब लोग इस वक्त यहाँ क्यों जमा हैं?"

सिपाही हड़बड़ाकर खड़ा हो गया। बोला: "यह तो रोजका काम है। कॉमरेड आर्शीनोव किसानोंसे अनाज ऐंठ रहे हैं और उनको सामूहिक खेतीमें शामिल होनेके लिए समझा रहे हैं।"

सहसा आर्शीनोवका स्वर बहुत तेज हो उठा। भीतर कोई धड़ामसे

जमीनपर गिरा और कराहने लगा। कोई किसान कह रहा था : "आप मुझे मारते क्यों हैं ? मारनेका आपको कोई अधिकार नहीं है।"

मैं दरवाजा खोलकर भीतर घुस गया। आर्शीनोव चौंक उठा। होंठ काटकर वह कुर्सीपर बैठा रहा और मेजपर रखी पिस्तौलको उठानेके लिए उसने हाथ बढ़ाया। पिस्तौलको छुपाना चाहता था। धरतीपर पड़ा किसान बूढ़ा आदमी था। उसके कपड़े फटे थे और चेहरा लोहू-लुहान था। मैंने बूढ़ेको बाहर जानेके लिए कह दिया। जी चाह रहा था कि आर्शीनोवका कचूमर निकाल दूँ। किसी प्रकार अपने ऊपर संयम किया। मैंने डाँटकर कहा : "इन सब किसानोंको छुट्टी दो। और अभी।"

"यहाँका इञ्चार्ज मैं हूँ, कामरेड क्रावचैन्को। मेरे काममें तुम दखल नहीं दो तो अच्छा रहेगा"—वह बोला।

"काम तुम्हारा नहीं, पार्टीका है। मैं कम्युनिस्ट हूँ। तुम्हारे जानवरपनसे सोवियत् सरकार पर कलंक लगते मैं नहीं देख सकता।"

बाहरके कमरेमें जाकर मैंने साथीसे कहा : "कामरेड स्वैतकोव, इस किसानका नाम लिख लो—जिसको अभी पीटा गया है। और सिपाहीका भी।"

आर्शीनोव रौब दिखाना चाह रहा था। किन्तु मेरा गुस्सा देखकर घबरा गया। स्वैतकोव आफिसमें आया। वह डरके मारे पीला पड़ गया था। उसके हाथ काँप रहे थे। मैंने उससे कहा कि घर जाकर मेरा इन्तजार करे। फिर मैंने आर्शीनोवसे कहा : "देखो, आर्शीनोव, क्या तुमको गुमान भी है कि तुम क्या कर रहे हो ? हम खेतीके समूहीकरणमें मदद देनेवाले कम्युनिस्ट हैं या पिस्तौलबाज़ डाकू ? तुमको इतना अधिकार है कि किसानोंसे अनाज माँगो और जहाँ तुम्हें सन्देह हो, वहाँ खानातलाशी भी ले लो। लेकिन मारपीटका अधिकार तुम्हें किसने दिया ? इस प्रकार रातको इन्हें सतानेकी क्या जरूरत है ? मैं

चेतावनी देता हूँ। यदि पार्टीका कोप अपने ऊपर नहीं लाना चाहते, तो यह सब बन्द करो। वरना मुझे तुम्हारा भण्डाफोड़ करना पड़ेगा। न्यायके लिए मुझे जो भी मोल चुकाना पड़े, मैं तैयार हूँ।"

(२)

सामूहिक खेतीमें आशासे अधिक सफलता मिल रही थी। फसलसे दाने निकालनेका काम पूरे जोरोंपर था तथा गाय-घोड़ोंकी खूब देखभाल हो रही थी। एक दिन मंगलवारकी दोपहरमें मैं वहाँ गया, जहाँ औरतें अनाज साफ करके गाड़ियोंमें लाद रही थीं। मैंने उनके साथ काम किया, उनके गाने गाए। साँझ होते-होते मैं कई साथियोंके साथ गाँव में लौटा। देखा कि वहाँके वातावरणमें आतंक भरा है। लोगोंकी टोलियाँ इधर-उधर खड़ी थीं। स्त्रियाँ रो रही थीं। मैं भागकर सोवियत्‌के दफ्तरमें पहुँचा। बाहर खड़े सिपाहीसे मैंने पूछा : "क्या बात है?"

"जमींदारोंकी धर-पकड़ फिर हुई है। यह बेहूदा काम क्या कभी खतम होगा! खुफिया पुलिसवाले तथा जिला कमिटीके लोग आज सुबह ही तो यहाँ आए हैं।"

उस मकानके बाहर एक भीड़ जमा हो गई। पुलिसने उनको हटाना चाहा, किन्तु वे फिर वापिस आ गए। उनमें से कुछ लोग गालियाँ दे रहे थे। कुछ औरतें और बच्चे धाड़ें मार मारकर रो रहे थे और अपने पतियों एवं पिताओंको नाम ले-लेकर पुकार रहे थे। एक हृदय-विदारक दृश्य था। दफ्तरके भीतर आर्शीनोव खुफिया पुलिसके एक अफसरसे बातें कर रहा था। दोनों मुस्करा रहे थे, मानो एक-दूसरे से मज़ाक कर रहे हों। दफ्तरके पीछे सहनमें बीसेक किसान—जिनमें कुछ बूढ़े थे और कुछ जवान—अपने बिस्तर इत्यादि लिए खड़े थे। उनको घेरकर पुलिसके सिपाही पिस्तौलें ताने पहरा दे रहे थे। बन्दी किसानोंमें से कुछ लोग रो रहे थे, कुछको मानो काठ मार गया था।

अब मैं समझा कि "जमींदारोंका वर्गोन्मूलन" किसे कहते हैं। बहुत-से सीधे साधे ग़रीब किसानोंको उनकी जन्मभूमिसे हटा कर, बिना किसी सरोसामानके दूर किसी जंगलमें लकड़ी काटनेके लिये अथवा नहर खोदनेके लिये ले जाय जाता था। किसानोंके परिवारोंको पीछे छोड़ दिया जाता था और उनके करुण-क्रन्दनसे आसमान भी फटने लगता था। मैं वहां खड़ा-खड़ा सब देख रहा था। मेरे मनमें सन्ताप और लाज भरे थे, किन्तु मैं कर ही क्या सकता था। सहसा किसी स्त्रीके चीत्कारसे सब लोग चौंक उठे। सारी भीड़ उस ओर देखने लगी और खुफिया पुलिसके कुछ लोग उस स्त्रीकी तरफ दौड़े। स्त्रीके बाल बिखरे हुए थे, और उसके हाथमें एक जलता पूला था। इसके पूर्व कि कोई उस को रोक पाता, उसने वह पूला मकान की छत पर फेंक दिया। छत फूसकी बनी थी, वह तुरन्त जल उठी।

"काफिरों! हत्यारों"—स्त्री चिल्लाने लगी—"सारा जीवन परिश्रम करके हमने यह घर बनाया है। तुमको यह नहीं लेने दूँगी। इसे तो आगकी भेंट चढ़ाऊँगी।" और वह ठहाका मार-मार कर हँसने लगी।

किसान लोग दौड़ कर जलते हुए घरमें घुसे और फर्नीचर इत्यादि बाहर निकालने लगे। मानो प्रेतपुरीका दृश्य था। आग लगी थी, एक पागल बनी स्त्री इधर उधर दौड़ रही थी, किसानोंको कीचड़में घसीटा जा रहा था। और सबसे भयावह लगते थे आर्शीनोव और खुफिया पुलिस के लोग जो शान्त, धीर खड़े सब देख रहे थे, मानो ये सब रोजकी घटानाएँ हों। इसी सबके बीच खड़ा मैं कांप रहा था। मेरी ज्ञानेन्द्रियाँ शिथिल होती जा रही थीं। मनके भीतर तूफान उठा था। मैं चाहता था कि जो कोई भी सामने आए उसीको गोली मार दूँ। शायद जीवनमें फिर कभी मैं इस प्रकार अर्ध विक्षिप्त नहीं बना। किसी मजबूत हाथने मेरा हाथ पकड़ लिया। बूढ़ा स्टुपेन्को था।

शायद वह मेरी मनोदशाको समझ गया था। बोला : "विक्टर, तुम क्यों अपने आपको जला रहे हो ? तुम कोई बेवकूफी कर बैठे तो तुम्हारा बड़ा नुकसान होगा, और हमारी कोई भलाई नहीं होगी। मेरी बात मानो। मैं बूढ़ा आदमी हूँ, मैंने जमाना देखा है। अपने आपको संभालो। इस आफतसे दूर रहना ही अच्छा है, क्योंकि तुम यहाँ कुछ नही कर सकते। चलो, घर चलें। तुम्हारा मुँह सफेद पड़ गया है। मुझे तो यह सब देखनेकी आदत पड़ चुकी है। आज जो हो रहा है वह बहुत मामूली है। पिछले साल जो धर-पकड़ और जोर-जुल्म हुआ था उसकी तुलनामें तो यह कुछ भी नहीं है। आओ, चलो।

घर आकर मैं बैठ नहीं सका, अपने कमरे में टहलता रहा। मनमें उत्ताप था, और थी निराशा। मैं तो आर्शीनोवके विरुद्ध जिला कमिटि के पास शिकायत करने वाला था और यहाँ ये जिला कमिटिके लोग खुफिया पुलिसके साथ आकर खुद आर्शीनोव जैसे कुकर्म कर रहे थे ! मेरे मनमें एक शुबा कुछ दिन पूर्व जागा था कि किसानों पर ये जुल्म नीचेके अधिकारियों द्वारा नहीं किए जा रहे, बल्कि सोवियत् सरकार की नीतिके बलपर हो रहे हैं। इन जुल्मोंमें मुझे मास्कोमें पड़े बड़े-बड़े कम्युनिस्ट पण्डोंका हाथ मालूम पड़ता था। उस दिन मुझे विश्वास हो गया कि मेरा शुबा ठीक था। मैं निराशाके सागरमे डूब गया। सारे रूसमें कोई ऐसा नहीं था जिसके पास मैं अपील लेकर जाता।

उस घटनाके बाद आर्शीनोवसे मेरा सम्बन्ध काम-काजका ही रह गया। मैंने उसके व्यवहारके सम्बन्धमें एक लम्बी रिपोर्ट लिख कर पार्टीकी प्रादेशिक कमिटीके पास भेज दी। उस दिनकी गिरफ्तारियोंके बाद बाक़ी सब किसान सामूहिक खेतीमें शामिल हो गए। सबने अपने घरोंसे अनाजका एक-एक दाना निकाल कर सरकारको दे दिया। किसानोंको अपने घरपर रहकर भूखों मरना मंजूर था। वे देश-

निकाला नहीं चाहते थे। किन्तु रूसके समाचार-पत्रोंमें यही छपा कि किसान बड़ी खुशी-खुशी अनाज दे रहे हैं और सामूहिक खेतियोंमें शामिल हो रहे हैं।

गांवसे हमारे चले जानेका दिन आ गया। आर्शीनोवने कहा कि उसका कुछ काम रह गया है, वह कुछ दिन पीछे गांवसे जाएगा। मैं समझ गया कि वह स्वैतकोव और मेरे विरुद्ध गवाहियाँ इकट्ठी करने के लिये रुक रहा है। गांव वालोंसे हमने विदा ली। हम दोनोंके लिए किसानोंके दिलोंमें प्यार था। हमारे मेज़बानोंको हमारा जाना बहुत बुरा लगा। विदाके भोज पर बूढ़ा स्टूपैन्को एक बड़ीसी ब्रान्डीकी बोतल ले आया। उस पर कीचड़ लगी थी। उसने कहीं बागमें गाड़कर कुछ सामान छुपाया होगा। बूढ़ा बोला : "किसी बड़े पर्वके लिए मैंने यह बोतल छुपाकर रक्खी थी। सोचता था कि लड़कीका ब्याह होगा, अथवा मेरा श्राद्ध, तो लोग इसे पीकर मेरी कुछ तारीफ करेंगे। किन्तु मुझे ऐसा लग रहा है कि तुमसे बढ़ कर अच्छा और कौन आदमी अब इसे पीएगा। तुम्हारी दीर्घायुके लिए हम सब भी आज पीएँगे। भगवान हमारे अभागे देशकी मुक्ति का मार्ग निकाले, यही प्रार्थना है।"

नीप्रोपेट्रोस्कमें लौट कर जान पड़ा कि प्रादेशिक कमिटीके लोग मेरे कामसे सन्तुष्ट हैं। लेकिन आर्शीनोवके बारेमें मेरी रिपोर्ट पर मैं किसीका ध्यान आकर्षित नहीं कर सका। सबने यही कहा : "उसमें कमियां हैं, यह मानते हैं। किन्तु कमियां किसमें नही हैं। हम तो यह जानते हैं कि आर्शीनोवमें काम पूरा करनेकी क्षमता है।"

गांवमें जानेके कारण मेरी पढ़ाई-लिखाई पीछे पड़ गई थी। उसे पूरा करनेके लिये मैंने बहुत मेहनतसे काम करना शुरू किया। किताबोंमें ज्यों-ज्यों मन लगता गया त्यों-त्यों मेरे मनसे वह किसानोंका दुःख-दर्द

भुलाया जाने लगा। पढ़ाई-लिखाई मानों एक नशा थी, जिसने मेरी स्मृतियों पर परदा डाल दिया।

युद्धके समय कुछ लोग मोरचे पर जाते हैं और कुछ पीछे रह कर काम करते हैं। उन दोनों किस्मके लोगोंमें एक अन्तर आ जाता है। जो कम्युनिस्ट खेतीके सामूहीकारणका ताण्डव देख चुके थे, उनकी मनोदशा साधारण कम्युनिस्टोंसे कुछ भिन्न हो गई थी। हमने मौतका नंगा नाच देखा था। हमारे दिलों पर घाव लगे थे। इसलिए हम चुप रहते थे। किसानोंकी समस्या पर हमसे कोई बात करना चाहता था तो आपसमें बैठ कर कभी कुछ बातें कर लेते थे, किन्तु किसी नए व्यक्ति के सामने उस विषयमें बोलना हमारे लिए दूभर हो गया।



नवाँ अध्याय

नरक-यातना

खेतीके समूहीकरणके साथ-साथ देश-भरमें मौत नाच उठी थी। रूस के दक्षिणमें और मध्य एशियाके प्रान्तोंमें जो बड़ा भारी अकाल पड़ा, उसके विषयमें सब जानते थे। किन्तु रूसके समाचार-पत्रोंमें एक शब्द भी नहीं छपा, जिससे समझा जा सकता कि देशमें अकाल पड़ गया है। यदि कोई अकालका नाम भी ले-देता तो उसको देशद्रोही कहकर हम सब उसके पीछे पड़ जाते थे। पुलिसने भरसक चेष्टा की कि अकाल-पीड़ितोंको कहीं छुपाकर रक्खा जाए। दमन भी ख़ूब हुआ। किन्तु हमारे शहरोंमें भूखे किसान बाढ़की तरह घुस आए। उनमें तो हिलने-डुलनेकी शक्ति भी नहीं रह गई थी। वे भीख भी नहीं मांग सकते थे। इसलिए स्टेशनोंके पास पड़े-पड़े वे मौतकी बाट जोहने लगे। उनके बच्चोंको इन्सान नहीं कहा जा सकता था। मानो पेट फुलाए हुए कंकाल पड़े हों।

जिस समय यह अकाल पड़ा, उसी समय हमारी पहली पंचवर्षीय योजना चार वर्षमें पूरी होनेकी डींगें हाँकी जा रही थीं। उस सफलता के हंगामेने भूखोंके आर्तनादको डुबाना चाहा। किन्तु मरते हुओंकी कराहट दब नहीं सकी। हममें से कुछ लोगोंको वह सफलताकी नगाड़े-बाजी बहुत बुरी लगी। अकालकी वीभत्सता उस क्रूरताके सामने नगण्य बन गई।

सबकी आँखें नई फसलपर टिकी थीं। चारों ओर किसान कीट-पतंगोंकी तरह मर रहे थे। भला अस्थिशेष किसान क्यों कर फसल काटेंगे? सबको यही चिन्ता थी। किसानोंका बस चलता, तो फसल की बाट जोहे बिना हरी खेतियोंको ही खा जाते। इसलिए सरकारने गाँव-गाँवमें पुलिस और फौजकी टुकड़ियाँ रख छोड़ीं। विश्वस्त कम्युनिस्टोंको चारों ओर भेजा, शहरके छात्रोंसे पुलिसका काम लिया। खड़ी खेतियोंको बचानेके लिए खूब सख्तीसे काम लिया गया।

हमारे शहरके हम तीन कम्युनिस्ट एक दिन प्रदेश कमिटीके दफ्तर में बुलाए गए। कमिटीके मन्त्री हताएविच हमारे यूक्रेन प्रान्तके प्रमुख कम्युनिस्ट थे। उन्होंने एक बड़ा-सा व्याख्यान दे डाला। कहने लगे: "गाँवोंमें आप लोगोंका काम देखकर ही हम जान सकेंगे कि पार्टी और कामरेड स्टालिनके प्रति आप लोगोंमें कितना भक्ति-भाव है। कमजोरीके लिए कोई स्थान नहीं। गिलगिले लोगोंको इस कामपर नहीं जाना चाहिए। आपलोगोंको कठोरतासे काम लेना होगा। फौलाद-जैसी कठोरताकी जरूरत है। असफलताके लिए कोई भी बहाना हम नहीं सुनेंगे। हमें सफलता चाहिए।"

पार्टीका वह आदेश पाकर मैं प्याटीखाट्स्की जिलेमें जा पहुँचा। मेरे साथ एक स्कूलका साथी और मित्र यूरी भी था। साँझ होते-होते हम पैट्रोवो ग्राममें पहुच गए। सब ओर मौतका सन्नाटा छाया था। हमको आफिसका रास्ता दिखानेवाले किसानने कहा कि किसानोंने सारे कुत्तोंको खा लिया है, इसीलिये इतनी शान्ति है। लोगोंमें चलने-फिरनेकी शक्ति नहीं रह गई, इसलिये घरोंसे बाहर ही नहीं निकलते। स्थानीय अधिकारीसे मिलनेके बाद रात काटनेके लिये हमने एक किसानके झोंपड़ेकी शरण ली। घरके भीतर एक चिरागका मन्द प्रकाश था। घरकी मालकिन थी एक किसान युवती। उसका चेहरा पथरा-सा गया

था। उदासी अथवा भयको व्यक्त करनेकी क्षमता भी उस चेहरेमें नहीं बच रही थी। मानो मुर्दा उठकर चल-फिर रहा हो। एक कोनेमें छोटी-सी खटिया पर दो बच्चे पड़े थे। जैसे मिट्टीके पुतले हों। उनकी आँखें देखकर ही विश्वास होता था कि उनमें प्राण बाकी हैं। यूरीने कहा : "हमें अफसोस है कि आप लोगोंको कुछ तंग करना पड़ रहा है। किन्तु हम भरसक आपको कोई तकलीफ नहीं देंगे। सुबह होते ही हम चले जाएँगे।" यूरीके स्वरमें जान नहीं थी, मानो किसी श्मशानमें खड़ा फुसफुसा रहा हो।

युवतीने उत्तर दिया : "आप आ गए। अच्छा किया। मुझे अफसोस इसी बातका है कि मैं आपकी कुछ भी सेवा नहीं कर सकती। कितने हफ्ते बीत गए, रोटीका एक कौर हमें नहीं नसीब हुआ है। दस-पाँच आलू घरमें पड़े हैं, किन्तु उनको हम एक साथ नहीं खा सकते। बड़ी कँजूसी बरतनी पड़ रही है।" सहसा वह रोने लगी। फिर आँसू पोंछकर बोली : "क्या इस यातनाका कभी अन्त भी आएगा? या मैं और मेरे बच्चे औरोंकी तरह मर-खप जाएँगे?"

हम सबने मिलकर कुछ खाने-पीनेका सामान परस लिया और हम दोनोंने बहुत कम खाया, ताकि उनको कुछ अधिक मिल सके। बच्चोंने हमारा लाया हुआ सूअरका मांस, सूखी मछली, चाय और चीनी देखे, तो आँखें फाड़कर रह गए। वे जल्दी-जल्दी खाने लगे। जैसे किसी जादूके कारण वे सब नेमतें उनके सामने आई हों और उन्हें डर लग रहा हो कि किसी क्षण भी जादूका असर चले जानेके कारण वे सब गायब हो जाएँगी। बच्चोंको सुलाकर गृहिणी हमसे बातें करने आ बैठी। कहने लगी : "मरे हुओंकी बात मैं आपको नहीं सुनाऊँगी। आप तो सब जानते हैं। किन्तु जो अधमरे हो चुके हैं, जिनमें दो-चार साँस बाकी हैं, उनकी हालत तो मरे हुओंसे भी गई बीती है। हमारे पैट्रोवो में सैकड़ों

लोग भूखसे तड़प रहे हैं। न जाने कितने लोग रोज मरते हैं। बहुतसे तो इतने कमजोर हो गए हैं कि घरोंके बाहर भी नहीं निकल सकते। भीतर ही मर जाते हैं और एक गाड़ी रोज घूम-घूमकर उन मुर्दोंको उठा ले जाती है। हमको जो कुछ भी मिला हमने खा लिया है—बिल्ली, कुत्ते, चूहे और पक्षी। सुबह ही देख लेना कि पेड़ों पर छाल नहीं बच पाई है। वह भी हमने खा ली। और तो और, घोड़ों की लीद तकको हमने नहीं छोड़ा।"

मेरे मुख पर आश्चर्य और अविश्वासका भाव देखकर उसने दोहराया :

"हाँ। सच मानिए। घोड़ोंकी लीद हमने खाई है। लीद देखकर हम छीना-झपटी करते हैं। मार-पीट हो जाती है। लीदमें अक्सर दाने होते हैं ना।"

सूरज निकलनेके कुछ देर बाद हम दफ्तर पहुँचे। वहाँ हमको सरकारी खेतीका कृषि-विशेषज्ञ मिला। वह मेरा पुराना परिचित निकला। एरसटोवकाकी कृषि-पाठशालाका छात्र था। अपने घर पर हमें ले जाते हुए कहने लगा : "कामरेड क्रावचैंको, यदि आपके ऊपर दया-मायाने काबू पा लिया तो यहाँ आप कुछ भी नहीं कर पाएँगे। दूसरोंको भूखे मरता देखकर भी आपको पेट भर खाना होगा। आपका जीवित रहना जरूरी है। नहीं तो फसल कैसे उठेगी? जब-जब आपकी बुद्धि पर भावनाकी जीत होने लगे, तो मन ही मन कहना कि अकालको खत्म करनेके लिये नई फसल उठाना जरूरी है। आप यह मत सोचिए कि मैंने आसानीसे यह संयम सीखा है। मुझे भी बहुत अभ्यास करना पड़ा है। आखिर मैं जानवर तो नहीं हूँ।"

यूरी और मैंने गाँवका चक्कर लगाया। उस सन्नाटेमें हमारा दम घुटने लगा। हम एक खुले स्थान पर पहुँचे। गाँवका बाजार श्मशान जान पड़ता था। सहसा यूरीने मेरा हाथ पकड़कर इतने जोरसे दबाया कि दर्द करने

लगा। मैंने देखा कि हमारे सामने धरती पर पुरुषों, स्त्रियों और बच्चों की लाशें पड़ी हैं। उनपर कुछ घास ढक दी गई थी। मैंने गिनकर देखा। सतरह लाशें थीं। हमारे देखते-देखते एक ठेला आया और दो आदमियोंने लाशें उठाकर उसपर लाद लीं। जैसे लकड़ियाँ लाद रहे हों। हम वापिस दफ्तरमें लौटे तो साँझ हो चुकी थी।

कई कर्मचारी वहाँ हमारी बाट जोह रहे थे। वे सब हमसे बड़ी अच्छी तरह मिले। सबसे परिचय करानेके बाद हमें उपप्रधानके बंगले पर ले जाया गया। साफ-सुथरी जगह थी। भोजन सादा था, पर पेट भरनेके लिये काफी मिला। लैम्पके उजालेमें भोजनसे लदी मेज पर बैठकर हमारे लिये यह सोचना कठिन हो गया कि हमारे चारों ओर सब घरोंमें भूखमरी और मौतका बोलबाला है।

खाना खाकर मैं और यूरी फिर घूमने निकल पड़े। यूरीको जिन गाँवोंमें काम करना था, वे मेरे इलाकेसे आठ मील दूर थे। चलते-चलते हम लोगीना गाँवमें पहुँचे। उसी गाँवको केन्द्र बनाकर मुझे चारों तरफके कुछ गाँवोंमें काम करना था, इसलिये लोगीनाके सोवियत्का दफ्तर देखकर मैं रुक गया और यूरी आगे चला गया। दफ्तर छोटा किन्तु साफ-सुथरा था। मैं पहुँचा तो एक छोटी-सी सभा हो रही थी। मैंने अपना परिचय देकर उनसे सभा जारी रखनेका अनुरोध किया। सोवियत्का प्रधान, बेलूसोव, पार्टीके स्थानीय मन्त्री कामरेड कौबजारसे बहुत डरता था। उसको सभामें मिमियाते देखकर मैंने सब समझ लिया। सभामें ट्रैक्टर स्टेशनका मैनेजर कारस भी मौजूद था। उसने मुझसे कहा: "कामरेड क्रावचैंको, अब यहाँके अगुआ आप हैं। सभाका काम संभालिए।"

मैंने उत्तर दिया: "नहीं, नहीं, आप अपनी बातचीत जारी रखिए। मैं बैठकर सुनता रहूँगा, आप इजाजत दें तो। और मुझे

अपनेसे अलग क्यों मानते हैं, आप ? हम सब एकसे साथी हैं। मिलकर काम करना है न।"

सभा चलने लगी। सामूहिक खेतियोंके मुखियोंने पारी-पारीसे अपनी रिपोर्ट सुनाई। एकने कहा : "मेरे गाँवके लोग भूखों मर रहे हैं। जो मरे नहीं हैं, वे घरोंमें पड़े सड़ते हैं। उनसे कोई काम नहीं लिया जा सकता। फसल काटनेका समय होते-होते बहुत-से मर खप जाएँगे। फिर बताइए हम कामको पूरा करनेकी क्या व्यवस्था करें ?"

बेलूसोव और कौबजारने उपदेश देना शुरू कर दिया। वे पार्टीके आदेश दोहराने लगे। मैं समझ गया कि वे भी कोई किनारा नहीं खोज पाए हैं और उनको वास्तवमें कोई दिलचस्पी नहीं है। बस पार्टीके कर्मचारी होनेके नाते अपना कर्त्तव्य पूरा कर रहे हैं। मैंने मन-ही-मन कहा कि मुझे इन कर्मचारियोंसे कोई आशा न रख कर सीधे किसानोंसे नाता जोड़ना पड़ेगा। पार्टीके कर्मचारी तो अकालको एक साधारण घटना मानकर सन्तुष्ट-से दीख पड़ते थे। फसल उठवानेके लिए उनके इस सन्तोषको मिटाना आवश्यक था। सभा खत्म होनेपर बेलूसोवने मुझसे कहा : "आप चलकर मेरे घर पर सोइएगा।"

बीचमें एक मुखिया बोल उठा : "आप मेरे घर चलें तो मुझे बड़ी खुशी होगी। मेरा नाम है चदाई। मेरा परिवार छोटा-सा है और हम आपको एक कमरा अलगसे दे सकते हैं।"

मैंने चदाईके साथ जानेका फैसला कर डाला। मैंने सोचा कि किसानोंके निकट रहना ही अच्छा होगा। मैं सबसे हाथ मिलाकर चदाईके साथ हो लिया। वह सीधा-सादा, समझदार, अधेड़ आयुका आदमी था। दाढ़ी-मोंछ साफ रखता था और मुझे देखनेमें अच्छा लगा। एक दूसरी सामूहिक खेतीका मुखिया देमचैन्को भी हमारे साथ हो लिया। घर पर पहुँच कर मैंने मुस्कराते हुए कहा : "साथियो, पहले चलकर

अस्तबलकी खोज-खबर लेनी चाहिए। मुझे बचपनमें यही सिखाया गया था। बाबाका आदेश था कि सोनेसे पहले घोड़ों और ढोरोंको देख लेना चाहिए।"

फिर मैंने चदाईसे कहा : "भूल जाओ कि मैं अफसर हूँ। मुझे अपने जैसा किसान समझ कर बताओ कि यहाँके लोगोंकी असली हालत कैसी है, आप फसल काटनेके लिए क्या बन्दोबस्त करना चाहते हैं, मशीनोंकी क्या हालत है। मुझसे कुछ छुपाओ मत। मेरे साथ ईमान्दारी बरतना अच्छा है। आखिर हम सबका ध्येय तो एक ही है ना।"

"अब मैं क्या कहूँ, कॉमरेड क्रावचैन्को। फसल तो बुरी नहीं हैं। मशीनें भी ठीक ही हैं। पर दो-चार पुरजे इधर-उधर हो गए हैं। वे पुरजे मिले बिना काम नहीं चल सकेगा।"

"उन पुरजोंकी एक लिस्ट बना दो। मैं पैट्रोवोके दफ्तरसे मँगा दूँगा।"

"धन्यवाद। हमारा काम बन जाएगा। एक और मुशकिलका सामना है। घोड़ोंके लिए चारा नहीं रह गया। कुछ चारेका जुगाड़ होना चाहिए। नई फसलसे कुछ चारा निकाल सकते हैं, किन्तु उसकी तो सख्त मनाही है।"

"मनाही हुआ करे। यदि दूसरा कोई रास्ता नहीं है तो नई फसलसे ही काम निकालना होगा। इसका उत्तरदायित्व मैं अपने ऊपर ले लूँगा।"

चदाईने मुझे चेताया। बोले : "लेकिन बेलूसोव और कौबजार कभी इस बातकी इज़ाजत नहीं देंगे।"

"उनको मैं समझ लूँगा।"

"एक बात और। खास महत्त्वकी बात है। लोगोंकी हालत बहुत बुरी है। मक्खियोंकी तरह मर रहे हैं। या इतने कमजोर हो गए हैं कि कुछ कर नहीं सकते। फसल कौन काटेगा ? मैं सेनामें रहा हूँ। मैंने खून बहते देखा है, लोगोंको मरते हुए भी। लेकिन वह सब वैसा भयानक नहीं लगा। मेरे गाँवमें तो, साथी, हद हो गई है।"

सहसा उसने मेरी आँखोंसे आँखें मिलाईं। उसकी निराशाके भीतर आशा जाग उठी। बोला: "आप मालिक हैं। यदि आप फसल उठवाना चाहते हैं तो पहले लोगोंको भुखमरीसे बचाना होगा। मेरे से तो यह सब और देखा नहीं जाता। सहनकी भी सीमा होती है।"

"मैं कोई वायदा नहीं कर सकता, कामरेड चदाई। कोशिश करना मेरा काम है। कल जरा तड़के उठ कर हम घर-घरकी खोज-खबर लेंगे। मैं अपनी आँखोंसे सब देखना चाहता हूँ।"

(२)

अगले दिन चदाईके साथ घूम कर मैंने जो देखा वह वर्णनातीत है। मेरे रोंगटे खड़े हो गए। लड़ाईके मैदानमें लोग जल्दी मर जाते हैं। फिर उनको उलट कर चोट करनेका अवसर भी तो मिलता है। लड़नेवालों को एक दूसरेका सहारा रहता है और एक कर्त्तव्यकी भावना उनको प्रेरित करती है। किन्तु यहाँ तो लोग सड़ कर मर रहे थे। बुरी मौत। किसी बलिदानकी भावनाका आश्रय भी वे नहीं ले सकते थे। दूर, बहुत दूर, राजधानीमें बैठ कर ऐश करते हुए कुछ लोगोंने कुछ फैसले किए थे, जिनके फलस्वरूप इन किसानोंको तड़प-तड़प कर प्राण देने पड़ रहे थे। वे मानो किसी जालमें फँसे थे और निकल भागनेका कोई रास्ता नहीं रह गया था।

हमने एक द्वार खटखटाया, किन्तु कोई उत्तर नहीं मिला। हमने फिर खटखटाया। हार कर मैंने डरते-डरते द्वार खोल दिया और एक तंग-सी ड्योढ़ी पार करके हम एक कमरेमें पहुँचे। झोंपड़ीमें एक ही कमरा था। सबसे पहले मेरी आँखें उस चिराग़ पर गईं जो चारपाईके सिरहाने जल रहा था। फिर मैंने देखा कि एक अधेड़ स्त्री चारपाई पर पड़ी है। उसके दोनों हाथोंने छाती पर क्रास बना रक्खा था। खाटके पास एक बूढ़ी और दो बच्चे खड़े थे। ग्यारह बरसका एक लड़का और

दस बरसकी लड़की। बच्चे चुपचाप आँसू बहा रहे थे और बीचमें "माँ, माँ" कह कर चिल्ला उठते थे। मैंने चारों ओर देखा। चूल्हेके पास एक आदमीका फूला हुआ शरीर ऐंठा पड़ा था।

बराबरके दूसरे घरमें चालीसेक बरसका एक आदमी बैंच पर बैठा हुआ जूता सुधार रहा था। उसका मुख सूज गया था। पास ही कंकाल-शेष एक छोटा-सा लड़का पुस्तक पढ़ रहा था। एक सूखी-सी औरत चूल्हे पर कुछ पका रही थी। चदाईने उससे पूछा : "नतालका, क्या पका रही हो ?"

"तुम क्या नहीं जानते क्या पका रही हूँ"—आग-बगूला होकर उसने उत्तर दिया।

चदाई मेरा हाथ पकड़ कर घरसे बाहर निकल गया। मैंने उस औरतके गुस्सेका कारण पूछा। चदाई बोला : "मुझे बतलाते हुए शरम आती है। बेचारी घोड़ेकी लीद और तिनके-पत्ते मिलाकर पका रही है।"

हमने प्रायः एक दर्जन घर और देखे तब कहीं चदाईकी बात मेरी समझमें आई। वह तो शुरूसे ही कह रहा था कि घर-घर घूमना बेकार है, क्योंकि सभी जगह एक-सी हालत है। मेरे सामने अब एक ही सवाल था। स्थिति इतनी खराब थी कि कानूनके अनुसार काम करनेसे उसमें सुधार होनेकी कोई सम्भावना मैंने नहीं देखी। मैंने फैसला किया कि मुझे चाहे कुछ भी भुगतना पड़े, किन्तु किसानोंकी सहायताके लिए यदि कानून तोड़ने और पार्टीके आदेशोंकी अवज्ञा करनेकी जरूरत हुई तो भी मैं करूँगा। मैं पूरी तरह समझ गया था कि यदि उन किसानोंको फिरसे अपने पाँव पर नहीं खड़ा किया गया तो सब कुछ स्वाहा हो जाएगा। चदाईके घर लौटकर मैंने अपने विभागके प्रमुखको एक पत्र लिखकर एक हरकारेके हाथ तुरन्त भेज दिया। साँझको हरकारा उत्तर लेकर लौट आया। प्रमुखने लिखा था : "मैं भी स्थितिको भली-भाँति

समझता हूँ। मेरा अनुरोध है कि तुम एकबार फिर सारी बातों पर विचार करके देख लो और तुम्हें क्या करना उचित है यह अच्छी तरह समझ लो। तुम जो करना चाहते हो, वह कानूनके एकदम विरुद्ध है। यदि तुमको कोई दूसरा रास्ता नहीं सूझता तो तुम जो ठीक समझो कर डालो। मैं भी कोशिश करूँगा कि कुछ अनाज तुम्हारे पास भिजवा दूँ। लेकिन मुझे आशा बहुत कम है।"

उत्तर पाकर मुझे सन्तोष हुआ। उसने एकबारगी मेरा रास्ता नहीं रोका। मैं चाहता था कि खड़ी फसलमें से कुछ चारा घोड़ोंके लिए काट लिया जाए और कुछ जौ किसानोंके लिए। 'इजवेस्तिया'में बार-बार लिखा जाता था कि खड़ी फसलको किसी प्रकार भी उपयोगमें लाना चोरी और गद्दारी है। चारों ओर ऐसी "चोरी" के लिए किसानोंको गिरफ्तार किया जा रहा था। मैंने चदाईसे कहा कि गाँवके दो स्कूल-मास्टरों, लेडी डाक्टर और कुछ अन्य समझदार स्त्रियोंको इकट्ठा कर लो। वे सब आ गईं तो मैंने उनसे कहा : "साथियो, मैंने आपको इसलिए बुलया है कि मुझे आपकी सलाह चाहिए। बहुत अच्छा हुआ कि सोवियत्के मुखिया, पार्टीके मन्त्री और ट्रैक्टर-स्टेशनके मैनेजन भी यहाँ आ गए हैं। मैंने घर-घर जाकर सब कुछ अपनी आँखोंसे देखा है। बच्चोंकी हालत देखकर तो मेरे रोंगटे खड़े हो गए हैं। जिन लोगोंके बच्चे उनकी आँखोंके आगे तड़प-तड़प कर मर रहे हों, उनसे कोई काम करवानेका दावा मैं नहीं कर सकता।

"मेरी योजना आप सुन लीजिये। चदाईने मुझे बतलाया है कि गाँवमें कुछ घर खाली पड़े हैं। यहाँ पर प्रस्तुत महिलाओंसे मेरा अनुरोध है कि वे उन घरोंको साफ करें और लीप-पोतकर मनुष्योंके रहने योग्य बना डालें। जब तक फसल न उठ जाये, तब तक गाँवके बच्चोंको मैं उन घरोंमें रखना चाहता हूँ। बच्चोंको इकट्ठा करके नहला

डालिये, उनके बाल काटिए और टाइफाइडसे उनकी रक्षाके लिये टीका लगाइये। डाक्टरके पास आवश्यक दवाएँ हैं। उन घरोंके आंगनमें कुछ तख्त बिछा लीजिये और खाना पकानेके बर्तन इकट्ठा कर लीजिये। क्या आप यह सब करनेके लिये तैयार हैं?"

एक स्त्रीने उत्तर दिया: "जरूर, यह सब तो हम कर लेंगे। लेकिन खानेका आप क्या प्रबन्ध करेंगे?"

"वह पीछे बतलाऊँगा। पहले मुझे यह बतलाइये कि बच्चोंका भार सम्भालनेके लिये आप किसको सबसे योग्य व्यक्ति समझते हैं?"

कइयोंने एक साथ चिल्लाकर स्कूल मास्टरका नाम लिया। मास्टर को कोनोनेन्को ईवान पेंट्रोविच कहते थे। इसके बाद मैंने सभा विसर्जन कर दी और अधिकारियोंको लेकर एक बन्द कमरेमें मन्त्रणा करने बैठा। मैंने कहा: "साथियो, मैं जो कुछ कहूँ वह सुनकर आप चौंक मत उठिए। आप कानून-कायदा जितना जानते हैं, उतना मैं भी जानता हूँ। शायद ज्यादा जानता हूँ। फिर भी मैं किसानोंको इजाजत दे रहा हूँ कि कुछ चारा काटकर घोड़ोंको खिलाएँ। इसके सिवाय जहाँ कहीं जौ पक गये हैं, और आसपास किनारों परसे, फसल काटकर खानेके लिये भी मैं किसानोंको छूट दे रहा हूँ।"

मैंने देखा कि मेरी बात सुनकर सब अधिकारियोंके मुखों पर आतंक छा गया। हम सब कमरेसे बाहर निकले तो चदाईने मेरा हाथ दबाकर आभार प्रकट किया। फिर दैमचैन्कोने आकर मेरे कानमें कहा: "मैं आपकी मदद करूँगा। जान चली जाए, तो भी।"

उस रात जब हम खाना खा रहे थे, तो घुड़सालसे एक आदमीने आकर खबर दी कि एक घोड़ा मर गया है। चदाईने उससे कहा कि तुरन्त खाल उतार कर लाशको गांवसे दूर ले जाओ और किरासिन छिड़ककर कलईमें उसे दबा दो। चदाईको डर था कि अन्यथा गाँव

वाले उस मुर्दा मांसको खा जाएँगे और बीमारी फैलेगी। अगले दिन मैं मशीनोंकी देखभाल करने गया। जो पुर्जे इत्यादि मैंने मँगाएँ थे, वे सब आ गए थे और लोग मरम्मत करनेमें लगे थे। एक कर्मचारी किसान खड़ा-खड़ा मुझे अपनी तकलीफोंका ब्योरा दे रहा था, जब कि एक दूसरे किसानने आकर उसके कानमें कुछ कहा। कर्मचारीने उससे अनुरोध किया कि सब कुछ खोलकर मेरे सामने कह डाले। किसानने कहा :

"तो सुनिए, साथी महाशय। कल रातको एक घोड़ा मर गया था। खाल उतार कर हमने लाशको किरासिन और कलईमें भिंगो दिया था। आज सुबह जब हम लाशको दफनाने पहुँचे, तो देखा कि लाश गायब है! रात-रातमें वह सारा गला सड़ा रोगयुक्त मांस लोग उठा ले गए। हे भगवान कैसा वक्त आया है!"

(३)

फसल काटनेका समय निकट आ रहा था। गाँवमें एक नया उत्साह फैलने लगा। प्रायः सब परिवारोंके बच्चे ईवान पैट्रोविचके शिशु-गृहमें पहुँच चुके थे और कुछ जौ भी सबको मिल गये थे। एक दिन सुबह मैंने किसानोंकी बड़ी सभामें भाषण दिया। सभाके बाद इधर-उधरकी बातें कहने-सुननेके लिये मैं ठहर गया। एक नौजवान मेरे पास आया। वह बेहद घबराया हुआ था और उसकी जबान लड़खड़ा रही थी। बड़ी मुश्किलसे उसने कहा :

"साथी महाशय, आपको सोवियत्...के...दफ्तर...में...बुलाया है। खुफिया...पुलिस...का...कोई...आदमी...आप...से...मिलना चाहता...है।

सब पर मानो वज्रपात हो गया हो। बात चारों ओर फैल गई। मौतका सा सन्नाटा छा गया। सामूहिक खेतीके मुखियोंने मुझे पहिले ही चेताया था। गाँवके सब लोगोंके मनमें भय था कि उनको खिलाने-पिलानेके लिये मुझे दण्ड सहना पड़ेगा।

सोवियत्के दफ्तरमें एक सुन्दर, जवान पुलिस अफसरसे मेरी भेंट हुई। मैं उससे पहले भी मिल चुका था। कौबजार और बेल्सोव उसके साथ थे। अफसरने मुझसे कहा : "कामरेड क्रावचैंको, मैं आपसे अकेलेमें बात करना चाहता हूँ।"

"बहुत अच्छा। आइए, मेरे साथ मेरे दफ्तर तक चलिए।"—मैंने कहा।

वह मेरे साथ चला आया। मैंने पूछा : "कहिये, कामरेड स्कोपिन कैसे आना हुआ?"

"देखिये, हमको आपके बारेमें कई रिपोर्ट मिली हैं। सब कहते हैं कि आप कानून-भंग कर रहे हैं, पार्टीके आदेशोंकी अवहेलना करते हैं और स्थानीय अधिकारियोंकी बात न सुनकर मनमानी करते हैं।"

"रिपोर्ट किसको मिली है? साफ-साफ कहिए। क्या मेरे विभागके प्रमुखके पास रिपोर्ट गई है? क्या प्रमुखने आपको भेजा है?"

"नहीं, मैं ही आपके साथ बात करने आया हूं।"

"कृपा करके अपनी बातें मेरे विभाग तक पहुँचाइए। उनसे कहिए कि जो कुछ मैंने किया है, उसका पूरा उत्तरदायित्व मैं लेता हूँ। कल सुबह मैं स्वयं आकर उनसे मिलूँगा।"

अगले दिन मैं कामरेड सोमानोवके पास पहुँचा। उसने कहा : "मेरी इजाजत लिये बिना स्कोपिनसे बातें न करके तुमने बहुत अच्छा किया। गाँवमें कुछ निकम्मे लोग हैं। उनको डर है कि कहीं तुम्हारा काम सफल नहीं हुआ, तो उन पर भी आफत न आ जाए। इसलिये पहले ही तुम्हारे खिलाफ रिपोर्ट देकर अपनी रक्षाका प्रबन्ध करना चाहते हैं। मैं जानता हूँ कि तुम खूब मेहनत कर रहे हो। मुझे यह भी मालूम है कि तुम खतरा उठा रहे हो। तुम्हारे साथ-साथ मुझपर भी तो दोष लगेगा। लेकिन यदि फसल उठवाकर हम ठीक समय पर अनाज सरकार

के गोदाममें पहुँचा दें, तो सब ठीक हो जाएगा। यदि ऐसा नहीं हो सका, तो हम दोनोंकी खैर नहीं।"

"कामरेड सोमानोव, आपसे तो मैंने कोई बात छुपाई नहीं। जो कुछ मैंने किया है, सब आपसे पूछकर किया है। फिर भी मैं चाहता हूं कि सारी जिम्मेदारी मेरे ही सिर रहे। यह लीजिये आपकी चिट्ठी जिसमें आपने लिखा था कि मैं जो ठीक समझूँ कर सकता हूँ। इसे वापिस ले लीजिये।"

उसने वह चिट्ठी लेकर जेबमें रख ली और आवाज देकर स्कोपिनको बुलाया। स्कोपिन आया तो सोमानोवने मेरेसे सम्बन्ध रखनेवाली फाइल मँगवाई। स्कोपिन एक मोटी-सी फाइल मुझे देकर चला गया। मैंने सारी फाइल पढ़ डाली। मैंने उन किसानों और कर्मचारियोंके नाम भी नोट कर लिये जिन्होंने मेरे विरुद्ध पुलिसको रिपोर्ट भेजी थी। सोमानोवने मुझे आश्वासन दिया कि वह उस फाइलको नष्ट कर डालेगा। उस वक्त किन्तु उसने सब कागज अपनी तिजोरीमें बन्द कर दिये।

गाँव लौटकर मैंने उन लोगोंकी टोह ली, जिनके नाम मेरे पास लिखे थे। मैंने देखा कि सारे जिलेमें वे लोग फैले हैं। कुछ देर बाद ईवान पैट्रोविचसे मेरी भेंट हुई। कामकी खुशीमें वह फूला पड़ता था। रास्ता चलते-चलते कहने लगा : "बच्चोंको तन्दुरुस्त होते देखकर बड़ी खुशी होती है। उनका बचपन लौट रहा है। हम सब जानते हैं कि आप कितना बड़ा खतरा उठाकर यह सब कर रहे हैं। सारे गाँवमें इस बातकी चिन्ता है कि आपको पुलिसने क्यों बुलाया ?"

मैंने हँसकर कहा : "चिन्ताकी कोई बात नहीं है। भगवान मेरा साथ दे रहे हैं। अभी तक तो तसल्ली है। फिर भी यह अच्छी बात है कि किसान मेरी स्थिति समझते हैं। अब उनकी बारी आ गई है कि मेरे लिये कुछ करें। फसल काटनेका वक्त आ गया है। मैं सबसे कहना

चाहता हूँ कि मुझे अपनी तारीफ सुननेकी बिल्कुल इच्छा नहीं। शायद कुछ हरामखोर लोग यह समझ बैठें कि काम न करके मेरी चापलूसी कर देनेसे सब हो जायेगा। नहीं। मैं काम चाहता हूँ, कठिन काम, रात-दिनको एक समझकर चलनेवाला काम।

"उनसे कहिये कि यदि वे कामेरड क्रावचैन्को को बचाना चाहते हैं तो फसल काट कर, रौंदकर, योजना के अनुसार अनाज सरकारी गोदामों में पहुँचा दें। मैं स्वयं किसानोंसे अपील नहीं कर सकता। लेकिन आप मेरी बात कह सकते हैं।

फसल कटने लगी। एक दिन मैं दैमचैन्कोके खेतपर जा पहुँचा। देखा कि एक मशीन बन्द पड़ी है। मैं घोड़ा दौड़ाकर मशीन के पास गया। मशीन चलाने वाला थककर बेहोश हो गया था। औरतें उसको होशमे लानेकी कोशिश कर रही थीं। मैंने उनको आदेश दिया कि उस आदमीको गांव ले जायं और मैं स्वयं मशीन चलाने लगा। बहुत दिनके बाद मैंने मशीनको हाथ लगाया था। काम करनेमें मुझे बड़ा आनन्द आया। साँझको जब दूसरे आदमीने आकर मशीन संभाली तो मैंने देखा कि मेरा बटुआ गायब है। रुपएकी मुझे चिन्ता नहीं थी। लेकिन बटुए में मेरे कागज-पत्र थे और पार्टीका कार्ड भी।

मेरे विभागकी ओरसे एक और आदेश आया जो मुझे बुरा लगा। प्रादेशिक कार्यकारिणीका हुक्म था कि गाँवके गिरजेको गोदाम बना डाला जाए। इस कामको अड़तालीस घण्टेमें पूरा करके रिपोर्ट भेजनेका अनुरोध था। मैं असमंजसमें पड़ गया। जानता था कि किसानोंकी भावनाको बड़ी भारी ठेस लगेगी। बड़ी बेवकूफीका काम था। फसलके कार्यके वक्त ऐसी वारदात करना नासमझी ही कहा जाएगा। लेकिन कौबजार, बेलूसोव तथा दूसरे कर्मचारियोंने खुशी खुशी कामकी पूर्तिमें

हाथ लगाया। धीरे-धीरे वे लोग जनतासे शत्रुता करने लगे थे। गांव वालोंको जो बुरा लगे वह काम करनेमें उनको मजा आता था।

बात तेजीसे चारों ओर फैल गई। बहुतसे किसान काम छोड़कर गांवमें लौट आए। गिरजेमें से मूर्तियां इत्यादि हटाई जा रही थीं। किसानोंने बहुत अनुनय विनय की, वे रोए गिड़गिड़ाए। उनके विश्वासोंपर चोट पड़ रही थी सो तो अलग, उनकी इन्सानियत पर लात मारी जा रही थी। मैं मत्र देखता रहा। कुछ नहीं कर सका। मैंने और ईवान पैट्रोविचने बड़ी मुश्किलसे फिर लोगोंको कामपर लगाया।

कुछ दिन उपरान्त एक बड़ा सा बैल मारा गया और उसके माँसको हमने नमक लगाकर बरफमें दबा दिया। खयाल था कि आगे चलकर मांस काम आएगा। सांझको चदाईने मुझे बताया कि कुछ मांस चोरी हो गया है। मैंने ट्रैक्टर स्टेशनसे कामरेड कारासको बुला भेजा। उसने मेरी सहायता करनेका वचन दिया। हम आधी रात तक प्रतीक्षा करते रहे। चदाई और कारासके पास बन्दूकें थी। मेरे पास एक पिस्तोल। हमने अनुमान लगा लिया था कि चोर कौन होंगे और हम उन्हें तुरन्त पकड़ना चाहते थे। मैंने कहा: "रास्तेमें रुककर कौबजारको भी साथ ले लें। उसे जानना उचित है कि यहां क्या हो रहा है।"

कौबजारके घरमें अन्धेरा था। चदाईने द्वार खटखटाया। उत्तर न पाकर उसने दरवाजा खोल दिया। सहसा भीतरसे कुछ बोलचाल सुनाई दी। मैंने भीतर घुसकर अपनी टार्च-जलाई। एक औरत चिल्ला उठी। मैंने उस तरफ रौशनी फैंकी। एक नंग-धड़ंग लड़की कपड़े खींचकर ढांपने की कोशिश कर रही थी। मैंने मेजपर रक्खा लैम्प जला दिया। वहाँ एक बोतल शराब रक्खी थी, दो गिलास, और एक प्लेटमें भुना हुआ मांस भी। अर्धनग्न अवस्थामें खाटपर बैठा कौबजार घबराकर बंगले झांकने

लगा। पासमें पड़ी एक कुरसी पर एक लकड़ीकी कठौतीमें बैलका कलेजा पड़ा था। मैंने पूछा: "यह मांस कहां से मिला है?"

"मैंने खरीदा है.........दूकानसे खरीदा है.........तुम पूछताछ कर सकते हो।"

"पूछताछ तो करूँगा ही। साथियों चलो। इनको यह दावत उड़ा लेने दो।"

चदाईको आगे करके हम गांवके छोरपर एक घरके पास जा पहुँचे। सारे गांवमें चर्चा थी कि उस घरमें खूब मौज मजा होता रहता है। कारास अगले दरवाजे पर जम गया और चदाईने पिछवाड़ा संभाला। भीतरसे एक डरी हुई आवाजने पूछा कि बाहर कौन है। मैंने अपना नाम बताकर कहा कि तुरन्त दरवाजा खोलो वरना गोली चला दूँगा।

दरवाजा खुल गया। वहाँ जश्नमें खलबली पड़ गई थी। औरतें रो रही थीं। एकने गिड़गिड़ाकर कहा कि वह भूखकी मारी वहाँ चली आई। दूसरीने कहा कि कुछ लोग जबरदस्ती उसे घसीट लाए। मैं गुस्सेसे चिल्लाने लगा: "तुम्हारे पड़ौसी भूखसे मर रहे हैं और तुम हरामखोर लोग उनके मुँहका कौर छीनकर खाते हो! और तुम कम्युनिस्ट होने का दम भरते हो! यह सब सामान उठाओ। चलो, मेरे साथ सबको सोवियत्के दफ्तरमें जाना होगा।"

मैंने उन तीन आदमियोंको सोवियत के दफ्तरमें ले जा कर छोड़ा। सुबह फौजके सिपाही आकर उन चोरोंको पकड़ ले गए। जब किसानों ने कहानी सुनी तो गुस्सेमें आकर कहने लगे: "तुमने उनको पकड़कर क्यों भेजा? अदालतकी बजाय हम ज्यादा जानते हैं कि उनके साथ क्या सलूक होना चाहिए।"

[४]

फसल प्रायः उठ चुकी थी। एक दिन सांझको एक बग्घीमें बैठकर मैं खेतोंपर घूम रहा था। दूरसे गाने की आवाज आ रही थी। स्त्री और पुरुषोंका मिला-जुला स्वर था। मर खपकर भी वे लोग गानेके लिए तैयार हो रहे थे। इन लोगोंकी किस मुँहसे तारीफ की जाती।

कई दिन पीछे काम करते-करते मैंने मोटरका भोंपू सुना। देखा कि कई बड़ी बड़ी कारें सड़कपर चली आ रही है। मैं समझ गया कि कोई बड़े अधिकारी आए हैं। घोड़ा दौड़ाकर मैं मोटरोंके पास जा पहुँचा। एक कार मेरी तरफ बढ़ी। कामरेड हताएविचको पहिचानते ही मैं नीचे उतरकर उसके पास पहुँचा। हमने हाथ मिलाए और उसने रौब भरे स्वरमें पूछा—"कामरेड क्रावचैन्को, फसल कब उठ गई ?"

"तीन दिन पहिले। योजनाके अनुसार अभी दस दिन तक हम और काम कर सकते थे।"

"सो तो मैंने सुना है। लेकिन मैंने और कुछ भी सुना है। तुमको चारा और जौ काटने तथा सरकारी दूधको बरतनेकी इजाजत किसने दी ? धर्मके विरुद्ध काममें तुमने क्यों टांग अड़ाई ? तुम पार्टीके सदस्य हो या कोई ऐरे-गैरे ?"

मैंने शान्त स्वरमें कहा : "कामरेड हताएविच, और मेरे लिए चारा ही क्या था। बच्चे मर रहे थे। घोड़े प्राण दे रहे थे। किसानोंमें काम करनेकी शक्ति नहीं रह गई थी। सरकारको आखिरी तारीखसे पहिले पूरा अनाज तो मिल गया। मैं जानता हूँ कि कुछ अनाज मुझे इस कामके लिए खरच करना पड़ा है। लेकिन उतना खरच करके मैंने हजारों मन अनाज जो बचा लिया।"

हताएविचने प्यारसे मेरा हाथ दबा दिया। मानो उसकी वे बातें ऊपरी दिखावा थीं। शायद वह चाहता था कि रिपोर्टमें उसके विरुद्ध

कुछ न लिखा जाए। वह मुझे एक ओर खींच ले गया, जहाँ पुलिसके लोग हमारी बातें न सुन सकें।

गाँवसे विदा लेनेका दिन आ पहुँचा। फसलके समय जो उल्लास उमड़ा था वह ठण्डा पड़ गया था। किसानोंके हिस्सेमें जो अनाज आया था वह बहुत थोड़ा था। सरकारी मशीनोंका किराया, बीजके दाम और सरकारका हिस्सा दे देनेके बाद जो बचा वह न-कुछ सा था। प्रत्येक व्यक्तिके हिस्से प्रति सप्ताह ढाई सेर अनाज आया। एक परिवारका पेट चलना भी दूभर था। कपड़े और दूसरे जरूरी सामान खरीदने की बात तो दूर रही।

सारा गांव मुझे विदा देने आया। बूढ़ा ईवान पैट्रोविच तो रोने लगा। चदाई और उसके परिवारने मुझसे वायदा करवा लिया कि मैं उनको पत्र लिखूंगा। कोचवानने घोड़े बढ़ाए और मैंने हाथ जोड़कर सबसे विदा ली।



दसवाँ अध्याय

मेरी प्रथम पर्ज[1]

अकाल पीड़ित प्रदेशसे लौटकर साधारण जीवन की क्षुद्रतामें मन लगाना मेरे लिए तनिक टेढ़ी बात रही। उन भयानक स्मृतियोंका बोझ मेरे मानससे टला नहीं और इन्स्टीच्यूट की पढ़ाई-लिखाई, कारखाने की सभाएँ, पार्टी की गोष्ठियाँ इत्यादि मेरे लिए एक उपहास-सा बन गईं। आज अपने पिछले जीवनपर विचार करने बैठा हूँ तो विश्वास होता है कि इन्हीं दिनों मेरे अन्तरमें पार्टीके प्रति विद्रोहने जन्म लिया

---

१. कम्युनिस्ट पार्टीके सदस्योंको बार-बार पार्टीके पथसे बिलग जानेका आरोप सहना पड़ता है। इसका कारण यह है कि पार्टीकी नीति तानाशाहके इशारोंपर नाचती है और बहुत जल्दी-जल्दी बदलती रहती है। तानाशाह यह कभी नहीं मान सकता कि उससे भूल हुई थी। इसलिए जब-जब वह नई नीति अपनाता है तो पार्टीके सदस्योंको छाती पीटकर कहना पड़ता है कि इतने दिन तक वे भूल कर रहे थे। इस व्यापारको "पर्ज" कहते हैं। पर्जके फलस्वरूप अधिकतर कम्युनिस्टोंको अपना थूक चाटना होता है, तरह-तरहके दोष उनपर लगाए जाते हैं और उनको नतमस्तक होकर सब स्वीकार करने पड़ते हैं। फिर भी बेचारोंको पार्टीसे न निकाला जाए तो वे अपने आपको भाग्यवान समझते हैं।

होगा। देहातके पैशाचिक दृश्योंने मेरे मनपर जो घाव कर दिए थे, वे शायद फिर कभी नहीं भर पाए। इसी लिए मेरे चेतन मनने उन दिनों जीतोड़ कोशिश की कि मैं सब भूल जाऊँ, कि किसी प्रकार उन सब कुकृत्यों की कोई मार्जना खोज निकालूं।

आखिर मैं पार्टी छोड़ तो नहीं सकता था। मेरी क्रियाशीलतामें ढील पड़ने अथवा उखड़ते विश्वासका प्रदर्शन करनेका भी कोई रास्ता नहीं था। एकबार पार्टीमें नाम लिखाकर जीवनभर गुलामी करनेके लिए मैं बाध्य था। मुझे पार्टीसे निकाला जा सकता था और तब मेरी विडम्बनाका कोई किनारा ही नहीं रह जाता। किन्तु पार्टी छोड़नेका सवाल कभी नहीं उठ सकता था। यदि मैं अपने मनकी बात किसीसे कह देता तो मुझे स्कूलसे तो निकाल ही दिया जाता। इसके सिवाय मेरा गिरफ्तार होना तथा किसी गुलामखानेमें पहुँचना भी अवश्यम्भावी बात थी। उस समय वातावरण बहुत खराब था। पार्टीके सदस्यों की पर्ज निकट आती जा रही थी।

क्या मैं उस आगसे अछूता रह सकूंगा? मेरे मनमें बार-बार यह यह प्रश्न उठता रहता था। सभी कम्युनिस्टोंके सामने वह प्रश्न उपस्थित था। हमारे सारे कामोंमें उस प्रश्नका समावेश हो चला था। हमारी बातचीतसे वह आशंका टपकती थी। हमने भविष्यके विषयमें योजनाएं बनाना छोड़ दिया। वर्तमानमें सबको अपनी जानकी फिक्र पड़ी थी। भविष्यकी कौन सोचता?

इन्स्टीच्यूटके प्रत्येक तल्लेमें एक लेटर बॉक्स टंगा था। उस बॉक्स-में कोई भी आदमी किसी भी कम्युनिस्टके विरुद्ध पत्र लिखकर डाल सकता था। पत्रपर हस्ताक्षर हों या न हों। और एक विशेष विभागमें उन पत्रोंको छाँट-छाँटकर पढ़ा जाता था। इस विभाग की सारी कार्यवाही गुप्त थी। व्यक्तिगत शत्रुताका बदला लेनेके लिए यह बहुत अच्छा

अवसर था। और द्वेषशील लोगोंने अवसरसे खूब लाभ उठाया। दो पार्टी मेम्बर तथा एक प्रधान मिलाकर पर्ज कमीशन बनाए गए थे। कमीशनोंमें पार्टीके विश्वस्त लोग ही लिए जाते थे। कमीशन ही पार्टीके सदस्योंपर दोष लगाता था। हमारे इन्स्टीच्यूटमें कमीशनके प्रधान कामरेड गैलम्बो नियुक्त हुए। पीछे चलकर उन्हें केन्द्रीय मन्त्रिमण्डलमें भी स्थान दिया गया।

जिन सदस्योंको कमीशन दोषी ठहरा देता था, उनका पार्टीसे बहिष्कार किया जाता था। पार्टीका सदस्य न बनना और पार्टीसे बहिष्कृत होना, दोनों पृथक् बातें हैं। पार्टीसे बहिष्कृत होनेका मतलब है कि उस व्यक्तिपर कलंक लग गया। फिर जीवनभर उसे चैन नहीं मिल सकता। सदा उसपर शुबा किया जाता है, उसको आसानीसे काम नहीं मिल सकता, काम मिलनेपर तरक्की नहीं हो सकती और संकटके समय सरकार उसको सबसे पहले पकड़ लेती है। इसलिए इन्स्टीच्यूटमें एक आतंकका फैल जाना स्वाभाविक बात थी। १६३३ बीता जा रहा था और हम सब भयसे कांपते रहते थे।

कमीशनके सामने उपस्थित होनेसे पहले कोई कम्युनिस्ट यह नहीं जान सकता था कि उस पर क्या-क्या दोष लगाए जाएंगे। यही चिन्ताका सबसे बड़ा कारण था। हम सब अन्धेरेमें टटोल रहे थे और किसी पर भी किसी क्षण वज्रपात हो सकता था। तैयार होनेका हमें अवसर ही नहीं मिला। हम बार-बार अपना पिछला जीवन दोहराकर देखते रहते थे कि हमारे कौनसे कसूरके कारण हमको पकड़ा जा सकता है। मनमें तरह-तरहकी शंकाएं उठती थीं। याद आता है कि तीन साल पूर्व एक रातको मित्रताके उल्लासमें हमने अमुक व्यक्तिके सामने मनका चिट्ठा खोलकर रख दिया था। शायद उस व्यक्तिने सब कुछ पुलिसको रिपोर्ट कर दिया हो। फिर याद आता कि हमारे एक चाचा ज़ारके

समयमें सरकारी नौकर थे। हम उनसे कभी मिले न हों, पर पार्टी तो कह ही सकती है कि हमने यह बात छुपाकर रक्खी है और अपने "देशद्रोही" चाचा को बचाना चाहते हैं। या हमने किसी लड़कीसे प्यार किया हो जो बादमें जाकर पार्टीकी नज़रोंमें गिर गई। उस "वर्गशत्रु" से नाता जोड़नेके लिए हमको दोषी ठहराया जा सकता है। इत्यादि, इत्यादि।

पर्जका काम शुरू हुआ। उसका तरीका संक्षेपमें आपको बतला देता हूं। एक मंचको पॉलिटब्यूरोके सदस्योंकी तस्वीरें तथा नारे टांगकर सजाया जाता था। उसके ऊपर लाल कपड़ेसे ढकी एक मेजके पीछे पर्ज कमीशनके सदस्य जम जाते थे। मेजपर फूलोंसे लदी स्टालिनकी मूर्ति सबसे ज्यादा आपका ध्यान आकर्षित करती थी। तब किसी कम्युनिस्ट-को सवाल-जवाबके लिए खड़ा किया जाता था। कम्युनिस्ट सामने आते ही अपना पार्टी कार्ड कमीशनके सन्मुख रखकर अपनी जीवन-गाथा सुनाने लग जाता था। उसे बतलाना पड़ता था कि वह कहां पैदा हुआ, कहां पढ़ा लिखा, बड़ा होकर उसने क्या-क्या किया, क्या-क्या करना उसे अच्छा लगता है, उससे जाने अनजाने क्या-क्या भूलें हुईं, इत्यादि इत्यादि। अपनी भूलोंको अपने आप बतलाना सबसे अच्छा समझा जाता था। आपकी कुछ भूलें कमीशनको मालूम हों और आप न बतलाएं तो आपका दोष संगीन माना जाता था।

इस प्रकार बयान सुननेके बात कमीशनके सदस्य तथा सभामें उप-स्थित लोग कम्युनिस्टसे सवाल पूछते थे। उसको उसकी अनेक भूलें बता-बताकर उलटी-सीधी बातें करनेपर बाध्य कर दिया जाता था। यदि कम्युनिस्ट पर कमीशनकी कृपादृष्टि होती तो यह खींचतान अधिक नहीं चलती थी, किन्तु यदि सभाके लोग एकबार भांप लेते कि किसी कम्युनिस्टके प्रति कमीशनका रुख टेढ़ा है, तो उसकी मुश्किल कर देते थे। भेड़ियों की तरह सब उसपर टूट पड़ते पड़ते थे। ऐसे समय सबसे

ज्यादा शत्रुता दिखाते थे वे लोग जो कि उस कम्युनिस्टके मित्र और सम्बन्धी रहे हों। मित्रको सरकार अथवा पार्टीके चंगुलमें फंसा देखकर आंखें बदल लेना कम्युनिस्टोंका साधारण धर्म है। सबको अपनी-अपनी फिक्र रहती है।

जो कम्युनिस्ट इस परीक्षामें पास हो जाते थे उनको पार्टीका कार्ड वापिस मिल जाता था। मित्र लोग आकर उन्हें बधाई देते थे। मित्रोंका अपना भय टल जाता था, इसीलिये। कुछ मामलोंमें अधिक जांच पड़ताल की जरूरत समझकर फैसला स्थगित कर दिया जाता था। किन्तु जिनका कार्ड जब्त हो जाता था उनकी दशा अत्यन्त शोचनीय होती थी। कोई उनको पहिचानना भी नहीं चाहता था। वे एकबारगी इतने अकेले रह जाते थे मानो तत्काल किसी दूसरे देशसे आए हों। सभा-भवनमेंसे बाहर जाते हुए उनको ऐसा मालूम होता था जैसे उनके कपड़े नोचकर उन्हें नंगा कर दिया गया हो अथवा उनके माथेपर दाग दे दिया गया हो। इसके बाद उनको एक बहिष्कृत जीवन बितानेके लिए तैयार होना पड़ता था। बहुतसे तो आत्महत्या कर लेते थे।

इन्हीं दिनों मैं भी मंचपर जानेकी बाट जोह रहा था। वह नाटक इस प्रकार था।

[२]

"कॉमरेड सानिन, आगे आएं"—गैलम्बो चिल्लाता है। और एक तीस पैंतीस बरसका गोरा आदमी मंचपर चढकर अपना पार्टी कार्ड प्रधानको देता है। सानिन दुबला-पतला, सुन्दर व्यक्ति है। आँखों पर चश्मा चढ़ा है। वह गणितका अध्यापक है। तनिक भी कठोर नहीं, इसलिए वह सबको अच्छा लगता है। वह अपने जीवन की कहानी कहना शुरू करता है। एक किसानके घर जन्म लेकर वह युवक-संघमें भरती हुआ। कुछ बड़ा होकर एक कारखानेमें काम करने लगा।

फिर हमारे इन्स्टीच्यूटमें शिक्षा पाकर उसने कुछ खोज की और अध्यापक बन गया।

सानिनकी आत्मकथा सुनकर सबको वह ठीक आदमी जंचता है। समझमें नहीं आता कि उसको किस लिए बुलाया गया है। अचानक कमीशनके एक सदस्य सानिनको टोककर पूछते हैं: "कॉमरेड सानिन, जब तुम छात्र थे तो क्या तुमने दूसरे छात्रोंके साथ मिलकर किसी ट्राट्स्कीवादी प्रस्तावपर हस्ताक्षर किए थे?"

दर्शकोंमें उत्सुकता उमड़ती है। लोग एक दूसरेकी ओर ताकते और फुसफुसाते हैं। सानिन कहता है: "हाँ, हस्ताक्षर मैंने किए थे। किन्तु बहुत दिन हुए मैंने हस्ताक्षर वापिस ले लिए। सब लोग यह बात जानते हैं।"

सदस्य जोर देकर कहते हैं: "तो तुमने हस्ताक्षर किए थे। तुम इन्कार तो नहीं करते ना?"

"नहीं, इन्कार नहीं करता। मैंने तो यह बात कभी छुपाई नहीं। मेरे सारे साथी और पार्टीके सदस्य जानते हैं कि मैंने भूल की थी जो बादमें मैंने मान ली।"

"हो सकता है। लेकिन मुझे विश्वास नहीं है कि तुमने सारी बात कभी बताई है। मेरा खयाल है कि अब भी तुम्हारे कुछ ऐसे विश्वास हैं जो पार्टीके विश्वासोंके विरुद्ध जाते हैं।"

हॉलमें उत्कण्ठा बढ़ जाती है। दर्शक समझ जाते हैं कि सानिनकी खैर नहीं। जो अभी तक सानिनके दोस्त थे उनको अपनी फिक्र होने लगती है। वे उठ-उठकर सानिनसे सवाल करने लगते हैं—ऐसे सवाल जिनसे कि सानिन फंस जाए और वे बच निकलें। जो सानिनका जितना ही गहरा मित्र रहा है उतनी ही मात्रामें उसका द्वेष अब बढ जाता है। सब मिलकर सानिनके पापोंका भण्डा-फोड़ करना चाहते हैं। वे सानिन

की कमजोरियाँ जानते हैं और सानिनकी छीछालेदर करना उनके लिए कोई कठिन काम नहीं। सानिन घबरा कर उलटे सीधे जवाब देने लगता है।

अब किसीको सन्देह नहीं रह जाता कि सानिनका अन्त आ गया। उसके मित्र उसको पराजित देखकर चोट करना चाहते हैं, उसे गिरता देखकर धक्का मारना अपना कर्त्तव्य समझते हैं। वे चिल्ला-चिल्लाकर कहते हैं कि सानिन मक्कार है जो ऊपरसे पार्टी की भक्तिका ढोंग करता है, किन्तु जिसके मनमें द्रोह भरा है। अपनी इन सब तोहमतोंका सुबूत देनेकी जरूरत कोई नहीं सकझता। सब घुटी-घुटाई बातें दोहरा देते हैं। अचानक एक अप्रत्याशित घटना होती है। भीड़में बिजली-सी दौड़ जाती है। सारे इन्स्टीच्यूटमें गणमान्य एक इञ्जीनीयर खड़ा होकर कुछ कहना चाहता है। वह कहता है: 'मैंने यहाँ होनेवाली सब बातें सुनी हैं। लेकिन मुझे एक भी बात नहीं जंची। जरा सोचिए कि हमारे सामने एक पार्टी मेम्बरके राजनैतिक भविष्यका सवाल है। उसे जिन्दा रखना अथवा मार डालना हमारे हाथ है। तो सोच-समझकर पक्की बातें बताइए। अभी तक तो किसीने पक्के तौरसे बताया नहीं कि इसका दोष क्या है!"

उसकी बातोंसे आग और भड़कती है। लोगोंको तैश आता है। सानिनके विषयमें कमीशन तो पहले ही फैसला कर चुका है। कमीशन-का इशारा पाकर सानिनके दोस्त और भी बेदर्दीसे उसपर टूट पड़ते हैं, उसे गालियां देते हैं और सानिनको पार्टीसे निकाल दिया जाता है।

इसके बाद एक छात्रकी कहानी सुननेको मिलती है। लम्बे-लम्बे बालोंवाला, साँवला सा, यहूदी युवक है। पार्टीमें बहुत पुराना नहीं दीख पड़ता, इसलिए जल्दी ही पकड़में आ जाता है। उससे पूछा जाता है: "कामरेड शुल्मैन, क्रान्तिके पूर्व तुम्हारे माता-पिताका सामाजिक स्तर कैसा था?"

"पिताजी दरजी थे, माँ घरका कामकाज देखती थीं।"

दर्शकोंमेंसे कोई खड़ा होकर कहता है : "शुलमैन झूठ बोल रहा है।"

सबको रोमांच होने लगता है। दिलचस्प मामला दीख पड़ता है। शुलमैन एक उदासीन-सा युवक है। अधिकतर अपनी पुस्तकोंमें डूबा रहता है, इसलिए उसके मित्र दो-चार ही होंगे।

गैलेम्बो गवाहकी तरफ देखकर पूछता है : "तुम्हारे पास क्या प्रमाण है कि यह साथी पार्टी और कमीशनके सामने झूठ बोल रहा है?"

"मेरे पास पक्का प्रमाण है। शुलमैन और मैं दोनों चरकासी नगरके रहनेवाले हैं। मैं अभी इन्स्टीच्यूटमें भरती हुआ हूं और आज ही मैंने शुलमैनको देखा है। लेकिन मैं उसके परिवारको जानता हूँ। उसके पिता दरजीकी दुकान करते थे और कई कारीगरोंसे काम लेते थे। वे मजदूरोंके शोषक थे। एलैक्जान्ड्रोवरकी स्ट्रीटमें वह दुकान थी। मुझे राई-रत्ती सब मालूम है। एक शोषकके पुत्रका हमारी पार्टीमें कोई स्थान नहीं। शुलमैनको पार्टीसे निकाल देना चाहिए"

शुलमैन पीला पड़ा जाता है। उसने यह सब नहीं सोचा था, इसलिए उसको कुछ भी कहना दूभर हो जाता है। प्रधान मेज पर हाथ पटककर कठोर स्वरमें पूछता है : "क्या तुम चरकासीके रहनेवाले हो?"

"हां। मैंने तो......खुद ही......अभी कहा था।"

"क्या तुम्हारे पिताकी दरजी की दुकान थी?"

"हां। किन्तु वे शोषक नहीं थे। कई लोगोंका मिला-जुला, साझेका काम था। पिताजी तो केवल साझेदारीके मुखिया थे। मैं शपथ खाकर कहता हूँ कि दुकानसे उनको उतना ही मिलता था जितना कि और साझेदारों को। और फिर मेरा तो उस दुकानसे कोई सम्बन्ध कभी रहा ही नहीं। मैं तो दूसरे शहरके एक कारखानेमें मजदूरी करता था।"

"वह दरजी तुम्हारा बाप था या नहीं?"

"अवश्य। वे मेरे पिता थे।"

"तो तुमने पार्टीसे यह बात छुपाई है कि तुम शोषक वर्गकी सन्तान हो ?"

"मैंने कुछ नहीं छिपाया। वह तो एक साझेदारी थी। मैं कारखानेका मजदूर था। और पार्टीमें एक छात्रके नाते मेरा रिकार्ड अच्छा है।"

किन्तु शुल्मैन बाज़ी हार जाता है। जितना ही वह जोर देकर अपनी बात कहना चाहता है, उतना ही उसकी भाषामें यहूदीपना आता जाता है। हॉलमें सब उसका मज़ाक उड़ाते हैं। कोई कहता है कि उसे मार भगाओ, कोई चिल्लाता है कि उसने पार्टीको ठगा है। मंच परसे उतरते-उतरते शुल्मैन लड़खड़ाने लगता है। आँखोंमें आँसू भर आते हैं। सब समझ जाते हैं कि उसको इन्स्टीच्यूटसे निकाल दिया जाएगा और उसका स्वाहा हो जाएगा।

कमीशनके सदस्योंको जैसे शुल्मैनमें अब कोई दिलचस्पी नहीं। वे दूसरे आदमी की फाइल खोज रहे हैं। उसका नाम है दुखोत्सेव। आठ बरसकी अवस्थासे वह अपने हाथोंसे काम करता रहा है। धीरे-धीरे फोरमैन बना और फिर इञ्जीनियर बननेके लिए चुना गया। वह सारे प्रश्नोंका सधा हुआ उत्तर देता है। गैलम्बो पूछता है : "कामरेड दुखोत्सेव, क्या तुम्हारा विवाह हो गया ?"

"हां। हो गया।"

"विवाह कब हुआ था ? तुम्हारी स्त्री कौन है ?"

"विवाह पिछले साल हुआ है। मेरी स्त्री एक क्लर्ककी लड़की है और आजकल हस्पतालमें नर्सका काम करती है।"

"क्या तुमने अपना विवाह रजिस्टर करा लिया है ? हम जानना चाहते हैं कि तुम्हारी शादी हुई कैसे ?"

दुखोत्सेवका मुंह लाल हो जाता है। बगलें झांकने लगता है। सहसा वह समझ जाता है कि यह सवाल उससे क्यों पूछा जा रहा है।

सुननेवाले मुंह बाए बाट देख रहे हैं। वह हारा हुआ-सा कहता है : "मेरी शादी गिरजेमें पादरीने कराई थी।"

भीड़ जोरसे हँस पड़ती है। दुखोत्सेव अपना स्वर ऊँचा करके कहता है : "साथियों, मैं जानता हूं कि आप हँसेंगे। हँसने की बात भी है। लेकिन सच मानिए कि मेरे निकट गिरजेकी कोई कीमत नहीं। मैं उस स्त्रीसे प्रेम करता था और उसके माता-पिता इस बातपर राजी नहीं हुए कि विवाह गिरजेमें न होकर रजिस्टरीसे हो। वे पुराने खयालके लोग हैं। मेरी ही तरह मेरी स्त्री भी धर्म वगैरहकी खुराफात नहीं मानती। लेकिन वह मां-बापकी इकलौती लड़की है और बूढ़ोंका मन दुखाना नहीं चाहती। मैंने उसे बहुत समझाया, अनुनय विनय की। उससे यह भी कहा कि इसका नतीजा अच्छा नहीं होगा। पर वह अपनी हठसे तिलभर नहीं डिगी। मैं उसके बिना रह नहीं सकता था। इसलिए हारकर हमने दूर एक गांवके गिरजेमें जाकर चुपचाप शादी कर ली। रास्तेमें आते हुए उसकी ओढनी और फूलमाला इत्यादि मैंने अपने बैगमें छुपा लिए थे।"

अब भीड़को अपने ऊपर काबू करना कठिन हो जाता है। सबको बेतरह हँसी आ रही है। प्रधान बार-बार मेज पीटकर शान्ति चाहता है, पर उसकी कोई नहीं सुनता।

इस प्रकार दिन-प्रति-दिन यह पर्ज चलती रहती है। पढ़ाई खत्म होते ही प्रायः सांझके पांच बजे सभा बैठती है तो रातको बहुत देरतक चलती रहती है। एक सप्ताह तक यह सब देखनेके बाद हमको आदत-सी पड़ जाती है। रोज़ वही छीछालेदर, वही आँसू, हंसी और मूर्खता।

एक दिन अचानक हम सब अवाक् रह जाते हैं। एक युवती छात्राको मंचपर बुलाया जाता है, वह अपनी बुद्धिमत्ता एवं सौजन्यताके कारण सबकी श्रद्धाकी पात्र है। सांवले रंगकी लड़की है। आँखोंमें

तेज, स्वरमें गाम्भीर्य। उसको सुन्दर नहीं कह सकते पर फिर भी उसमें अद्भुत आकर्षण है। प्रधान पूछता है : "कामरेड ग्रैनिक, तुम्हारा विवाह हो गया ?"

"हाँ।"

"कितने दिन हुए ?"

"पाँच बरस।"

"पति कौन है ?"

"पहले वह एक मजदूर था। उन्हीं दिनों उससे मेरी भेंट हुई थी। बादमें वह एक लोहेके कारखानेमें फोरमैन बन गया।"

"पार्टीका सदस्य है ?"

"नहीं, अब नहीं। पहले था।"

दर्शक समझ जाते हैं कि लड़कीकी खैर नहीं। जो सिगरेट पीनेके लिये बाहर जाना चाहते हैं वे फिर बैठ जाते हैं। सब कुछ सुननेके इच्छुक हैं।

"पार्टी उसने क्यों छोड़ी ? या शायद उसे पार्टीसे निकाला गया हो ?"

"मेरे पतिको निकाला गया था"—ग्रैनिकने शान्त भावसे उत्तर दिया—"वह एक विरोधी दलका साथी बन गया था।"

"तो क्या तुमने उसको तलाक दिया ?"

"नहीं।"

"अब तुम्हारा पति कहाँ है ?"

"गिरफ्तार कर लिया गया। जेलमें है।"

भीड़के रोंगटे खड़े हो जाते हैं। सोवियत् नाटकका पक्का कथानक आंखोंके सामने है। कम्युनिस्ट नाटकोंमें बार-बार यह दिखाया जाता है कि जब किसी कम्युनिस्ट स्त्रीका पति पार्टीकी आँखोंमें गिर जाए तो किस प्रकार स्त्री उसको छोड़कर पार्टीका साथ देती है।

"क्या तुम्हारा पति पहली बार गिरफ्तार हुआ है ?"

"नहीं। दूसरी बार।"

"फिर भी तुमने उसको तलाक नहीं दिया ?"

"नहीं।"

"जेलमें उससे मिली हो ?"

"हाँ, प्रत्येक सप्ताह मिलती हूँ।"

"क्यों ?"

"क्यों क्या ? उसके लिये खाना, कपड़ा, सिगरेट पहुँचाती हूं।"

"क्या और कोई यह सब काम उसके लिये नहीं कर सकता ?"

"कर सकते हैं। उसकी माँ है और एक बहिन भी।"

"तो फिर तुम उससे जेलमें क्यों मिलती हो ? तुम तो पार्टीकी सदस्या हो। हो कि नहीं ? पार्टीके साथ जिस व्यक्तिने शत्रुता की हो उससे मिलनेमें क्या तुम्हें झिझक नहीं होती ?"

"पर वह मेरा पति है।"

"ओहो। तो क्या हुआ ? ऐसा पति भला किस कामका ? तुम्हारे व्यक्तिगत मतामतसे पार्टीका महत्व क्या अधिक नहीं है ?"

"मैं राजनैतिक मामलोंमें उससे मतभेद रखती हूं। मैं उसके साथ विवाद करके उसे समझाती भी रहती हूँ कि वह ग़लती पर है। जब-जब हमारी भेंट होती है, तो हम वाद-विवाद करते-करते झगड़े पर उतारू हो जाते हैं।"

"तो तुम शोर मचानेके लिये जेल जाती हो ?"

गैलेम्बोका ताना सुनकर लोग फैसला कर डालते हैं। दो-चार व्यक्ति हँसते हैं। कुछ लोग चिल्लाकर कहते हैं: "बहुत सुन लिया। निकाल बाहर करो।"

लड़की स्वर ऊँचा करके कहती है: "माफ कीजिये, प्रधान भाई। यह पार्टीकी पर्ज सभा है या सर्कसका तमाशा ? मैं चाहती हूं कि मेरे

ऊपर जो भी राजनैतिक दोष आप लगाना चाहें, लगाएँ। किन्तु मेरे व्यक्तिगत जीवनको खोद-खोदकर मज़ाक बनाना मुझे पसन्द नहीं।"

"ठीक बात है। तो तुम बतला क्यों नहीं देती कि तुम प्रति सप्ताह उस वर्गशत्रु और पार्टीके द्रोहीके पास किस मतलबसे जाती हो?"

"बतलाया तो। वह मेरा पति ही नहीं, एक इन्सान भी है। जब वह मुसीबतमें पड़ा है, तब उसको छोड़ दूं तो मैं अपने आपको कायर और नीच कहूँगी। मैं उसके मतकी भर्त्सना करती हूं। लेकिन हमने एक साथ काम किया है, हम एक साथ पढ़े-लिखे हैं, एक साथ हमने जीवन बिताया है। हमारे मनमें एक दूसरेके लिये ममता है। सचमुच, हम एक दूसरेसे प्यार करते हैं।"

यह सुनकर सब हँस पड़ते हैं। एक लड़की पुलिसके आसामीसे प्यार करे और कम्युनिस्ट होनेका दम भरे!

(३)

जब सैरयोझा स्वैतकोवका नाम पुकारा जाता है तो मेरा दिल धड़कने लगता है। उसकी गवाहीमें अवश्य उस अनुभवका समावेश होगा, जो कि देहातमें हमने एक साथ प्राप्त किया था। शायद मैं भी फँस जाऊँ। मैं जानता हूँ कि स्वैतकोव भावुक व्यक्ति है और मुझे उसकी और अपनी, दोनोंकी चिन्ता है। मँच पर खड़ा होते ही सबकी आँखें उस पर टिक जाती हैं और वह सहम उठता है। उसकी उम्र भी तो छोटी है। ऐसी छोटी उम्रमें उसके लिये यह अग्नि-परीक्षा बहुत कठोर है। वह घबराया हुआ दीख पड़ता है। किन्तु अपनी कहानी वह ठीक-ठीक सुनाता है। वह हॉलके एक कोनेकी ओर बार-बार ताकता है। उधर उसका पिता बैठा हुआ आँखों ही आँखोंमें उसका उत्साह बढ़ा रहा है।

"कामरेड स्वैतकोव, क्या तुम्हारे पिता पार्टीके सदस्य हैं?"

"हाँ। और वे पर्जमें भी ठीक समझे गये हैं।"

"अच्छा, तो बताओ कि समूहीकरणके समय देहातमें काम तुमको कैसा लगा ?"

सैरयोझा पीला पड़ने लगता है। मेरी तरफ ताकता हुआ वह कहता है: "प्रादेशिक कमिटिने जो काम मुझे सौंपा था, वह मैंने पूरा कर दिया। इतना मैं मानता हूँ कि वहाँ जो कुछ हुआ वह सब मुझे अच्छानहीं लगा।"

"हमारे पास प्रमाण हैं कि तुम सब बातोंमें पक्के नहीं थे और कई अवसरों पर तुमने ढिलाईसे काम लिया। तुम क्या कहना चाहते हो ?"

मुझे लगता है कि सैरयोझाको सहारा नहीं मिला, तो वह साहस खो बैठेगा। उसको सम्भलनेके लिये एक अवसर देना बहुत आवश्यक है। मैं तड़ाकसे खड़ा होकर कुछ कहनेकी इजाजत माँगता हूँ। प्रधान कहता है: "तुम क्या कहना चाहते हो ?"

"मैं उस व्यक्तिका नाम जानना चाहता हूँ, जिसने इस कॉमरेडके विरुद्ध शिकायत की है।"

"वह पुलिसके दफ्तरका आदमी है।"

"फिर भी उसका नाम जानना आवश्यक है। मैं कामरेड स्वैतकोव के साथ गाँव गया था। और मुझे सब कुछ मालूम है।"

"अच्छा। उस व्यक्तिका नाम आर्शीनोव है।"

"मैंने भी यही सोचा था"—मैं आत्म-विश्वासके साथ कहता हूं और सैरयोझाको अपने बचावका रास्ता सूझ जाता है। उसको सँभलनेके लिये थोड़ा समय मिल जाता है। आर्शीनोवका नाम सुनते ही उसे क्रोध आता है और अपनी निर्दोषता पर विश्वास हो जाता है। वह कहता है: "आर्शीनोव! किन्तु उस आदमीकी गवाहीके कोई मायने नहीं। वह झूठा है। उसने व्यक्तिगत द्वेषके कारण शिकायत की है। वह यह जानता है कि उसकी काली-करतूतें मुझे मालूम हैं, इसलिये वह अपना बचाव करनेके लिये मेरे खिलाफ पहले गवाही देता है।"

"किन्तु क्या यह सच नहीं है कि जब तुम पूरा अनाज इकट्ठा नहीं कर सके, तो आर्शीनोवने वह काम पूरा किया ?"

"वह बात कुछ हद तक ठीक है। लेकिन इसका यह मतलब नहीं कि मैं भी उसीकी तरह व्यवहार करके पार्टीका अनुशासन भंग करता !"

"अच्छा। और कौन बोलना चाहता है ?"

मैं खड़ा हो गया और प्रधानने मुझे मंच पर बुला लिया। मैंने कहा : "पोडगोरोडनोएमें मैंने कामरेड स्वैतकोव और कामरेड आर्शीनोवके साथ काम किया था। जब मेरी बारी आएगी तो पूरी बातें बतलाऊँगा। अभी तो इतना ही कहना चाहता हूँ कि कामरेड स्वैतकोव ने एक ईमानदार, मिलनसार और पक्के कम्युनिस्टकी तरह काम किया था। हमें आर्शीनोवकी बातोंमें आकर इसके साथ अन्याय नहीं करना चाहिये। वह मेरे सामने तो आए। मैं उसकी बातोंका जवाब दूंगा। यदि आप इजाजत दें, तो मैं आर्शीनोवके कारनामोंकी कहानी आपको सुना सकता हूँ।"

चारों ओरसे आवाज आने लगी : "हाँ, सुनाओ। सब कह डालो।"

प्रधान घबड़ा गया। वह नहीं चाहता था कि गांवोंमें घटी बातोंका कच्चा चिट्ठा मैं वहाँ सुना डालूँ। प्रधानने कहा : "हम यहाँ स्वैतकोव के विषयमें पूछताछ कर रहे हैं। आर्शीनोवके बारेमें नहीं। यदि ये कामरेड आर्शीनोवके बारेमें कुछ कहना चाहते हैं, तो कमीशनकी गुप्त सभामें कह सकते हैं।"

मैंने मंच पर जाकर निम्नस्वरमें आर्शीनोवके कुछ अत्याचार समिति को सुना डाले। सदस्योंने मेरी बातें नोटकर लीं। यह मैं कभी नहीं जान सका हूँ कि उन्होंने केवल दिखावेके लिये वैसा किया था अथवा वास्तव में उनको कुछ मालूम नहीं था। लेकिन मुझे स्वैतकोवकी हिमायत करते देखकर कुछ और लोगोंकी हिम्मत बढ़ गई। तीन पुरुष और दो स्त्रियाँ

उसके लिये अच्छी गवाही दे गए। उसका पार्टी कार्ड उसे लौटा दिया गया। मंच परसे उतरकर वह सीधा मेरे पास आया। उसकी आँखों में आँसू भर आये। मेरा हाथ दबाकर वह अपने पिताके पास गया। पिताने उसे छातीसे लगा लिया।

इसके बाद मुझे मंच पर बुलाया गया। मैंने अपनी कहानी कहनी आरम्भ की। कहते-कहते मुझे ऐसा लगा कि मेरी कहानी दमदार है। मैं मजदूरका बेटा था और शुरूसे ही मैंने पार्टीका काम किया था। मैंने निकोपोल जानेवाली बात तथा ओर्डझोनिकिड जेसे अपनी मुलाकातका भी जान-बूझकर ज़िक्र कर डाला और आखिरमें दोबारा देहातमें जाकर जो काम मैंने किये थे, वे भी बतला दिये। मैं जानता था कि औरोंने मेरे विरुद्ध शिकायत की है। लेकिन मैंने साहससे काम लेनेका फैसला किया था। मुझसे पूछा गया : "तुमने पार्टीका कार्ड क्यों खो दिया? क्या तुमको नहीं मालूम कि कार्ड खो देना पार्टीके अनुशासनको भंग करना है?"

"मैं जानता हूं और मुझे अफसोस है। फसल काटनेकी दौड़धूपमें कार्ड मुझसे खो गया। एक किसान मशीन चलाते चलाते थक गया था। उसकी जगह मैंने काम किया और उस हेर-फेरमें मेरा बटुआ गिर गया मैंने पार्टीकी स्थानीय शाखासे इस घटनाकी गवाही लिखवा ली थी। वह आपके सामने उपस्थित है।"

कमीशनने गवाहीको देखकर मेरी फाइलमें रख दिया। फिर सवाल पूछा : "हमारे पास इस बातका सबूत है कि अनाज इकट्ठा करनेमें तुमने मुस्तैदीसे काम नहीं किया और एक पार्टीके कर्मचारीका अपमान भी कर डाला।"

"बात ठीक उलटी हुई थी। मेरे विचारमें आप आर्शीनोवकी बात कह रहे हैं। उसने पार्टीपर कलंक लगाया है। उसकी करतूतें तो मैं पहिले ही आपको बता चुका हूं।"

"अच्छा, मान लेते हैं कि आर्शीनोवने ही वे सब बातें कही हैं।"

"तो यह लीजिए उस रिपोर्टकी नकल जो मैंने उसके बारेमें पार्टी की प्रादेशिक कमिटी तथा 'प्रावदा'के पास भेजी थी। आप तुरन्त समझ जायेंगे कि उसने पार्टीको बदनाम किया है। मैंने उसका विरोध करके पार्टीको बदनामीसे बचाना चाहा था। इसीलिए वह मुझपर बिगड़ा हुआ है। वह मार-पीट करता था।"

दर्शकोंमेंसे किसीने पूछा : "मारपीट कैसी ?"

प्रधानने तुरन्त उत्तर दिया कि वह सब कमीशनको मालूम है। वह बात बदलना चाहता था। बोला : "तुम अपनी बात कहो। लोगीनामें फसल उठवानेके लिए तुमने क्या-क्या किया था ?"

"कामरेड हताएविचने मुझे आखिरी तारीखसे दस दिन पूर्व फसल उठवानेमें सफल होनेपर बधाई दी थी। मेरे कामकी तारीफ में यह देखिए पार्टीका प्रमाण-पत्र।"

प्रधान घबरा गया। मैं कागज पत्र लेकर गया था। वह यह सब देखनेके लिए तैयार नहीं था। वह मुझे फंसाना चाहता था, किन्तु धीरे-धीरे वह चाहने लगा कि किसी प्रकार उसका पीछा छुटे। उसने पूछा : "आपके पिता क्या करते हैं ?"

"मेरे पिता और छोटा भाई एक कारखानेमें काम करते हैं। बड़ा भाई एक दूसरे कारखानेका हिसाब-किताब संभालता है।

"क्या तुम्हारे पिता पार्टीके सदस्य हैं ?"

"नहीं"

"तुम्हारे भाई ?"

"नहीं"

""क्रान्तिके पूर्व तुम्हारे पिता जेल किस लिए गए थे ?"

"क्रान्तिकारी कामके कारण। उन्होंने १९०५ की क्रान्तिमें भाग लिया था और पीछे भी लड़ते रहे।"

"वे किस पार्टीके सदस्य थे?"

"वे कभी किसी पार्टीके सदस्य नहीं बने।"

"तुम अच्छी तरह जानते हो ना?"

"हाँ, अच्छी तरह जानता हूँ।"

सहसा तीन व्यक्ति मेरे विरुद्ध बोलनेके लिए खड़े हो गए। सेरयोझा और कई औरोंने मेरा समर्थन किया। किन्तु भीड़ने कोई उत्सुकता नहीं दिखाई। लोग उठकर सिगरेट पीने चल दिए। मेरे मामलेमें किसीको रस नहीं आया। मेरा पार्टी कार्ड मुझे वापिस मिल गया। मित्रोंने आकर मुझे बधाई दी। मेरे सामने जीवनकी सीधी सड़क खुली थी और पार्टीका सदस्य होनेके नाते मैं बेरोक-टोक उसपर बढ़ सकता था।

१९३४ के प्रारम्भमें कामरेड लाजार कगानोविचने बताया कि उस पर्जमें १८८,००० सदस्य पार्टीसे निकाले गए थे। कुल तादाद और भी बढ़ी होगी। क्योंकि पर्ज उस समय भी कहीं-कहीं चल रही थी। कगानोविचका खयाल था कि पर्जसे पार्टी मजबूत हुई है। मेरी समझमें वह बात नहीं आई। मैं अपने अन्तरमें उसके विरुद्ध प्रमाण पा रहा था। मैं उस अग्निपरीक्षामें पास हो गया था, किन्तु मेरे मनमें तरह-तरहके संशय घर कर गए थे। जो लोग पार्टीसे निकाल दिए गए थे, उनके मनमें भी शायद वैसे संशय जागे हों। नेता कहते ही रहे कि द्रोहका विनाश कर दिया गया है, किन्तु हम जैसे पार्टीके साधारण सदस्योंको सत्यका अधिक ज्ञान था।

ग्यारहवाँ अध्याय
एलीना का भेद

पर्जके चन्द दिन बाद ही एलीनासे मेरी भेंट हुई। प्रेम हो जानेके कारण उसका जीवन इतिहास मेरी अनुभूतिके वृत्तमें समा गया है। वह मेरे एकान्त जीवनकी बात है। उस अनुभूतिने बहुत हद तक सोवियत् सरकारकी ओर मेरा एक दृष्टिकोण निश्चित कर दिया। मेरे जीवनमें शायद ही कोई दूसरी अनुभूति उतनी तीखी रही हो।

एक दर्जन स्त्री-पुरुषोंके साथ बरफके तूफानकी मार सहता हुआ मैं एक स्टेशनपर खड़ा था। उस दिन अचानक एलीनापर नजर पड़ गई। वह अकस्मात् था। उसके बाद दो बार और अकस्मात् भेंट हुई। फिर तो उस लम्बी, सांवली लड़कीकी राह देखनेकी मुझे आदत-सी पड़ गई। उससे मेरा परिचय हुआ सो भी अकस्मात् ही। किन्तु तुरन्त ही ऐसा लगने लगा जैसे कि चिरदिनसे उसे जानता हूं। मैं प्रादेशिक कमिटिकी एक सभासे लौट रहा था। सभा बहुत देर तक चली थी, इसलिए खुली हवामें निकलना बहुत अच्छा लगा। बरफीली हवा शरीरमें चुभ गई, किन्तु सांस लेकर ताजगी महसूस हुई। अचानक किसीने मेरा नाम लेकर पुकारा। मुड़कर देखा कि वह महिला डाक्टर खड़ी है, जिसने ईरानकी सीमापर घायल हो जानेके बाद हस्पतालमें मेरा इलाज किया था। और उसके साथ थी वह नवागता रमणी।

डाक्टरने कहा : "विक्टर, कैसे हो ? मिलकर मुझे प्रसन्नता हो रही है। मैं अखबारोंमें तुम्हारे लेख पढ़ती रहती हूं और मित्रोंसे सुन-सुनाकर पता लगा लेती हूँ कि तुम उन्नति कर रहे हो। ओहो, मैं तो भूल ही गई थी। आओ, मेरी मित्र एलीना पैट्रोवनासे तुम्हारा परिचय करा दूँ।"

हमको बड़े तपाकसे हाथ मिलाते देखकर डाक्टरको कुछ आश्चर्य-सा हुआ। हम दोनोंके हावभावमें संकोच की छाप थी। उसके बाद हमने बहाना बनाकर डाक्टरको बस पर चढ़ा दिया और साथ-साथ चलने लगे। मैं और एलीना एकही मोहल्लेमें रहते थे, इसलिए बहाना मिलनेमें देर नहीं हुई। डाक्टर शायद समझ गई होगी।

एलीना सुन्दर थी। किन्तु उसके सौन्दर्यमें लास और लावण्यका समावेश भी था। मुखड़ा तो सुन्दर था ही। किन्तु यदि कोई चित्रकार उसे आंकने बैठता तो उसका मुख आंककर ही सन्तोष नहीं कर सकता था। उसकी देहलताको आंके बिना वह नहीं रह पाता। हमारे मिलन की पहली रातको वह काले समूरका कोट पहने थी। कोट चुस्त था और काकेशियन ढंगसे नीचे लटककर लहंगेका काम भी दे रहा था। उसके घने काले केशपाशपर सफेद समूर की छोटी-सी हैट ऐसे तिरछे ढंगसे रक्खी थी कि उसका छरहरा शरीर तनिक अधिक लम्बा दीख पड़ता था। उसकी भौंओं पर बरफके कुछ कण मोतीसे टंके थे।

एक दूसरेका हाथ पकड़कर हम प्रायः एक घण्टे तक टहलते रहे। अपने बारेमें बातें करते-करते दुनियाकी बातें करने लगे और फिर अपनी बातोंमें डूब लए। वह हमारे शहरमें पहिले-पहल आई थी। सरकारके स्थापत्य-विभागमें काम करती थी और उसका विचार था कि बहुत दिन तक वहीं टिकी रहेगी। मैंने कहा : "तुमसे मिलकर न जाने मुझे कितनी खुशी हो रही है। मेरा मन कहता है कि हमारा पचिय शीघ्र ही मित्रता में परिणित हो जाएगा।"

"मेरा भी मन यही कहता है" उसने मुस्कराकर कहा—"किन्तु तुम्हारा खयाल करती हूँ तो चाहती हूं कि ऐसा न हो तो अच्छा है। यदि तुम समझदार हो तो, विक्टर, इस प्रथम भेंटमें ही मुझसे विदा ले लो।"

"मुझे किसी बातकी परवाह नहीं। तुम रहो, बस।"

"याद रखना कि मैंने तुम्हें चेता दिया था।"

"अच्छा, याद रक्खूंगा। लेकिन अपने बारेमें कुछ अधिक बताओ ना। जैसे.........."

"और कुछ मत पूछो। मैं विवाहिता हूं। मेरा पति भलामानस है, किन्तु हतभागा है। हम एक घरमें रहते हैं और मैं खूब उसकी देख-भाल करती हूं। किन्तु हम तो दिखावे मात्रके पति-पत्नी हैं। मैं उससे प्रेम नहीं करती। अच्छा हुआ तुम मिल गए। मुझे बहुत सूना-सूनासा लग रहा था।"

"सूना-सूना ? तुमको ? तुम्हारे घरबार हैं, तुम कमाती हो, तुम रूपवती हो........"

"परिचय तो मेरा बहुत लोगोंसे—जरूरतसे ज्यादा लोगोंसे है। लेकिन तुम मुझसे कहीं भाग्यवान हो। तुम्हारा घर असली घर है, तुम्हारी मां तुम्हारे पास है। मेरे पिता मर चुके और मां कीवमें रहती हैं। एक प्रकारसे अच्छा ही तो है। आजकल हमको बहुत-सी बातें मां बापसे छुपानी पड़ती हैं। तुम्हारी स्वप्नशीलतापर भी मेरा जी ललचाता है। तुम तो कर्तव्यनिष्ठ कम्युनिस्ट हो ना!'

उस दिन जब उसके घरके द्वार पर मैंने उससे विदा ली, तो साथ ही अगले शनिवारको पार्कमें मिलनेका वायदा भी करा लिया। इस प्रकार महीनों बीत गए। एलीना बहुत बार हमारे घर आई और घुल-मिलकर हमारे परिवारकी ही हो गई। मेरे माता-पिता और भाई उसपर लट्टू

थे। उसके व्यक्तित्वमें कुछ ऐसी छटा थी कि हमारे घरमें भी उल्लास भर गया। लेकिन बार-बार मनमें कुढ़न होती थी कि एलीनाके जीवन का एक पक्ष ऐसा है, जो मैं बिल्कुल नहीं जानता।

एक दिन ऐसा आया जब कि मुझे अपनी कुढ़नका कारण मिल गया। क्लास खत्म होने पर मैं और कई साथी एक फुटबालका खेल देखने गए। खेल रुकता था तो हम दौड़कर खाने-पीनेके लिये दुकान पर जा डटते थे। सामान खरीदनेके लिये लाइन लगती थी और हम भी उसमें जम जाते थे। उस दिन लाइनमें खड़े-खड़े अचानक मैंने देखा कि उस ओर एलीना बैठी है। उसकी वेश-भूषा आकर्षक थी। उसके साथ दो पुरुष भी थे जो निश्चय ही विदेशसे आये थे। तीनों हँस-हँसकर बातें कर रहे थे। शराबका दौर चल रहा था। मुझे कुछ ऐसा लगा जैसे वे दोनों एलीनाको भूखे भेड़ियोंकी तरह ताक रहे हैं।

मैं फिर खेल देखने जा बैठा, लेकिन मेरा मन नहीं लगा। एलीना उन विदेशी पुरुषोंके साथ क्या कर रही थी? खेलके बाद मैंने देखा कि वह उन्हींके साथ एक बहुत बड़ी विदेशी मोटरगाड़ीमें बैठकर चली गई। अगले दिन सांझके समय एलीना मेरे घर पर आमन्त्रित थी। खाना खाने बैठे तो मैं उसे घूरता रहा, लेकिन उसमें कोई परिवर्तन नहीं देखा। जब हम अकेले रह गए, तो उसने बातों-बातोंमें कहा कि पहिले दिन वह फुटबाल देखने गई थी। बोली:

"हमारी ब्यूरोके प्रधानने मुझे दो विदेशियोंको साथ ले जानेका आदेश दिया था। बड़े खूसट लोग थे।"

मैंने उसे नहीं बताया कि मैंने उसे फुटबालमें देखा था। बिदा लेते समय मैंने पूछा:

"फिर कब मिलेंगे?"

"शुक्रवारकी सांझको।"

"अफ़सोसकी बात है कि उस दिन मुझे लैक्चर देने जाना है। बृहस्पतिवारको ठीक रहेगा।"

"माफी चाहती हूँ। बृहस्पतिवारको तो मुझे बहुत जरूरी काम है।"

सहसा मुझे याद आया कि बृहस्पतिवारको मिलनेके लिये एलीना कभी राजी नहीं हुई। मैंने निश्चय किया कि अगले बृहस्पतिवारको एलीनाका पीछा करके सब पता लगाऊँगा।

उस रातको पानी बरस रहा था। गाढ़े अन्धकारमें मुझ जैसे नौसिखिएको चलना दूभर हो गया। एलीनाको एक ट्राम पर चढ़ते देखकर मैं भी पीछेकी सीट पर जा बैठा। शहरके बीचमें जाकर वह उतर पड़ी। मैं भी उससे कुछ दूर रहकर उसका पीछा करने लगा। उसने एक बड़ेसे मकानके पास रुककर घंटी बजाई। बर्दी पहने हुए एक आदमीने दरवाजा खोलकर उसे भीतर कर लिया और दरवाजा फिर बन्द हो गया। एक ओरको छुपकर मैं भी राह देखने लगा। दो घण्टे तक बैठा हूँगा। लोग उस मकानमें आते जाते रहे। दरवाजा खुलने पर उजाला होता था, तो मैं आने जाने वालोंके मुख भी देख पाता था। लेकिन दरवाजा खोलकर वह वर्दीधारी दरबान गलीको एक सिरेसे दूसरे सिरे तक भांप लेता था, मानो जानना चाहता हो कि कोई देख तो नहीं रहा है। मकानमें आने वालोंमें अधिकतर स्त्रियाँ थीं। कुछको मैंने पहिचान भी लिया।

आखिर एलीना बाहर निकली। उसके साथ साधारण रेनकोट पहिने दो पुरुष थे। किन्तु उनमेंसे एकने जेबसे सिगरेट निकालनेके लिये रेनकोट हटाया, तो मैंने देख लिया कि वह खुफिया पुलिसकी वर्दी पहिने है। मैं सब कुछ समझ गया। एलीना उन हजारों गुप्तचरोंमेंसे एक थी, जो कि सोवियत देशके कोने-कोनेमें फैल चुके थे!

हम सारे कम्युनिस्ट अच्छी तरह जानते थे कि हजारों निरपराध व्यक्तियोंको कारागारों और गुलामखानोंमें ठूँसा जा रहा है। हम इस कडुवे सत्यको भुलाए रहते थे, सो अलग बात है। अथवा हम मन समझा लेते थे कि समाजवादकी रचनाके लिये यह सब क्रूरता आवश्यक है। एक नैतिक दृष्टिसे उस समस्या पर विचार करनेका हममें साहस ही नहीं रह गया था। उस दिन अचानक मैंने अपने आपसे पूछा : "क्या एलीना भी उन लोगोंमेंसे एक है, जिनके कारण हजारों निर्दोष लोग तड़प-तड़प कर प्राण देने पर बाध्य हुए हैं ? एलीना। जिसको मैं इतना प्यार करता हूँ !"

इस प्रश्नका उत्तर देनेकी मैंने जितनी चेष्टा की, उतना ही मैं निरुत्तर होता गया। प्यार और घृणाकी टक्कर थी। प्रातःकाल मैंने एलीनाको लिख भेजा कि एक सप्ताहके लिये मैं शहरसे बाहर जा रहा हूँ। मुझे जाना कहीं नहीं था। फिर भी इस डरसे कि कहीं एलीना मेरे घर न चली आए, मैं अपने एक मित्रके पास जा ठहरा। अगले बृहस्पतिवारको फिर मैं उस बड़ेसे मकानके सामने घूमकर बैठ गया। फिर एलीना और दूसरी औरतें वहाँ आयीं। अब मुझे कोई शंका नहीं रही। वे सब स्त्रियाँ जिनमें कुछ तो उच्चपदस्थ कर्मचारियोंकी पत्नियाँ थीं, वहाँ आकर अपने कामकी साप्ताहिक रिपोर्ट दे जाती थीं और आगेका काम समझ लेती थीं। पुलिसके दफ्तरमें जानेसे यह भेद छुपा नहीं रहता, इसीलिये यह गैर-सरकारी मकान ठीक किया गया था।

उस रात घर लौटकर मैंने एलीनाको लिख भेजा कि कुछ ऐसे कारण हैं, जो मैं बतला नहीं सकता, किन्तु उसके साथ और नहीं मिल सकूँगा। फिर भी दो-चार दिन बाद ही एलीनासे मेरी भेंट हुई और उसकी जो कहानी मैंने सुनी, वह उसीके शब्दों आपके सामने रख रहा हूँ।

(३)

हम कीवके रहनेवाले हैं। माता स्कूलमें अध्यापिका थी और पिता इञ्जीनियरिंगके प्रसिद्ध आचार्य। वे किसी स्थानीय कारखानेमें काम करके अच्छा कमाते थे। मैं उनकी इकलौती बेटी थी और मेरा बचपन बड़े लाड़-प्यारमें बीता। मुझे किसी बातकी कमी नहीं थी। मुझे सङ्गीत और विविध भाषाएँ सिखाई गयीं और बड़ी मस्तीका जीवन बिताकर मैं बड़ी हुई।

हमारे पड़ोसीका एक लड़का था। सर्गी। वह खारकोवके एक टेक्नीकल इन्स्टीच्यूटमें पढ़ता था। गर्मीकी छुट्टियोंमें घर आता था। हम मित्र बन गए और बड़े होते-होते मित्रता प्यारमें पनप उठी। जिस दिन उसने मुझे विवाहके लिये टोका, उस दिन मैं सत्रह वर्षसे कुछ बड़ी थी। मैंने उसकी बात मान ली और हम दोनों खारकोवमें रहने लगे। मैंने एक कला-केन्द्रमें भर्ती होकर १६३० में दीक्षा प्राप्त कर ली।

तुम्हें याद होगा कि उन्हीं दिनों अनेकों इञ्जीनियरों तथा विशेषज्ञों पर बुरे-बुरे आरोप लगाए गए थे। मैं एक दिन पिताजीसे मिलने कीव गई थी कि मेरे सामने ही पिताजीको पकड़नेके लिये पुलिसके लोग आ पहुँचे। उन्होंने घरकी तलाशी ली। धर्ममूर्तियाँ तोड़ डालीं, सोफा और चारपाइयाँ चीर-फाड़कर देखा, किन्तु कुछ नहीं मिला। इसके बाद माँ की मदद करनेके लिये मैं कीवमें ही ठहर गई। हमारे सुखके दिन बीत चुके थे। हमको कुछ नहीं मालूम था कि पिताजीका दोष क्या है और न हीं हमें उनसे मिलनेका अवसर मिला। महीनों तक नित्य ही साँझके समय मैं खानेका सामान लेकर जेलके फाटक पर जाती रही। पानी पड़ता, बर्फ झड़ती, किन्तु मैं और सैकड़ों और मेरे जैसी अभागिनी स्त्रियां वहाँ घण्टों खड़ी रहती थीं। अपने पिताकी सहायता करनेके लिये मैंने पुलिसके दफ्तरोंकी धूल भी छानी, किन्तु कुछ न कर सकी।

एक दिन मैं पुलिसके दफ्तरमें गई, तो मुझे कहा गया कि बड़े अफसरने मुझे भीतर बुलाया है। मुझे आश्चर्य हुआ। भीतर एक अधेड़ आयुका सौम्य, किन्तु रौबदार पुरुष बैठा था। मैं अपने पिताकी बात कहने लगी, तो वह चुपचाप सुनता रहा। फिर बोला :

"अब, एलीना, तुम मेरी बात सुनो। तुम सुन्दर लड़की हो। वास्तव में तुम लावण्यवती हो। इसके सिवाय तुम सुसंस्कृत हो और आचार-व्यवहार जानती हो। ये कुछ ऐसे गुण हैं, जिनसे तुम्हारा और तुम्हारे पिता का ही नहीं, तुम्हारे देशका भी भला हो सकता है। हम तुम्हारी सहायता कर सकते हैं, लेकिन तुम्हें भी हमारी मदद करनी होगी। मैं तुमसे अधिक नहीं कहना चाहता, क्योंकि तुम स्वयं समझदार हो। अब देखो, घबराओ मत, रोनी सूरत मत बनाओ। मैं जो कह रहा हूँ वह इतनी बुरी बात नहीं है। जीवन में तो बहुत बुराइयाँ है। मैं यह नहीं कहता कि तुमको किसीके साथ सोना पड़ेगा। इस कामके लिए हमारे पास बहुत औरतें हैं। उनमेंसे कुछ तो हमारे शहरमें भद्र महिलाएं समझी जाती हैं।

"तुम तो हमारे अधिक काम तभी आ सकोगी जब कि तुम पवित्र रहो, ऐसी लड़की जो सबको ललचाए लेकिन मिले किसीको नहीं। हम ऐसा प्रबन्ध करेंगे कि तुम कामके लोगोंसे मिलती रहो। वे जो कुछ बातें करें वे हमारी सरकार जानना चाहती है। इस कामके लिए हम तुमको अच्छे पैसे देंगे और तुम्हारी तथा तुम्हारे प्रियजनोंकी रक्षा भी करेंगे।"

उसने सिगरेट मेरी ओर बढ़ाई। मैंने इन्कार कर दिया। फिर उसने एक मिठाईका डिब्बा मेरे आगे रख दिया। मैं चकराकर उसकी ओर देखने लगी। मैंने कहा :

"तुम्हारा मतलब है कि मैं अपने सगे सम्बन्धियोंमेंसे कुछ और लोगोंको तुम्हारे हाथमें फँसा दूँ, जिससे कि तुम दो-चार और सनसनीदार

केस तैयार कर सको। इसके बदलेमें तुम मेरे पिताको छोड़ दोगे। ठीक है ना? मुझे मिठाई खिलाकर बहलाना चाहते हो।"

वह हँसकर बोला: "बात इतनी सीधी नहीं है।"

"कुछ भी हो, माफ कीजिए। मैं यह सब नहीं कर सकूंगी।"

"एलीना, जल्दबाज़ी मत करो। तुम्हारे पास समय है। सोचकर जवाब दे देना। हां, यदि इन बातोंके विषयमें तुमने किसीको सांस भी दिया तो तुम्हारे पिताको सदाके लिए जेलमें सड़ना पड़ेगा।"

और इसके बाद, बिट्या, मेरे दिन बड़े दुःखमें कटने लगे। मैं उनकी गुप्तचर बनकर अपने पिताजीको छुटा सकती थी। पिताजीको न छुड़वाकर मैं अपनी मर्यादापर अड़ी हूँ, यह बात मुझे खटकने लगी। एक दिन फिर मुझे पुलिस अफ्सरने बुला भेजा। इस बार उसने सौजन्यता नहीं दिखाई। न सिगरेट दी न मिठाई। मैं वहाँ खड़ी-खड़ी उसका मुँह ताक रही थी कि आस-पाससे आर्तनाद सुन पड़ा। डरकर मैं भी चीत्कार कर उठी। अफ्सरने सिर उठाकर कहा:

"ओ, तुम आ गई। यहाँकी यह चिल्लपों तुम्हें बुरी लग रही होगी। लेकिन क्या करें। कुछ लोग बात भूल जाते हैं तो उन्हें याद दिलाना ही पड़ता है। काम हमारा बहुत कठोर है। पत्थरका दिल चाहिए······हां, तो क्या तुम्हें मेरी बात स्वीकार है?"

"नहीं। मैं नहीं मानती, मान ही नहीं सकती।"

"यह तुम्हारा आखिरी फैसला है।"

"हां। आखिरी।"

"मुझे तुम पर और तुम्हारे पितापर बहुत दया आती है। अब भी आशा है कि तुम अपनी हठ छोड़ दोगी। अच्छा, अब जा सकती हो।

उस रातको जब जेलके दरवाजे पर कुछ चीजबस्त पिताजीके लिए देनेका मेरा नम्बर आया तो सिपाहीने मेरे पिताका नाम सुनकर पार्सल

लेनेसे इन्कार कर दिया। मेरा कलेजा धकसे रह गया। मैंने चिल्लाकर कहा : "क्यों, क्या बात है? वे मेरे पिता हैं। क्या वे मर गए? क्या उन्हें और कहीं भेज दिया है?"

"मैं कुछ नहीं जानता। रास्ता छोड़ो। दूसरोंको भी काम है।"

"किन्तु वे बूढ़े आदमी हैं। मैं जानना चाहती हूं कि उन्हें हुआ क्या है?"

"या तो चली जाओ नहीं तो उठवाकर फिकवा दूंगा। तुमने लाइन रोक रक्खी है।"

मैं एक दूसरी खिड़की पर जा पहुँची। उसपर लिखा था—"जानकारी"। मैंने गार्डको अपने पिताका नाम बताकर कहा कि उनके बारेमें जानना चाहती हूँ। उसने खिड़की बन्द करके टेलीफोन करना शुरू कर दिया। मैंने सांस रोककर सुनना चाहा। किन्तु एक शब्द "हस्पताल"के सिवाय कुछ नहीं सुन सकी। किन्तु गार्डने खिड़की खोलकर सिर हिला दिया। उसके पास कोई खबर नहीं थी।

मैं घरकी ओर चली तो पाँव मन-मनके हो गए। सामान लौटा देखकर माँ घबरा न जाएँ, इसलिए मैंने सब कुछ रास्तेके भिखारीको दे दिया। अगले दिन मैं किसी ऐसे डाक्टरका पता लगाने निकली जो जेल के हस्पतालमें काम करता हो। हमारे परिवारके बन्धु कई डाक्टर थे। उनसे पूछ-ताछ की। कई घण्टेकी खोजके बाद एक डाक्टरका पता लगा जो कीवकी जेलमें कामपर जाता था। उसके पास पहुँची। मुझको रोगी समझकर डाक्टरने भीतर बुला लिया। उसके दफ्तरका द्वार बन्द होते ही मैंने घुटने टेककर, आँसू बहाते हुए उसे अपनी बात बतलाई। वह दयालु व्यक्ति था। किन्तु मेरी कहानी सुनकर काँप उठा। हाथ जोड़कर चले जानेके लिए कहने लगा। वह बोला कि उसका जेल-सम्बन्धी काम अत्यन्त गुप्त है और वह कुछ नहीं बता सकता।

किन्तु मैंने हिलनेसे इन्कार कर दिया, मैं रोती रही और अनुनय-विनय करती रही। आखिर वह हिल गया। उसने वायदा किया कि मेरे पिता यदि जेलके हस्पतालमें होंगे, तो वह पता लगा लेगा। मैं तीन दिन पिछे किसी सार्वजनिक टेलीफोनपर उससे पूछ सकती थी।

माँ बराबर मुझे पिताजीके लिए सामान देती रही और मैं जाकर भिखमंगोंको बाँटती रही। निश्चित दिनपर मैंने डाक्टरको टेलीफोन किया। उसने मुझे सावधान करते हुए कहा :

"जी कड़ा करके सुनो। खबर बहुत बुरी है। तुम्हारे पिता हस्पताल में हैं। लेकिन उनके बचनेकी कोई आशा नहीं। फेफड़ोंपर सूजन चढ़ी है। इसके सिवाय........उन्हें बहुत बुरी तरह मारा गया है। अच्छा, नमस्ते। मुझे बहुत दुःख है।"

हारकर मैं पुलिसके दफ्तरमें पहुँची और अफ्सरके पास अपना नाम भेज दिया। मुझे तुरन्त भीतर बुलाया गया। अफ्सर हँसता-हँसता आकर द्वारपर ही मुझसे मिला। पूछने लगा :

"कहो, क्या बात है ? फैसला कर लिया क्या ?"

"नहीं। फैसला करनेके पूर्व मैं अपने पिताको देखना चाहती हूँ।"

"वह तो बड़ी कठिन बात है। मैं तुम्हें रुलाना नहीं चाहता। तुम्हारा पिता हस्पतालमें है और उसकी ऐसी हालत नहीं कि किसीको दिखाया जा सके।"

"भगवानके लिए, मुझे मिल लेने दीजिए। आप भी इन्सान हैं...."

"यहाँपर इन्सान कोई नहीं है, एलीना। हम सब तो क्रान्तिके रक्षक मात्र हैं। यहाँ भावनाके लिए कोई स्थान नहीं। जो सरकारके विरुद्ध द्रोह करते हैं, उनको यन्त्रणा देना और मार डालना ही हमारा काम है। यह बात तुम जितनी जल्दी समझ लो, उतना ही अच्छा रहेगा। तुम्हारे

पितासे तुम्हें मिला देता हूँ। हमें तुम्हारी सहायताकी आवश्यकता है। इसीलिए। जाओ, जेलमें जाओ। मैं हुक्म भेज देता हूँ।"

मैं हस्पतालमें पहुँची। मुझसे मिलानेके लिए मेरे पिताको एक अलग कमरेमें ले जाया गया था। वे एक लोहेकी खाटपर मृतप्राय पड़े थे। उनकी दाढ़ी सफेद हो गई थी। अस्थिपंजर शेष शरीरपर चमड़ा चिपका हुआ था। माथे और गड़े हुए गालोंपर नील पड़े थे। अँगुलियों और हाथोंपर पट्टियाँ चढ़ी थीं। मैं उनकी चारपाईके पास खड़ी हो गई। वे इतने दुर्बल थे कि मुस्कुरा भी न सके। जब उन्होंने बोलनेके लिए मुँह खोला, तो मैंने सहमकर देखा कि उनके आगेके समस्त दाँत गायब हैं। उन्होंने धीरेसे कहा: "रोओ नहीं, योलोचका"—योलोचका मेरा लाड़का नाम था।

मुझको कह दिया गया था कि घरेलू बातोंके सिवाय कोई और चर्चा उनसे न करूँ। लेकिन वह हृदय-विदारक दृश्य देखकर पुलिसका सिपाही एक ओर हट गया। पिताने अपने निकट बुलाकर मेरे कानमें कहा:

"देख रही हो, योलोचका, मेरी क्या हालत हुई है। वे प्रायः नित्य ही मुझे पीटते थे। मार-पीट करना ही उनका काम है। इस जेलके कराल कोठरोंमें सैकड़ों को भिगोए हुए तौलियोंसे पीटा जाता है। हफ्तों सोने नहीं दिया जाता! या बरफसे ठण्डी कोठरीमें रक्खा जाता है। मुझे बेदर्दीसे पीटते रहे और पूछते रहे कि मेरे 'साथियों' के नाम क्या हैं?

"मैं क्या बताऊँ, बेटी। कोई षडयन्त्र होता तो साथी होते। किन्तु इनका दिमाग खराब है। मैं तो कई बार चाहता हूँ कि मेरे साथी रहे होते, क्योंकि इन्हें कुछ बता देता। ओ, योलोचका बेटी, इनका कितना अधःपतन हुआ है।"

"तुम अच्छे हो जाओगे, बापू। इस नरकमें से मैं तुमको निकाल लूँगी। मैं वायदा......।"

"नहीं, बेटी। यहाँ आकर कोई वापिस नहीं जाता। डाक्टरोंने साफ-साफ कह दिया है। मार-पीटके घाव भर गए हैं, किन्तु मुझे निमो-निया हो गया है। ऐसी हालतमें और मेरी उमरमें क्या मैं बच सकता हूँ? दो-चार दिनका और हूँ, बेटी! तुम सब भूल जानेको कोशिश करो। तुम्हें जिन्दा रहना है ना। समझ लो कि यह सब हुआ ही नहीं। अपनी माँ और सर्गीको प्रसन्न रखना........"

सिपाहीने आकर कहा कि पाँच मिनट हो गए, मुझे लौट चलना होगा। दो-चार दिन बाद मेरे पिता मर गए और मैं अपने पतिके पास खारकोव लौट आई।

(३)

मैंने एलीनाको रोक कर कहा :

"जाने दो, प्रिय, मैं और नहीं सुनना चाहता। मेरे मनमें तुम्हारे लिए दुःख है, और अपने ऊपर लाज आती है। मेरी क्रूरताके लिए मुझे माफ कर दो।"

"नहीं, नहीं, अब जब सुनाने ही बैठी हूँ तो पूरी कहानी सुन लो। मैं चाहती हूँ कि सब कुछ जान कर तुम मुझे समझ पाओ। अभीसे क्यों काँपते हो?"

और वह आगे कहने लगी :

१९३१ पूरा बीत गया और प्रायः १९३२ भी। मेरे पति इन्स्टीच्यूटसे निकल कर एक बड़े कारखानेमें काम करने लगे थे। किन्तु और टेकनीकल कार्यकर्त्ताओंकी तरह वे भी गिरफ्तारीकी आशंकासे डरते रहते थे। उन्होंने कभी कुछ दोष नहीं किया था। किन्तु उनकी आँखोंके आगे उनके साथियोंको पकड़ा गया तो वे भी घबराने लगे। और जब उनको पकड़ा गया तो मुझे विश्वास ही नहीं हुआ। मैं उनको अच्छी तरह जानती थी, उनके सब मित्रोंसे मेरा परिचय था, यहाँ तक

कि उनके विचार भी मुझसे छुपे न थे। उनके मनमें द्रोहकी भावना भी कभी मैंने नहीं पाई थी।

फिर मैं जेलके फाटक पर खड़ी होकर उनका सामान पहुँचाने लगी। हजारों और औरतें आती थीं। वर्षा हो, बरफ पड़े। कई महीने बाद एक दिन जेलके फाटक परसे सर्गीका सामान लौटा दिया गया। मैं फिर काँप उठी। फिर दूसरी खिड़की पर जाकर पूछ-ताछ की। दो घण्टे राह देखनेके बाद, खारकोव पुलिसके एक अधिकारी कॉमरेड टी के पास मुझे पहुँचाया गया। वह एक लम्बा-तंडगा, मोटा-ताजा, सुन्दर जवान था। हँस कर बोला :

"आपकी तो इन्तजार थी। सुन्दर औरतें आती हैं तो मनको अच्छा लगता है और तुम्हारे बारेमें तो कीवके दफ्तरसे मेरे पास पूरी रिपोर्ट आ चुकी है। मुझे दुःख है कि हम ऐसी बुरी परिस्थितिमें एक दूसरेसे मिल रहे हैं। तो भी, मैं अपना भाग्य सराहता हूँ।"

"तो क्या तुमने मुझसे मिलनेकी यादमें ही मेरे पतिके पास सामान पहुँचानेसे रोक दिया?"

"एलीना, मेरी बातका विश्वास करो। मुझे तुम्हारी तकलीफ देख कर बहुत दुःख होता है। लेकिन सब कुछ तुमने जान-बूझ कर ही मोल लिया है। दो साल पहिले कीवमें तुमको एक सुझाव दिया गया था। वह आज भी तुम्हारे सामने है। हम पुलिसवाले तो अपनी बातके धनी होते हैं।"

"मेरे पतिको क्यों पकड़ रखा है? तुम अच्छी तरह जानते हो वह निर्दोष है। तुम्हारे भी तो माँ बहिने हैं। क्या तुमको मुझ पर दया नहीं आती? मैं तुम्हारे लिए जासूस नहीं बन सकती। वह काम मेरे बसका नहीं। इससे अच्छा तो यही है कि मैं मर जाऊँ।"

मैं अपनी बात करती रही। मेरी बातोंमें विनय थी, गुस्सा था, उलाहने थे। वह चुपचाप सब सुनता गया। जब मैं थक गई तो वह उठकर मेरे निकट आया और बड़े प्यार से मुझे थपथपा कर बोला :

"जीवन क्रूर है, एलीना। इसलिए अक्ल से काम लेना चाहिए। तुमको पहिले तो अपनी फिक्र करने की जरूरत है। तुम इतना हठ क्यों करती हो ? तुम हमारे साथ क्यों नहीं मिल जाती ?"

"तो सुनो। तुमने मेरे निरपराध पिता की हत्या कर डाली तथा उन जैसे और हजारों निर्दोषों को मौत के घाट उतार दिया। इसीलिए। अपने पति को बचाने के लिए भी मैं अनेक माताओं और पत्नियों के आँसू अपने सिर पर नहीं लेना चाहती। इसीलिए।"

कई सप्ताह बाद मुझे सूचना मिली कि मेरे पति को दस वर्ष कठोर कारावास का दण्ड मिला है और उसे यूराल प्रदेश के किसी गुलामखाने में भेज दिया गया है।

बहुत दिन तक मेरे मनमें यह बात आती रही कि घुटने टेक दूं और जासूस बन जाऊँ। सर्गी के बिना जीवन दूभर हो गया। अपने साथ लड़ते-लड़ते मैं थकने लगी। मन कहता था कि जब चारों ओर मिथ्या और अन्याय का राज्य है, तो मैं ही क्यों सत्य और न्याय की ठेकेदार बनी फिरूँ ? बहुत बार मैंने फैसला भी कर डाला। किन्तु मेरे गूढ़ मानस में जो संस्कार जमे थे उन्होंने प्रत्येक बार मुझे रोक लिया। मेरा रोम-रोम चीत्कार करने लगता था कि मैं वैसा नहीं कर सकती। एक साल तक मैं सरकार के विभिन्न विभागों को प्रार्थनापत्र भेजती रही कि मेरे पति के मामले पर फिर से विचार होना चाहिए। कोई उत्तर किसी दिन नहीं मिला। फिर एक दिन चमत्कार हुआ। मैं एक स्त्रीको जानती थी, जिसका कामरेड टी पर सिक्का था। उसके कहने-सुनने से मुझे आज्ञा मिल गई कि गुलामखाने में जाकर अपने पति से मिल आऊं।

यूराल की ओर जानेवाली एक गाड़ी पर मैं सवार हो गई। साथ में काफी सामान ले लिया। मैंने कपड़े, खाने का सामान, जूते तथा तमाकू इत्यादि पर अपनी आखिरी पाई खरच कर डाली थी। मन ही मन मैं कल्पना करने लगी कि सर्गी मुझे देखकर खिल उठेगा और कुछ समय तक हम प्यार की बातें करके एक-दूसरे को सुखी बना सकेंगे। स्वर्डलोस्क के पार एक छोटे स्टेशन पर मैं रेल से उतर पड़ी। पानी बरस रहा था और चारों ओर कीचड़ फैली थी। गुलामखाना स्टेशन से कोसों दूर था और बड़ी कठिनता से मैंने एक गाड़ीवान को तैयार किया। बहुत देर तक हम चलते रहे। हमारे चारों तरफ घना जंगल और चट्टानें थीं। आखिर हम एक खुले मैदान में पहुँचे, जिसको कांटेदार तारों की बाड़ से घेरा गया था।

बाड़ के पार मैंने बैरकों की लम्बी कतार देखी। उनमें छोटी-छोटी खिड़कियाँ थी, जिन पर मजबूत सलाखें लगी थीं। पहरेदार चक्कर काट रहे थे और उनके साथ कुछ खूँखार कुत्ते भी मैंने देखे। मैं भीतर जाने की प्रतीक्षा में द्वार पर खड़ी रही। पानी तब भी पड़ रहा था। मैंने देखा कि जंगल से निकल कर प्रायः तीन सौ कैदी गुलाम-खाने में घुस गए। वे चार-चार की कतार में चल रहे थे। दिन भर काम करके लौटे होंगे। मैंने जीवन में पहिले कभी मनुष्य को वैसी गई बीती हालत में नहीं देखा था। चिथड़ों में लिपटे, मैले-कुचैले, घिनौने, वे लोग मनुष्य कहलाने योग्य नहीं थे। मानों मनुष्यों के कंकाल उठ कर चलने-फिरने लगे हों।

आखिर मेरा नम्बर आया। मैंने गुमटी में जाकर अपने कागज-पत्र दिखाए। एक पुलिस अफ्सर ने मुझसे बहुतसे प्रश्न पूछे और एक स्त्रीने अच्छी तरह मेरी तलाशी ली। मेरे कपड़े टटोले सो अलग, मेरे नग्न शरीर को भी छान डाला। मेरे पास कागज़ पैंसिल थे, वे ले लिए

गए। नाखुन काटने की छोटी सी कैंची रखवा ली। फिर मुझे बताया गया कि तमाकू, सिगरेट और साबुन के सिवाय मैं और कोई सामान भीतर नहीं ले जा सकती।

एक छोटेसे, गन्दे कमरेमें बैठकर मैं सर्गीकी प्रतीक्षा करने लगी। दीवारों पर स्टालिन, जरझिन्सिकी, तथा यगोदाकी तसवीरें थीं। तसवीरों पर धूल जमी थी। एक फटेसे कपड़े पर लिखा था—"मेहनत करके नए आदमी बनो।" कुछ देर बाद एक बूढ़ा-सा आदमी आता हुआ दिखाई पड़ा। उसके पीछे रिवाल्वर ताने हुए एक सिपाही था। उस आदमीकी उलझ-पुलझ दाढ़ी और सिरके बाल सफेद थे। सूखकर काँटा हो चला था और देखकर भय लगता था। उसकी एक आँख पर एक सड़ेसे कपड़ेकी पट्टी चढ़ी थी। ऐसा लगता था जैसे नरकसे निकल भागा हो। उसको देखकर मेरा दिल भर आया और अफसरकी ओर देखकर मैंने कहा :

"देखो, कामरेड, वह बूढ़ा है ना, उसको यह सिगरेटका पैकेट दे दो।"

अफसर ठहाका मारकर हँस पड़ा और ताल ठोंकता हुआ बोला : "धत् तेरेकी। तुम मुझे उल्लू बना रही हो या वास्तवमें तुमने अपने पतिको नहीं पहिचाना?"

मुझे जैसे काठ मार गया। दरवाजा खोलकर वह बूढ़ा भीतर चला आया। पास आने पर मैंने पहिचान लिया। सचमुच वह सर्गी था। लेकिन टूटा-फूटा, बूढ़ा, अस्तव्यस्त। मेरी आँखोंको विश्वास नहीं हुआ। मैंने उठकर उसे आलिंगनमें बांध लिया और प्यार भरे स्वरमें उसे पुकारा। पहिले तो वह कुछ चकराया। मुख पर भावावेश उमड़ने लगा। फिर धड़ामसे घुटने टेककर वह सुबकने लगा और मेरे कपड़े, मेरे घुटने तथा हाथ बार-बार उसने चूमे। मैंने उसे सान्त्वना देकर अपने बराबर बैंच

पर बैठा लिया। मुझे केवल दस मिनटका समय दिया गया था, सो भी आधा रूस पार करनेके बाद। मुझसे कहा गया था कि व्यक्तिगत बातों को छोड़कर और कुछ न कहूं। अभी हमने बातें शुरू ही की थीं कि अफसर चिल्ला उठा : "समय पूरा हो गया। बिदाके लिये एक मिनट और है।"

सर्गीने रोकर कहा : "एलीना, हो सके तो मुझे बचाओ। यहाँका जीवन बहुत भयानक है। बाहरके संसारमें तो यहाँकी वीभत्सताकी कल्पना करना भी असम्भव है। हमको जानवरोंकी तरह रक्खा जाता है। रोज मक्खियोंकी नाईं कैदी मरते रहते हैं। हम पर मार पड़ती है, हमें भूखा रक्खा जाता है। एलीना, एलीना, किसी तरह मुझे बचाओ।"

मैंने सर्गी से कोशिश करनेका वायदा किया। मेरे पतिकी छबि मेरे मानस पर चित्रित थी, किन्तु उस प्रेतमूर्तिसे उसका कोई मेल नहीं मिला। मेरी सारी शंकायें मिट गयीं। अपना चरित्र और अभिमान बनाये रखने के लिये उसको वहाँ सड़ने देनेके लिये मैं अब राजी नहीं थी। मैंने कामरेड टी के पास जाकर अपना फैसला बता दिया। सर्गीको आज़ाद करनेके लिये मुझे पुलिस का जासूस बनना स्वीकार था।

दो महीने बाद सर्गी लौटा। वह समझदार और हृदयशील व्यक्ति है। वह समझ गया कि मेरे लिये अब उसके साथ पुराने ढंग का प्यार सम्भव नहीं, कि मैं केवल उसकी सेवा ही कर सकती हूँ। सोवियत् सरकार ने हमारे प्यारका गला घोंट दिया था। उसने कभी नहीं पूछा कि मैंने उसको गुलामखानेसे क्यों कर बाहर निकाला। शायद उसके मनमें मेरे ऊपर जो शुबा है वह और भी भयानक है, मैं जितनी गिरी हूँ उससे भी अधिक गिरी हुई वह मुझे समझता हो।

मैंने एक बड़ा दुरूह फैसला किया था। किन्तु, बिट्या, यदि तुमने वह गुलामखाना और सर्गीका वह रूपान्तर देखा होता तो तुम समझ

जाते कि बरसों तक हठ करनेके बाद क्यों मैंने हार मान ली। और मैं तो उन हजारों में से केवल एक हूँ, जिनको पुलिसने जासूसी करनेके लिए बाध्य कर डाला है। जिस मकान में हम जाते हैं, वहाँ हम एक-दूसरी को नहीं देख सकतीं। हम को एक-दूसरी से अलग रक्खा जाता है।

"तो इस प्रकार तुम इस शहर में आई हो, एलीना ?"

"हाँ, विट्या। खारकोवसे यहाँ आनेके एक महीने बाद ही तुमसे मिली थी। मुझे हमारी भेंटके बारेमें पुलिसको रिपोर्ट देनी पड़ी। और कोई चारा नहीं था। लेकिन विश्वास करो, विट्या, मैंने और कुछ नहीं कहा।"

"तुम्हारे अफ्सरोंने मेरे बारेमें कुछ और भी कहा ?"

"हाँ। लेकिन तुम्हारे खिलाफ कुछ नहीं। जान पड़ता है कि तुम्हारे बारेमें पुलिसकी राय अच्छी है। क्या मेरा भेद जानकर तुमको बहुत बुरा लग रहा है ?"

"सच कहूँ। बुरा तो लग रहा है। यह सब समझने और सहनेके लिए मुझे कुछ दिन लगेंगे।"



बारहवाँ अध्याय

निकोपोल में इञ्जीनियर

हम इन्स्टीच्यूटकी अन्तिम परीक्षाकी तैयारी कर रहे थे। किन्तु पढ़ाई-लिखाईके लिये समय और शान्तिका अभाव था। हम बाहरके कामों पर जाते रहते और पर्ज चल रही थी। अचानक रही-रही शान्ति भी नष्ट हो गई। सुदूर लेनिनग्राडमें किसीने गोली चलाई और सारे देश में एक भूकम्प आ गया।

१ दिसम्बर १९३४ के दिन एक युवक कम्युनिस्ट, निकोलायेव ने लेनिनग्राड स्थित पार्टीके दफ्तरमें गोली चलाकर सर्गी कीरोवको मार डाला। कीरोव पौलिटब्यूरोका सदस्य और उत्तर रूसका तानाशाह था। उस गोलीकी आवाज रूसके इतिहासमें बहुत दिन तक गूंजती रही। वह गूँज मिटनेके पूर्व लाखों व्यक्तियोंको प्राण देने पड़े और लाखों बर्बाद हो गए। उस अपरिचित नवयुवककी उस हरकतका मोल स्वयं मुझे भी चुकाना पड़ा।

पार्टीका प्रचार विभाग चीत्कार कर उठा। अभी चार दिन पहले पार्टीके पत्रोंने दावा किया था कि पार्टीकी एकता अक्षुण्ण है। अचानक चारों ओरसे हंगामा होने लगा कि पार्टी के भीतर जासूस, द्रोही, कपटी और बदमाश भरे पड़े हैं। कहा जाने लगा कि बाहरका पूँजीवादी संसार रूस पर आक्रमणकी तैयारी कर रहा है और पूँजीपतियोंने रूसके भीतर

अनेक षडयन्त्र रचे हैं। हममेंसे जो लोग रूसकी राजनीतिसे थोड़ा भी परिचय रखते थे, वे समझ गए कि कत्लेआम होनेवाला है। हमने ठीक ही समझा था। अगले दो-तीन वर्षों में रूसके भीतर जो रक्तपात हुआ, उसकी तुलना रूसके इतिहासमें भी नहीं मिलतो।

बाहरसे सब कुछ शान्त दीख पड़ता था। अपने वामपक्षी और दक्षिणपन्थी विरोधियों पर विजय प्राप्त करके स्टालिन चैनकी बंशी बजा रहा था। किसानोंने भूखों मरकर तथा गोलियाँ खाकर आत्म-समर्पण कर दिया था। देशमें तेजीसे कल-कारखाने खुलनेके कारण जनता जीतोड़ परिश्रम कर रही थी; भोजनकी कमी चारों ओर दीख पड़ती थी; गिरफ्तारियाँ भी चल रही थीं—फिर भी किसी ओरसे कोई चूँ नहीं कर पा रहा था। किन्तु भीतर ही भीतर जनता तथा पार्टीके मनमें एक विद्रोह जाग उठा था। स्टालिन और उसकी तानाशाही मानो एक ज्वालामुखीके कगारपर खड़े थे। यन्त्रणा सहते-सहते रूसके लोग निष्क्रियसे बन चले थे। बीस बरस तक देशने युद्ध, क्रान्ति, अकाल और घोर दमन सहा था। बदलेमें उनको मिले थे भारी भरकम नारे और सरकार का मिथ्या प्रचार। बाहरके संसारसे उनका सम्बन्ध प्रायः टूट चुका था। फिर भी रूसकी जनताने शासकोंकी पशुताको कभी स्वीकार नहीं किया। रूसके बाहर लोगोंको यह बात अच्छी तरह समझ लेनी चाहिये। बहुत लोग मान बैठे हैं कि रूसकी जनताको दासता और दमन बुरे नहीं लगते। किन्तु यह मान्यता उनके साथ अन्यायके सिवाय कुछ नहीं।

कीरोवकी हत्याका दोष जिनपर लगाया गया, वे सब नवयुवक छात्र थे। क्रान्तिके उपरान्त ही उन्होंने शिक्षा दीक्षा प्राप्त की थी। यह कोई अकस्मात् नहीं कहा जा सकता, क्योंकि रूसके छात्रोंमें क्रान्तिकारी आदर्शोंकी एक परम्परा सदा रही है। अब उस आदर्शवादको क्रान्ति-विरोधी समझा जाने लगा था, किन्तु भावना वही पुरानी थी। हत्याकी

खबर सुनकर लेनिनग्राडके छात्रोंमें आशाकी लहर दौड़ गई। उनको विश्वास सा होने लगा कि जन आन्दोलन आरम्भ होनेवाला है। वे सोचने लगे कि खुफिया पुलिस सारा जोर लगाकर भी तानाशाहीके विरोधियोंको नहीं मिटा पाई है। रूसमें क्रान्ति सदासे गुप्तरूपमें पनपती आई थी और राजनैतिक षडयन्त्र तथा आतंकवाद उसके अभिन्न अंग रहे थे।

मेरा सहपाठी म एक ऐसा कम्युनिस्ट था, जिसके साथ मैं राजनैतिक मामलों पर खुलकर बात कर लेता था। हम दोनों एक दूसरेके साथ होते थे, तो हममें एक प्रकारका साहस उमड़ आता था। कीरोवकी हत्याके चन्द दिन बाद म मुझको आन्द्री नामक एक अन्य छात्र-बन्धु के घर पर ले गया। मैं आन्द्रीको अच्छी तरह नहीं जानता था। म ने कहा कि साथ बैठकर चाय पीयेंगे और गपशप करगे।

वहाँ राजनैतिक चर्चा चलने लगी। और सब इस चर्चा में सिद्धहस्त जान पड़ते थे। मेरे लिये ही वह एक दुस्साहसका काम था। थोड़ी देर में हम यह भूल गये कि हम क्या कह रहे हैं। स्वरोंमें गर्मी आने लगी। आँखें चमक उठीं। हम "क्रेमलीनके जल्लाद" और रूसकी "पीड़ित जनता" की बात कहने लगे। मुझे ऐसा लगा जैसे मेरा बचपन लौट आया हो। मेरे पिता और उनके कुछ क्रान्तिकारी साथी बैठकर ऐसी ही बातें किया करते थे।

आन्द्रीने कहा—"निकोलायेवने गोली चलाकर अच्छा नहीं किया। इसकी क्या जरूरत थी। इससे नुकसान ही हुआ है। स्टालिनको एक बहाना चाहिये था। पार्टीके भीतर अपने रहे-सहे विरोधियोंको मिटा डालनेका बहाना। वह बहाना अब मिल गया। निकोलायेव और उसके मित्रोंको तो अब मरा हुआ समझना ही चाहिये। किन्तु क्रैमलीनके

जल्लादोंको अच्छा अवसर मिल गया कि अपने समस्त विरोधियोंका विनाश कर डालें।

"मेरी बात याद रखना, साथियो। निकोलायालेवकी एक गोलीका मोल लाखों करोड़ोंको अपने प्राण देकर चुकाना पड़ेगा। अभी तक हमें आशा थी कि किसी दिन पार्टीमें स्वाधीनता और गणतन्त्रको स्थापना हो जाएगी। अब वह आशा मिट गई। स्वप्न धूलमें मिल गया। रूस की धरती खूनसे लाल हुआ चाहती है।"

बातें करते-करते रात दिनमें बदल गई। जब बाहर निकलकर मैं बरफ पर चलने लगा तभी मुझको ज्ञान हुआ कि मैंने कितनी भारी भूल की थी। ऐसी गुप्त सभाओंमें भाग लेनेके कारण ही रूसमें हजारों छात्रोंको कारागार देखना पड़ रहा था, हजारोंके प्राण ले लिये गये थे। यदि अधिकारियोंको पता लग गया, तो मेरा अन्त आ चुका था।

एक बजे मुझे पार्टी आफिसमें बुलाया गया। वहाँ और लोग थे और मेरा मित्र म भी। मैं आफतके लिये तैयार होने लगा। पार्टीका मन्त्री बहुत गम्भीर दीख पड़ता था। उसने द्वार बन्द करके कहा :—

"साथियो, मेरे पास बहुत बुरी खबर है। मैंने आपको सुना देना ठीक समझा। हमारे एक साथीने अपने कमरेमें आत्म-हत्या कर ली है। शायद प्रेममें निराश हुआ हो, अथवा कोई अन्य व्यक्तिगत कारण रहा हो।"

"उसका नाम ?"—मैंने पूछा।

"आन्द्री। बहुत अच्छा साथी था। बहुत ही अच्छा छात्र भी। मुझे बहुत खेद........"

हम बाहर चले आए। म ने मेरा हाथ पकड़कर दबा दिया। उसकी आँखोंसे आँसू बरस रहे थे। आन्द्रीकी निराशामें सचाई थी। वह अभिनय नहीं कर रहा था। उसने कहा था कि अन्तिम आशा टूट चुकी

हैं, कि रूसकी धरती रक्तसे लाल होनेवाली है। उसके वे शब्द मेरे अन्तरमें महीनों तक प्रतिध्वनित होते रहे।

(२)

दीक्षा पानेके लिए मैंने एक नई पाइपरौलिंग मशीन तैयार की थी। उसको बहुत उत्तम माना गया और सरकारने तुरन्त उसका पेटेन्ट ले लिया। मैं अब इञ्जीनियर बन चुका था। चार साल पहिले मैं बड़ी लालसाके साथ इस दिनकी बाट जोहा करता था। किन्तु गाँवमें हत्या-काण्ड और अकाल, पार्टीमें पर्जका नंगा नाच तथा अपने चारों ओर फैलती हुई हृदयहीनता देखकर मेरा मन बुझ चुका था।

ओर्डझोनिकिडजे रूसके समस्त उद्योग-धन्धोंका काम देखता था। मैं उसके पास एक आवेदनपत्र लिखकर अच्छी-सी नौकरी प्राप्त कर सकता था। किन्तु मैंने उसकी मित्रतासे लाभ उठाना ठीक नहीं समझा। मुझे ट्रुबोस्टालमें काम मिला। फौलादकी कुछ चीजें बनानेका देशव्यापी दायित्व इनके सिर पर था। प्रधान अधिकारी था जैकब ईवान्चैंको जिससे पहिले मेरी मुलाकात हो चुकी थी। उन्होंने मुझे निकोपोलके नए कारखानेमें नियुक्त कर दिया। निकोपोल जानेके लिए जहाज पर सवार हुआ तो माँ और एलीना मुझे विदा करने आईं। मेरे जीवनका एक नया अध्याय आरम्भ हो रहा था। मैं अब उनत्तीस बरसका हो चुका था। इञ्जीनियरिंगकी लाइनमें जानेके लिए यह बड़ी उमर थी। किन्तु मैंने ऊँचे पद पर प्रवेश किया था। एक बहुत बड़े कारखानेका प्रधान अधिकारी मुझे बनाया गया था।

नीपर नदीके किनारे पर बसा हुआ निकोपोल नगर बहुत पुराना है। उसके चारों ओर जंगल और गेहूँके खेत फैले हैं। मैगनीजकी खानोंके लिए यह प्रदेश सारे संसारमें विख्यात है। वहाँ लोहेकी खानें भी हैं। इसलिए वहाँ फौलादका कारखाना बनाना भी अनिवार्य था। किन्तु

कारखाना नगरसे बहुत दूर एक उजाड़में बनाया गया था। मैंने पहिलीबार यहाँ जो मजदूरोंके घर देखे थे, उनसे कुछ अच्छे घर अब बन रहे थे। पर अभी भी पाँच हजार मजदूरोंमेंसे अधिकतर जैसे घरोंमें रहते थे, वे मनुष्योंकी अपेक्षा पशुओंके लिए अधिक उपयुक्त थे।

मुझे कारखानेसे एक मील दूर एक बड़ा बंगला रहनेके लिए मिला। उसमें पाँच कमरे थे। कारखानेके उच्चपदस्थ अधिकारियोंके रहनेके लिए वैसे आठ बंगले बनाए गए थे। वहाँ सुन्दर स्नानागार, रेडियो तथा आइसबाक्स इत्यादिका समुचित प्रबन्ध था। मेरी गैरेजमें कार खड़ी रहती थी और अस्तबलमें बंधे थे दो घोड़े। माना कि यह सब कारखानेकी सम्पत्ति थी, किन्तु जबतक मैं उस पद पर था तबतक उनका उपयोग इस प्रकार कर सकता था जैसे वे सब मेरी व्यक्तिगत सम्पत्ति हों। बंगलेके साथ एक शोफर, एक साईस तथा एक मजबूत-सी किसान स्त्री भी घरका काम करनेके लिए मुझे मिले थे। नौकरानीका वेतन मैं देता था, बाकी सबको कारखानेसे मिलता था।

मैं मजदूरोंके साथ बन्धुत्व और प्रेमका नाता जोड़ना चाहता था। मैं उनको समझता था, उनकी इच्छा, आकांक्षासे मेरा परिचय था। किन्तु मेरा ऊँचा पद मेरे रास्तेमें आने लगा। मैं कैसा ही भाव लेकर मजदूरोंसे मिलना चाहता, वे तो यहीं समझते कि मैं उनपर मेहरबानी कर रहा हूँ और शायद उनके अभिमानको चोट लगती। इसके सिवाय दूसरे अधिकारी मजदूरोंके साथ हेलमेलको अनुशासनके लिए हानिकारक मानते थे। सिद्धान्तके दृष्टिकोणसे हम मजदूर-सरकारकी सत्ताके प्रतिनिधि थे, किन्तु वास्तवमें हमारी जात ही अलग थी।

कारखाना बनते समय जो कॉमरेड ब्राचको मुझे मिले थे, वे ही अब भी उसके डायरेक्टर थे। किन्तु अब वे उतने तीखे नहीं थे और उनका व्यवहार मृदुतर हो गया था। कारखानेमें ब्राचको और प्रधान

इञ्जीनियर विशनेव ही मुझसे ऊपरके अधिकारी थे। कारखानेमें पार्टीका प्रमुख था एलेक्सी कोज़लोव। ट्रेड यूनियनकी प्रधानता कॉमरेड स्टारोस्टिनके हाथोंमें थी।

हम अधिकारी लोग खूब मिलते-जुलते रहते थे। इसलिए एक-दूसरेको जानने और एक-दूसरेकी कमज़ोरियाँ समझनेमें हमको देर नहीं लगती थी। निकोपोल नगरकी पार्टीका मन्त्री ब्राडस्की लम्बा-तगड़ा आदमी था। वह हमारे कारखानेकी खोज-खबर रखता था। कारखानेमें पार्टीका एक गुप्त विभाग था, जिसमें बहुतसे लोग इच्छासे अथवा अनिच्छासे काम करते थे। वे कारखानेकी सब खबरें पार्टीके पास पहुँचाते रहते थे। खुफिया पुलिस विभागका नाम बदल गया था। अब उसे जी० पी० यू० नहीं कहा जाता था। उसका नाम हो गया था एन० के० वी० डी०। इसके पूर्व उसका नाम था चैका। किन्तु नाम बदलते रहने पर भी उसके तौर-तरीकोंमें कोई अन्तर नहीं आया। अब भी उसके नामसे उतना ही आतंक उपजता था।

स्थानीय एन० के० वी० डी० का प्रमुख उन दिनों दोरोगन था। किन्तु उसके साथ हमारा काम कम पड़ता था। उसका सहकारी गर्शगोर्न अधिक तेज आदमी था और उसीसे हमारा सम्बन्ध था। जिन आदमियों के प्रति मुझे घृणा हुई, उनमें गर्शगोर्न का विशेष स्थान रहा है। वह एक स्थूलकाय आदमी था। मुंडे हुए भरे चेहरे में उसकी चंचल आँखें मुझे याद हैं। उसकी घुटी हुई खोपड़ी किसी पर्वतकी चोटीके समान दीख पड़ती थी। वह आदमी देखकर बात करता था। कभी नरम, कभी गरम। शायद उसमें इन्सानियत रही हो। किन्तु जितने दिन मेरा उससे सम्पर्क रहा, उतने दिन मैं उसे मनुष्यके रूपमें नहीं देख पाया।

कारखाने कभी एक गतिसे नहीं चलते। मशीनें खराब होती हैं, भूलें हो जाती हैं। थककर कुछ लोग लापरवाह हो जाते हैं, योजनाके

अनुसार काम नहीं हो पाता। नए कारखानोंमें ये बातें विशेष तौरसे देखी जाती हैं। उनमें विदेशसे आई मशीनोंको ऐसे लोग चलाते हैं, जिन्हें अनुभव नहीं होता अथवा जो नए-नए देहातसे आए हुए होते हैं। किन्तु हमारे कारखानेमें कोई गड़बड़ होते ही खुफिया पुलिसके लोग दौड़कर आ जाते थे, मानो किसीने जान-बूझकर बदमाशी की हो अथवा तोड़-फोड़ मचाई हो। वे कुछ आदमियोंको अपने दफ्तरमें ले जाकर पूछताछ करते थे, डराते-धमकाते थे। बहुत बार तो बहुत रात बीते तक यह काम चलता रहता था।

मेरी एक सेक्रेटरी थी, कामरेड तुवीना। एक दिन साँझको मैंने देखा कि वह पुलिसके दफ्तरसे निकल रही है। मैं जानता था कि वह मेरे ऊपर जासूसी करती है। अपने ऊपरके अधिकारीपर जासूसी करना रूसमें एक निश्चित कर्त्तव्य माना जाता है। किन्तु उस दिन मुझे इस बातका पक्का प्रमाण मिल गया। अगले दिन मैंने कारखानेके दफ्तरमें कहला भेजा कि मुझे एक नए सेक्रेटरी की जरूरत है। कई दिन बाद एक तीस-बत्तीस बरसका आदमी दफ्तरसे एक पत्र लेकर मेरे पास आया। वह एक अजीब-सा आदमी था। मानों कंकालको कपड़े पहनाकर खड़ा किया गया हो। उसके जूते फटे थे, पतलूनमें पेबन्द लगे थे, और वह एक मोटे कपड़ेका कोट पहने था। रूसमें कपड़े-लत्ते आमतौर पर अस्त-व्यस्त मिलते थे; किन्तु उसकी अस्तव्यस्तता मुझे असाधारण दीख पड़ी। हाँ, उसके भुखमरे चेहरेकी बनावट सुन्दर थी। सिरपर लाल बाल कुछ-कुछ सफेदी पकड़ने लगे थे। उसने कहा :

"मैं जानता हूँ कि मैं देखनेमें कैसा लगता हूँ। किन्तु, कामरेड क्रावचेन्को, मेरी शकल-सूरतपर खीज मत उठिए। मैं एक सालकी जेल काटकर अभी लौटा हूँ। व्यवस्थापक यह बात जानता है। यदि आप मुझे

अवसर दगे, तो मैं विश्वास दिलाता हूँ कि मेरे कामसे आपको कोई शिकायत नहीं होगी"

वह पढ़ा-लिखा आदमी दीख पड़ता था। पहले मुझे जो घृणा उसके प्रति हुई थी, वह अब करुणामें बदल गई। बेचारेको भयानक कष्ट सहना पड़ा था। मैंने चाय और खाने-पीनेका सामान मँगवाया। उसने अपने ऊपर संयम करनेकी चेष्टा की, किन्तु वह बहुत भूखा था, यह मुझसे छुपा न रह सका। हम बातें कर रहे थे कि मेरे टेलीफोनकी घण्टी बज उठी। दूसरे विभागसे एक अधिकारी, रोमानोव, बोल रहा था। वह पार्टीका सदस्य नहीं था, तो भी कारखानेके अधिकारी उसपर विश्वास करते थे और सबको उसका काम पसन्द था। उसने कहा :

"विक्टर भैया, आपके पास मैंने गोरमैनको भेजा है, यदि आप उसे रख लें, तो मैं व्यक्तिगत रूपमें आपका आभारी रहूँगा। वह अभागा है, किन्तु कामका आदमी है"

गोरमैनको बाहर भेजकर मैंने पुलिस-विभागको टेलीफोन किया। उधर गर्शगोर्नसे मेरी बातें हुईं। मैं जानता था कि मेरे सेक्रेटरीको अनेक प्रकारके कागज-पत्र सम्भालने पड़ेंगे, इसलिए पुलिसकी राय लेकर ही उसे रखना उचित था। मैंने गर्शगोर्नको सब बता दिया। वह मुझे प्रतीक्षा करनेके लिए कहकर चला गया। कुछ देर बाद उसने टेलीफोन पकड़कर कह दिया कि यदि गोरमैन मुझे पसन्द है, तो उनको कोई शिकायत नहीं।

गोरमैन काम करने लगा। तुरन्त ही मैंने देख लिया कि वह चतुर और कार्य-कुशल आदमी है। उसने मेरे सिरपरका बोझ उतार लिया। धीरे-धीरे उसके कंकालपर मांस चढ़ने लगा, उसकी वेष-भूषा सुधरने लगी और मैंने देखा कि उसका नया जन्म हो रहा है। बहुत बार वह काम परसे सीधा मेर घर भी आने लगा और कई बार मैं उसे अपनी गाड़ीमें

उसके घर तक छोड़ आया। इस प्रकार कई सप्ताह बीत गए। फिर एक दिन गोरमैन कामपर नहीं आया। मैंने सोचा, बीमार पड़ गया होगा। किन्तु जब दूसरे दिन भी उसकी कोई खबर नहीं मिली, तो मुझे चिन्ता होने लगी। उसके घरपर टेलीफोन नहीं था। मैं अपनी मेजके कागज पत्र उलट-पलट रहा था कि मैंने हाथसे लिखे कागजोंका एक बण्डल देखा। गोरमैन की लिखाई थी। दो-चार शब्द पढ़कर ही मैं काँप उठा। लिखा था :

"विक्टर भैया, आप जब मेरा पत्र पढ़ेंगे, तब मैं निकोपोलसे निकल चुका होऊँगा। मैं इस भयावह देशसे भागना चाहता हूँ। एक गुलामके जीवनसे तो मौत अच्छी है।"

भयके मारे मुझे पसीना आ गया। मैंने उठकर अपने द्वारको भीतर से बन्द किया, दस्ताने पहने और फिर उस पत्रको पढ़ने लगा। आज मुझे उस पत्रमें लिखी सब बातें याद नहीं हैं। किन्तु उसका सारांश मेरी स्मृतिपर अंकित है। गोरमैनने लिखा था :

"आपने जो कुछ मेरे लिए किया है, उसके लिए मैं आपको हृदयसे धन्यवाद देता हूँ। मैं तो समझ बैठा था कि रूसमें मनुष्य कहलाने लायक कोई आदमी नहीं रह गया है। आपको देखकर मुझे लगा कि मैंने गलती की थी। यही कारण है कि मैं इस प्रकार भाग रहा हूँ। भगवान की इच्छा हुई तो मैं रूसकी सीमा पार कर जाऊँगा। यदि पकड़ा गया, तो मेरी मृत्यु भी अवश्यम्भावी है।

"सोवियत् राज्य और उसकी पुलिसके लिए मेरी घृणाका किनारा नहीं। मैंने कोई अपराध नहीं किया था, तो भी उन्होंने मुझे जेलमें ठूँसकर नारकीय यन्त्रणाएँ दीं। हाँ, स्वाधीनतासे प्रेम करना यदि अपराध है, तो मुझे भी अपराधी कहा जा सकता है। जब मैं जेलसे छूटा, तो मैंने देखा कि मैं बहुत दिन बाहर नहीं रह सकता। जेलसे

बचनेका यदि कोई रास्ता मुझे दिखाई दिया, तो यही कि मैं इन जल्लादोंकी सेवा करने लगूँ। और कोई भी काम मुझे नहीं मिल सकता था।

"जिस साँझको मैं गुलामखानेसे छूटकर निकोपोल पहुँचा, उसी साँझको मेरी आपसे भेंट हुई थी। उसके पूर्व मैंने पुलिसके दफ्तरमें जाकर गर्शगोर्नसे बातचीत की थी। उसीने मुझे आपके पास भेजा था। रोमानोवने जो मेरी सिफारिश की थी, वह भी उसी गन्दे नाटकका एक अंक था। मुझे आपके ऊपर जासूसी करनेका काम दिया गया था। मुझे जासूसीसे नफरत नहीं हुई। सब कम्युनिस्टोंसे मैं घृणा करता था और सोचा कि दो-चारको फँसाकर कुछ बदला ही लिया जाए। आपको मैंने अपना पहिला शिकार समझा था। किन्तु आपके साथ रहकर आपपर मेरी श्रद्धा हो गई और मुझे अपने कामसे नफरत होने लगी।

"मैं आपको जता देना चाहता हूँ कि आपपर आँख रखनेवालोंमें मेरा प्रथम स्थान था। पुलिसका मुझपर विश्वास था। पुलिस सोचती थी कि उसकी यन्त्रणा सह लेनेके बाद कोई उसके साथ धोखा करनेका साहस नहीं कर सकता। आपके विभागमें जासूसोंका ताँता लगा रहता था। वे सब हर रोज आकर अपनी-अपनी रिपोर्ट मुझे दे जाते थे। सप्ताहमें एक बार वे सब बातें इकट्ठा करके मैं आपके बारेमें एक रिपोर्ट लिख लेता था। रिपोर्टमें मैं आपके कामकी चर्चा करता था, आपके मुँहसे निकले शब्द नोट करता था, आपके मित्रोंके नाम देता था, यहाँ तक कि आपके मुखपर उठ-उठकर मिटनेवाले हाव-भाव भी मेरी नज़रसे नहीं बच पाते थे। जासूस लोग एक-दूसरेको नहीं जानते थे, किन्तु मेरा सबसे परिचय था। आपके प्रति मेरी कृतज्ञता मुझे बाध्य करती है कि उनके नाम आपको बता दूँ।"

उसके बाद पत्रमें नामोंकी एक लिस्ट थी। रोमानोवका नाम भी उस लिस्टमें मैंने देखा। रोमानोव बड़ा भोला-भाला दीख पड़ता था। सब उसको पसन्द करते थे। इसके सिवाय मेरे साथ काम करनेवाले कई और व्यक्तियोंके नाम भी उस लिस्टमें थे। पत्र आगे बढ़ा :

"मैं सोचता हूँ कि आप इस पत्रको भी एक झाँसा समझेंगे। मैं आपको दोष नहीं देता। किन्तु भगवान और अपनी स्वर्गगता माँ की सौगन्ध खाकर कहता हूँ कि मैं सच बोल रहा हूँ। मैं तो केवल अपने पापोंका प्रायश्चित्त कर रहा हूँ। आपने मुझे इन्सान समझकर मेरे प्रति अच्छा व्यवहार किया और बदलेमें मैंने आप पर जासूसी की! आप मेरा विश्वास करते हैं अथवा नहीं, यह आप पर छोड़ता हूँ। यदि आपने यह पत्र गर्शगोर्न को दिखाया, तो वह तुरन्त कहेगा कि मैं झूठा हूँ और उसके बाद आपके पीछे लगे जासूसोंमें हेर-फेर कर डालेगा। किन्तु यदि आप मुझपर विश्वास करके इस पत्रको जला डालेंगे और गुस्सेका अभिनय करके मुझे बुरा-भला कहने लगेंगे, तो उनको कभी मालूम नहीं हो सकेगा कि मैंने उनका भण्डा फोड़ दिया है।

"आप जो भी फैसला करें, मैं आपसे एक दिनकी मोहलत माँगता हूँ। आप तुरन्त मेरी रिपोर्ट मत कीजिए। मुझे भाग निकलनेका अवसर चाहिए। आपको अपने ईमान और सगे प्रेमियोंकी शपथ है, मेरी बात रखिएगा। एक दिनमें मेरे जीवन-मरणका फैसला हो जाएगा। मैं हाथ जोड़कर प्रार्थना करता हूँ कि एक दिनके बाद आप मेरी रिपोर्ट करें।"

मेरे अन्तःकरणने मुझे उस भागनेवाले पर विश्वास करनेकी प्रेरणा दी। पिछले कई हफ्ते मैंने उसके साथ खुलकर बातें की थीं और उसकी बातचीत मुझे पसन्द आई थी। फिर भी मनमें भय था कि मैं अपनी जानसे खेल रहा हूँ। मैंने पत्रमें दी हुई लिस्ट की नकल उतारकर पत्रको

जला डाला और राखको धो-पोंछकर साफ कर दिया। साँझको मैंने एक आदमीको गोरमैनके बासेपर भेज दिया। उसने अगले दिन आकर खबर दी कि गोरमैनका दो दिनसे कोई पता नहीं। जिस परिवारके साथ गोरमैन रहता था, उन्हींसे यह खबर मिली थी। एक घण्टे बाद गर्शगोर्न कुछ पुलिसके सिपाही लेकर आ धमका। वह बहुत घबराया हुआ था। उसने मुझसे प्रश्न पूछे, गोरमैनके डैस्ककी तलाशी ली और चला गया। मैं यह कभी नहीं जान सका हूँ कि गोरमैन भाग निकलनेमें सफल हुआ या नहीं। किन्तु उसकी दी हुई जासूसोंकी लिस्ट मेरे बहुत काम आई। मैंने उसके सहारे अपनी और दूसरोंकी रक्षा की।



तेरहवाँ अध्याय

तेज़, और तेज़

१९३५ के सितम्बर मासमें डोनेज़ प्रदेश स्थित कोयलेकी खानोंसे एक चमत्कारका समाचार मिला। स्टैखानोव नामक एक मजदूरने एक शिफ्टमें १०२ टन कोयला खोद डाला। एक मजदूर साधारणतया ७½ टन कोयला निकाल सकता था, स्टैखानोवने चौदह गुना अधिक निकाला। रूसके आधुनिक इतिहासमें किसी एक घटनाको लेकर इतना शोर नहीं मचा। सरकार कहने लगी कि स्टैख़ानोवने जो कर दिखाया वह सब खान-मजदूर कर सकते हैं। और खान-मजदूर जो कर सकते हैं, वह और सभी उद्योग-धन्धोंके मजदूर कर सकते हैं!

हमारा कारख़ाना छः महीने पूर्व चालू हुआ था। हमारे काममें अनेक कठिनाइयाँ थीं, तो भी हम तीन शिफ्ट चलाते थे। कामकी रफ्तार तेज़ करना हमारे लिए हानिकारक था। हम जानते थे कि एकाध बार ज़ोर लगाकर अत्यधिक काम कर डालनेकी बजाय नियमित रूपसे जमकर काम करना ही अच्छा है। किन्तु ऊपरसे आदेश आ गया। पार्टीके नेता कौजलोव तथा कारखानेके डायरेक्टर ब्राचकोने सारे इञ्जीनियरों और विभाग-प्रमुखोंको बुला भेजा। नगर कमिटीसे कॉमरेड ब्राड्स्की भी आ पहुँचे। कौजलोव और ब्राड्स्की विशेषज्ञ नहीं थे, इसलिए कहने लगे कि हमारे कारखानेमें स्टैखानोवके तरीके लागू करना

कोई कठिन बात नहीं। किन्तु ब्राचको सब समझता था। मेरी तरह वह भी उस उन्मादको मूर्खता मानता था। फिर भी हम दोनों मुँह खोलकर कुछ न कह सके और हमें आदेश देना पड़ा कि रिकार्ड तोड़ डाले जाएँ। खर्च और अनुशासनकी बातें भुलाकर हमें पागलोंकी तरह काम करवाना पड़ा।

मनमें मेरा विश्वास था कि इस प्रकारकी धर-पटक मचानेसे मशीनों और मजदूरोंको हानि पहुंचेगी। किन्तु अपने विभागमें भी मुझे वही सब करना पड़ा जो सारे कारखानेमें किया जा रहा था। पार्टीका आदेश पाकर मैंने मजदूरोंको नए ढंगसे व्यवस्थित किया। सबसे अच्छे मजदूर, फौरमैन और इञ्जीनियर एक शिफ्टमें रक्खे। फिर सबसे अच्छे औजार तथा कच्चा माल छांटकर उसी शिफ्टके लिए अलग किए गए। और एक दिन रातके ग्यारह बजे वह घुड़दौड़ शुरू हो गई। पत्रोंके रिपोर्टर तथा फोटोग्राफर खड़े सब देख रहे थे। उस शिफ्टमें हमने आठ प्रतिशत अधिक काम किया। समाचारपत्रोंमें हमारी सफलताकी धूम मच गई। मास्को इत्यादि नगरोंसे अधिकारियोंने बधाइयाँ भेजीं।

किन्तु मेरे मनमें इस सफलता पर कोई हर्ष नहीं हुआ। मुझे घोर आत्मग्लानि होने लगी। मैं जानता था कि यह सब फरेब है जिसका फल हमें भुगतना पड़ेगा। और थोड़े दिन बाद ही मजदूरोंको सब मालूम हो गया। ऊपरसे हुक्म आया कि मजदूरोंसे काम लेनेकी दर दस-बीस प्रतिशत बढ़ जानी चाहिए, क्योंकि अभी तक वे कम काम करते रहे हैं। वेतन उतने ही रहे। किन्तु मजदूरोंका काम बढ़ गया। यह शोषणका एक बिल्कुल नया तरीका था। मेरे विभागके मजदूरोंकी सभा हुई। मजदूर बेचारे मन मारकर उदासीनसे बैठे थे। जब-जब स्टालिनका नाम लिया जाता था तो वे यन्त्रवत् तालियाँ पीट देते थे। कामके नए दर उन्हें बताए गए। वोट लिए जाने लगे। मैंने पूछा कि कौन नए दरोंके

पक्षमें वोट देता है। सबने हाथ खड़े कर दिए। मैंने पूछा कि कौन विपक्षमें है। किसीने चूँ तक नहीं की। सहसा एक स्त्री चिल्लाकर बोली : "प्रधानजी, इस क्रियुस्किनने वोट नहीं दिया।"

सभामें सनसनी फैल गई। हमारे बीचमें एक विद्रोही मौजूद था! सियारोंके बीच एक सिंह। किसी अज्ञात व्यक्ति क्रियुस्किनने हाथ उठानेसे इन्कार किया था, किन्तु समाजवादके प्रति उसका यह द्रोह तुरन्त पकड़ा गया। जनता जागरूक थी। और देश बाल-बाल बच गया...... प्रधानने जलभुन कर पूछा :

"कॉमरेड क्रियुस्किन, आपने वोट नहीं दिया?"

एक दुबला-पतला, सीधा-सा व्यक्ति उठकर खड़ा हो गया। उसके मुख पर तेलके छींटे पड़े थे। वह शान्त, धीर स्वर में बोला : "मैं किसलिए वोट दूँ? काम अधिक करनेका प्रस्ताव तो पास होगा ही। मेरे वोट देने-न-देनेसे क्या अन्तर पड़ेगा। आप काम चाहते हैं न? काम मैं करता हूँ। और आपको क्या चाहिए? हाथ उठवाना चाहते हैं? तो यह लीजिए, हाथ उठा देता हूँ।"

उसने अपना मैला-सा, कठोर हाथ ऊपर उठा दिया। कुछ लोग हँसने लगे, किन्तु सभा पर सन्नाटा छा गया। उस आदमीकी बातमें सार था, उसके हाव-भावमें दृढ़ता। किसीने चिल्लाकर कहा : "साथियो, क्रियुस्किन सभाका अपमान कर रहा है। उसने स्टैखानोव आन्दोलनका मज़ाक उड़ाया है। उसमें वर्ग-चेतनाका अभाव है।"

क्रियुस्किन अभी खड़ा था। उसने हाथ झाड़कर उत्तर दिया :

"वर्गचेतना? आपका मतलब क्या है? मैं तो केवल इतना जानता हूँ कि मुझे मासमें १४० रूबल मिलेंगे और उसी वेतनमें मुझे एक स्त्री और तीन बच्चोंका पेट पालना होगा।"

प्रधान बीचमें बोल उठा। कहने लगा : "यह नाटक बन्द करो। प्रस्ताव पास होना चाहिए।"

किन्तु वह सीधा-सा मजदूर तनकर खड़ा हो गया। स्वरको ऊंचा करके बोला :

"आप नाटक किसे कहते हैं ? मेरी ओर देखिये। ये जो कपड़े मैं पहने हुए हूँ, उनके सिवाय मेरे पास एक चीथड़ा भी नहीं है। कुछ दिनमें ये फट जाएँगे। १४० रूबलमें मेरे परिवारका पेट नहीं भर पाता। यदि इसे आप नाटक कहते हैं, तो फिर विडम्बना किसका नाम है ?"

वह बैठ गया। फिर कोई नहीं हँस सका। एक इञ्जीनियरके नाते मेरा कर्त्तव्य था कि कामके नए दरोंकी बात मजदूरोंको समझाऊँ और उन्हें विश्वास दिलाऊँ कि उनके साथ अन्याय नहीं किया जा रहा। मुझे अपना कर्त्तव्य पूरा करना ही पड़ा। किन्तु जब मैं भाषण दे रहा था तो रह-रहकर मेरे मनमें कोई बोल उठता था—"तुम्हें क्रियुस्किनकी सहायता करनी चाहिए।"

(२)

इञ्जीनियरों तथा अधिकारियोंकी मुसीबत आ गई। हमसे कहा जाने लगा कि हम पुराण पन्थी हैं और कामकी रफ्तार बढ़ानेमें उत्साह नहीं दिखाते। पार्टीके अधिकारी लोग हमको गाली देकर अपने उत्तर-दायित्वसे मुक्त होनेकी चेष्टा करने लगे। हमारी कोई नहीं सुनना चाहता था। कारखानोंमें राजनीतिने टाँग अड़ाई थी। इञ्जीनियर तथा मैने-जरकी बात न मानकर पार्टी तथा पुलिससे सलाह ली जाती थी। टेकनीकल समस्याओं पर भी हमारी रायके कोई मायने नहीं रहे।

जर्मनीसे आई हुई एक मशीन टूट गई थी। मुझे हफ्तों तक उसके ऊपर अपना समय नष्ट करना तथा सिर खपाना पड़ा। उस मशीनकी जगह दूसरी मशीन मिल नहीं रही थी और कारखानेका एक विभाग

तीन-चार दिन तक बन्द हो गया। उस विभागमें पुलिस तथा सरकारी लोगोंने धमाचौकड़ी मचा दी। मैंने मशीन टूटनेका कारण खोज निकाला था। दुर्घटना रातमें हुई थी। कारखानेमें रौशनी कम थी और भूलसे किसीने कुछ उलटा-सीधा काम कर डाला था। किन्तु मेरी बात पर पुलिसको विश्वास नहीं हुआ। उनको पक्का विश्वास था कि मशीनको जान-बूझकर किसीने तोड़ा है। उन्होंने दर्जनों मजदूरोंको बुलाकर सवाल पूछे, बाहरसे विशेषज्ञ बुलाकर उनकी राय मांगी और धातुविज्ञानके एक प्रसिद्ध आचार्यको बुलाकर रिपोर्ट लिखनेके लिए नियुक्त कर दिया। पुलिसका मत था कि दुर्घटना हुई होती तो सब के-सब एक-सी बात नहीं कहते। सबका एक-सी बात कहना पुलिसकी आँखोंमें षड़यंत्रका पक्का सबूत था।

इन्हीं दिनों मेरे पास एक विशेष प्रकारकी पाइपका अर्डर आया। आर्डर पर ओर्डझोनिकिड्जेके हस्ताक्षर थे। हमारे पास वैसी पाइप बनानेके न तो साधन थे, न अनुभव ही। मैंने काम हाथमें लेनेसे पहिले अधिकारियोंके पास कहला भेजा कि हम चेष्टा करते हैं, किन्तु सफलताकी कोई गारन्टी नहीं। हमारी सहायताके लिए मास्कोसे विशेषज्ञोंका एक दल भेजा गया। उनमें एकका नाम था टिमोशैन्को। दुबला-पतला नवयुवक, चश्मा लगाए हुए। उसके बाल सफेद होने लगे थे और मुझे ऐसा लगा जैसे वह सदा भयभीत-सा रहता है। मुझे पता चला कि उसका पिता एक प्रसिद्ध प्रोफेसर हैं, जो संयुक्तराष्ट्र अमेरिकाकी किसी युनिवर्सिटीमें पढ़ाता है।

हम सबने मिलकर पाइप बनानेकी समस्या सुलझा डाली। पाइप तैयार होकर उस कारखानेमें चली गई, जहाँ कि उसकी आवश्यकता थी। कारखानेने उसको पास कर दिया। हम सबको मोटा बोनस मिला। अचानक गर्शगोर्नकी मण्डलीने हंगामा खड़ा कर दिया। युवक टिमैशैन्को को लेकर सारा बखेड़ा था। एक रातको एक सभामें गर्शगोर्नने मुझे

खूब जली-कटी सुनाई। कहने लगा कि टिमैशैन्कोका बाप एक घृणित भगोड़ा है और मैं उसका साथ दे रहा हूँ। गर्शगोर्नकी राय थी कि टिमैशैन्कोका पिता पूँजीवादियोंका वेतनभोगी जासूस है और उसका लड़का उससे लिखा-पढ़ी करता रहता है। मैंने जब देखा कि गर्शगोर्न किसी प्रकार नहीं मानेगा, तो मैंने धमकी दी कि ओर्डझोनिकिड्ज़ेको टेलीफोन करके कहता हूँ कि पुलिस बिना बात हमारे काममें हस्तक्षेप कर रही है। गर्शगोर्नकी माँ मर गई। ओर्डझोनिकिड्ज़ेसे मेरा परिचय मेरे त्राणका एक मात्र उपाय था, अन्यथा तो अनेकों और इञ्जीनियरों की भाँति मैं भी कभीका किसी जेल अथवा गुलामखानेमें पहुँच चुका होता।

१९३६ के प्रारम्भमें ओर्डझोनिकिड्ज़ेने मुझे मास्को बुला भेजा। मानों भगवानने मेरी सुनी हो। पुलिसके साथ मेरा सम्बन्ध दिन पर दिन खराब हो रहा था। मैंने निर्दोषोंको फाँसने तथा पुलिसकी अन्य जालसाजियोंमें सहायता करनेसे इन्कार किया था और पुलिसने निकोपोल में मेरा जीवन हराम कर दिया था। मैं सोच ही रहा था कि सारा किस्सा कमीसारको कह सुनाऊँ कि मुझे अपने आप यह अवसर मिल गया। कमीसार मेरे साथ बहुत अच्छी तरह पेश आया। कहने लगा कि बाकूके तेल-उद्योगके लिये एक विशेष प्रकारकी पाइप चाहिये और यदि बहुत शीघ्र ही एक पर्याप्त मात्रामें वह पाइप तैयार नहीं की गई, तो लुटिया डूब जायेगी। बोला :

"मैंने तुमको इसलिये बुलाया है कि मुझे तुम पर पूरा विश्वास है। तुमको जो भी मशीन, सामान तथा आदमी चाहियें, मैं दूंगा। यदि तुम सफल हो गये तो तुम्हारा बड़ा नाम होगा, तुम्हें चढ़नेके लिये मोटर मिलेगी। मोटा रुपया तो तुम्हें और तुम्हारे सहयोगियोंको मिलेगा ही।"

"मैं पूरी कोशिश करूँगा। आप जानते ही हैं कि हमारे पास पूरी मशीनें नहीं हैं। इसके सिवाय पुलिसने मेरी नाकमें दम कर रक्खा है। काम करनेको मेरा जी नहीं चाहता।"

"खोलकर बताओ।"

मैंने खूब खोलकर वे बातें कह डालीं जिनके कारण हमारा कारखाना एक नरक बनता जा रहा था। कमीसार गम्भीर हो गया, होंठ काटने लगा। पिछले दो सालमें वह कुछ बूढ़ा सा हो गया था। पहलेकी तरह अनायास ही वह मुस्करा नहीं पा रहा था और न मैंने उसमें पहले-सा आत्म-विश्वास अथवा उत्साह देखा। मरे हुए स्वरमें बोला :

"धीरज धरो, मेरे भाई। तुमने जो कुछ कहा वह कहे बिना तुम नहीं रह सकते। तुम जिस जगह पर काम करते हो, वहाँ बैठे-बैठे तुम सारी बातें नहीं समझ सकते। तुम्हारी तरह हजारों इञ्जीनियरों तथा पार्टीके सदस्योंने मेरे पास ऐसी ही शिकायतें भेजी हैं। तुम्हारे लिये एक बात कहता हूँ। जब तक मैं जिन्दा हूं और जब तक तुम इमान्दारीसे काम करते रहते हो, तब तक तुम्हारा कोई कुछ नहीं कर सकेगा। मैं वचन देता हूँ।"

मेरे बैठे-बैठे ही कमीसारने टलीफोन पर कामरेड हताएविचसे बातें कर डालीं। निकोपोल भी हताएविचकी अध्यक्षतामें था। कमीसारने हताएविचको खूब धमकाया और आदेश दिया कि निकोपोलकी पुलिस क्रावचैंकोंके काममें टांग न अड़ाए। उस दिनके बाद और ओर्डझो-निकिड्जेकी मृत्यु तक मुझे फिर कभी पुलिसका सामना नहीं करना पड़ा। मेरे चारों ओर पुराने जासूस लगे थे और वे अपना काम भी करते रहते थे। किन्तु मुझे किसीने कुछ नहीं कहा। और फिर एक दिन मेरा सहारा टूट गया और उन सबने तूफ़ानकी तरह उमड़कर मेरा जीवन भँवरमें डाल दिया।

(३)

पार्टीमें नाम लिखानेके बाद पिताजीके साथ मेरे सम्बन्धमें एक तनाव-सा आ गया था। पार्टी की जिन नीतियोंको मैं हृदयसे बुरा समझता था, उन्हींका समर्थन अथवा मार्जना पिताजीके सामने करनेकी मुझे आदत-सी पड़ गई थी। उनका आदर्श बहुत ऊँचा था, उनकी मानवताकी कसौटी बहुत खरी थी और वे किसी प्रकार भी मिथ्या अथवा अमानवीयके साथ समझौता करनेके लिये तैयार नहीं होते थे। मुझे उनके इस खरेपन पर खीज होती थी। आज पीछेकी ओर आँखें फेरकर देखता हूँ, तो एक बात मेरी समझमें आती है। वास्तवमें मेरे पिता मेरी अन्तरात्मा बन चुके थे। मेरे ही भीतर द्वन्द्व चलता रहता था। यदि अपने आपसे मेरा समझौता सम्भव होता, तो पिताजीके साथ मैं समझौता कर पाता।

बीच-बीचमें मैं घर जाता तो पिताजी मुझे उन लोगोंके नाम बतलाते, जो कि या तो गिरफ्तार कर लिये गये थे अथवा जो लापता हो गये थे। इनमें अधिकतर व्यक्ति नीपरोपैट्रोस्क कारखानेमें काम करने वाले होते थे। बातों-बातोंमें मुझे ऐसा लगने लगता कि पार्टी जो कुछ अन्याय कर रही है, उस सबका दायित्व पिताजी मेरे ऊपर डाल रहे हैं। मैंने उनको निकोपोलमें चलनेवाली पकड़-धकड़, बेगारी तथा जासूसी इत्यादिके विषयमें जान-बूझकर कुछ नहीं बताया। मैं हठ करता रहा कि वे चलकर कुछ दिन निकोपोलमें मेरे साथ रहें। आखिर उन्होंने मेरी बात मान ली। वहाँ पहुँचकर उन्होंने मेरा विशाल बंगला, फूलों का बागीचा तथा मोटर इत्यादि देखे, तो मैं लाजसे गड़ने लगा। उन्होंने केवल इतना ही कहा कि मैं एक नवाबकी तरह रहता हूँ।

जब उन्होंने कारखाना देखनेके लिये जाना चाहा, तो मैं असमंजसमें पड़ गया। मैं नहीं चाहता था कि कारखानेकी दशा देखकर पिताजी

मुझे खरी-खरी सुनाएँ। फिर भी उनको ले जाना पड़ा। कई दिन वे कारखाना देखते रहे और मेरी उनसे भेंट नहीं हुई। कारखानेमें उन्होंने अनेक मित्र बना डाले। ममतासे भरा वह सुन्दर बूढ़ा मजदूरोंको अपना समझता था और मजदूरोंने भी पिताजीको मनसे अपना लिया। एक दिन मैं घर लौटा तो पिताजीको वहाँ पाया। रातको भोजन करते समय देखा कि वे कुछ चिन्तित हैं। हम इधर-उधरकी बातें करते रहे। मैं जानता था कि पिताजीकी डांट मुझ पर पड़ने वाली है। मैंने पूछा: "आप क्या सोच रहे हैं, पिताजी?"

"बेटा, बहुत दिनसे मेरा जी कर रहा है कि तुमसे खुलकर और साफ बातें करूँ। तुम मेरे पुत्र हो। तुमको तीस साल तक बढ़ते पनपते मैंने देखा है। मैं तुमको प्यार करता हूं। फिर भी ज्यों-ज्यों समय बीतता जाता है, त्यों-त्यों हमारे बीच एक दीवार उठती जाती है। बुरी बात है। इसका एकमात्र कारण यही है कि आजकल हमारा जीवन भयहीन नहीं रहा।"

"मुझे अफ़सोस है, पिताजी। पर मुझे ऐसा लगता है कि आप जमानेके साथ-साथ आगे नहीं बढ़ पाये हैं। मेरा ख़याल है कि अभी भी आप एक बीते हुए युगमें रह रहे हैं।"

"मैं मानता हूं, बिट्या, कि राजनीतिके बारेमें तुम मुझसे अधिक जानकारी रखते हो। तुम पार्टीके कर्मठ सदस्य हो और सरकारमें उच्च पदस्थ अधिकारी भी। तुम्हारे नीचे डेढ़ हजार आदमी काम करते हैं और तुम प्रतिमास करोड़ों रूबलका सामान तैयार करते हो। फिर भी मेरा विचार है कि साधारण जनताके जीवनसे मेरा परिचय तुमसे अधिक है। मजदूर और किसानोंके दुःखदर्दको मैं अधिक पहचानता हूं। तुम जनतासे दूर भटक गये हो। तुम उनको ठीकसे देख ही नहीं पा रहे

हो। तुम्हारे पास रुपया है, आरामका सामान है। मोटरगाड़ी, नौकर चाकर……"

"पिताजी, आप मुझे धिक्कार क्यों रहे हैं? मैंने ये सब साधन चुराये तो नहीं ना। मैंने जमकर काम किया है और सरकारने बदलेमें मुझे ये सब दिये हैं। एक किसानसे मेरी क्या बराबरी?"

"मैं तुम्हें धिक्कार नहीं रहा, बेटा। मुझे भूल मत समझो। मुझे यही चिन्ता रहती है कि कहीं जनताके लिये तुम्हारे हृदयसे हमदर्दी न चली जाए। साफ़-साफ कहूं? मुझे डर लगता है कि तुम भी उन लोगों में से एक हो गए हो, जो रूसकी जनताके सिर पर बैठकर चैनकी बंशी बजा रहे हैं।"

"मेरी बात सुनिए, पिताजी। आप यह मत सोचिए कि जो कुछ हो रहा है, वह मेरी आँखोंसे छुपा है। मैं इस नई व्यवस्थाका पुजारी नहीं बना हूँ। आखिर आप तो नहीं जानते कि मेरे मनमें क्या द्वन्द्व चलता रहता है। करोड़ों कम्युनिस्टोंके मनमें आज वही द्वन्द्व है। किन्तु मैं करूँ क्या? क्या मैं गलीमें जाकर हँगामा खड़ा कर दूं? इसके सिवाय, कुछ अच्छी बातें भी हो रही हैं। नए कारखाने, नई खानें, नई रेलें……"

"हाँ, वह सब है, मानता हूँ। किन्तु कारखानों और रेलोंके लिये क्रान्ति नहीं की जाती। क्रान्ति जनताके लिये की जाती है। जनताको व्यक्तिगत स्वाधीनता और अधिकार मिलने चाहियें। इनके बिना, मानवकी मर्यादाके बिना, आदमी दास बन जाता है। फिर चाहे जितने कारखाने और रेलगाड़ियाँ बनाए जाओ। जब तुम कम्युनिस्ट लोग नए कारखानोंकी डींग हाँकते हो तो यही कहना चाहते हो ना कि अब जनता अधिक सुखका जीवन बिता रही है। किन्तु क्या यह बात इस देशमें सच है?"

"ज़ारके कालमें उनका जैसा जीवन था, उसकी तुलना करके देखनेपर तो मेरा विचार है कि उनका जीवन आज अधिक सम्पन्न है।"

"विस्या, क्यों अपने-आपको मूर्ख बना रहे हो ? क्या तुम्हें वे दिन याद हैं, जब बचपनमें तुम अपने बाबाके घरपर रहते थे ? हम लोग धनी नहीं थे, किन्तु रोटी, दूध और साधारण कपड़ोंकी कमी नहीं देखी।

"मैं भी चाहता हूँ कि मजदूरोंको आराम मिले, उनके स्वास्थ्यकी देख-रेख हो, उनकी हारी-बीमारीमें समाज उनका भार वहन करे। किन्तु यह सब उस नफेमें से होना चाहिए जो कि सरकारको कारखानों और उद्योगों से प्राप्त होता है। किन्तु यदि मजदूरोंकी मजदूरी काटकर यह सब किया जाता है, तो मेरी समझमें बिल्कुल नहीं आता। पहले वह नफा पूँजी-पतियोंकी जेबमें जाता था। क्रान्तिका यह उद्देश्य था कि मजदूरों की मेहनतका पूरा फल उनको मिले।

"किन्तु नफा कहाँ है ? तुम्हारे सारे उद्योग-धन्धोंमें नुकसान ही नुकसान है। और हम साधारण नागरिकोंको वह नुकसान पूरा करना पड़ता है। मजदूरोंके लिए तुम तनिक-सा कर पाते हो, तो डींग हाँकते हाँकते पागल हो उठते हो। मुझे इसी बातपर सबसे भारी दुःख होता है, बेटा। हमारी जनताने जो बलिदान किया है और जो पूँजी हमने उद्योग-धन्धोंमें लगाई है, उसको देखते हुए तो मुझे हमारी आर्थिक प्रगति न-कुछ सी लगती है। तुम लोग कहानियाँ सुना-सुनाकर विदेशसे आए अनजान लोगोंको बहका सकते हो। या वे युवक लोग तुम्हारी बातों पर विश्वास करते हैं, जिनको कि पुराने जमानेकी याद नहीं। सच मानो मेरी आँखोंमें पार्थिव पदार्थोंका इतना महत्व नहीं है, जितना कि राजनैतिक और मानसिक तत्त्वोंका। किन्तु तुम तो सारा जोर लगाकर अपने पार्थिव कारनामोंका राग गाते रहते हो। इसीलिए मैंने तुम्हारे ही मापदण्डसे देशको नापकर दिखलाया है।"

वाद-विवाद ज्यों-ज्यों बढ़ता गया, मेरी खीज भी बढ़ती गई, क्योंकि मन-ही-मन मैं पिताजीके तर्कों पर विश्वास करता था। वे फिर कहने लगे :

"आँखोंके अन्धे मत बनो, बेटा। एक मजदूर परिवारको ले लो। वे सारे लोग जी तोड़कर मेहनत करते हैं, फिर भी उन्हें भरपेट खानेको नहीं मिलता। उनको इस बातसे क्या मतलब कि उनका शोषण करनेवाला कोई पूंजीपति है अथवा कोई सरकार। तर्कोंका मेला लगाकर तुम उसकी भूखका निवारण नहीं कर सकते। जब तुम उस मजदूरको जेलमें ठूँसते हो अथवा देशनिकाला देते हो तब उसको यह समझाना व्यर्थ है कि ये दण्ड मजदूरकी अपनी सरकार उसे दे रही है। जरा सोचकर देखो। जब पूंजीपति मालिक मुझे ठीक वेतन नहीं देता था, अथवा मेरे साथ बुरा व्यवहार करता था, तो मैं उसकी नौकरी छोड़कर और नौकरी ढूढ लेता था, अपने साथी मजदूरोंमें उसके विरुद्ध प्रचार कर सकता था, सभाएँ बुलाकर उसका विरोध कर सकता था, हड़तालें कर सकता था तथा राजनैतिक दल बनाकर अपने मतके समर्थनमें साहित्य छाप सकता था। ऐसा कुछ काम आजकल करके देखो ना। जेलमें जाना तो पक्की बात है। और भी बहुत कड़ा दण्ड मिल सकता है।"

मैं क्या उत्तर देता। केवल क्षोभका अभिनय कर सका। वे कहते रहे :

"उन दिनोंमें कम-से-कम विचार करनेकी स्वाधीनता हमें थी। कितने ही राजनैतिक दल थे, गुटबन्दियाँ थीं, मतामत थे। ज़ारशाही कठोर थी, किन्तु प्रस्तुत सरकारकी तुलनामें उसे उदार कहना पड़ेगा। ज़ारकी पुलिस हड़ताल करनेवालोंको मारती थी, कभी-कभी गोली भी चला देती थी तथा क्रान्तिकारियोंको देशनिकाला देती थी, किन्तु वह सब ज़ोर-जुल्म आटेमें नमकके बराबर था। उस समय राजनैतिक बंदियोंकी संख्या चन्द हजार रही होगी, आजकी नाईं करोड़ों नहीं। इसके सवाय

जब-जब जुल्म होता था तब-तब हम जुलूस निकालते थे और बड़ी-बड़ी सभाएँ बुलाकर प्रतिवाद करते थे। किन्तु आज तो सरकार चाहे जो कर ले। चारों ओर मौतका सन्नाटा छाया रहता है।

"एक बात और। तुम तो जानते हो कि मैं सदासे नास्तिक रहा हूँ। लेकिन जो लोग भगवानको मानते हैं, उनके विश्वासका मैं सम्मान करता हूँ। किन्तु आज आस्तिकोंकी दशा तुम देख रहे हो। यदि आज तुम धर्मप्राण व्यक्ति होते तो क्या तुम यह बड़ी नौकरी और ठाठ-बाट बनाए रख सकते थे। बिल्कुल नहीं।"

"आप बार-बार 'तुम' क्यों कहते हैं? क्या यह सब मैंने किया है?"

"माफ करना बेटा, तुम कम्युनिस्ट हो और एक कम्युनिस्ट होनेके नाते तुमको इस सबका दायित्व बंटाना होगा।"



चौदहवाँ अध्याय

पर्ज की पराकाष्ठा

एक दिन मैं पार्टीकी नगर-समितिकी मीटिंगसे लौट रहा था। मेरे साथ कारखानेके कार्यकर्त्ताओंमें मेरा एक अंतरंग मित्र भी था। वह उसी दिन मास्कोंसे लौटा था। मास्कोमें उसके अनेक परिचित लोग थे, इसलिए मैं कुछ नई खबर सुननेकी आशा कर रहा था। उन्हीं दिनों जिनोवीव, कामानेव इत्यादि पुराने बाल्शेविकोंको गिरफ्तार किया गया था और उनपर मुकदमा चलनेकी खबर थी। इसलिए सब लोग नई खबरोंके लिए मुँह बाए रहते थे। लेनिनकी क्रान्ति-सेनाके अग्रगण्य नेता मौतकी बाट जोहें, यह सोचना भी असम्भव-सा था। किन्तु......

मैंने पूछा : "क्यों क्या समाचार है ?"

"मास्कोमें सब कुछ उलट-पलट हो चुका है। सुना है कि लेनिनग्राडमें भी वही हालत है। हजारों गिरफ्तारियाँ हो रही हैं। अब तो इस पकड़-धकड़को छुपाया भी नहीं जाता। कम्युनिस्टों तथा गैर-कम्युनिस्टोंको खुले आम उनके दफ्तरों तथा घरों पर जाकर पकड़ा जाता है। मास्कोंमें छः-सात पार्टी मेम्बर मेरे परिचित थे, मास्को जाता तो मैं उन सबसे मिला करता। अबकी बार उनका पता ही नहीं चला कि कहाँ गए। पुलिस लम्बे हाथ मार रही है। पार्टीके बड़े-बड़े नेता, सरकारके बड़े कर्मचारी, कारखानोंके डाइरेक्टर इत्यादि, यहाँ तक कि

क्रेमलीनके भीतर रहनेवाले लोग भी उनके पंजेसे बाहर नहीं रह गए। घटनाचक्र तेजीसे बढ़ रहा है। देखते जाओ।"

वास्तवमें घटनाक्रम तेजीसे चला। अगले दिन सुबह ही कारखाने पर पहुँचा, तो मेरे कर्मचारियोंने खबर दी कि दो इञ्जीनियर पकड़े गए हैं। बात सारे कारखानेमें फैल गई। थोड़ी देर बाद मुझे लैन्स्की का टेलीफोन मिला। लैन्स्की कारखानेकी पार्टी-कमिटिका मन्त्री था। कहने लगा:

"कामरेड क्रावचैन्को, मुझे आपसे एक बहुत ही नाजुक मामलेमें सलाह लेनी है। आरकेडी लियान्स्कीको लेकर झंझट उठा है। आपने तो उसका काम देखा है। वह आपके घर आया गया है, आप भी उसके घर आते जाते रहे हैं। क्या कभी उसने आपके साथ राजनैतिक चर्चा भी की थी? शायद उसने लेनिनग्राडमें अपने पिछले राजनैतिक जीवनके विषयमें कुछ कहा हो?"

"नहीं। हमने साधारण गप्पोंके सिवाय कभी कोई बातें नहीं कीं। उससे मेरे विभागको बहुत-सी बातों पर सलाह करनी होती है, इसीलिये हम एक दूसरेसे मिलते थे। मुझे तो याद नहीं कि कभी राजनैतिक चर्चा चली हो।"

उस सांझको लिमान्स्की पार्टीकी मीटिंगमें आया तो प्रसन्नचित्त था। उसको गुमान भी नहीं था कि उस दिनकी मीटिंग उसके बारेमें बुलाई गई है। हॉलमें तम्बाकूका धुँआ भरा था। लैन्स्कीने प्रधानका आसन सम्भाला। उसके पास एक नवागन्तुक बैठा था, एक मोटा-ताजा व्यक्ति जिसकी खोपड़ी घुटी हुई थी और जिसके चेहरे पर क्रोध छाया था। वह साधारण पोशाक पहने हुए था, तो भी मुझे पहिचाननेमें कठिनाई नहीं हुई कि वह कोई मँजा हुआ खुफिया पुलिसका आदमी है। लैन्स्कीने कहा:

"साथियो, सभा शुरू होती है। हमारे सामने केवल एक ही

मामला है। विभाग-प्रमुख और कम्युनिस्ट आरकेडी लिमान्स्कीका मामला।"

लिमान्स्की उछलकर खड़ा हो गया। बोला: "मेरा मामला!"

उसको शायद विश्वास नहीं हुआ। बात कुछ अनहोनी-सी थी। उसके मुख पर मुस्कान उमड़ आई, जैसे उसके साथ परिहास किया गया हो।

"हाँ, तुम्हारा मामला। जब तक तुम से बोलने के लिये न कहा जाए, तुम चुपचाप बैठे रहो।"

लिमान्स्की मुर्देकी तरह कुरसी पर बैठ गया। उसका मुख पीला पड़ गया, मानो शरीरका सारा खून सूख गया हो। अपना रूमाल निकालकर माथेका पसीना पूंछने लगा। प्रधानने पूछा:

"साथियो, आजके मामलेके सम्बन्धमें क्या आपमेंसे किसीको कुछ कहना है?"

किसीने उत्तर नहीं दिया। प्रधान आगे बढ़ा:

"ठीक है। तो, लिमान्स्की तुम खड़े होकर अपने पिछले जीवनके सम्बन्धमें हमें बताओ। विशेषकर लेनिनग्राडमें तुम क्या करते रहे?"

विचारा लिमान्स्की काँपने लगा, जैसे उसे जोर का बुखार चढ़ आया हो। हकलाते-हकलाते वह अपनी जीवन-गाथा सुनाने लगा। घबड़ाकर वह उल्टी-सीधी बातें कहने लगा, जो नहीं कहना चाहिये था, वह भी कह बैठा। जब उसने अपनी शादीकी बातें कहीं तो नवागन्तुक ने बिगड़कर कहा: "हमको तुम्हारे व्यक्तिगत जीवनमें कोई दिलचस्पी नहीं है। हम तो तुम्हारे राजनैतिक जीवनकी कहानी सुनना चाहते हैं।"

लिमान्स्कीने कहा: "साथियो, मेरा राजनैतिक जीवन क्या आपसे छिपा है? सैकड़ों बार तो मैंने सब कुछ बतलाया है। लेनिन-

ग्राडके बारेमें भी। उन दिनों मेरा मत कुछ अनिश्चित-सा था। मैं डांवाडोल रहता था और कुछ ट्राट्स्कीवादियोंसे भी उन दिनों मेरा सम्पर्क था। पर वह सब तो कोई भेदकी बात नहीं है। पार्टीने सब कुछ जान-सुनकर मुझे क्षमा कर दिया है। पार्टीने मुझ पर विश्वास किया है और मैंने मी अपने आपको उस विश्वासके योग्य बनाया है। और साथियों, वह तो बहुत पुरानी बात है…"

लैन्स्कीने चिढ़कर कहा : "पुरानी बात ! जिनोवीव, ट्राट्स्की और दूसरे पागल कुत्तोंका घृणित काम भी पुरानी बात है। किन्तु इस बहाने-बाजीसे जनताके शत्रु अपना बचाव नहीं कर सकते। लिमान्स्की, कहो, क्या तुमने कभी पार्टीकी केन्द्रीय-समिति तथा हमारे प्यारे नेता स्टालिन के विरुद्ध कुछ कहा था ?"

"नहीं, कभी नहीं।"

लैन्स्कीने नवागन्तुककी तरफ संकेत किया। वह खड़ा होकर चीत्कार करने लगा :

"लिमान्स्की, तुम पार्टीकी आँखोंमें धूल झोंकना चाहते हो। क्या तुमने जिलेकी एक सभामें बकवास नहीं की थी ? अगस्त……।"

उसके बाद आध घण्टे तक लिमान्स्कीकी छीछालेदर होती रही। किसी विशेष बातका उद्घाटन नहीं हुआ, किन्तु सब बातें मिलाकर एक केस तैयार हो गया। जब मैं घर लौटा तो लिमान्स्कीके दफ्तरमें प्रकाश देखा। बिना द्वार खटखटाए ही मैं भीतर चला गया। वह हाथोंमें मुँह छुपाए बैठा था। उसके कन्धे फड़क रहे थे, मानो आँसू दबानेका प्रयत्न कर रहा हो। एक घण्टे पहले वह एक दबंग, आत्म-विश्वासी और अभिमानी अफसर था और अचानक वह एक दयनीय, छिन्न-भिन्न पथहारे में परिणित हो गया।

कुछ दिन बाद मैं एक जरूरी कामको लेकर ब्राचकोके सहकारीसे मिलने गया। वह पार्टीका सदस्य था। मैं उसके दफ्तरमें घुसना चाहता था कि उसकी सेक्रेट्रीने रोक लिया। बोली : "कामरेड क्रावचेंको, कामरेड सुखिन काममें फँसे हैं।"

मैंने उत्तर दिया कि मैं भी बहुत कामी आदमी हूँ और उसके दफ्तरमें घुस गया। किन्तु द्वार पर ही मुझे ठिठकना पड़ा। सुखिन अपनी मेज पर बैठा था। उसके पास ही परेशान-सा गर्शगोर्न मुँह चढ़ाए बैठा था। कमरे में दस-बारह इञ्जीनियर और थे। उनमेंसे कुछ तो पार्टीके सदस्य भी थे। मैंने सबको एक साथ अभिवादन जताया। केवल सुखिनने उत्तर दिया। मैंने देखा कि इञ्जीनियरोंको घेरकर चार पुलिसके आदमी अपनी पूरी वर्दी पहने खड़े हैं। मैं उलटे पाँव लौट कर ब्राचकोके दफ्तरमें पहुँचा। मैंने उससे पूछा :

"क्या किस्सा है, साथी ब्राचको ?"

"अब और मेरी समझमें कुछ नहीं आता। एक दिनमें बारह आदमी पकड़ लिये ! कल आठको पकड़ा था। रोज ऐसा ही हो रहा है। मेरा तो सिर घूम रहा है।"

एक ही दिनमें ब्राचको बूढ़ा हो गया था। उसकी आँखें फूली हुई थीं। शायद वह कई रोजसे सोया नहीं था।

हमारे कारखानेका वातावरण दिन पर दिन बिगड़ने लगा। पार्टीके सेक्रेट्री कोजलोवको कहीं अन्यत्र भेज दिया गया और कुछ दिन बाद हमने सुना कि उसको गिरफ्तार कर लिया गया है। एक-एककर दूसरे अधिकारी अनुपस्थित होने लगे। पूछने पर कहा जाता था कि बीमार पड़ गये हैं, किन्तु उनकी बीमारी शायद कभी टली नहीं।

कारखानेके साधारण मजदूर पहले तो सोचते रहे कि उनको इन बातोंसे कोई मतलब नहीं। किन्तु शीघ्र ही उनके परिचित साधारण

लोग भी लापता होने होगे। उनमें सनसनी फैल गई और हमारे उत्पादनमें घाटा पड़ने लगा। एक दिन निकोपोलके पार्टी सदस्योंकी सभा बुलाई गई। भयभीतसे हम सब वहाँ पहुँचे। द्वार पर जो लोग खड़े थे, वे हम सबको भली-भांति जानते थे, तो भी उन्होंने हमारे कार्ड खूब उलट-पलटकर देखे। मानो वह पुराना मित्रताका भाव अचानक मर गया हो। ब्राड्स्कीने हमें बताया कि मास्कोसे पार्टीका एक पत्र आया है, जिसको सुनानेके लिये सभा बुलाई गई है। फिर उसने बड़ी सावधानीसे, धीरे-धीरे, उस पत्रका एक-एक शब्द पढ़कर सुनाया। पढ़ते-पढ़ते वह गर्दन हिलाकर अपना समर्थन जताता जाता था। जिनोवीव, कामानेव इत्यादिको मृत्युदण्ड मिलनेसे दो-चार दिन पहलेकी यह बात है। शायद पार्टीके सदस्योंको उस सदमेके लिये तैयार करनेके लिये वह पत्र लिखा गया था। पत्रको सुनकर सबके मनमें भय भर गया और भयसे उपजी हुई प्रीत भी।

ब्राड्स्कीने उस पत्रके सम्बन्धमें एक लम्बी बक्तृता दे मारी। स्टालिनका गुणगान करते-करते वह पागल-सा हो उठा। अनेक नए नामोंसे उसने स्टालिनको भूषित किया। स्टालिन मनीषी है, स्टालिन सोवियत् भूमिके लिये सूर्य है, स्टालिन हमारा अचूक और अटल नेता है, इत्यादि-इत्यादि। मानो उस स्तुति द्वारा ब्राड्स्की अपनी जान बचाना चाह रहा हो।

दूसरे लोग भी बोले। कइयोंने अपने आपको गालियाँ दीं। कइयोंने निकोपोलकी पार्टीको निकम्मा बताया। उनके मतमें एक घोर विपदके समय पार्टीने लापरवाही दिखाई थी। अपने आपको गाली देकर अपनी रक्षा करने वालोंमें होड़ लग गई। सहसा द्वार पर कुछ हंगामा हुआ। हम सबने मुड़कर देखा। कामरेड हताएविच आ रहे थे। वे पार्टीके प्रादेशिक सेक्रेट्री थे और अखिल रूसी केन्द्रीय-समितिके सदस्य

भी। आज पहिले-पहल देखा कि उनकी रक्षाके लिये पिस्तौलें ताने हुए पुलिस के सिपाही साथ-साथ चल रहे हैं। यह एकबारगी नया परिवर्तन था। भयप्रद परिवर्तन। कम्युनिस्टोंकी सभामें पुलिस और पिस्तौलें! अब इस बातकी जरूरत होने लगी थी कि पार्टीके नेताओंको पार्टीके सदस्योंसे बचाकर रक्खा जाए। और हम पार्टीके सदस्य देशके सर्वश्रेष्ठ व्यक्ति माने जाते थे!

अब तो यह एक साधारण बात हो गई कि लोग पार्टी के भीतर पार्टीके छुपे हुए शत्रुओंको ढूंढ़े और उनका "भण्डाफोड़" करें। कोजलोव के स्थान में एक नया व्यक्ति हमारे कारखानेमें आया था। उसका नाम था लौस। वह मूर्ख-सा, जिद्दी आदमी था। हम समझ गए कि अब पार्टीमें समझदार और भले आदमियोंका स्थान नहीं रहा। पुलिसके दफ्तरमें सारी रात बत्तियाँ जलती रहती थीं। उनको चौबीस घण्टे काम करना पड़ रहा था। दोरोगन, गर्शगोर्न तथा उनके सहकारियों की बाछें खिल गईं। वे थक गए थे, किन्तु प्रसन्न दीख पड़ते थे। उनको मनचाहा काम मिला था। और निकोपोल तो उस देशव्यापी विभीषिकाका एक छोटा-सा अंग था। पर्ज परकाष्ठा पर पहुँच रही थी।

(२)

नवम्बर १९३६ में मेरा भी नम्बर आ गया। लिमान्स्कीकी नाईं मुझे भी अचानक फाँसा गया था। किन्तु मैं उस प्रकारका नाटक बहुत बार देख चुका था तथा मन-ही-मन तैयार बैठा था। इसलिए मुझे कोई ताज्जुब नहीं हुआ। मैंने अपने-आपसे कहा कि अपने ऊपर पूरा संयम रखना सबसे बड़ी बात है।

कारखानेकी क्लबके हॉलमें पार्टीकी सभा जुड़ी थी। रात भयानक थी। बरफ पड़ रही थी और हमारे जूतोंमें लगी कीचड़ने सारे फर्शपर

गंदगी फैला दी थी। वायुमण्डल सिगरेटके धुएँसे नीला हो उठा था। मुझे वह रात, वह हॉल और वह गन्दगी सदा याद रहेगी। पार्टीके कई स्थानीय सदस्योंके विरुद्ध अभियोग प्रस्तुत किए गए। इसके पहिले कि पुलिस अपनी गवाही देती, पार्टीके ही कुछ लोगोंने अपने स्थानीय साथियोंपर लांछन लगाकर अपनी "वफादारी" और "सावधानी" का ढोल पीटना शुरू कर दिया। सभा प्रायः समाप्त होनेवाली थी कि सहसा लौस बोलनेके लिए खड़ा हो गया। मैं तो एक प्रकारसे सभाका अस्तित्व भुलाकर अपने ही विचारोंमें डूबा बैठा था। लौसके शब्द सुनकर मैं सन्न रह गया, मानो किसीने मुझे चाबुक मारा हो। मेरी बारी आ गई थी। लौस कह रहा था: "साथियो, मेरा प्रस्ताव है कि कारखानेके पाइप-विभागके डाइरेक्टर और पार्टीके सदस्य विक्टर क्रावचैन्कोका मामला हाथमें लिया जाए। हमारे पास इस साथीकी पिछली और वर्त्तमान कारस्तानियोंके विषयमें बहुत-सी शिकायतें आई हैं।"

सभाके किसी कोनेसे कोई चिल्लाया: "शिकायत करनेवालोंको बोलनेका अवसर मिलना चाहिए।"

लौस बोला: "बहुत अच्छा। मैं चाहता हूँ कि इञ्जीनियर ग्रिगरी मैकारोव अपना बयान दें।"

मैकारोव मंचपर चढ़ा तो मेरी दाहिनी ओर बैठा हुआ एक साथी उठकर चल दिया। कहता गया कि वह सिगरेट पीना चाहता है। उसको जाता देखकर मेरी बाईं ओर बैठा हुआ साथी भी उठकर चला गया। सहसा मैं उनके लिए अछूत बन गया था। मैकारोवको मैं उन दिनोंसे जानता था, जब कि हम दोनों एक साथ इन्स्टीच्यूटमें पढ़ते थे। वह एकदम अकर्मण्य व्यक्ति था और दूसरोंकी सहायता पाकर अपना काम निकालना उसका एकमात्र सिद्धान्त था। मैंने उसको निकोपोलके कारखानेमें काम दिलवाया, उसके लिए घर तलाश किया। मैं सदा यह मानता

रहा था कि वह मेरे प्रति कृतज्ञ है। किन्तु आज मालूम हुआ कि वह मान्यता केवल मेरी मूर्खता थी। मैकारोव अब कह रहा था :

"मैं क्रावचैन्कोको बहुत दिनसे जानता हूँ। इन्स्टीच्यूटमें वह पार्टी-कमिटिकी ब्यूरोका सदस्य था। उस कमिटिमें उसके जो सहकारी थे, उनमें से अधिकतर गिरफ्तार हो चुके हैं। उनमें दो अभियुक्त—बेरेट्ज़-कोई और काट्ज़ तो क्रावचैन्कोके घनिष्ठ मित्र थे। इसीसे आप समझ सकते हैं कि क्रावचैन्को कैसा आदमी है। किन्तु यह भी मामूली बात है। मैं तो साफ-साफ कहना चाहता हूँ कि इतने साल तक क्रावचैन्को पार्टीके सामने झूठ बोलता रहा है। उसने पार्टीसे एक बहुत महत्वकी बात छुपाई है—अपने पिताकी राजनैतिक राम-कहानी। क्रावचैन्कोने पार्टीको कभी नहीं बताया कि उसके पिता क्रान्तिके पूर्व एक पक्के मैन्शेविक थे और क्रान्तिके बाद वे हमारे प्रिय नेताके विरुद्ध प्रचार करके गैरकम्युनिस्ट मजदूरोंको उसकाते रहते हैं।"

कोई बीचमें बोल उठा : "क्रावचैन्कोके बारेमें बातें करो। उसके पितासे क्या मतलब है?"

कामरेड लौसने चिल्लाकर उत्तर दिया : "पत्ते पेड़में लगते हैं। कामरेड मैकारोव, आगे कहिए।"

मैकारोवने कहना शुरू किया : "यही तो मैं भी कहता हूँ कि पत्ते पेड़में लगते हैं। क्रावचैन्को अपने पितासे अच्छा नहीं है। उसने अपने चारों ओर देश-द्रोहियोंका एक दल इकट्ठा कर रक्खा है। उसके विभाग में गैर-कम्युनिस्ट भरे पड़े हैं। यह क्या अकस्मात् ऐसा हुआ है? उसके सहकारी कौन हैं? उसके फोरमैन कौन हैं? जिस मैन्शेविक डुब्रिन्सिकी को पकड़ा गया है, वह कौन है? अभियुक्त जर्मन फासिस्ट जैलमैन कौन है? और भी बहुतसे नाम गिना सकता हूँ। सबके सब गैर-कम्युनिस्ट अथवा देश-द्रोही लोग हैं, जिनकी जालसाजीको पुलिसने पकड़ लिया है।"

वह बकता रहा। मुझे याद आया कि मैंने मैकारोवको असिस्टैन्ट बनानेसे इन्कार किया था। उसकी अयोग्यताके कारण। शायद इसी कारण वह जलभुनकर मेरे पीछे पड़ा था।

डायरेक्टर ब्राचकोने उठकर कहा: "कामरेड लौस, मैं चाहता हूँ कि फ़िजूलकी बकवास और कीचड़ उछालना छोड़कर मैकारोव कामकी बातें बताएँ।"

"कामकी बातें ही सुनिए, कामरेड ब्राचको, बहुत-सी बातें। स्टैखानोव आन्दोलनके दिनोंको याद करिए, जब कि कामकी नई दरें बाँधी गई थीं। हम सब गवाह हैं कि क्रावचैन्कोने उस सुधारका विरोध किया था। मजदूरोंमें से केवल एक आदमीने सिर उठाया था। क्रियुस्किनने। जानते हैं कि क्रावचैन्कोने क्रियुस्किनका क्या किया? आखिर क्रावचैन्को तो बड़े दिलवाला है न। इसीलिए क्रियुस्किनको इसने और भी अच्छी नौकरीपर लगा दिया।"

लौसने एलान किया: "अब पार्टीके सदस्य इञ्जीनियर शैकोविच कुछ कहेंगे।"

शैकोविच नाटा-सा आदमी था। बन्दर-जैसा सुकड़ा हुआ चेहरा, छोटी छोटी क्रूर आँखें। उसने खिंचे हुए तारकी तरह झनझनाकर कहा:

"साथियो, मैंने भी कॉमरेड क्रावचैन्कोके विरुद्ध बयान दिया है। मैं बहुत दिनसे क्रावचैन्कोका रंग-ढंग देखता रहा हूँ। यह सच है कि समाचार पत्रों और रेडियोने इसकी तारीफके पुल बाँधे हैं, इसे आसमान तक उठाया है। आप तो जानते हैं कि इसकी तसवीर कितनी बार पत्रों में छपी है। परन्तु क्या आपको यह भी मालूम है कि देशकी ये सब सेवाएँ एक नकाबके सिवाय कुछ नहीं। उस नकाबके पीछे इस आदमीने देशके साथ घोर शत्रुता की है।"

ब्राचकोने फिर कहा: "कामकी बातें कहो। लेक्चर क्यों झाड़ते हो?"

अपनी बात कटती देखकर बोलनेवाला तैशमें आ गया। और भी झनझनाकर कहने लगा:

"क्रावचेन्कोको पार्टीपर विश्वास नहीं। इन्स्टीच्यूटमें पढ़ता था तो खेतीके समूहीकरणपर उसको विश्वास नहीं था। वह बात सब जानते हैं। और इस कारखानेमें भी इसका वही हाल है। हमेशा मुँह बनाए रहता है। नवाबज़ादेको कुछ भी अच्छा नहीं लगता। क्या आप जानते हैं कि इसको इतना ऊँचा पद क्योंकर मिला है? इसलिए कि खारकोव और मास्कोमें यह बड़े-बड़े लोगोंसे परिचित है। इसलिए नहीं कि इसमें योग्यता है।"

शैकोविचके बाद गवाही देनेके लिए युदाविन खड़ा हुआ। वह पुलिसका जासूस है, यह जानकर ही मैंने उसके साथ हेलमेल बढ़ानेसे इन्कार किया था। अब वह ब्याज समेत अपना बदला चुकानेके लिए तैयार था। मैं जान गया कि युदाविनकी आवाज़ वास्तवमें पुलिसकी आवाज़ है। उसने कहा: "साथियो, अभी दो गवाहोंने जो कुछ कहा, उसका समर्थन तो मैं करता ही हूँ। किन्तु मैं तो और भी भारी आरोप लगाना चाहता हूं। वास्तवमें यह क्रावचैन्को विनाशकारी है।"

मानो सभामें बम फट गया। सुननेवाले सन्नाटेमें आ गए। उस समय तक मैं भी अपने-आपको सम्भाले हुए था। किन्तु अचानक मुझे भी पसीना आ गया। मेरी समझमें नहीं आया कि युदाविन कहना क्या चाहता है। न-जाने उस पुलिसके जासूस और उसके मालिक गशगोर्न ने मेरे बारे में क्या किस्से गढ़े हैं। युदाविन कहता रहा:

"हाँ। क्रावचैन्को विनाशकारी है। इसने जान-बूझकर एक करोड़ रूबलको पानीमें डाल रक्खा है। जानते हैं कैसे? बात बहुत सीधी है। इसने तरह-तरहकी मूल्यवान मशीनें मँगाकर कारखानेमें ढेर लगा लिया

है ! इसी प्रकार इसके विभागमें ढेरों बहुमूल्य पूरजे पड़े हैं, जो किसी भी काममें नहीं आते। कुछ तो पेटियोंमें बन्द हैं। वे पेटियाँ कभी खोली ही नहीं गईं। मैं कहता हूं कि सरकार और देशको नुकसान पहुँचानेके लिए इसने जान-बूझकर ऐसा किया है।"

उसकी बात सुनकर मैं निश्चिन्त हो गया। आरोप इतना छिछला था कि मैंने सोचा अपने-आप बेकार हो जाएगा। इसके सिवाय लौस भी उस दिनकी सभा समाप्त करके घर जानेके लिए उतावला हो रहा था। मेरे ऊपर और आरोप नहीं लगाए गए। मुझे अपना बयान देनेके लिए बुलाया गया। मैं अपनी समस्त शक्तियोंको संजोकर मंच पर चढ़ गया। मैंने कहा :

"साथियो ! पार्टीके सदस्यो ! मैं आपके सामने साफ-साफ बातें कहना चाहता हूँ। मेरा कुछ भी हो, मुझे चिन्ता नहीं। मुझे पार्टीमें आठ साल हो गए। मेरा रिकार्ड मेरी गवाही है। हाँ, मैं आदमी हूँ, मुझमें मानवीय कमज़ोरियाँ है। मैंने भूलें की हैं। शायद मैंने ऐसे लोगों को तरक्की दी है जो कि अयोग्य थे और शायद योग्य लोगोंको कामपरसे हटाया है। किन्तु मैं दोषी नहीं हूँ। मुझे किसीका डर नहीं लगता। मैं आपसे एक ही प्रार्थना करता हूँ। आप मुझे इजाज़त दीजिए कि इन गन्दे आरोपोंको झुठलानेके लिए पक्के प्रमाण जुटाकर आपके सामने प्रस्तुत करूँ। मुझे कुछ समय चाहिए। मेरे विरुद्ध आरोपोंकी जांच करनेके लिए एक कमीशन नियुक्त कीजिए। यदि कमीशनको अपनी निर्दोषता न दिखा सकूं, तो मेरी गर्दन आपके हाथोंमें है।

"इस तूफानका एक कारण तो यह बतलाया जाता है कि मेरे पिता मैन्शेविक हैं। मैं साफ-साफ कहना चाहता हूँ कि मैं अपने पिताको अस्वीकार कभी नहीं कर सकता। मुझे उनसे प्रेम है, उनपर श्रद्धा है।

उन्हींसे प्रेरणा पाकर मैं मजदूर-आदर्शकी ओर झुका था, युवक-संघ और पार्टीमें भरती हुआ था। वे पार्टीके सदस्य नहीं हैं, किन्तु मजदूरोंकी जो सेवा उन्होंने की है वह किसीसे छुपी नहीं। वे जीवनमें कभी भी मैन्शे-विक अथवा किसी और पार्टीके सदस्य नहीं बने। वे तो एक ईमान्दार क्रान्तिकारी रहे हैं, वे ज़ार और पूँजीपतियोंके विरुद्ध लड़े हैं। उन्होंने कभी कोई राजनैतिक बिल्ला नहीं लगाया। १९०५ में वे बन्दूक लेकर गलियोंमें लड़े थे। उन्होंने मैन्शेविक और बाल्शेविक, दोनोंके साथ कन्धा मिलाकर काम किया। वे सब प्रकारके क्रान्तिकारियोंके साथ जेल काट चुके हैं। यदि आप मुझे समय दें तो यह सब मैं साबित कर सकता हू।

"मुझे विनाशकारी कहना तो घोर मूखता है। यह सच है कि मेरे विभागमें बहुतसी मशीनें वगैरा स्टॉकमें पड़ी है। किन्तु सरकारके पास उनका पाई पाई हिसाब मिलेगा। मैं बराबर उन मशीनोंकी रिपोर्ट ऊपर भेजता रहा हूँ और कारखानेके अधिकारी जब चाहें तब उनको काममें ले सकते हैं। और जो कुछ भी मंगाया गया वह सब जरूरत समझ कर मंगाया गया है। फिर भी, शायद आप जानना चाहें कि मेरे विभागमें इतनी बहुमूल्य मशीनें क्यों इकट्ठी हुई हैं और क्यों वे काममें नहीं ली जातीं। इसका एक ही कारण है। बार-बार मेरे विभागको विशेष प्रकारके काम सौंपे गए हैं और बार-बार विशेष प्रकारकी मशीनें और औजार मंगाने पड़े हैं। उदाहरणके लिए आपको याद होगा कि बाकूके तेल-उद्योगके लिए एक खास किस्मकी पाइपकी सख्त जरूरत थी। पहिले-पहल मुझे जितनी पाइप बनानेके लिए कहा गया था, उतनी पाइपकी जरूरत बादमें नहीं समझी गई और आर्डर काट कर छोटा कर दिया गया। कई बार तो ऐसा हुआ है कि हमें कोई खास काम बताया गया और सब प्रकारकी मशीनें वगैरह भी हमने मंगा लीं, किन्तु आखिरी

वक्त पर आडर वापिस ले लिया गया। योजना बदल गई और हमें माल तैयार नहीं करना पड़ा। इस प्रकार बहुमूल्य कल पुरजे इकट्ठे होते रहे हैं। किन्तु मैंने न तो योजनाएँ बनाईं, न रद्द कीं। सब कुछ मास्कोसे होता रहा है।"

एक साठ सालका मजदूर कामरेड सिलीनीन, जिसको मैं साधारणतया जानता था, उठकर खड़ा हो गया। उसको बोलनेकी इजाजत मिली तो उसने कहा :

"जब तक कामरेड क्रावचैन्को अपने विभागके प्रमुख हैं, तब तक उनके काममें दखल देना ठीक नहीं। इस मामलेमें अनेक पेंच हैं। उतावलीमें कुछ नहीं करना चाहिए। हमारे पास काफी समय है। सबकी सुन ली जाए, जांच-पड़ताल हो, तब सरकार अपना निश्चय कर सकती है। क्रावचैन्को भी यही चाहता है। ठीक बात है। मैं प्रस्ताव पेश करता हूँ कि नगर समितिकी ओरसे एक कमीशन नियुक्त किया जाए और इस साथीको जो कुछ प्रमाण प्रस्तुत करने हों, कमीशनके सामने करें।"

सिलीनिनका प्रस्ताव स्वीकृत हो गया। जब मैं सभाके बाहर निकला तो केवल ब्राचको और सिलीनिनको ही मेरे निकट आनेका साहस हुआ। मेरी अग्निपरीक्षा अठारह महीने तक चली। उस दिनसे लेकर अठारह महीने तक मैं सबके लिए एक अछूत बन गया। मानों मुझे प्लेग हुई हो।



पन्द्रहवाँ अध्याय

मेरी अग्निपरीक्षा आरम्भ

अगले दिन मैंने निकोगोलके समाचार पत्र पढ़े तो देखा कि मैं बदनाम हो चुका हूँ। इन्हीं पत्रोंमें अभी तक मेरी खूब प्रशंसा होती रही थी। शायद उसका प्रभाव मिटानेके लिए ही मुझे जी भर कर गालियाँ दी गई थीं। नगर कमिटीमें ब्राडस्कीके बाद फिलिन नामका एक व्यक्ति आया था। मैं नाश्ता कर रहा था कि उसका टेलीफोन आ पहुँचा। मुझे कुछ आश्चर्य-सा हुआ। उसने कहा :

"हमको कलकी सभाका पूरा समाचार मिला है, और आजके समाचार-पत्र भी हमने पढ़ लिए। कोई चिन्ता मत करना, क्रावचैन्को। अपना काम करते रहना और ध्यान रखना कि उत्पादनकी योजनामें कोई त्रुटि न आने पाए। अभी कोई आपका कुछ नहीं बिगाड़ सकेगा।"

जब मैं कारखानेमें पहुँचा तो देखा कि फिलिनके द्वारा नियुक्त किया हुआ कमीशन जाँच-पड़ताल शुरू कर चुका है। लौसको कमीशनका सदस्य देखकर मेरा माथा ठनका। किन्तु जब मुझे मालूम हुआ कि ब्राचको भी सदस्य है, तो मेरी हिम्मत भी बढ़ गई। चीफ इञ्जीनियर विशनेव भी कमीशनका सदस्य था। वे सब 'सप्लाई-रूम' में इकट्ठे होकर वहाँपर जमा हुए कल-पुर्जे देख रहे थे। मुझे देखकर लौसने बे-मनसे

कहा : "नमस्कार ! आइए काम शुरू करें। क्या ये कल-पुर्जे सब आपके आदेशसे यहाँ आते हैं !"

"हाँ।"

"तो आप मानते हैं कि यहाँ जो कुछ जमा हुआ है, सब आपके आदेशोंके अनुसार है ?"

"मानता हूँ।"

"कारखानेमें किसकी ओरसे आपको यह अधिकार मिला ? इस सम्बन्धमें कागज पत्र किसने सही किए ?"

"चीफ इञ्जीनियरकी हैसियतसे कामरेड विशनेवने।"

मैंने देखा कि विशनेव चौंक उठा है। घबराकर बोला :

"नहीं तो। मुझे तो याद नहीं पड़ता। यदि मैंने सही किया है, तो ऊपरसे आदेश आया होगा।"

ब्राचकोने कहा : "कागज-पत्र देखनेपर पूरी बात मालूम हो जाएगी।"

मैंने वायदा किया : "मैं सब ठीक करके रक्खूँगा। मुझे आशा है कि सब प्रतिलिपियाँ ठीकसे फाइल की गई हैं। नहीं तो मास्को अथवा खारकोवसे नकलें मँगानी पड़ेंगी।"

इसके बाद कई सप्ताह तक वे कागज खोजना ही मेरा काम बन गया। वे कागजके टुकड़े भूत बनकर मुझे चिढ़ाने लगे, मुझसे आँख-मिचौनी खेलने लगे। वे मेरे हाथ पड़ते ही मैं साबित कर सकता था कि वे सब मशीन वगैरह मास्कोसे आए हुए खास-खास कामोंको पूरा करनेके लिए मँगाई थी। यह मैं कभी नहीं जान पाया हूँ कि हमारे दफ्तर की फाइलोंमें से वे कागज गुम हो गए थे अथवा जान-बूझकर उड़ाए गए थे। ब्रांचको और फिलिनकी आज्ञा लेकर मैं उसी दिन खारकोवके लिए रवाना हो गया। जरूरत पड़नेपर मास्को जानेकी भी इजाजत थी।

मुझे कागज-पत्र सहेज कर यह साबित करना था कि वे मशीन कामके लिए खरीदी गई थीं, कि मैंने रुपया बरबाद करनेके लिए वैसा नहीं किया था।

एक अजीब आरोप था, एक व्यर्थकी दौड़-धूप। किन्तु उन दिनों रूसमें जैसा वातावरण बना था, उसकी पृष्ठभूमिकामें यह सब युक्तिसंगत लग रहा था। कहा जाता था कि लालसेनाका निर्माता ट्राट्स्की जर्मनी का जासूस था; कि लेनिनके वे महारथी—जिन्होंने क्रान्तिको सफल बनाया, वास्तवमें विदेशी पंजीवादके वेतनभोगी कुत्ते थे! तब भला किसको विश्वास नहीं होता कि निकोपोलमें क्रावचैन्कोने फिजूलकी मशीनों पर करोड़ों रूबल लुटाकर सोवियत् सरकारका तख्ता उलटना चाहा है। इस बार मैंने अपने परिवारको अपनी सारे बातें बता दीं। पिताजी और मेरे बीच जो मानसिक खिंचाव था, वह मिट गया। वह खाई पट गई। यह एक सन्तोषकी बात थी। अपने दुःखके दिनोंमें मैं यह कह सकता था कि मेरे अपने लोग बेगाने नहीं रह गए हैं। सहसा मुझे ऐसा लगा कि मैं एक बालक हूं और मेरे माता-पिता ही मेरे हित-अनहितकी सोच सकते हैं। मैं अब एक "कट्टर बाल्शेविक" नहीं रह गया था।

निकोपोलसे मेरा समाचार जब हमारे घर पहुँचा, तो हमारे नगरपर मातम छाया हुआ था। हमारे पड़ौसमें तीन परिवारोंके मुखिया एक रातमें पर्जके शिकार बन चुके थे। वे सब गैर-कम्युनिस्ट थे। हमारा उन सबके साथ पुराना परिचय था। उनके साथ मेरे पिता, बड़े भाई और मैंने काम किया था। रोज-रोज ऐसी दुर्घटनाएँ देखते रहनेके कारण मेरा परिवार मेरे बारेमें भी निराश हो गया। पिताजी कामसे रिटायर हो चुके थे। उन्हें मामूली-सी पेंशन मिलती थी। किन्तु मजदूरोंसे उनका सम्बन्ध बना रहा था और उनको दिन-पर-दिन पता लगता रहता था कि किस प्रकार कारखानोंके इञ्जीनियर तथा कर्मचारी इत्यादि पर्जके शिकार

हो रहे हैं। उनको मालूम था कि ६६ प्रतिशत मामलोंमें एक बार आरोप लगनेके बाद अपराध पक्का माना जाता था और छूटनेको कोई सम्भावना नहीं रह जाती थी।

रातमें मुझे नींद नहीं आती थी, बुरे सपने देखता रहता था। एक दिन एक दुःस्वप्नसे चौंककर मैं उठा, तो देखा कि माँके कमरेमें बत्ती जल रही है। मैं दबे पाँव वहाँ जा पहुँचा। देखना चाहता था कि कोई गोलमाल तो नहीं है। मैंने देखा कि माँ घुटनोंके बल बैठी, आँखें मूँदे, सिरको पीठकी ओर झुकाकर देवमूर्त्तिसे प्रार्थना कर रही हैं। उनके गालोंपर आँसू बह रहे थे, किन्तु मुखपर शान्ति विराजमान थी और एक आन्तरिक विश्वासका तेज छलक रहा था। मैं दबे पाँव वापिस लौटकर सो गया। मेरा मन शान्त हो गया और कई महीनेके बाद मैं जी भरकर सोया। प्रातःकाल उठकर पिताजीसे मेरी काफी बातें हुईं। वे क्रोधसे उबल रहे थे। मैंने कहा :

"पिताजी, गुस्सेसे क्या फायदा? हमको तो सबूत इकट्ठा करना है कि आप कभी भी मैन्शेविक नहीं थे।"

"मैन्शेविक होना क्या अपराध है? क्रान्तिके कुछ नामी कर्णधार मैन्शेविक थे।"

उस दिन पिताजी शहरके नामी कम्युनिस्टोंके पास गए। वे उनकी उमरके थे और पिताजीकी पुरानी बातें अच्छी तरह जानते थे। सबने अपने हस्ताक्षर करके बयान दिए कि जहाँ तक उनको मालूम है बूढ़ा क्रावचैन्को कभी किसी पार्टीका सदस्य नहीं रहा। नगरमें रहते-रहते वहाँका आतंक मुझपर भी छा गया। बरसों तक वह आतंक मुझे सताता रहा है। मैं अपने पुराने कारखानेमें गया तो देखा कि मेरे अधिकतर पुराने साथी लापता हो चुके हैं। मैंने पूछ-ताछ की तो किसीने सीधा उत्तर नहीं दिया। मैं समझ गया कि मेरे साथी किस प्रकार लापता हुए

हैं। कारखानेका डाइरेक्टर, स्टीफान बिरमान, गिरफ्तार नहीं किया जा सका था। जब पुलिसके लोग उसके घर पहुंचे तो देखा कि बिरमान एक खूनसे भरे टबमें मरा पड़ा है। पर्जसे बचनेके लिए उसने आत्म-हत्या कर ली थी। बिरमान हंगरीका रहनेवाला था और बेलाकुनकी अध्यक्षतामें वहाँ कुछ दिनके लिए जो सोवियत् सरकार बनी थी तो उसके मन्त्रिमण्डलका सदस्य भी रहा था।

जब मैं खारकोवके लिए रवाना हुआ तो माँ मुझे छोड़ने स्टेशन तक आई। मैं चाहता था कि माँ जी खोलकर आँसू बहा ले, क्योंकि आँसू रुंध कर उसका दम घुटा जा रहा था। प्लैटफार्म पर खड़े-खड़े वह मुझसे बोली :

"बेटा, अपने ऊपर संयम रखना। जहाँ जरूरत समझो उनकी बात मान लेना। आखिर वे भी इन्सान हैं। हैं या नहीं ? वे भी तो कुछ समझते हैं।"

खारकोवमें जाकर मैंने हेडआफिस देखा। चारों ओर आतंक और घबराहट फैली थी। सबको काठसा मार गया था। कोई भी ठीकसे नहीं जानता था कि कब उसका काम छुट जाए, कब उसकी स्वाधीनता छिन जाए। बहुतसे कर्मचारियोंने मेरी सहायता करना चाहा। उन्होंने बरसों तक मेरा काम देखा था। किन्तु बहुत कोशिश करने पर भी वे उन कागज-पत्रोंका पता नहीं लगा सके, जिनकी कि मुझे जरूरत थी। हारकर मैंने ब्राचकोको टेलीफोन किया। मैंने कहा :

"मुझे तो कुछ भी नहीं मिल रहा है। यहाँ तो साधारणतया ही काफी गड़बड़ रहा करती है। अब पर्जके कारण तो एकदम घुटाला हो गया है। क्या मास्को जाकर किस्मत आजमाऊँ ?"

उसने उत्तर दिया : "नहीं, नहीं, तुरन्त वापिस लौट आओ।"

"किन्तु क्यों ? बात क्या है ?"

"टेलीफोन पर कुछ नहीं बता सकता। जितनी जल्दी हो सके लौट आओ। बहुत जरूरी काम है।

(२)

कामरेड ब्राचकोके डरनेका कारण था। मेरी अनुपस्थितिमें मेरे शत्रुओंकी बन आई थी। पुलिसने मेरे सहकारी लोगोंको पकड़ लिया था। प्रायः एक दर्जन इञ्जीनियर और कर्मचारी। मजदूर सन्नाटेमें आए हुए थे। इसके अतिरिक्त मेरे अपने सैलके सेक्रेट्री यासेनेवने ऊपरके लोगोंका इशारा पाकर मजदूरोंको तंग करना शुरू कर दिया था। वह चाहता था कि मजदूर मेरे खिलाफ गवाही दे दें। उससे पूछ-ताछ करने पर वह कहता था कि वह तो तथ्य संग्रह कर रहा है। लौस भी अपना दमनचक्र तत्परतासे चला रहा था। उसने कसम खाई थी कि क्राव-चैन्कोंके मामलेका फैसला तुरन्त करके रहेगा। वास्तवमें उसकी आँखें मेरे साथियों और सहकारियों पर लगी थीं। वह सबको फाँसना चाहता था और जानता था कि एकबार क्रावचैन्कोके विरुद्ध आरोप साबित होते ही बाकी सबसे निपटना कुछ कठिन नहीं। इसलिए लौस और उसके सहकारी मुझे समाप्त करनेके लिए छटपटा रहे थे। यह उनके लिए जीवन-मरणका प्रश्न बन गया था। इसलिए कुछ दिन बाद उन्होंने कार-खानेकी पार्टी कमिटीकी एक विशेष और गुप्त सभा मेरे मामले पर फिरसे विचार करनेके लिए बुलाई।

सभा उसी हालमें हुई। मंच पर लाल झंडे और नेताओंके फोटो टंगे थे। हालमें खूब उजाला था और अधिकारी लोग मंचके ऊपर कतार बाँधकर बैठे थे। ऐसा लगता था जैसे कोई नाटक करनेकी तैयारी हो। मैं अपने ऊपर पूरा काबू किए हुए था, तो भी मैं काँप उठा और एक जड़ता मेरे अंग-प्रत्यङ्गमें फैलने लगी। मेरा साथ देनेके लिए केवल दो व्यक्ति तैयार हुए। सिलीनिन और गुश्चिन। दोनों साधारण मजदूर और

बड़ी उमरके आदमी थे। इस बार लौस पूरी तैयारी करके आया था। वह मुझ जैसे "विनाशकारी" का विनाश करने पर तुला था। इसलिए उस नाटकके प्रत्येक एक्टरने अपना पाठ अच्छी तरह याद कर रक्खा था। लौसने नाटककी भूमिका की। उसके भाषणमें जोश और आग थी। भीड़को भड़कानेमें ऐसा भाषण कारगर होता है। उसने कहा कि मेरा दोष तो प्रायः साबित हो चुका है; इसमें कोई सन्देह नहीं रह गया कि मेरे पिता एक सोवियत् विरोधी मैन्शेविक हैं। लौसके कथनानुसार मेरी "विनाशकारी" साजिशका ताना-बाना उधेड़ना उसका काम नहीं था, वह सब तो "और लोग", किसी "अन्य स्थान" में करेंगे। कहने लगा :

"हमारे पास अभी पूरे तथ्य नहीं हैं। किन्तु हमें अनेक बयान मिले हैं जिनके अनुसार क्रावचेंन्को एक छुपा हुआ शत्रु है, जो कम्युनिस्टोंको काम परसे हटाकर द्रोहियोंको मुँह लगाता है। क्या कोई कुछ कहना चाहता है?"

बहुतसे लोगोंने हाथ उठाए। मैकारोव, शैकेविच तथा युदाविनने इसबार अपनी कहानियाँ बड़े यत्नसे सुनाईं। लौसने फिर पूछा : "क्या कोई क्रावचेंन्कोके समर्थनमें कुछ बोलना चाहता है?"

उसके स्वरमें कर्कशता थी, जिससे कि सुननेवाले समझ जाँए कि मेरा समर्थन करनेवालेकी खैर नहीं।

सिलीनिन बोला : "मैं क्रावचेंन्को का समर्थन करता हूं। क्योंकि मैं जानता हूँ कि इस नवयुवक और योग्य कामरेडके विरोधमें तमाम आरोप किसीके पागल दिमागका फितूर है। क्रावचेंन्को एक मजदूरका बेटा है और पुराना क्रान्तिकारी भी। उसके पिताके विरुद्ध जो कुछ बकवास की गई है सब एकदम मिथ्या है। इसके सिवाय क्रावचेंन्को खुद समझदार और वयप्राप्त आदमी है। उसके पिताको उसके साथ क्यों फांसा जाए। किन्तु मैं तो और कुछ भी जानता हूँ। साथियो, मैं आपको

बतलाना चाहता हूं कि यासेनेवने मुझे अपने दफ्तरमें बुलाकर कहा था कि मैं भी क्रावचैन्कोके विरुद्ध गवाही पर सही कर दूँ। जब मैंने इन्कार कर दिया तो वह आगबबूला होकर मुझे धमकियाँ देने लगा। इसीसे आप समझ सकते हैं कि इन और गवाहियोंकी क्या कीमत है?"

यासेनेव चीत्कार कर उठा : "तुम झूठ बोल रहे हो।"

"नहीं, साथियो, यह सत्य है। आप जानते हैं कि मैं बूढ़ा आदमी हूं और बहुत पुराना बाल्शेविक भी। मैं क्या ये किस्से गढ़ सकता हूँ। मैं सीधा-साधा मजदूर हूं और पार्टीका भक्त भी। हमारे एक बहुत योग्य और ईमानदार साथीको इस प्रकार लाञ्छित करना सरासर बेईमानी है।"

चारों ओर शोर मच गया। सब चिल्ला-चिल्ला कर अपनी-अपनी बात कह रहे थे। तनिक शान्ति होने पर ब्राचको बोलनेके लिये खड़ा हुआ। उसने जोर देकर कहा कि मुझ पर विनाशकारी होनेका आरोप नहीं लगाया जा सकता, क्योंकि जो भी मशीनें इत्यादि मैंने मँगाई थीं, उन सबकी जरूरत थी और यदि कुछ मशीनें काममें नहीं आ सकीं तो इसीलिये कि अचानक योजनामें परिवर्तन हो गया। ब्राचकोने कहा कि योजना बदल जाना क्रावचैन्कोका अपराध नहीं माना जा सकता।

लौसने उसकी बात काटकर कहा : "हम तथ्य चाहते हैं। सबूतमें जो कागज-पत्र दिखानेकी बात थी वे सब कहां हैं?"

"कागज-पत्र मेरे पास इस समय नहीं हैं। किन्तु मुझे विश्वास है कि वे भी मिल जाएँगे। यदि आप क्रावचैन्कोको दोषी ठहराते हैं तो मैं भी दोषी हूँ। मैं उसके ऊपरका अधिकारी हूं। चीफ इञ्जीनियर विशनेव भी दोषी है। खारकोव और मास्कोमें वे सरकारी विभाग भी दोषी हैं, जिनके आदेशके अनुसार हम यहाँ काम करते हैं।"

सहसा सभा भवनके पीछेसे एक चीत्कार सुनाई दिया। ब्राचकोकी बातें तथा हालमें भरी कानाफूसी उस स्वरके नीचे दबकर रह गए। सबने

मुड़कर देखा। दरवाजेमें निकोपोलकी खुफिया पुलिसका प्रधान, दोरोगन, खड़ा था। वह एक भारी भरकम आदमी था, स्थूल नखशिखवाला, जिसकी आँखों और हावभावसे क्रूरता टपकती थी। वह यमदूतकी नाईं वहां खड़ा था। उसका बायां हाथ उसकी बगलमें लटकी पिस्तौल पर टिका था और दाएँ हाथमें एक सिगरेट सुलग रही थी। उसके होठों पर मुस्कान थी। किन्तु उस मुस्कानकी ओटमें और कुछ छुपा था। उसने चिल्लाकर कहा :

"कामरेड ब्राचको, आप भावुकतामें बहे जा रहे हैं। आपने यह सब बकवास करनेके लिये यह बहुत अच्छा समय चुना है!"

एक बार आँखें पसार कर उसने सभाको देखा। ब्राचको घबरा कर चुप हो गया। लौसने सभाका काम समेटनेके लिये जल्दी मचानी शुरू की। उसको विश्वास हो गया कि सभा भङ्ग होते ही दोरोगन मुझे गिरफ्तार कर लेगा।

मैकारोव चिल्लाया : "अब यह मज़ाक बन्द होना चाहिये। इस गद्दारका पार्टीसे बहिष्कार किया जाए।"

लौसने उत्तर दिया : "नहीं, साथियो, हमें क्रावचैन्कोकी बात सुननी चाहिये। वह यदि बोलना चाहे तो उसको अवसर मिल सकता है। मैं उसे पाँच मिनट देता हूँ।"

मैं उठकर मंच पर पहुँच गया। मन ही मन मैंने अपनी दलीलें तैयार कर ली थीं। किन्तु मुझे यह गुमान नहीं था कि मुझे इतना कम समय दिया जायगा। इसलिये अपनी बातोंको संक्षेपमें कहकर मैंने उन्हें कमजोर कर डाला। मैं समझ गया कि अवसर चूका जा रहा है। जब मैं बोल रहा था, तो मैं दोरोगन परसे आँखें नहीं हटा सका। उसके मुखसे जुगुप्सा टपक रही थी। अपनी बात कहकर मैं दोरोगनकी ओर देखता हुआ मंचसे उतरने लगा, तो सभाका वोट ले लिया गया।

दोरोगनकी उपस्थितिसे सभा पर आतंक छा गया था। केवल आधे दर्जन आदमियोंने पार्टीसे मेरे बहिष्कारका विरोध किया। लौसने उनकी परवाह किये बिना ऐलान कर दिया :

"एक मतसे यह सभा नगर कमिटिसे प्रस्ताव करती है कि विक्टर क्रावचेन्कोको पार्टीसे निकाल दिया जाए।"

दोरोगनने मुझसे पूछा : "क्या तुम अपील करोगे ?"

मैंने उत्तर दिया : "अवश्य। मैं कामरेड ओर्डझोनिकिड्जेको तार दूंगा तथा मास्को तथा खारकोवमें प्रतिवाद भेजूँगा। कल मैं नगर कमिटी के सामने भी अपील करूँगा।"

दोरोगनने सिगरेटका कश-खींचकर धीरे-धीरे धुँआ उड़ाते हुए कहा : "क्रावचेन्को, इतने सारे आदमियोंको परेशान करना ठीक नहीं। बुरी बात है..."

मैं बाहर चला आया। अन्धेरे में। कड़ाकेकी सर्दी थी। किन्तु मैंने अपने ओवर कोटके बटन तक बन्द नहीं किये। मैं शरीरकी चेतना खो बैठा था। मैंने चारों तरफ देखा। मुझे पक्का विश्वास था कि पुलिसकी गाड़ी बाहर मेरी राह देख रही होगी। कुछ और लोग भी मेरी गिरफ्तारी देखनेके लिये दौड़कर बाहर आ गए। किन्तु जब उन्होंने देखा कि मेरा कुछ नहीं हुआ, तो उनको कुछ निराशा-सी हुई। घर पहुँच कर मैं एक कमरेसे दूसरे कमरेका चक्कर काटता रहा। जैसे कहीं न कहीं कुछ सान्त्वना पानेकी आशा हो। मैंने ओर्डझोनिकिड्जेके नाम एक तार लिखा। फिर फाड़ दिया। सोचा आखिर मैं हूँ ही कौन। मुझ जैसे करोड़ों पिस रहे हैं। और थक कर मैं कपड़े पहिने पहिने ही बिस्तर पर पड़ गया। सोचा कि कपड़े क्यों उतारे जाएं, किसी समय भी पुलिस आ सकती है और कपड़े फिर पहिनने होंगे। नींद मुझे नहीं आई। या यूं कहना चाहिए कि मेरा शरीर सो गया तो भी मस्तिष्क जागता

रहा। मैं अनेको दृष्टिकोणोंसे एक ही बात सोच रहा था। मेरा जी चाहता था कि एक गोली अपनी खोपड़ीके आरपार कर दूं। मनने गवाही दी और धीरे-धीरे मैं खुशीसे नाच उठा। आज भी मेरा विश्वास है कि यदि मेरे शरीरने मनका साथ दिया होता, यदि मेरा शरीर उस दिन मुर्दे की तरह अपनी हठ न पकड़ता, तो मैं अवश्य ही आत्महत्या कर लेता। यह मन और शरीरका द्वन्द्व मेरे लिए एक नई घटना थी। दोनोंमें होड़ लगी थी कि कौन जीते। आगे चलकर तो मुझे कई बार उस द्वन्द्वका अनुभव हुआ।

मैं उस द्वन्द्वमें डूबा हुआ था कि किसीने द्वार खटखटाया। जोरसे नहीं खटखटाया था, किन्तु मैंने सुन लिया क्योंकि मेरे कान उस ओर लगे थे। सहसा मेरा शरीर जीत गया। मनकी पराजय हुई। मैंने कहा कि वे आ गए। चलो छुट्टी हुई। अपने आपको पूरी तरह जागरूक कर मैंने द्वार खोल दिया। किन्तु मैंने देखा कि मेरे द्वारपर पुलिस नहीं, बल्कि मजदूर क्रियुस्किन खड़ा है। मैंने प्रसन्न होकर कहा : "आओ, आओ भाई क्रियुस्किन। आज आधी रातको कैसे?"

"शायद आना तो मुझे नहीं चाहिए था। आपका गालीचा खराब कर दूंगा। कामसे लौटा हूँ ना। पैदल। रात बहुत खराब है। कीचड़में पांव सन गए।"

"गालीचा जाए जहन्नुममें। तुम भीतर तो आओ। लाओ तुम्हारा ओवरकोट उतरवाऊँ। चाय पीओगे ना? मेरे घरका पता कैसे लगाया?"

"क्यों, तुम्हारा ठिकाना ढूंढना क्या कोई कठिन काम है। हाँ, तुम जाकर यदि कुली लाइनमें मेरी तलाश करते तो दूसरी बात थी। अच्छा, तो फिर भीतर ही चलता हूं।"

"क्या बातें करते हो ? जब मैं खानमें काम करता था तो तुमसे भी खराब कुली लाइनमें रहता था। और अब तो बहुत शीघ्र मुझे जेलकी कोठरीमें जाना है।"

"इसी लिए तो आया हूं। तुम्हारी बात रातको सारे कारखानेमें फैल गई है। मजदूर लोग बहुत परेशान हैं। तुम्हारा मान करते हैं ना, इसी लिए तुम्हारे लिए दुखी हैं। और मैं ? अपनी क्या कहूं ? मेरे जीवनमें तो तुम्हारा बहुत बड़ा स्थान है। इसलिए नहीं कि तुमने मुझे अच्छा काम दिया। बल्कि इसलिए कि तुमने मुझे इन्सान समझा और घोर निराशाके समय मेरा साथ दिया।"

मैंने कुछ चाय बनाकर उसके आगे रख दी। चुसकी लेता हुआ वह कहने लगा :

"सच मानो आज चार सालके बाद मैंने नींबूके साथ चाय पी है। हां, अपनी यहां आनेकी बात तो भूल ही गया। तुम जानते हो कि मैं बूढ़ा आदमी हूं। और इतना छोटा हूँ कि मेरी ओर कोई आँख उठाकर भी नहीं देखेगा। मेरे पास गँवानेके लिए कुछ नहीं, इसलिए मुझे किसी प्रकारका भय भी नहीं लगता। तुम कम्युनिस्ट लोग ही तो कहा करते हो कि बेड़ियोंके सिवाय गँवानेको कुछ नहीं है। कई बार एक चूहा वह काम कर दिखाता है जो कि एक शेरके बसका नहीं। अब मेरी बारी आई है कि तुम्हारी कुछ मदद करूं। इसीलिए यहाँ आया हूँ।"

मैं बहुत दुखी था, फिर भी मैं हंसने लगा। उस सीधे-साधे मजदूर में कितनी इन्सानियत, कितनी हमदर्दी थी। उस भोलेभाले आदमीने सोचा था कि शायद मेरे पास कुछ ऐसी चीज़ हो जो मैं छुपाना चाहता हूं। उसका खयाल था कि शायद मुझे एक साथीकी जरूरत हो। मैंने कहा :

"देखो, क्रियुस्किन, मैं विनाशकारी नहीं हूँ। मुझे कुछ नहीं छुपाना। पुलिसको आने दो। मेरे घरमें अथवा मेरे अन्तरमें कोई भी गन्दगी नहीं है।"

"मैंने कब कहा कि तुम विनाशकारी हो। फिर भी..."

"मैं तुम्हें विश्वास दिलाना चाहता हूँ, क्रियुस्किन, कि तुम तो पहिले ही मेरे लिये काफी कुछ कर चुके हो। जीवन भर मैं तुम्हारा अहसान नहीं भूलूँगा। निकोपोलसे जाऊँगा तो मुझे सबसे बढ़कर जो बात याद रहेगी, वह यह कि तुम आजके दिन मेरे पास आए।"

क्रियुस्किनके साथ बहुत देर तक बातें होती रही। मुझे बचानेके लिये स्वयं खतरा उठानेकी उसकी तत्परता देखकर मेरी हिम्मत लौट आई। मैंने इरादा किया कि एक बार सारा घर छानकर उन खोए हुए कागजोंकी तलाश फिर करूँगा। न जाने किस प्रेरणाके कारण मैंने वह आलमारी खोली, जिसमें मैंने बहुत-सी फिजूलकी चीजोंका अस्त-व्यस्त ढेर लगा रक्खा था। उस ढेरके ऊपर मैंने एक चमड़ेका बैग पड़ा पाया। कई महीने पहिले तक मैं उसे काममें लाता रहा था और मास्को गया तो भी वह मेरे साथ था। फिर उसे खाली करके मैंने योंही फेंक दिया था। अब मैंने एक बार उसे खोलकर फिर टटोला। बैग खाली था। उसे बन्द करके वापिस फैंकने लगा, तो न जाने क्यों मेरा हाथ रुक गया। एक बार फिर खोलकर बैगके भीतर बनी एक छोटी-सी जेब मैंने टटोली। और एक चमत्कार घट गया। उस जेबमें वे सब प्रतिलिपियां लिपटी पड़ी थीं, जिनको खोजते-खोजते मैं निराश हो चुका था। उस मुड़े-तुड़े कागजके बण्डलको मैं देखता रह गया। मेरा वही हाल था जो एक लौट्री जीतने वालेका होता है।

फिर मुझे नींद नहीं आई। मैं ब्राचको और विशनेवको यह शुभ समाचार सुनानेके लिये छटपटा रहा था। आखिर उन दोनोंकी किस्मत भी तो मेरे साथ जुड़ी थी। कारखानेमें पहुँचा तो मजदूर मुझे देखकर हैरान रह गए। रातमें चारों ओर अफवाह फैल चुकी थी कि मैं गिरफ्तार हो गया हूँ। मुझे देखकर मजदूर मुस्कराने लगे। कइयोंने मुझसे हमदर्दी

जताई। मैंने उन बहुमूल्य कागजोंके फोटो उतरवाकर ब्राचको और विशनेवके पास एक-एक सेट भेज दिया। एक तीसरा सेट मैंने एक अन्तरंग मित्रके हाथों सौंपा और साथ ही उसे एक पत्र लिखकर दे दिया। पत्रमें मैंने अपने ऊपर लगाए गए आरोपोंका जिक्र करते हुए बताया था कि उन कागजोंको देखने पर किस प्रकार वे सब आरोप मिथ्या सिद्ध होते हैं। मित्रसे मैंने कह दिया कि यदि मैं गिरफ्तार हो जाऊँ, तो वह मेरी निर्दोषिताके उन प्रमाणपत्रोंको मास्कोमें पार्टीकी केन्द्रीय कमिटिके पास भेज दे। फिर मैंने ओर्डझोनिकिड्ज़ेके पास एक पत्र लिखकर अपनी विडम्बना उसे जता दी। हमारे कारखानेके अध्यक्ष ईवान्चेंकोको भी खारकोवमें मैंने उसी आशयका पत्र लिख दिया। अन्तमें मैंने नगर कमिटीके पास आवेदन पत्र भेजा कि कारखानेकी कमिटिका फैसला गलत है और रद्द किया जाना चाहिये। कामरेड फिलिनने तुरन्त ही नगर कमिटिकी सभा बुला ली।

इस समय तक सारे निकोपोलमें क्रावचेन्को केसकी धूम मच गई थी। इसका एक कारण तो यह था कि मैं एक बड़े कारखानेका डायरेक्टर था। किन्तु सबसे बड़ा कारण यह था कि मैंने डटकर अपने शत्रुओंका सामना किया था। ऐसा बहुत कम होता था। पार्टीके दफ्तरमें नगर कमिटीकी सभा बैठी। दोरोगन और ब्राचकोके सिवाय सभी सदस्य प्रायः नए थे। दो महीनेकी पर्जमें कमिटीके पुराने सदस्य ठिकाने लग चुके थे। लौसने मेरे विरुद्ध आरोप सुनाए। वही पुरानी कहानी। मेरे पिताको उसने मैन्शेविक बताकर बात शुरू की। फिलिनने सब धैर्यपूर्वक सुना। और फिर वे पत्र पढ़कर सुनाए जो कि मेरे पिताने इकट्ठे किये थे। फिलिन बोला :

"ये सब उन लोगोंके बयान हैं जो कि स्वयं अच्छे-भले कम्युनिस्ट हैं और राजनीतिमें क्रावचेन्कोके पितासे सहमत नहीं। इसलिये इनकी

गवाहीमें अधिक सार है। किन्तु साथियो, कमिटीके सदस्यो, आजकी डाकसे मुझे और भी महत्वकी सामग्री मिली है। ज़ारकी पुलिसने क्रावचेंन्कोके पिताके विषयमें एक रिपोर्ट तैयार की थी। बूढ़ा बहुत बार ज़ारकी जेलमें गया था ना। जो कोई उस रिपोर्टको देखना चाहे, देख सकता है। मैंने उसे ध्यानपूर्वक पढ़ा है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि हमारा एक विशुद्ध क्रान्तिकारीसे पाला पड़ा है। वह कभी मैन्शेविक नहीं रहा।"

दोरोगनकी भौंहें तन गईं। वह धड़ाधड़ पाइपका धुआँ उड़ाने लगा। न जाने वह क्या सोच रहा था, क्या योजना बना रहा था। सभामें बैठा-बैठा मैं यही सोचता रहा। मैं जानता था कि पुलिसकी सहायता लेकर ही मेरे विरुद्ध केस तैयार हुआ है। क्या दोरोगन इतनी आसानीसे हाथमें आए शिकारको छोड़ देगा?

लौसने अब मुख्य आरोप लगाना शुरू किया। उसने कहा कि क्रावचेंन्को और ब्राचको दोनों कुछ कागजोंकी बातें कहते रहते हैं, जिनको देखकर यह आरोप झूठा पड़ जाएगा, किन्तु वे कागज इन्होंने कभी यहाँ पेश नहीं किए, खाली बातें करते हैं। ब्राचकोने उसकी बात काटकर कहा:

"नहीं साथी, ऐसी बात नहीं है। वे कागज हमारे पास हैं। ये लीजिए हाजिर हैं।"

दोरोगन चौंककर खड़ा हुआ, किन्तु फिर कुछ शरमाकर बैठ गया। लौस मुँह बाए देखता रहा। एक शब्द भी न बोल सका। ब्राचकोने वे कागज मेजपर फैलाकर सबको समझा दिया कि किस प्रकार मेरे ऊपर लगाए गए आरोप मिथ्या हैं। फिलिनके मुखपर सन्तोषकी छाप स्पष्ट थी। उसने कहा:

"मैं तो सोचता हूँ कि अब क्रावचेंन्कोके विरुद्ध मामला साफ हो गया।"

फिर भी कई घण्टे तक सभा बैठी रही। लौसने उन इञ्जीनियरों तथा कर्मचारियोंके नाम गिनाने शुरू किए, जिनको कि गिरफ्तार किया जा चुका था और जो सब लौसकी रायमें मेरे घनिष्ठ मित्र थे। वह मेरे प्रति द्वेषसे जलकर इतना पागल और बेकायदा हो गया कि दोरोगनको भी उसकी बातें अच्छी नहीं लगीं। उसने लौससे कहा :

"अरे भाई, लौस, तुम तो मेरे मुँहकी रोटी छीननेकी तैयारी कर रहे हो।"

सब हँस पड़े। किन्तु लौसका मुख लाल हो गया। ब्राचकोने प्रस्ताव किया कि कारखानेकी कमिटिने मेरे बहिष्कारका जो फैसला किया था, वह रद्द कर दिया जाए। प्रस्ताव पास हो गया। लौस और दोरोगनने वोट नहीं दिया। तब किसीने प्रस्ताव पेश किया कि क्रावचैन्कोको चेतावनी दी जाए। उसका मन्तव्य था कि यद्यपि मेरे विरुद्ध सब आरोप झूठे हो गए हैं, तो भी मैंने पार्टीके अधिकारियों तथा ट्रेड यूनियनके कर्मचारियोंके साथ बेअदबी दिखाई है और उसका मुझे अफसोस होना चाहिए। शायद दोरोगनके आत्म-सम्मानको सहलानेके लिए यह प्रस्ताव रखा गया था।

इस प्रकार मैं तो बरी हो गया। बस मुझे अफसोस जताना पड़ा। किन्तु मेरे चारों ओर जो आतंक फैला था, वह मैं न भुला सका। मेरे दफ्तर और कारखानेमें चारों तरफ लोग गिरफ्तार हो रहे थे, अचानक लोग लापता हो जाते थे। मैंने जी-तोड़ परिश्रम करना शुरू कर दिया। चौदह, अट्ठारह, बहुत बार तो बीस घण्टे तक मैं काम करता रहता था। मैं अपने-आपको डुबाना चाहता था, ताकि कुछ सोच न पाऊँ। अन्यथा मैं पागल हो जाता। मेरे व्यक्तिगत जीवनमें कोई रस नहीं था, काम करके मुझे कोई सन्तोष नहीं मिलता था। अपने और देशके भविष्यको लेकर मेरे मनमें किसी प्रकारकी आशा नहीं रह गई थी। इस प्रकार

फरवरी १६३७ का एक बहुत बुरा दिन आ पहुँचा। मैं अपनी मेजपर बैठा एक रिपोर्ट तैयार कर रहा था, जो मुझे मास्कोमें इवान्चैन्कोके पास भेजनी थी। इसी समय सहसा मेरा एक कर्मचारी रोता हुआ आफिसमें घुस आया। उसने कहा :

"विक्टर, सर्गो ओर्डझोनिकिड्ज़े मर गए। कैसा दुर्भाग्य है!"

मैं बिना हिले-डुले, चुपचाप बैठा रहा। मुझे काठ-सा मार गया था। मेरी आँखोंसे आँसू बह चले। मेरा एक मित्र और एकमात्र अभयदाता जा चुका था। अगले दिन गर्शगोर्नका टेलीफोन आया। कहने लगा :

"क्या बुरी बात है। मास्कोमें तुम्हारा अभयदाता चल बसा। मैं जल्दी ही तुमसे मिलना चाहता हूँ। बहुत-सी इधर-उधरकी बातें करनी हैं।"

मैं समझ गया कि बाँध टूट गया है और फिर तूफान मुझे निगलना चाहता है।



सोलहवाँ अध्याय

न्याय की खोज

एक दिन प्रातःकाल कारखानेमें पहुँचा तो देखा कि ब्राचको मेरी राह देख रहा है। वह बेहद घबराया हुआ था। भर्राए हुए स्वरमें बोला :

"विक्टर, नगर कमिटीका सेक्रेट्री, कॉमरेड फिलिन, रातको गिरफ्तार कर लिया गया है।"

उसी दिन कामरेड लौसने मुझे बुलाया। विजयके स्वरमें उसने कहा :

"तुम्हारा मामला नगर कमिटीके सामने फिर रखना होगा। तुम जानते हो कि पिछली बार फिलिनने तुमको बचाया था। पर फिलिन तो देशद्रोही निकला। अब तुमको भी समझना है। इतमीनान रक्खो।"

मैंने सोचा था कि मेरी यातना समाप्त हो गई। किन्तु अब समझा कि वह तो अभी शुरू हुई है। गर्शगोर्न ने मुझे बातें करनेके लिए बुला भेजा। जब मैं नियत समय पर, रातके ग्यारह बजे, पुलिसके दफ्तरमें पहुँचा तो देखा कि गर्शगोर्न आया नहीं है। मैं हॉलमें बैठकर उसकी राह देखने लगा। मस्तिष्कमें तरह-तरहके विचार चक्कर काट रहे थे। न जाने ये लोग मेरे लिए कैसा जाल बिछा रहे हैं? क्या मैं आज इस यमपुरीसे निकलकर घर जा सकूंगा? इत्यादि, इत्यादि। कोई एक बजे सी गर्शगोर्न आया। फूले हुए गालोंवाले चेहरे पर उसने उस्तरा चलाकर पाउडर लगाया था और उसकी गंजी चांद चमक रही थी। आराम करके, कामके

लिए तैयार होकर आया था। मैं उसके पीछे-पीछे उसके बड़ेसे दफ्तरमें जा पहुंचा। दफ्तर मेरा जाना-पहिचाना था। उसने कृत्रिम मुस्कराहटके साथ कहा :

"देखो, क्रावचैन्को, मैं तुम्हारा विश्वास करता हूँ। हमारे बीच कोई नासमझी नहीं रहनी चाहिए। अभी तक तुमने वे कागजके टुकड़े दिखा कर पार्टीकी आँखोंमें धूल झोंकी है। किन्तु हम पुलिसवालोंके सामने यह छल-कपट नहीं चल सकता।"

फिर गर्शगोर्न ने वही बातें कहनी शुरू कीं जो न जाने पहिले भी कितनी बार कही जा चुकी थीं। सुबहके चार बजे तक वह मुझे खोदता रहा। कारखानेमें काम करनेवाले कितने ही लोगोंके बारेमें उसने कितनी ही बातें पूछी। मैं समझ गया कि और लोगोंके विरुद्ध भी पुलिसने केस बना रक्खे हैं और मुझसे भेद की बातें जानकर उन केसोंको पक्का किया जा रहा है। अवश्य ही दूसरे लोगोंसे पूछकर मेरा केस पकाया गया होगा।

मेरा हठ देखकर गर्शगोर्न झल्ला उठा। रात ढलती जाती थी और उसका क्रोध बढ़ता जाता था। शुरूमें जो भद्रता उसने दिखाई थी, वह हवा हो गई और उसके स्वरमें मेरे प्रति अपमान भर गया। बीच-बीचमें उसने मुझे भद्दी गालियां भी दीं। उसकी समझमें नहीं आ रहा था कि मैं उसकी बात मानकर अपने आपको अपराधी स्वीकार क्यों नहीं कर लेता। मैं उसे कैसे समझाता कि उसके सारे तर्क गलत हैं, कि मेरे विषयमें उसकी समस्त धारणाएं कपोल कल्पनाके सिवाय कुछ नहीं।

जब मैं पुलिसके दफ्तरसे बाहर निकला तो दिन निकलनेवाला था। नीपर नदी शान्त, मन्थर गतिसे बह रही थी। कोई चाहता तो उसमें डुबकी लगा, सदा सर्वदाके लिए यह सारी यन्त्रणा भुला सकता था। जब जब मैं उस मकानसे बाहर निकला तब-तब ही मैं मौतके लिये लालायित

हो उठा। अपने आपससे कहता था कि ये लोग मेरा पीछा क्यों नहीं छोड़ते। मैं तो केवल काम करना चाहता हूँ, जितना अच्छा काम मुझसे हो सके। ये मेरा पीछा क्यों नहीं छोड़ते ? मेरा शरीर तो थकानसे लड़खड़ाता ही था, मेरे विचार भी लड़खड़ाने लगते थे।

थोड़ा-सा सो लेनेके बाद उस दिन जब मैं कारखानेमें पहुँचा, तो मुझ पर बेहोशी-सी छाई थी। सिर दर्दके मारे फटा जाता था। मैं आशा करने लगा कि रातको आराम कर सकूंगा। किन्तु दोपहरमें ही टेलीफोन आ गया कि मुझे रातको ग्यारह बजे फिर पुलिसके दफ्तरमें जाना पड़ेगा। थका-माँदा, टूटा-फूटा मैं ठीक समय पर वहाँ पहुँच गया। और प्रायः एक मास तक वह अग्नि-परीक्षा चलती रही। किसीकी नींद हराम करके जो परीक्षा रूसमें ली जाती है, वह मैं किसीको समझा नहीं सकता। उस यन्त्रणाको समझनेके लिए उसे अपने शरीर और प्राणों पर झेलनेकी आवश्यकता पड़ेगी। कई सप्ताह तक एक ओर तो पुलिसके दफ्तरमें मुझे रात भर जगाया जाता था, गाली दी जाती थी और दूसरी ओर पार्टीकी सभामें मेरे विरुद्ध मुकदमा चलता था। मुझे पहली बार पार्टीसे निकाला गया था, उसी प्रकार नाटक रचाकर फिर निकालनेकी तैयारी होने लगी। एक कमीशन नियुक्त हुआ, गवाहियाँ इकट्ठी होने लगीं, तथा समाचार पत्रोंमें मुझ पर कीचड़ उछाली गई। धीरे-धीरे मैं यही भूलने लगा कि यह सब मेरे विरुद्ध क्यों किया जा रहा है। मैं बेहद थक गया था, मेरा दिमाग काम नहीं देता था। उस विभीषिकासे कुछ दिनके लिए अपने आपको बचानेके लिए मैंने सोचा कि कहीं और जाकर न्यायकी खोज कर देखूँ। मैंने ब्राचकोको अपनी योजना कह सुनाई। वह बोला :

"मैं तो समझता हूँ कि सब व्यर्थ रहेगा। मेरी रायमें इस समय तुम्हारा निकोपोल छोड़कर जाना ठीक नहीं होगा। तुम्हारी अनुपस्थिति

से ये लोग बहुत लाभ उठाएँगे। किन्तु तुम्हारी हालत भी देख रहा हूँ। शायद कुछ दिनके लिए तुम्हें चला ही जाना चाहिए। अगर तुम चाहो तो मैं कोई काम निकालकर तुम्हें कुछ दिनके लिए कहीं और भेज सकता हूं।"

और मैं न्यायकी खोजमें निकल पड़ा। बहुतसे व्यक्तियों तथा संस्थाओंसे मैं मिलना चाहता था। पहले अपने नगरमें पहुँचा। हताए-विचके बाद जो सज्जन आए थे, उनके विषयमें मैं कुछ नहीं जानता था। पहिले कभी उनको देखा भी नहीं था। किन्तु मैं इतने अपमान सह चुका था, कि एक बार और अपमानित होनेके लिए तैयार हो गया। मुझे यह देखकर आश्चर्य हुआ कि मार्गोलीन भद्र व्यक्ति है। उसने मेरी सारी बातें बड़े ध्यानसे सुनीं और अपनी संवेदना जताई। मैंने कहा:

"मैं चाहता हूँ कि आप मेरी सहायता करें, कामरेड मार्गोलीन। फिलिन गिरफ्तार हो गया, क्या इसीलिए मेरे साथ किया गया न्याय अब अन्याय कहलाएगा? फिलिनसे मेरा क्या सम्बन्ध? मुझे तो कागज पत्र देख कर पक्के प्रमाणोंके आधार पर छोड़ा गया था।"

मार्गोलीनने धीर स्वरमें उत्तर दिया: "धीरज धरो, कॉमरेड। जरा सोचकर देखो कि तुम्हारे साथ जो हो रहा है, वह तो बहुत साधारण-सी घटना है। औरों पर तो न जाने क्या-क्या बीती है। आखिर हम क्रान्तिके युगमें रह रहे हैं। समय नाजुक है। तुम्हारा कर्तव्य है कि पार्टीकी सहायता करो, पार्टीमें मीन-मेख मत निकालो। और मैं नगर कमिटीको तुम्हारे बारेमें एक आदेश भेजे देता हूँ।"

"धन्यवाद। यदि आपने ऐसा किया, तो मैं बहुत कृतज्ञ हूंगा।"

"मुझे धन्यवाद देनेसे क्या होगा, कॉमरेड। कौन जाने कल हम सब कहाँ होंगे।"

मैंने सोचा कि शायद मजाक़में उसने वे शब्द कहें हों। किन्तु मैंने उसकी ओर देखा। वह अत्यन्त गम्भीर था। उसने मजाक़में ऐसा नहीं कहा था। निकोपोल लौटकर मुझे मालूम हुआ कि मार्गोलीन ने नगर कमिटीके नाम पत्र लिखकर न्यायकी माँग की है। उसने अपना वायदा पूरा किया। किन्तु तुरन्त ही वह गिरफ्तार हो गया। एक प्रकार उसकी सिफारिश उल्टी मेरे गले पड़ गई। पुलिसको एक और प्रमाण मिल गया कि मैं देश-द्रोहियोंसे सांठ-गांठ रखता हूँ।

मार्गोलीनसे मिलकर मैं खारकोव जा पहुँचा। मुझे आशा थी कि ईवानचैन्को अवश्य मेरी सहायता करेगा। देशके दस-बारह प्रमुख उद्योग-पतियोंमें से वह एक था। किन्तु उसके दफ्तरमें पहुँचा, तो देखा कि आतंक छाया है। ईवानचैन्को क्रान्तिका वीर माना जाता था; क्रेमलीनसे जो भी पदक इत्यादि मिलते हैं, सब उसने पाए थे; बहुत दिन तक वह सरकारका उच्च कर्मचारी रहा था। उसको अचानक मास्कोमें बुलाया गया। कामका बहाना था। किन्तु वहाँ पुलिसवाले उसकी बाट जोह रहे थे और तुरन्त ही उसे जेलमें ठूंस दिया गया। मुझे दफ्तरमें कोई भी ऐसा नहीं मिला, जिससे कुछ बातें कर सकूं! सब जगह नए आदमी भयभीत-से बैठे थे।

मास्कोकी गाड़ी रातको देरसे छुटती थी। मैंने टिकट खरीद लिया था। सहसा मैंने सोचा कि शायद एलीना शहरमें मिल जाए। मैंने उसके घरपर टेलीफोन किया तो वह स्वयं ही बोली। किन्तु उसके स्वर में न जाने कैसी बेबसी-सी थी। मैं चकरा गया। सोचा, शायद मैं ही मुर्दा हो चला हूँ और एलीना अब मुझे छू नहीं सकती। एक प्रकारसे डरकर मैंने अपने-आपसे पूछा: "क्या उन बदमाशोंने मेरी भावनाके भण्डारको रीता कर दिया है? क्या मेरे मनमें प्यारके अंकुर जलकर नष्ट हो गए हैं?"

होटलमें आकर एलीना मुझसे मिली। वह उतनी ही सुन्दर लगी। पैनी छुरी-सी। किन्तु न जाने कैसा बुढ़ापा-सा उसपर छा गया था। उसके नयनोंमें उदासीका सागर उमड़ आया था। उसने बतलाया कि उसके पतिको पकड़कर फिर किसी गुलामखानेमें पहुँचा दिया गया है और अब वह अपनी माँके साथ रहती है। उसके पास एक साधारण-सी नौकरी थी। मैंने यह नहीं पूछा कि क्या वह अब भी पुलिसमें काम करती है।

जब स्टेशनपर हमने एक-दूसरेसे विदा ली, तो फिर मिलनेका वायदा किया। किन्तु हम दोनों ही अच्छी तरह जानते थे कि हम वायदा निभा नहीं सकते।

(२)

मास्कोसे मुझे प्रेम हो गया था। मास्कोको सुन्दर नगर नहीं कहा जा सकता। माना कि वहाँ नई-नई गगनचुम्बी अट्टालिकाएँ बन रही हैं और सड़कोंको चौड़ा किया जा रहा है, तो भी यह कहना पड़ेगा कि मास्को रूसका सबसे बड़ा गाँव है। मास्को पहुँचकर मैंने होटलमें नाम नहीं लिखाया। होटलमें ठहरनेसे पुलिसका पञ्जा चौबीस घण्टे सिरके ऊपर रहता। मैंने कॉमरेड मिशा और उसकी पत्नीके पास ठहरना उचित समझा और वे राजी भी हो गए।

मिशा पुराना और प्रसिद्ध क्रान्तिकारी था। सरकारने उसको रहनेके लिए अच्छा-सा मकान दिया था और पति-पत्निके गुजारेके लायक पेंशन बाँध दी थी। मेरे पिता और मिशा एक साथ १९०५ की क्रान्तिमें लड़े थे। मिशा पकड़ा गया और दस साल तक उसे जंजीरोंसे बाँधकर जेलमें रखा गया। आखिर १९१७ की क्रान्तिने उसको कारागारसे मुक्त किया था। मिशाने पूछा :

"आन्द्रीका क्या हाल है? क्या अब भी शिकायत करता रहता है?"

"पिताजी अच्छे हैं। किन्तु अपने चारों ओर जो कुछ देख रहे हैं, उसपर उनको झुँझलाहट होती है।"

"हमारी पीढ़ीके लोग काफी दिन जीते हैं। मेरा जी चाहता है, तुम्हारे पितासे फिर मिलूँ। पुराने दिनोंकी बातें करेंगे।"

रातको भोजन करते समय मैंने उसको अपने मास्को आनेका आशय बतला दिया। कामरेड मिशाका लेनिन, बुखारिन तथा क्रान्तिके अन्य महारथियोंसे व्यक्तिगत परिचय था। वह स्टालिन इत्यादि वर्तमान नेताओंसे "तू" कहके बात करता था। जब मैंने अपनी कहानी सुनाई और विशेषकर अपने पितापर लगाए हुए आरोप दोहराये, तो कमरेड मिशा गुस्सेसे पागल हो गया। अपनी कुरसी पीछेको धकेलकर वह खड़ा हुआ और जाकर आलमारीसे एक भारी, जंग लगी जंजीर उठा लाया। उस जंजीरको उसने दोनों हाथोंसे ऊपर उठाया और उसे हिला-हिलाकर आवेश भरे स्वरमें कहने लगा :

"मैंने ये बेड़ियाँ दस साल तक इसीलिए पहनी थीं कि मैं सत्य, न्याय और सम्पन्न जीवनमें विश्वास करता था। और आज कुछ बदमाश लोग जो अपने-आपको क्रान्तिकारी कहकर पुकारते हैं, हमारे बच्चोंपर जुल्म ढाते हैं। मैं उनको शाप देता हूँ। इन खूंखार लोगोंका नाश हो, जो मेरे प्यारे रूसका खून बहा रहे हैं।"

मैंने मास्कोमें अपने दूसरे परिचितोंकी याद की। कौन है जो मेरी सहायता कर सकता है। एक-एक नाम मेरे सामने आता गया और मैं भुलाता गया। कोई मर चुका था, किसीने आत्महत्या कर ली थी और कोई गिरफ्तार हो चुका था। सहसा और एक नाम मेरे सामने आया। लाजारेफ। मैंने अपने आपसे कहा :

"उससे मिलूँगा। एक प्रकारसे उसीने मुझे इस पथ पर चलाया

था जो आज मुझे इस बीहड़में ले आया है। उसीके प्रस्तावसे तो कोयलेकी खानोंमें काम करते हुए मैं युवक संघमें भरती हुआ था।"

जब मैंने उसका द्वार खटखटाया तो दो बूढ़ी स्त्रियाँ बाहर आईं। मुझे देखकर वे कुछ चौंक उठीं और भयभीतसी हो गईं। जब मैंने लाजारेफका नाम लिया तो उनमेंसे एकने रोक कर कहा :

"मेरा लाल खो गया....एक साल हो चला....तुम क्या नहीं जानते! वे बोले कि मेरा बेटा देशद्रोही है। काफिर कहींके! जल्लाद!"

और इस प्रकार मैंने देखा कि मेरा प्रथम गुरु जातसे बाहर किया जा चुका है। लेनिन और मार्क्सके साथ-साथ वह टाल्स्टॉयका भी भक्त था। उसी भक्तिका मोल उसे चुकाना पड़ रहा था।

हारकर मैं उद्योग-सम्बन्धी सरकारी दफ्तरमें पहुँचा। देखा कि सारे दफ्तरमें एक दुःख-दर्दका वातावरण फैला हुआ है। उस वातावरणको छुपाने का भी कोई प्रयत्न किसीसे नहीं बन पड़ रहा था। मेरे पुराने परिचितोंमेंसे कोई नहीं दिखाई दिया, और जो अभागे अफसर यही नहीं जानते थे कि वे स्वयं वहाँ कितने दिन रह पाएँगे उनसे भला मैं कहता भी क्या? सारे दफ्तरमें मानों उन कम्युनिस्ट और गैरकम्युनिस्ट लोगोंके भूत नाच रहे थे जो कि कभी यहाँ काम करते थे।

वह निष्फल यात्रा करके जिस दिन मैं निकोपोल लौटा उस दिन सूरज डूबनेका समय हो चला था। मेरे भीतर सब कुछ मर गया था। मैं हताश हो गया था। जब अपने बंगले पर पहुँचा तो देखा कि अन्धेरा छाया है। बात मेरी समझमें नहीं आई। पाशा कहाँ गयी। मैंने उसको पत्र लिखा था कि मैं आ रहा हूँ और उसे वहाँ होना चाहिए था। मैंने द्वार खोलना चाहा। ताला लगा था। मैंने ज़ोरसे द्वार खटखटाया। कोई उत्तर नहीं मिला। सहसा भयके मारे मेरा दिल बैठ गया, जैसे किसीने मेरा गला धर दबाया हो। जब मैं बराबरके घरमें पूछताछ करने गया तो मेरी आवाज नहीं

निकली। मेरा पड़ौसी कारखानेका एक कर्मचारी था। मुझे देखकर चौंक उठा, जैसे भूतसे सामना पड़ा हो। दबी आवाजमें बोला :

"विक्टर क्रावचैन्को! क्या सचमुच तुम हो? जिन्दा? पकड़े नहीं गए? भगवानका भला हो।"

"क्यों, क्या बात है। पाशा कहाँ गई। मैं तो कार्यवश मास्को गया था।"

"तो तुम नहीं जानते, विक्टर। तुमको तुम्हारे पदसे हटा दिया गया है और तुम्हारा घर खाली करा लिया गया है। मुझे नहीं मालूम तुम्हारा सामान कहाँ हैं। एक गाड़ीमें लादकर कहीं ले गए हैं......"

मैंने ब्राचकोको टेलीफोन किया। उसने कहा :

"तुम वापिस आ गए यह जानकर खुशी हुई।"

"किन्तु हुआ क्या? मुझे मेरे घरसे क्यों निकाल दिया!"

"कोई चिन्ता नहीं। अपने-आपको सम्भाले रक्खो। नगर-कमिटीकी आज्ञानुसार मुझे तुमको पदच्युत करना पड़ा है। तुम्हें दूसरे विभागमें काम दे रहा हूँ। तुम तो समझ सकते हो कि मैं कितना बेबस हूं। मेरा दिल टूट रहा है।"

"वह तो मैं समझता हूँ। लेकिन रात कहाँ बिताऊँ?"

"हाँ! मैंने कारखानेके होटलमें तुम्हारे लिए एक कमरा ले दिया है। कमरा तो क्या है। पर और कोई स्थान भी तो नहीं था।"

मैं लौटकर शहरमें पहुँचा। होटल मैनेजर मेरी राह देख रहा था। उसने हमदर्दी दिखाई। वह जानता था कि मैं बड़े बंगलेमें रह चुका हूँ और बड़ा छोटा मन करके उसने वह कमरा मुझे दिखाया। वह कुठरिया जिसकी दीवारोंसे चूना झड़ रहा था अब मेरा घर बन गई। निकोपोलमें अपने बाकी दिन मैंने वहीं बिताए। मेरी पुस्तकें तथा अन्य सामान कमरेके कोनोंमें अस्तव्यस्त पड़ा था। एक खटियाके अतिरिक्त वहाँ एक छोटी-सी मेज, एक आलमारी, एक छोटा-सा आईना तथा दीवारपर स्टालिनकी एक रंगउड़ी तस्वीर थी। बाथरूम तो क्या, वहाँ हाथ-मुँह धोनेका प्रबन्ध तक नहीं था। किन्तु मैं तो बेहद थका हुआ था। पड़ कर सो रहा और अगले दिन काफी देरसे उठा।

सतरहवां अध्याय
काली रातें

टेलीफोन बज उठा। जब मैंने गर्शगोर्नका स्वर सुना तो मेरा दिल बैठ गया। वह बोला : "ओहो, तो पन्छी घूम-फिरकर लौट आया है। मेरा खयाल है कि होटलमें नई जगह तुमको पसन्द आई होगी। रातको मिलने आना। हाँ।"

मुझे उसकी बाट जोहनी पड़ी। आते ही उसने कहा :

"क्रावचैन्को, तुम्हारी यात्रा सफल रही ना। किन्तु हमको यह बात पसन्द नहीं कि हमारा काम इस तरह बीचमें रुक जाए।"

"पर मैंने तो इजाजत ले ली थी।"

"सो मैं जानता हूँ। मैंने सुना है कि तुम सिफारिश खोजने गए थे। इवान्चैन्को और मार्गोलीन जैसे आदमियोंकी सिफारिश! हैं? किन्तु अफसोस है कि वे दो देशद्रोही पकड़े गए। अजीब-सी बात है। तुम्हारे सारे मित्र और अभयदाता देशद्रोही निकलते हैं। फिलिन, मार्गोलीन, इवान्चैन्को और न जाने कौन-कौन। बताओ तो, मार्गोलीनने नगर-कमिटीके पास तुम्हारे समर्थनमें ऐसा अच्छा पत्र क्योंकर लिख दिया? शायद तुम्हारा पुराना मित्र होगा? क्यों?"

"मैं उस व्यक्तिसे जीवनमें पहली बार उस दिन उसके आफिसमें मिला हूँ।"

"मुझे विश्वास नहीं होता। किन्तु छोड़ो वह बात। मैं तो उस घृणित विनाशकारी ईवान्चैन्कोके बारेमें कुछ जानना चाहता हूँ। तुम तो उस गद्दारको बहुत दिनसे जानते हो...."

"जानता तो हूं। किन्तु वह गद्दार है यह मुझे नहीं मालूम।"

"तुम्हारे पाइप-विभागसे उसका गहरा सम्पर्क था। क्या तुम बता सकते हो कि वह क्या करता रहता था।"

मैं जो कुछ जानता था, मैंने बतला दिया। गर्शगोर्नके मोटे, चमकीले मुख पर क्रोध छा गया। बोला :

"क्रावचैन्को, मज़ाक छोड़ो। तुम तो जानते हो कि इन सब बातोंमें मुझे दिलचस्पी नहीं।"

"किन्तु मैं तो यही बातें जानता हूँ।"

मेरा खयाल है कि हम और बातें याद करनेमें भी तुम्हारी मदद कर सकते हैं। अभी तुमको सम्भाला है ना। पहिले भी तुम जैसे हठी लोगोंसे हमारा पाला पड़ चुका है।"

दिन निकल आया, किन्तु गर्शगोर्न चिल्ला-चिल्लाकर मुझसे वही बातें पूछता रहा जिनका उत्तर मैंने दे दिया था। उसका व्यवहार उत्तरोत्तर खराब होता गया था। अचानक उसने पूछा :

"अच्छा, क्रावचैन्को, बताओ तो, तुम गिरफ्तार होनेसे इतना क्यों डरते हो ! शायद अपने मनमें तुम जानते हो कि तुम अपराधी हो।"

"माफ कीजिए। सुबहके पाँच बच चुके हैं। आठ बजे मुझे काम पर जाना है। यदि आपने अभी मुझे गिरफ्तार नहीं किया है तो मैं और लम्बी बहसमें पड़ना नहीं चाहता।"

उस दिन दोपहरके बाद मैं अपने नए आफिसमें काम कर रहा था। नींद आ रही थी, सारे जोड़ोंमें दर्द था। आँखें जल रही थीं। मैं काममें जी लगानेकी भरपूर कोशिश कर रहा था कि टेलीफोन बज उठा।

ब्राचको बोल रहा था। उसके स्वरमें इतना दर्द था कि मुझे पहिचानने में कठिनाई हुई। कहने लगा :

"विक्टर, अब मेरी बारी आ गई है। अभी कारखानेकी कमिटीकी सभा समाप्त हुई है। मुझे पार्टीसे निकाल दिया गया है। बीस बरसके बाद!"

"यह कैसे सम्भव है?"

"किन्तु ऐसा ही तो हुआ है। आज रातको पार्टी आखिरी फैसला करनेके लिए गुप्त सभा करेगी। तुमसे एक बात कहता हूँ। मान लेना। मैं चाहता हूँ कि तुम उस सभामें मेरा समर्थन न करो। मामला और भी बिगड़ जाएगा।"

अगले दिन ब्राचको कामपर नहीं आया। मैंने सुना कि प्रादेशिक कमिटीके पास अपील करनेके लिए नीपरोपेट्रोस्क जा रहा है। किन्तु पीछे मालूम हुआ कि उसको रास्तेमें ही गाड़ीसे उतारकर गिरफ्तार कर लिया गया है। फिर मैंने उसको कभी नहीं देखा और आज तक मुझे नहीं मालूम कि उसका क्या हुआ। इन्हीं दिनों नगर-कमिटीने मेरे केसको फिर उधेड़ना शुरू कर दिया। सबको विश्वास हो गया कि अब मेरा काम तमाम होनेमें देर नहीं। किन्तु मेरे भाग्यमें जोर था। उसी दिन निकोपोलके पत्रोंमें एक लम्बा-सा लेख निकला, जिसमें इञ्जीनियरोंकी एक टोली पर राजनैतिक आरोप लगाए गए थे। विशेषकर यह आरोप कि वे मजदूरोंका अपमान करते हैं। लेखमें लिखा गया था कि प्रधान अपराधियोंमें मैकारोव और शैंकेविच प्रमुख हैं। ये दोनों मेरे शत्रु थे। इस प्रकार जो चोट मुझपर पड़नेवाली थी वह कहीं और जा गिरी। लौस समझ गया कि क्रावचैन्कोके विरुद्ध पुराने आरोप उखाड़ना मूर्खता होगी—क्योंकि उन आरोपोंके लगानेवाले गवाह खुद फँस गए थे। मैकारोव और शैंकेविचको पार्टीसे निकाल दिया गया। पीछे चलकर

मुझे मालूम हुआ कि उस लेखका ऐन मौकेपर छपना कोई अकस्मात् घटना नहीं थी। बूढ़े खिलीनिन एवं दूसरे मित्रोंने जानबूझ कर ऐसा किया था।

कई सप्ताहके उपरान्त एक रातको मुझे जगाया गया। नीचे हॉलमें मेरा टेलीफोन आया था। कपड़े पहनकर मैं नीचे उतर गया। गर्शगोर्न बोल रहा था। कहने लगा कि तुरन्त पुलिसके दफ्तरमें चले आओ। फिर मैं उसके पास जा बैठा। उसको हृष्ट-पुष्ट देखकर मुझे ईर्ष्या हो रही थी। मेरे शरीरका दिवाला निकल गया था। नींद नहीं आती थी, चिन्तासे दबा रहता था। कारखानेमें बेहद गड़बड़ फैलनेके कारण मन नहीं लगता था। मैं सब प्रकारसे मैं हारा-थका बन गया था। गर्शगोर्नने कहा :

"तो फिर कुछ गपशप हो जाए। मुझे आशा है कि अबकी बार तुम समझदारी दिखाओगे, हमारी सहायता करोगे।"

"आप चाहते क्या हैं?"

गर्शगोर्नने टेबलपर हाथ दे मारा। फिर मेरी तरफ घूसा दिखाते हुए बोला :

"यहाँपर हम सवाल पूछते हैं। तुम्हारा काम है उत्तर देना, सवाल पूछना नहीं। समझ गए। मैं फिर कहता हूँ कि ईवान्चैन्कोके विनाशकारी कुकृत्योंके बारेमें जो कुछ जानते हो कह दो। तुमको सोचनेके लिए काफी समय मिल चुका है।"

"मैं कुछ नहीं जानता।"

"क्रावचैन्को, जरा मेरी बात सुनो। तुम्हारे लिए बहुत अच्छा होगा कि तुम सब बातें कह दो। तुम बहुत कुछ दुःख-दर्दसे बच जाओगे। हमारे पास ऐसा भी उपाय है कि तुम जैसे लोग बोलने लग जाएँ। हम तुमको रेशमकी तरह मुलायम और मक्खनकी नाईं चिकना बना सकते हैं। समझ गए?"

"मैं सच-सच कह रहा हूँ। जो बातें मैं जानता ही नहीं, वे भला कैसे बताऊँ।"

"तो फिर तुम बतलाना नहीं चाहते ?"

उसी समय टेलीफोन बज उठा। गर्शगोर्नने बतलाया कि उसे दोरोगनने बुलाया है और मुझे बाहर बरामदेमें इन्तजार करना होगा। हम एक साथ दफ्तरसे बाहर निकले और एक सिपाहीने मुझे सम्भाल लिया। गशगोर्न सिपाहीसे कहता गया कि मुझपर आँखें रक्खे। बरामदेमें चार-पाँच आदमी और भी खड़े थे। सबके मुख दीवारकी ओर थे और हाथ पीठ पीछे। सिपाहीने मुझे भी उन्हींकी तरफ धकेलते हुए उसी मुद्रामें खड़े होनेका आदेश दिया। मैं वहाँ जा खड़ा हुआ। हमलोग एक दूसरेको देख नहीं सकते थे। बरामदेमें अन्धेरा था। न हमें यह मालूम हो सकता था कि हमारी पीठ पीछे बरामदेमें क्या हो रहा है। मैं चार घण्टे वहाँ खड़ा रहा। कुछ और लोगोंको लाकर हमारी कतारमें शामिल कर दिया गया। पहिले मैंने सुना था कि पुलिस इस प्रकारकी यन्त्रणा देती है। अब मैं अपने शरीरपर सब कुछ सह रहा था।

यदि किसीको घण्टों तक एकटक खड़े रहकर शून्यमें ताकने पर वाध्य नहीं किया गया है, तो मैं उसे समझा नहीं सकता कि मुझपर क्या बीती। प्रतिपल मेरे हाथ, बाहें तथा पाँव भारी पड़ने लगे, निष्प्राण होने लगे। शरीरका एक-एक अंग मानो टूटकर अलगसे एक बोझ बन गया और उस बोझके नीचे दबकर मैं मरने लगा। प्रतिपल मुझे लगता था कि मैं और नहीं सह सकूँगा, किन्तु फिर भी सहता रहा। बरामदेके दोनों ओर बने कमरोंमेंसे हृदय-विदारक आर्तनाद सुनाई देता था। चीत्कार, गालियाँ, थप्पड़, घूँसोंकी आवाज़, और धरतीपर गिरते हुए शरीरोंकी धड़ाधड़। लोगोंको मार-कूट कर कुछ बातें कहलवानेका प्रयत्न किया जा

रहा था। धीरे-धीरे दिनका उजाला फैलने लगा। मेरे सामनेकी दीवार चमकने लगी। तब कहीं गर्शगोर्न लौटा। बोला :

"आओ, क्रावचैन्को, मेरे साथ आओ। मुझे अफसोस है कि तुम्हें इन्तजार करना पड़ा। लेकिन मेरे पास काम बहुत है। उफ, कितना काम है।"

मैंने मुड़कर देखा। गर्शगोर्न खड़ा मुस्करा रहा था। मैं उसके पीछे हो लिया। मेरी आँखोंमें अन्धेरा आ रहा था। उसके आफिसमें बैठकर भी मुझे चैन नहीं मिला। सारा शरीर एकदम काठकी नाईं जड़ हो गया था। गर्शगोर्नने प्रश्न पूछे तो उसके शब्द मेरी समझमें नहीं आए। दिमागने काम करनेसे इन्कार कर दिया। हारकर वह बोला :

"अच्छा। जाओ, घर चले जाओ। कुछ सो लो। फिर बुलाऊँगा। और हाँ, हमारी जो यह गपशप होती है सो हमारे ही बीच रहे। किसीको कुछ कहना नहीं। यदि कहीं होठ हिलाए तो तुम्हारे हक़में बुरा होगा।"

होटलसे लौटकर मैं बरफ-से ठण्डे पानीमें नहाया और बिस्तर ठीक किए बिना ही पड़ रहा। कामपर जानेका वक्त हो गया, किन्तु एक पल भी आँखें नहीं झपकीं। दफ्तरमें पहुँचा तो पुलिसका आदेश आया मिला। आधीरातको फिर हाजिर होना था।

उस रात गर्शगोर्न बड़ी भद्रतासे मिला। मुझे चाय और खान-पानके लिए पूछा। मैंने इन्कार कर दिया। वह कहने लगा कि मैं उससे व्यर्थ ही नाराज हूँ, कि मैं उसको पशुकी नाईं व्यवहार करने पर वाध्य कर रहा हूँ। बोला :

"आज रात एक मेहरबानी कर दो, क्रावचैन्को। पुलिस और पार्टी तुम्हारी कृतज्ञ होंगी। कोई बड़ी बात नहीं है।"

"क्या चाहिए?"

"बस तुम्हारे हस्ताक्षर चाहिए। तुम एक इञ्जीनियर हो, कारखानेके डायरेक्टर रहे हो और पार्टीके वफादार सदस्य माने जाते हो। अपनी खुशीसे एक बार हस्ताक्षर कर दो। देशकी रक्षाका प्रश्न है। तुम्हारे कारखानेमें बनी पाइप फौजी रसायन-उद्योगमें भेजी गई थीं। उनमें बहुतसे दोष निकले हैं। उसमें तुम्हारा कोई दोष नहीं। तुमको तो जो सामान मिला उसीकी पाइप तुमने बना दी। किन्तु ऐसा विश्वास किया जाता है कि मास्को और खारकोवमें कुछ षडयन्त्रकारियोंने जानबूझकर खराब सामान भेजा था। जिस कारखानेका बना फौलाद तुम्हारे पास भेजा गया था, उसका डायरेक्टर रोगोचेव्स्की गिरफ्तार हो चुका है।"

मैं समझ गया कि पुलिस एक झूठा केस ां यार करना चाहती है। मैंने कहा :

"मेरा खयाल नहीं है कि जानबूझ कर खराब फौलाद बनाया गया था। फिर भी जिस कागजपर आप मेरी सही चाहते हैं, वह मैं पढ़ लेना चाहता हूँ।"

"बड़ी खुशीसे। यह लो।"

उसने मेरे हाथमें टाइप किए हुए बीस पन्ने दे दिए। मैं एक घण्टे तक उन्हें पढ़ता रहा। पढ़ते-पढ़ते मुझे पसीना आ गया। एक केस बनानेके लिए झूठ-सचको मिलाकर एक रोमांचकारी कहानी गढ़ी गई थी। उस कहानीमें दर्जनों नाम थे। कुछको मैं जानता था। देशकेबड़े-बड़े इन्जीनियर, उद्योगपति तथा साधारण फौरमैन इत्यादि सभीको लपेटा गया था। पढ़ना समाप्त करके मैंने कहा :

" इसपर मैं सही नहीं कर सकता। मुझे जो फौलाद मिला उसके पाइप मैंने बना दिए। कभी-कभी शायद फौलाद निकम्मा रहा हो। इससे अधिक मैं कुछ नहीं जानता और न इससे अधिक कुछ कहूँगा ही।"

"यह बात है ? तो हमारे देशके और कितने ही बड़े-बड़े आचार्यों और उद्योगपतियोंने क्यों हस्ताक्षर कर दिए ? क्या तुम अपने-आपको उन सबसे बड़ा आदमी समझते हो ?"

उस दस्तावेजपर वास्तवमें रूसके बड़े-बड़े वैज्ञानिकों एवं इञ्जीनियरों के हस्ताक्षर थे। सबने मिलकर माना था कि षडयन्त्र किया गया है। किन्तु मैं जानता था कि वे हस्ताक्षर कैसे प्राप्त किए गए हैं। गर्शगोर्न मुझे समझाता रहा। धमकाता था। दिन निकल आया। वास्तवमें वह दूसरे ढंगसे मुझे फाँसना चाहता था। यदि दूसरोंके विरुद्ध मैं गवाही देता, तो स्वयं मेरे विरुद्ध प्रमाण जुट जाता। हारकर उसने मुझे उस दिन के लिए मुक्त कर दिया। मैं चलने लगा, तो गालियाँ देते हुए उसने कह दिया कि सोच-समझकर आना।

इस प्रकार कई महीने तक प्रत्येक रात्रिको मुझे थानेपर बुलाकर धमकाया जाता था, बहलाया-फुसलाया जाता था। मुझे जगा-जगाकर थका डालनेकी कोशिश हो रही थी। सारे दिन मैं नए आफिसमें काम करता था; क्योंकि वहाँ किसी प्रकारकी असावधानी होनेसे उनको मेरे विरुद्ध एक नया प्रमाण मिल जाता। और सारी रात मुझे वे तंग करते थे। एक रातको मुझे चार-पाँच घण्टे तक बरामदेमें दीवारकी ओर मुँह करके खड़ा करनेके बाद, गर्शगोर्नने बिना बातचीत किए ही घर भेज दिया। कहने लगा कि उसके पास बातचीतके लिए और समय नहीं रहा। किन्तु अगली रातको उसने एक नया आरोप लगाया। कहने लगा:

"क्रावचैन्को, तुम्हारे पास दो अमेरिकन रहते थे। रहते थे ना ?"

"हाँ। वे अमेरिकासे आई मशीनोंको चालू करनेमें हमारी सहायता करते थे।"

"उस गद्दार ब्राचकोने उनको और कहीं न ठहराकर तुम्हारे पास ही क्यों ठहराया ?"

"शायद इसलिए कि मैं क्वाँरा हूँ। घरमें और कोई नहीं है। मैं उस बड़े-से बंगलेमें अकेला रहता था ना।"

"एक बात बतलाओ। क्या तुमने विदेशियोंसे सोवियत् सरकारकी शिकायत की थी?"

"नहीं। बिल्कुल नहीं। वे तो अभी भी रूसमें हैं। आप उनसे पूछ सकते हैं।"

"मुझे क्या करना है, यह सिखानेकी कोशिश मत करो। तुम्हारी धृष्ठतासे मैं तंग आ चुका हूँ। ठीक बताओ, उन अमेरिकनोंसे तुम्हारा क्या राजनैतिक सम्बन्ध था?"

"कुछ भी नहीं। मैं उनके साथ भद्र व्यवहार करता था। मेरा कर्त्तव्य था।"

"किन्तु वे मशीनें तो अमेरिकासे ईवान्चैन्कोने मँगाई थी ना?"

"हाँ।"

"तो यह बहुत संभव है कि ईवान्चैन्को और उन अमेरिकनोंने मिलकर षडयन्त्र रचा हो।"

इस प्रश्नपर कई घण्टे तक बातें होती रहीं। सहसा द्वार खुला और क्रोधसे लाल-पीला दोरोगन भीतर आया। वह होंठ काट रहा था। गर्शगोर्न उठकर खड़ा हो गया। दोरोगनने पूछा:

"गर्शगोर्न, यह विनाशकारी तुमको कितने दिन अपनी उँगलियोंपर नचाता रहेगा? तुम पुलिसके अफ्सर हो या चीथड़े? यह बुरा हुआ कि हमने एक साल पहले इसे नहीं पकड़ा और इसका मामला नगर-कमिटी के हाथमें दे दिया।"

गर्शगोर्न सकपका-सा गया। मैंने देखा कि वह अपने ऊपरके अधिकारीसे बहुत डरता है। बोला:

"कॉमरेड महाशय, मैं अपनी पूरी कोशिश कर रहा हूँ। एक

महीना हो गया, सारी रात इसके साथ सिर खपाता हूं। अगर आप चाहते हैं कि कुछ सख्ती........"

दोरोगनने उसकी बातें अनसुनी कर दीं। वह तो मेरे सिरपर खड़ा-खड़ा सुलग रहा था! जाते-जाते कह गया :

"क्रावचैन्को, समझ जाओ, वरना तुम्हारी शामत आ जाएगी।"

प्रायः एक घण्टे बाद जब गर्शगोर्नने मुझे छोड़ा, तो मैंने दोरोगनसे बातें करनेका निश्चय कर डाला। मैं चाहता था कि वे इधर करें या उधर, वह यन्त्रणा समाप्त होनी चाहिए। उसके दफ्तरके बाहर जाकर मैंने गार्ड को अपना कार्ड दे दिया और तुरन्त भीतर बुला लिया गया। दोरोगनने चिल्लाकर पूछा : "क्या चाहते हो ?"

"मैं जानना चाहता हूं कि आप मुझसे क्या चाहते हैं। इतने दिन से मुझे तंग किया जा रहा है। रोज नए-नए आरोपोंका आविष्कार किया जाता है। कामरेड दोरोगन, आप तो नगर-कमिटीके सदस्य हैं। आप जानते हैं कि वहाँसे मैं साफ छूट चुका हूं। एक कम्युनिस्ट होनेके नाते मैं आपसे पूछता हूं........."

"एक कम्युनिस्टके नाते........" वह गरज उठा और पागल साँढ़ की तरह उठकर मेरी ओर दौड़ पड़ा। तड़ातड़ चाँटे मारकर उसने मेरा मुँह लाल कर दिया। फिर मेरी गर्दन धर दबाई और मुझे बुरी तरह झकझोरने लगा। वह बड़ा बलिष्ठ आदमी था और उसके पंजे मानो लोहेके बने थे। मेरा दम घुटने लगा और आँखोंमें अन्धेरा छा गया। दरवाजेके बाहर धक्का देते हुए उसने कहा :

"चले जाओ, नहीं तो जानसे मार डालूँगा।"

मैं लड़खड़ाकर खड़ा हो गया और दो मिनट खड़ा होकर अपने-आपको सँभालता रहा। मुझे ठीक तरहसे याद नहीं कि उस दिन मैं

होटल किस तरहसे पहुँचा। बड़ी कठिनाईसे सीढ़ियाँ पार करके मैं बिस्तरपर पड़ रहा और गाढ़ी नींदमें सो गया।

(२)

१६३७ के शरद ऋतुमें बार-बार पुलिस मुझे तंग करती रही और सालके अन्तिम दिनोंमें फिर मेरी रातें काली होने लगीं। तरह-तरहके प्रसंग उठाए गए। कारखानेमें गिरफ्तारियाँ चल रही थीं, और प्रत्येक केसको लेकर मुझसे पूछताछ की जाती थी। हारकर मैंने आखिरी क़दम उठाया। पुलिससे डरकर मैं वैसा नहीं करना चाहता था, किन्तु और रास्ता मुझे नहीं सूझा। मैंने केन्द्रीय कमिटिके कन्ट्रोल कमीशनको लिख भेजा कि मुझे बिना बात, झूठमूठके आरोप लगाकर तंग किया जा रहा है। कुछ दिनके बाद कमीशनका प्रतिनिधि जाँच करने आ पहुँचा। उसने कहा कि जब मुझे नगर कमिटीने छोड़ दिया है तो मुझे क्या शिकायत है? मैंने कहा कि मेरे विरुद्ध चेतावनीका प्रस्ताव पड़ा है, वह वापिस होना चाहिये और मैं चाहता हूं कि पार्टीका कन्ट्रोल कमीशन मेरे ऊपर लगाए आरोपोंकी निगरानी करे।

इन्हीं दिनों नया संविधान लागू हुआ था। निकोपोलमें चारों ओर पर्चे चिपकाए गए थे कि नया चुनाव होगा। २ दिसम्बर १६३७ को चुनाव निश्चित हुआ था। सारे पत्र, रेडियो, तथा गली-मोहल्लों, कारखानों और खानोंमें लगे लाउड स्पीकर चिल्ला-चिल्लाकर कह रहे थे: "पार्टीका साथ दीजिए; समाजवादी व्यवस्थाके लिये वोट दीजिये; हमारा प्यारा नेता और गुरु, कामरेड स्टालिन, दीर्घजीवी हो।" मैं जब अपनी और मुझ जैसे करोड़ोंकी दुर्दशा देखता था, तो ये नारे एक परिहास-सा लगते थे। १२ दिसम्बर को मैंने लाइनमें खड़ा होकर वोटका कागज लिया। उसमें पार्टी द्वारा नियुक्त लोगोंकी एक ही लिस्ट थी।

कागज पर "हाँ" या "ना" लिखनेका कोई स्थान नहीं था और न ही हमको दूसरे नाम लिखकर अपनी इच्छा प्रगट करनेकी छूट थी।

उधर मेरी शक्ति क्षीण होने लगी। मैं चाहने लगा कि चाहे मुझे कुछ भी करना पड़े, किन्तु किसी तरह यह यन्त्रणा बन्द होनी चाहिये। बैठा-बैठा मैं दिवास्वप्नमें डूब जाता था। मानों मैंने उनके कहे अनुसार अपने हस्ताक्षर दे दिये, चारों ओर रूसका राष्टगीत ध्वनित हो उठा और मुझे एक जलूसके साथ ले जाकर मेरी मां और दादीने नरम-सी शय्या पर सुला दिया। इन्हीं दिनों बूढ़ा सिलीनिन मुझसे होटलमें आकर मिला। मैंने सोचा कि क्या उसको मालूम हो गया है कि मैं टूट रहा हूँ, कि मैं घुटने टेकनेवाला हूं ! बूढ़ा कहने लगा :

"तुम ऐसे मरेसे क्यों दिखाई देते हो ! मुझे ऐसा लगता है कि तुम पर बहुत बुरी बीत रही है। मुझे सब साफ-साफ बतला दो। तुम मेरा विश्वास कर सकते हो !"

मैं तो सुनानेके लिये तैयार था ही। किसीके सामने अपना दिल खोल देनेके लिये मैं छटपटा रहा था। मैंने सिलीनिनको सब कुछ बतला दिया, कि किस प्रकार महीनोंसे मुझे जगाया जा रहा था और किस प्रकार तरह-तरहके कागजों पर मेरे हस्ताक्षर लेनेकी कोशिश हो रही थी। सिलीनिनने कहा :

"कामरेड, मेरी बात मानो। सही मत करो। तुम इतने दिन तक सब सहते रहे हो। और सह जाओ। सही देकर भी तुम बच नहीं सकते, बल्कि उनका फँदा तुम्हारे ऊपर और भी मजबूत हो जाएगा और तुम कभी भी उसमेंसे निकल नहीं पाओगे।"

"किन्तु मेरी रक्त मांसकी देह कितने दिन तक यह सब अत्याचार सह सकती है !"

"मैं जानता हूं, मैं सब समझता हूँ, बन्धु। इस जीवनमें मैंने बहुत कुछ देखा है, बहुत-कुछ दुःख-दर्द झेला है। किन्तु मेरा अनुमान है कि अब पर्ज समाप्त होनेवाला है। अब पर्जके लिए कम्युनिस्ट ही कहाँ बचे हैं। निकोपोल जिलेकी पार्टीके चालीस प्रतिशत सदस्य पार्टीसे निकाले जा चुके अथवा गिरफ्तार हो चुके। गैर-कम्युनिस्टोंकी तो कोई गिनती ही नहीं। मैं पक्की बात तो नहीं जानता, किन्तु नगर कमिटीके एक सदस्यसे बातचीत करके मुझे ऐसा लगा कि कोई नया आदेश आया है। अब शायद पार्टीकी इजाजतके बिना और कम्युनिस्टोंको गिरफ्तार नहीं किया जाएगा। इसीलिए कहता हूँ कि कुछ दिन तुम और अड़े रहो।"

नया साल आ गया। गर्शगोर्नने एक नया क़ागज मेरे सामने रक्खा। उसमें मेरे "अपराधों" का पूरा ब्योरा लिखा था। इसके सिवाय मेरे मित्रों तथा सहकर्मियोंके "अपराधों" में भी मेरा दायित्व बताया गया था। शायद उनका खयाल था कि इस प्रकार मैं उनकी बातें मान जाऊँगा। गर्शगोर्नने उस कल्पित कहानीको पढ़कर सुनाते हुए, मुझसे कहा:

"एक बात समझ लीजिए। पुलिस कम-से-कम यह आशा आपसे रखती है कि आप इसपर सही कर दें। अब खींच-तानके लिए समय नहीं रह गया। यदि तुम हमारी बात नहीं मानते तो हमारे साथ झगड़ा मोल लेते हो, जो तुम्हें मंहगा पड़ेगा। तुम इस रोजकी कसरतसे थक गए हो। मैं भी थक गया हूँ। अब बात मान जाओ। लो, पेन्सिलसे सही करोगे या पैनसे?"

"किसीसे भी नहीं। इस कागजमें जो लिखा है वह तो सत्य नहीं है। और मैं कुछ नहीं जानता। इस कागजमें जो कुछ मुझसे कहलवाया जा रहा है, वह मैंने तो कभी नहीं कहा।"

"मैं कहता हूँ कि सही कर दो। बिचकोव और ईवान्चेन्कोने भी तो सही की है।"

"तुम चाहे जो करो, किन्तु मैं कभी भी सही नहीं दूंगा। जो काम मैंने किए ही नहीं वे भला कैसे मान लूँ।"

सहसा गर्शगोर्न मुझपर टूट पड़ा। गालियोंकी झड़ी तो उसने लगाई ही, किन्तु साथ-साथ मेरे ऊपर लात और घूंसे भी पड़ने लगे। मेरे नाकसे खून बहने लगा। मेरे मुखमें खून भर गया। माथेमें चोट लगकर आँखोंमें खून गिर गया और एक प्रकारसे मैं अन्धा हो गया। बार-बार वह कहता था "सही करो" और मुझे चुप देखकर फिर मारने लगता था।

इसी समय मैंने दोरोगनकी आवाज सुनी। वह भी कमरेमें आ गया था। उसकी पदचापको मैं पहिचान गया था। उसने भी आते ही मुझपर घूसे बरसाने शुरू कर दिए। मैं धरती पर गिर गया और अपने-आपको मारसे बचानेके लिए हाथ-पांव समेट कर गोलमोल हो गया! और चार बूट मुझे कुचलते और ठुकराते रहे। जब मैं अधमरा हो गया तो सिपाहियोंको बुलाकर दोरोगनने हुक्म दिया।

"ले जाओ बदमाशको। बाहर फेंक दो।"

बाहर गलीमें मैं किसी प्रकार उठ बैठा और फिर लड़खड़ाता हुआ बरफके तूफानमें घरकी ओर लौट चला। हवाके झोंके कोड़ोंकी नाईं मुझपर पड़ रहे थे। होटलमें घुसते ही मेरी आँखें एक झण्डे पर पड़ी, जिस पर लिखा था—"एक सुन्दर, समाजवादी जीवनके निर्माणके लिए स्टालिनका साथ दीजिए।"

बिना कपड़े उतारे ही मैं बिस्तर पर पड़ा रहा। जिधर भी करवट लेता था, स्टालिनकी तस्वीर मेरी आँखोंके सामने आ जाती थी। मुझे मारपीटका इतना गिला नहीं था, किन्तु मेरा इतना अपमान हुआ यह

बात मैं नहीं भुला पाया।   मन ही मन स्टालिनकी तस्वीरको सम्बोधित करके कहा :

"तो कॉमरेड स्टालिन, हमारा परिचय अब पक्का हो गया। किसी बातकी कसर नहीं रह गई। सब कुछ स्पष्ट हो चुकी। मेरा सलाम, कॉमरेड स्टालिन।"

एक घोर विषाद मेरे मानस पर छा गया। अपने लिए नहीं, समस्त मानव-जातिके लिए। यह मेरा अपमान नहीं हुआ था, मानवमात्र को लांछित किया गया था। मेरी मातृभूमि और रूसकी जनता पर दुःखका पहाड़ टूटा था। धीरे-धीरे मेरी यन्त्रणा कम होने लगी। आँसुओंने मेरे घाव सहला दिए। वे आँसू मैंने अपने ऊपर नहीं बहाए थे। समस्त संसारके दुःखसे त्रस्त होकर, प्राणीमात्र के प्रति मैत्रीभाव से छलछला कर ही मैं रोया था।

कुछ क्षणके लिए मेरी आँखें लग गईं। मैं एक स्वप्न-लोकमें खो गया। किन्तु घाव फिर कसमसाए और मैं फिर जाग उठा। दीवार पर टंगे हुए स्टालिनके चित्रकी क्रूर आँखोंसे मैंने आँखें मिलाईं और मेरे अन्तरमें घृणाका विस्फोट हो गया। स्टालिन और उसकी सरकारसे जितनी घृणा मुझे हुई, उतनी किसीसे भी पहिले कभी नहीं हुई थी। मनमें वही पुराना उन्माद उमड़ा—कि अपने-आपको गोली मार लूँ। किन्तु शरीर ने हिलनेसे इन्कार कर दिया। सूटकेससे पिस्तौल निकालने तथा उसमें गोली भरकर घोड़ा दबानेकी शक्ति भी मुझमें नहीं बच रही थी। मनमें वह सब उधेड़-बुन चल रही थी, किन्तु रक्तसे सना हुआ मेरा शरीर जड़वत् बिस्तर पर पड़ा रहा।

स्टालिन मुझे घूर रहा था, तो भी नींद मुझपर छाने लगी। किन्तु मनका कोई कोना किसीकी बाट जोह रहा था। मैं सोचता था कि रातको आकर पुलिसके लोग मुझे जरूर पकड़ ले जाएँगे। अचानक एक

पदचाप सुन पड़ी। मैंने मनमें कहा कि वे आ गए। किसीने द्वार खट-खटाया। मैंने आँखें खोलीं और किसी प्रकार गिरते-पड़ते उठकर द्वार खोल दिया। मनमें कोई कह रहा था कि मेरी स्वतन्त्रता का अन्त होनेवाला है।

बाहर अन्धेरेमें एक नाटी सी स्त्री खड़ी थी। उसके बाल सफेद पड़ गए थे। उसका ओवरकोट बर्फसे लदा था। उसके हाथमें एक सूटकेस मैंने देखा। पहिले तो मेरी समझमें कुछ नहीं आया। ऐसा लगा जैसे जाग्रत अवस्थामें भी स्वप्न देख रहा हूँ। और फिर अचानक सब कुछ साफ हो गया। मैं भागकर अपनी माँ से लिपट गया और बच्चोंकी तरह रोने लगा।

अगले दिन कारखानेमें मेरी सूजी हुई आँखें तथा शरीर पर पड़े नील देखकर लोगोंने पूछ-ताछ शुरू कर दी। मैंने बहाना बनाया कि दुर्घटना हो गई है। किन्तु उनकी आँखोंमें मैंने अविश्वासका भाव देखा। नीपरोपैट्रोस्कसे एक आदेश मुझे मिला। मेरे मामलेकी पड़तालके लिए कण्ट्रोल कमीशनकी बैठक होनेवाली थी और मुझे उसके सम्मुख उपस्थित होनेके लिए कहा गया था। किसीको कुछ बताए बिना ही मैं नीपरोपैट्रोस्कके लिए रवाना हो गया। गर्शगोर्नने मुझे तीन दिनकी छुट्टी दी थी। वे उस रातको पूरे होनेवाले थे। मैं बचकर निकल गया। दो रात मैं खूब जी भरकर सो लिया था, इस कारण शरीरमें कुछ शक्ति लौट आई थी। शक्तिके साथ-साथ अन्तरमें आशा भी जागी थी।

कण्ट्रोल कमीशनके दफ्तरमें घुसते ही देखा कि खुफिया पुलिसका एक सिपाही पहरा दे रहा है। एक भारीसे दरवाजेके पीछे बैठकर कुछ अपरिचित लोग मेरे भाग्यका निपटारा करनेवाले थे। और भी दस-बारह आदमी मेरी तरह ही बैठे इन्तजार कर रहे थे। उनके उदास चेहरे देख कर मैं समझ गया कि उनपर भी मेरी ही तरह आफत आई है।

आखिरकार मुझे भीतर बुलाया गया। एक बड़ेसे कमरेमें मैंने प्रवेश किया। चारों ओर तेज प्रकाश था। एक लम्बी-सी मेजके पीछे पाँच व्यक्ति बैठे थे। मेजपर लाल कपड़ा बिछा था। मैं तो घबराया हुआ था, इसलिए अच्छी तरहसे सब देख भी नहीं सका। बैठकर मैंने अपने-आपको सँभाला और फिर ध्यानसे उन पाँच चेहरोंको देखा। सहसा मैंने देखा कि एक चेहरा मुझे पहिचानकर कुछ-कुछ मुस्करा रहा है। वह ग्रेगोरीव था, पुराना बाल्शेविक। वह बचपनसे मुझे जानता था पिताजीके साथ एक ही कारखानेमें वह काम कर चुका था। मेरे मनका बोझ उतर गया।

एक घण्टे तक मैं उनके प्रश्नोंका उत्तर देता रहा। प्रश्नकर्त्ताओंमें एक पीलेसे चेहरेवाला जार्जियन भी था। वह कुछ नाराजसा मालूम पड़ा। किन्तु कमीशनके प्रधान तथा ग्रेगोरीवको मुझसे सहानुभूति थी। मेरे पिताके विषयमें प्रश्न पूछे गए, उन मशीनोंके बारेमें पूछताछ हुई। मुझसे यह भी पूछा गया कि इतने सारे देश-द्रोहियोंसे मेरा मेल-जोल क्यों रहा। मैं निडर भावसे साफ-साफ जवाब देता गया। मुझे तो कोई बात छुपानी नहीं थी। और फिर बाहर आकर मैं फैसला सुननेके लिए बैठ गया। मैंने सिगरेट सुलगा ली। बाहरका द्वार जितनी बार खुला, उतनी बार ही मुझे ऐसा लगा कि अब पुलिस आकर मुझे पकड़ ले जाएगी। प्रायः पन्द्रह मिनटके बाद मुझे फिर भीतर बुला लिया गया। कमीशनके प्रधानने मुस्कराकर कहा :

"कॉमरेड क्रावचैन्को, कमीशनने फैसला किया है कि निकोपोल नगर-कमिटीका निर्णय मान लिया जाए और तुमको जो चेतावनी दी गई थी, वह भी वापिस ले ली जाए। तुम काम पर वापिस जा सकते हो। अब तुम्हें कोई कुछ नहीं कहेगा। फिर भी मेरा ख्याल है कि तुम और कहीं काम करने लगो, तो अच्छा होगा। नई जगहकी नई बात होती है।

तुम जानते हो। हमारी पार्टी और हमारे नेतामें विश्वास रक्खो। जाओ। मेरी सद्भावना तुम्हारे साथ है।"

उस समय बेचारे प्रधानको मालूम नहीं था कि दो महीने बाद उसी ग्रेगोरीवको पकड़कर देश-द्रोही ठहराया जाएगा।

मैं १९३५ के शुरूमें निकोपोल आया था। मनमें आशा थी। एक इञ्जीनियर और प्रबन्धकर्त्ताकी हैसियतसे मैं अपना कर्त्तव्य पालन करना चाहता था। चाहता था कि देश और देशवासियोंकी सेवा करूँ। पर तीन साल बाद जब मैंने निकोपोलसे विदा ली, तो मनमें न आशा बची थी, न महत्वाकांक्षा। मेरी आत्माको चोट पहुँच चुकी थी। मैं अपना उच्चपद तथा मोटी आमदनी छोड़कर कहीं मुँह छुपाना चाहता था। चाहता था कि रूसकी दीन-हीन जनताके बीच कहीं खो जाऊँ। मैंने हिसाब लगा कर देखा कि उन तीन सालों में मैंने क्या कुछ किया है। उन तीन सालोंमें लाखों लोग मारे गए अथवा गुलामखानोंमें ठूंसे गए। मैं स्वाधीन रह सका और मेरे प्राण बच गए, यही मैंने बहुत समझा।



अठारहवां अध्याय

बेगार और मजदूरी

रोस्टोव प्रान्तमें टागनरोग नगर एजोव समुद्रके किनारे बसा है। एक समय वह एक सुन्दर स्थान था, जहाँ लम्बे-चौड़े बाग-बगीचे थे। किन्तु पंचवर्षीय योजनाओंने सब बदल दिया। अब वहाँ धुआँ, धूल और बदबू फैले थे। मुझे तो सरकारी बस्तीमें एक अच्छा-सा बंगला मिल गया। वहाँ उच्च वर्गके लोग ही रहते थे। उस बस्तीको तैयार करते समय शायद किसीको ध्यान नहीं आया होगा कि सोवियत् समाजके उच्च और निम्न वर्गोंके बीच भेद इस प्रकार बढ़ जाएगा। हमारी बस्ती कारखानोंसे दूर बसी थी। मजदूरोंके घूरेसे घर वहाँसे दिखाई नहीं देते थे। पेड़ोंकी आड़में उस पारकी सारी गन्दगी छुप जाती थी।

पर उस शान-शौकतमें एक भारी कमी मैंने देखी। वहाँ किसीके मुख पर मैंने हँसी अथवा आह्लाद नहीं पाया। पर्जकी आग प्रायः बुझ चुकी थी। किन्तु उसका धुआँ अब भी चारों ओर फैला था। देशके शासकवर्ग में से प्राय: आधे लोग पर्जके शिकार हो चुके थे। और जो लोग बचे थे उनके जीवनमें कोई आनन्द नहीं दीख पड़ता था। मानों उनको लाज आ रही थी कि वे जिन्दा बच गए।

पार्टीके प्रादेशिक एवं स्थानीय नेताओंसे मिलकर मुझे मालूम हुआ कि मेरे विषयमें वे सब कुछ सुन चुके हैं। निकोपोलकी पार्टी कमिटी

और दोरोगनने मेरे बारेमें एक पूरी रिपोर्ट उनके पास भेज दी थी। इसलिए मैं एक नया जीवन शुरू नहीं कर सकता था। मेरे मनका उत्साह मर गया। इसके सिवाय मैंने देखा कि निकोपोलकी अपेक्षा टागनरोगमें बेगारीकी मात्रा बहुत अधिक है। मुझे बहुत बुरा लगा। हमारे गोदामोंमें माल चढ़ाने और उतारनेका अधिकतर काम पुलिसके जालमें फँसे हुए लोगोंसे कराया जाता था। उन अभागोंको मनुष्य कहना कठिन था। सड़े हुए चीथड़ोंमें लिपटे उन अस्थिपञ्जरोंको देख कर मेरा मन बुझ गया। रूसमें वैसे लाखों गुलाम कठोर परिश्रम करते हुए मक्खी-मच्छरोंकी तरह मर रहे थे। मैं नहीं चाहता था कि उनकी याद मुझे आए। किन्तु वहाँ नित्य ही वे मेरी आँखोंके सामने पड़ते थे। भला उन्हें कैसे भुलाता। और उन्हें देखते ही मैं तिलमिला उठता था। सहसा मेरा मन कहने लगता कि भाग्यसे मैं बच गया हूं, अन्यथा मैं भी उनकी तरह पशु-जीवन व्यतीत करता होता। और फिर मैं भयसे काँप उठता कि न जाने किस दिन मैं भी गुलाम बना दिया जाऊँ।

एजोव समुद्रके किनारे मैं बहुत थोड़े दिन ठहर पाया। अचानक मुझे मास्कोमें बुलाया गया। वहाँ पर शिल्पोद्योगके प्रधान कर्मचारी मरकुलोवने मुझे बताया कि कमीसार कगानोविच तथा पार्टी मुझे एक बड़ा काम सौंपना चाहते हैं। वह कहने लगा :

"यूरालमें पाइपका नया कारखाना बना है ना। वहाँ पर विनाश-कारियोंने बड़ा उत्पात मचाया था। उन बदमाशोंमेंसे अधिकतर तो पकड़े जा चुके हैं, बाकी भी जल्दी साफ हो जाएँगे! अब हम वहाँ पर योग्य, जानकार, मजबूत और विश्वस्त लोग भेजकर सुव्यवस्था उत्पन्न करना चाहते हैं।"

मैंने मुस्करा कर कहा : "तब तो मुझसे कोई मतलब नहीं। कामरेड मरकुलोव, मैं तो दाग़ी आदमी हूँ। मेरी पर्ज हो चुकी है। यद्यपि

मुझपरसे आरोप हटा लिए गए हैं, तो भी उस कीचड़से मैं आपाद मस्तक सना पड़ा हूँ।"

"वह सब हमें मालूम है। किन्तु हम आप पर भरोसा करते हैं"

"पर मैं यूरालमें जाना नहीं चाहता। मैं थक गया हूं। उस खूंखार देशमें जाकर भला मुझे क्या मिलेगा?"

"हम जानते हैं कि वहाँ इस समय बड़ा गोलमाल है। किन्तु हम आपका पूरा साथ देंगे। कामरेड कगानोविच आपकी सहायता करेंगे। आपको बड़ेसे बड़ा वेतन दिया जायगा। एक नई गाड़ी और काम बढ़ने पर मोटा-सा बोनस। इसके सिवाय आप और जो कुछ भी मांगेगे मिल जायगा।"

मैं कुछ और अधिकारियोंसे भी मिला। यूरालके कारखानोंको सम्भालनेके लिए नए लोगोंका एक दस्ता तैयार हो रहा था। किन्तु उन कारखानोंके पुराने अधिकारियोंको कानोंकान खबर नहीं थी। मेरे मनमें नए कामके प्रति शंका ही जागी। मैं जानता था कि पाइपके उस नए कारखानेमें बहुत गोलमाल चलता है और अखबारोंमें बार-बार उसके विषयमें शिकायतें पढ़ चुका था। अब वह बला मेरे सिर आना चाहती थी। मुझे अच्छा नहीं लगा।

(२)

स्वर्डलोस्क स्टेशन पर पाइप कारखानेका एक अधिकारी मुझे लेने आया। पहले उस स्थान का नाम यकातरिनबर्ग था। इसी शहरमें ज़ार और उसके परिवारकी हत्या की गई थी, इसलिए यह स्थान बहुत प्रसिद्ध था। वह अधिकारी मेरा पुराना परिचित निकला और मैं दिल खोलकर उससे बातें कर सका। कारखाने तक जानेके लिए चालीस मील तय करनी पड़ती थी। रास्तेमें उसने मुझे कारखानेका पूरा हाल बता दिया। उसकी बातें सुनकर मेरा दिल बैठ गया।

कारखानेसे सात-आठ मील इधर, सड़कसे कुछ हटकर, एक गुलामखाना बना था। काँटेदार तारोंकी बाड़ देखते ही मैं सब समझ गया। अच्छी तरह देख लेनेके लिए हमने अपनी कार रोक ली। वहाँ उस बीहड़में सैकड़ों एकड़ धरतीको साफ करके काठके बैरक बनाए गए थे। चारों ओर मौतका-सा सन्नाटा छाया था। गुलामखानेके छः कोने थे और प्रत्येक कोने पर एक ऊँचा मीनार बना था। मीनारों पर सर्चलाइट और मशीनगन लगी थीं, ताकि भागनेवालोंको सम्भाला जा सके।

मैंने साथीसे पूछा : "कैदी लोग कहाँ हैं ?"

"कामका वक्त है। कुछ तो हमारे कारखानेमें ही काम करते हैं। बाकी दूसरे धन्धों पर लगे हैं। मुझे ऐसा लगता है कि आप यूरालमें नए-नए आए हैं। यहाँ आपको चारों ओर ऐसे गुलामखाने मिलेंगे। थोड़े दिनमें आदत पड़ जाएगी।"

गाड़ीमें बैठ कर हम आगे बढ़ गए। नए जीवनकी यह अच्छी भूमिका थी !

कारखानेका नया डायरेक्टर ओसाची मुझसे पहले ही आ चुका था। मास्कोमें उसने बढ़-बढ़कर बातें बनाई थीं, किन्तु कारखानेकी हालत देखकर उसकी फूँक निकल गई। मैंने भी सब कुछ देखा तो उस बेचारेसे सहानुभूति ही हुई। और मजदूरोंकी बस्ती देखकर तो मैं सन्न रह गया। गुलामखानेमें जो काठकी बैरकें मैंने देखी थीं, वैसी ही गन्दी और गीली कोठरियाँ यहाँ मिलीं। अन्तर इतना था कि इन "स्वाधीन" मजदूरोंको तारके घेरे और मशीनगनोंके पहरेमें नहीं रक्खा गया था।

दो सप्ताह काम करनेके बाद एक दिन वेतन का बहीखाता मेरे सामने रक्खा गया। वेतन पखवाड़ेके हिसाबसे दिया जाता था। खातेको देखते-देखते मैंने पाया कि एक मोटी-सी रकम पुलिसके नाम लिखी है। चकरा कर मैं पूछ बैठा : "यह किसलिए ?"

"पुलिसके साथ हमारा कन्ट्राक्ट है। आपके विभागमें ६० कैदी काम करते हैं ना। उनकी आधी मजदूरी पुलिसको मिलती है।"

"क्या वे किसी गुलामखानेसे लाए गए हैं।"

"नहीं, नहीं, कामरेड। वह तो पुलिसका एक और विभाग है। कन्ट्राक्टके अन्तर्गत काम करनेवाले मजदूर तो यहीं रहते हैं। स्वाधीन मजदूरोंकी तरह। हाँ उनकी बस्ती अलग है। वे देशके विविध स्थानोंमें सज़ा पाकर यहाँ लाए जाते हैं।"

दो महीनेमें हमलोगोंने वहाँका नक्शा बदल डाला। हम सब पर कामका भूत सवार था और हमारी देखादेखी वहाँका अदना-से-अदना कर्मचारी भी कठोर परिश्रम पर तुल गया। हमने उत्पादनमें अस्सी प्रतिशत उन्नति दिखाई और मालकी बनावटमें अनेक सुधार किए। मैं वहाँ पहुँचा तो सब कुछ असम्भव-सा लगता था। पहले वहाँके बने मालमें बारह प्रतिशत खराब निकलता था। अब खराब मालकी दर घट कर पाँच-छः प्रतिशत रह गई।

किन्तु सरकारी दखल-अन्दाजीका यहाँ भी वही हाल था। आए हफ्ते किसी-न-किसी विभागसे कोई-न-कोई साहब आ धमकते थे और पूछताछके मारे नाकमें दम आ जाता था। वे मेरा समय तो नष्ट करते ही थे। इसके सिवाय चीखना-चिल्लाना तथा जिस-तिस तरहकी सभाएँ जोड़ना भी उनकी आदत थी। इस सुदूर प्रदेशमें उनके मनोरंजनके कोई साधन नहीं थे। इसलिए कामसे ऊब कर वे शराबमें डूब कर और जूआ खेल कर अपना बाकी समय काटते थे।

मास्कोने हमारी सफलताको स्वीकार किया। कगानोविचके सभापतित्वमें वहाँ एक सभा हुई, जहाँ मेरे कार्यकी तारीफ की गई। एक पत्रिकामें छपा कि क्रावचैन्कोके पहुँचनेसे पहिले कारखानेकी बहुत बुरी हालत थी, किन्तु क्रावचैंकोने वहाँका नकशा ही बदल डाला।

किन्तु मेरे मनमें तो वहाँके गुलाम मजदूरोंका ध्यान ही सबसे ऊपर रहता था। बार-बार मैं अपने आपसे कहता था कि उन गुलामों, गुलामखानों तथा उस बेगारीको देखनेकी मुझे आदत हो जानी चाहिये। "समाजवादी" रूसके इस प्रदेशमें अनेक गुलामखाने बने थे। किसी भी सड़क पर, किसी भी दिशामें थोड़ी दूर जाते ही वे नरककुण्ड आँखोंके सामने अड़ जाते थे। हमारे कारखानेमें जो गैस काममें आती थी, उसे तैयार करनेका सारा कोयला गुलाम-मजदूरों द्वारा खोदा जाता था। बिजलीके कारखानेमें जो कोयला खपता था वह भी गुलामखानों से मिलता था। यदि हमको उस विषयमें कोई शिकायत होती तो हम पुलिसको टेलीफोन कर देते थे। हजारों गुलाम स्त्री-पुरुष उस प्रदेशमें घास काट-काट कर गढ्ढर तैयार करते थे। मैं उनको देखना नहीं चाहता था, क्योंकि उनको देखते ही मेरा दिल बैठ जाता था। मुझे डर लगता रहता रहता था कि कहीं उनमें कोई ऐसा व्यक्ति मेरे सामने न पड़ जाय जिसको मैंने कभी प्यार किया हो। मैं जानता था कि मेरे सैकड़ों परिचित और साथी पर्ज की चक्कीमें पिसकर गुलाम बन चुके हैं। शायद उन्हींमेंसे किसीके साथ यहाँ भेंट हो जाए।

स्वर्डलोस्कसे आते समय जिस बड़े गुलामखानेको मैंने देखा था, वह बार-बार मुझे देखना पड़ा। उसके बड़े दरवाजे पर एक अच्छा खासा, आधुनिक ढंगका तोरण बना हुआ था और उस पर टंगी थी स्टालिनकी एक गोल तस्वीर। कई बार तोरणके ऊपर लाल रंगके निशान भी लटकाए जाते थे। रातको एक रंगीन बल्बकी रौशनीमें वह तस्वीर और वे निशान चमक उठते थे। शायद कोई अजनबी सड़क पर जाते-जाते उस तोरणको देखकर समझ बैठता कि उस द्वारके पीछे "समाजवाद" का कोई सुन्दर प्रतिष्ठान है। किन्तु वहांके रहनेवाले हमलोग जानते थे कि उस द्वारके पीछे तारोंसे घिरे हुए गुलामखानेमें पचीस हजार मनुष्योंको

उनके सगे-सम्बन्धियोंसे दूर हटाकर रक्खा गया है। सारी रात सर्चलाइट घूम-घूमकर गुलामखानेको उजागर करती रहती थी। उन ज्योतिस्तम्भों-को देखकर भी कोई अजनबी धोखेमें आ सकता था।

यह सच है कि कट्टर-से-कट्टर कम्युनिस्ट भी मन-ही-मन इन गुलाम-खानोंसे चिढ़ता और लजाता था। बहस होने पर कई लोग बड़ी गरमीके साथ गुलामखानोंकी हिमायत करते थे। किन्तु उनकी उस गरमीकी तहमें भी मैंने एक अविश्वासकी टेर सदा पाई। जब वे उन गुलामखानोंमें रहनेवालोंको गन्दी गालियाँ देते थे तो ऐसा लगता था मानो अपनी अन्तरात्मासे उठनेवाले आक्रोशका गला घोंट रहे हैं। आखिर रूसका प्रत्येक कम्युनिस्ट जानता था कि घटनाचक्र एक और करवट बदले, एक और पर्ज हो, तो बहुत सम्भव है कि वह स्वयं भी किसी-न-किसी गुलामखानेमें पहुँच कर "समाजवाद" के निर्माणमें "हाथ बंटाने" लग जाए!

(३)

यूराल प्रदेश, टागनरोग तथा निकोपोलमें रहते हुए मेरे जीवनकी कुछ निजी घटनाओंके विषयमें मैं अभी तक चुप रहा हूँ। अब सोचता हूं कि अपने व्यक्तिगत जीवनकी बातें बताकर ही इस अधूरे चित्रको पूरा कर सकूंगा। नहीं तो पाठक पूछ बैठेंगे: "क्या रूसमें कारखानोंके मैनेजर इत्यादि मशीनें होते हैं? क्या उनके जीवनमें व्यक्तिगत कुछ भी नहीं होता?"

यदि मैं कह दूं कि हाँ, तो मुझे ऐसा लगता है कि मुझसे अतिश-योक्तिका अपराध हो जाएगा। हम रूसके लोग खूब मिलनसार आदमी हैं। हम दिल खोलकर अपनी बातें कहना चाहते हैं और दूसरों को दोस्त बनाते हमें देर नहीं लगती। हमारे दिल साफ हैं, कुटिलताका लेशमात्र भी हमारे चरित्रमें नहीं। और मैं भी अन्य रूसियों जैसा ही रूसी हूँ।

मैंने दर्जनों क्या सैकड़ों दोस्त बनाए थे। मेरे चारों ओर रहनेवाले लोग मुझे बड़ा आदमी मानते थे। आखिर पार्टीमें मेरा अच्छा स्थान था। मैं लोगोंके काम आ सकता था। मेरे घरमें किसी प्रकारका अभाव नहीं था, सब प्रकारके सुख उपलब्ध थे। और मेरे चारों ओर लोगोंके जीवनमें अभावकी विभीषिका फैली थी। मेरी स्थितिके किसी अमेरिकनसे मेरे जीवन स्तरकी तुलना करने पर बेशक मैं हलका उतरता, किन्तु टागनरोग, निकोपोल, यूराल, यहाँ तक कि मास्कोमें भी मेरा जीवन स्तर साधारण लोगोंके जीवन-स्तरसे बहुत ऊँचा था। रूसके मजदूर तो इतनी हीन अवस्थामें रहते थे कि मैं अपने-आपको एक दूसरी दुनियाका आदमी कह सकता था।

हाँ, तो मैंने अनेकोंसे मित्रता की थी और प्रेम भी किया था। फिर भी अब सोच कर देखता हूँ तो ऐसा लगता है कि मेरे जीवनमें मित्रता और प्रेमका स्थान न-कुछ सा था। उन दिनों मानवीय संबंधोंको मेरे जैसे उच्चपदस्थ लोगोंके लिए निरर्थक माना जाता था। हम तो एड़ीसे चोटी तक राजनीतिमें डूबे थे। भयके झंझावात आते थे, उनमें भला प्रेमका दीपक कितनी देर ठहर पाता। हमारा भला क्या ठिकाना था। आज हैं, कल नहीं रहें। प्रत्येक दिन ऐसा लगता था मानो फिर कभी नहीं आएगा। मित्रताका नाता जोड़ते समय ऐसा लगता था मानो स्टेशन पर यात्री मिले हों, जिनको शीघ्र ही गाड़ियोंमें बैठकर इधर उधर चला जाना पड़ेगा।

उन दिनों मेरे जीवनमें घटनाएँ तो अनेक घटीं। फिर भी वे दिन सूने सूने-से लगते हैं। इसीलिए कि मेरे पास आशा-विश्वासका सम्बल नहीं था। रूसमें जो "महान् प्रयोग" हो रहा था, उसके प्रति मुझमें अविश्वास जन्म ले चुका था। मैं भला किस आशाका सहारा लेता ? इसलिए काममें अपने-आपको डुबाकर अपने-आपसे पीछा छुड़ाना पड़ता

था। कभी-कभी भागनेको जी चाहता था। किसीको दोष भी कैसे दिया जाए। आत्म-सम्मान बनाए रखना ही असम्भव हो गया था। मास्कोमें किसी कम्युनिस्ट महन्तको कोई सनक सवार हो उठे, अथवा स्थानीय पार्टी अथवा पुलिसका कोई छैला अपनी वफादारी दिखाने पर तुल जाए—बस, आपका मटियामेट होते देर नहीं लगती थी। चारों ओर हजारों जासूस लगे थे—हीन प्रकृतिके क्रूर आदमी। कोई अपना आत्म-सम्मान बचाता तो किस तरह?

सोवियत् रूसके किसी अधिकारीकी जीवन-गाथा ठीकसे समझनेके लिए पाठकको यह याद रखना चाहिए कि उसके चारों ओर देशमें भुखमरी और अभाव फैले हैं, कि जनताके समस्त राजनैतिक एवं आर्थिक अधिकार छीनकर उसे एकबारगी असहाय और पंगु बना डाला गया है। शायद ही कोई दिन ऐसा होता था, जब कि कोई मजदूर अथवा उसकी पत्नी मेरे पास अपने दुःख-ददकी कहानी लेकर न आते हों। मैं जो कुछ कर सकता था, करता था। किन्तु मेरी क्षमता ही कितनी थी। कई बार मैं सरकारी अनुशासन और कायदे-कानूनकी अवहेलना करके किसीके लिए एक जोड़ी जूते अथवा कपड़े जुटा पाता था। और अधिक कुछ नहीं।

सरकार बहुत चाहती थी कि मजदूर एक काम छोड़कर दूसरे कामपर न जाएं। मजदूरोंकी रोक-थामके लिए अनेक कानून भी बने थे। फिर भी मजदूर धड़ाधड़ काम बदलते रहते थे। मेरे विभागमें प्रति मास दो-तीन सौ मजदूर काम छोड़कर चल देते थे। इससे कामकी बहुत हानि होती थी। किन्तु स्थितिमें सुधार होनेका एक ही रास्ता था—मजदूरोंके जीवनमें सुविधाओंकी प्राप्ति। एक स्थानसे निराश होकर दूसरे स्थानपर चले जाना मजदूरोंके लिए अनिवार्य था। मजदूर बराबर इस खोजमें रहते थे कि कहीं उनको वेतन तनिक अधिक मिल जाए, राशनकी मात्रा

थोड़ी ज्यादा हो, मकान कुछ साफ-सुथरा हो। लेकिन हमारी सरकार मूल कारणोंको दूर करनेकी अपेक्षा परिणामोंको दबाना चाहती थी। सरकार प्रचार करती रहती थी कि काम छोड़कर जानेवाले मजदूर ऐसे हैं, वैसे हैं। उनको न जाने क्या-क्या गालियाँ दी जाती थीं। मार-पीट करके, जोर-जबर्दस्तीसे सबको ठीक करनेके सिवाय सरकारको कोई रास्ता ही नहीं सूझता था।

सब मजदूरोंको एक "लेबर बुक" रखनी पड़ती थी। जनवरी १६३६ में खुले तौरपर इस सम्बन्धमें कानून बनाया गया। किन्तु उसके कुछ सप्ताह पूर्व ही प्रयोग शुरू हो गया था। जब "लेबर बुक" चालू होनेका प्रश्न उठा, तो मैंने कई पुरुषों और स्त्रियोंसे बातें कीं। मैंने देखा कि सबको "लेबर बुक" से घृणा है। वे कहने लगे: "यदि जीवन ठीकसे चलता हो, तो एक कामको छोड़कर दूसरे पर जाना कौन चाहता है। यह 'लेबर बुक' चालू होनेके बाद हममें और गुलामखानोंके कारावासियोंमें भला क्या अन्तर रह जाएगा?"

रूसमें एक नियम है। कैदियोंको जब बेड़ियाँ पहिनाई जाती हैं, तो उन्हें बेड़ियोंका "स्वागत" ही नहीं करना होता बल्कि अपने "सौभाग्य" पर "खुशी" से "नाचना" भी पड़ता है। किसीको जब कोड़े मारे जाते हैं, तो उसे चाबुक चूमनेके लिए कहा जाता है। ट्रेड यूनियनके अधिकारियोंने "लेबर बुक" के गुण गाने शुरू कर दिए। सभाएँ जोड़ी गईं, जिनमें पार्टीके वफादार दो-चार मजदूरोंने उठकर "लेबर बुक" के पक्षमें लम्बी-चौड़ी वक्तृताएँ दे डालीं। इसके बाद कानून पास किया गया। कानूनका उद्देश्य था कि रूसमें "समाजवादी अनुशासन और भी दृढ़ बनाया जाए"। बाहरसे आनेवाले जो रूस-भक्त "आर्थिक स्वाधीनता" तथा "मजदूर-समाज" के नारे लगाते फिरते हैं, उनको उचित है कि नए कानूनकी

धाराएँ आँखें खोलकर पढ़ें। वे ज़रा सोचकर देखें कि यदि उनके अपने देशोंमें ऐसा कानून बनाया जाए, तो वहाँके मजदूर क्या कहेंगे।

नए कानूनके अनुसार यदि कोई मजदूर बीस मिनट देर करके काम पर पहुँचता है तो उसे अदालतके सुपुर्द कर दिया जाता है। उसपर मुकदमा चलता है। और यदि "दोष" साबित हो जाता है तो "दोषी"को कारागार अथवा गुलामखानेकी हवा खानेके लिए तैयार रहना चाहिए। सरकारको यह आशंका थी कि कहीं अदालतोंमें कुछ उदार प्रकृतिके न्यायाधीश नरमी न दिखा दें। इसलिए इसी कानूनमें यह भी कहा गया कि जो कोई "दोषी" मजदूरोंको पकड़ने अथवा दण्ड देनेमें हिचकेगा उसकी खैर नहीं, उसको जेल जाना पड़ेगा। प्रतिदिन प्रातःकाल ही मेरे सामने एक रिपोर्ट आ जाती थी, जिसमें लिखा रहता था कि कौन-कौन मजदूर कितनी मिनट लेट पहुँचे। कारखानेकी पार्टी और ट्रेड यूनियनके पास भी इस रिपोर्टकी एक एक प्रति पहुँच जाती थी। इसलिए मैं कुछ भी हेरफेर नहीं कर सकता। रिपोर्टपर हस्ताक्षर करके अदालतमें भेजना मेरा काम था। "अपराधियों"को तुरन्त हाजिर होना पड़ता था। उनको इस ज़रा सी भूलके लिए साल भरका दण्ड दिया जाता था। उनके परिवारकी रोटी छीन ली जाती थी। पहिले पहिले तो हमारे लिए विश्वास करना कठिन हो गया। किन्तु अदालतोंको कठोरतासे काम लेनेका आदेश मिला था। उन्होंने अपना कर्त्तव्य निभाया। हाँ, शरमके मारे न्यायाधीशोंके सिर अवश्य झुक जाते थे।

कानून बननेके बाद तीन महीनेके भीतर रूसमें प्रायः दस लाख मजदूरों और कर्मचारियोंको दण्ड दिया गया। माता-पिताको घरोंसे घसीटा गया। उनके बच्चे भूखे मरे अथवा यतीमखानोंमें पहुँचाए गए। उनका दोष इतना ही था कि किसी दिन उनको सोकर उठनेमें देर हो गई अथवा रोगग्रस्त होकर भी वे सरकारी डाक्टरका प्रमाणपत्र नहीं प्राप्त

कर सके और बिस्तर पर पड़े रहे। मेरे विभागमें ही दर्जनों मजदूरोंको रोज दण्ड दिया जाता था। मजदूरोंकी बस्तियोंसे आर्तनाद उठने लगा। किन्तु शासकोंके कान पर जूं न रेंगी। और जो बेवकूफ लोग रूसके "आर्थिक गणतन्त्र" का गुणगान करते फिरते हैं, उनको आज भी नहीं मालूम कि रूसके मजदूरों पर क्या बीत रही है।

इसलिए जब मैंने सुना कि शायद मुझे कहीं और भेज दिया जाए तो मुझे अच्छा लगा। यह आशा तो लगी ही रहती थी कि दूसरी जगह शायद मजदूरोंकी यह यातना कुछ कम हो। साइबेरियाके स्टालिस्क नामक नगरमें नए-नए उद्योग-धन्धे खड़े हो रहे थे। अब खबर आई कि वहाँ एक बहुत बड़ा पाइप बनानेका कारखाना खुलेगा। उस कारखाने पर दस करोड़ रूबल खरच होनेकी बात थी। रूसमें यह नियम है कि कोई काम करनेके पूर्व उसका ढिंढोरा खूब पीटा जाता है। मैंने वह ढिंढोरा सुना था। अचानक उस ध्वनिसे मेरा व्यक्तिगत स्वार्थ भी जुड़ गया। मुझे पूछे बिना ही पार्टीकी केन्द्रीय कमिटीने फैसला कर डाला कि स्टालिस्कमें नया कारखाना तैयार करनेका उत्तरदायित्व मुझे सौंपा जाए।



उन्नीसवां अध्याय

साइबेरिया का ढकोसला

रूसके समाचार-पत्र "उद्योग" में छपा कि २८ फरवरी सन् १६३८को विक्टर क्रावचैन्कोको साइबेरियाके स्टालिंस्क नगर में बननेवाली पाइप-मिलका डाइरेक्टर बना दिया गया है। साइबेरियाके इस कारखानेका जिक्र मोलोटोवने अपनी उस रिपोर्टमें भी किया जो कि उसने पार्टीकी अठारहवीं कांग्रेसके सामने सुनाई थी। इस प्रकार मैं समझ गया कि स्टालिनकी दृष्टिमें भी उस कारखानेका बड़ा महत्व है। उन लोगोंने मुझे उस कारखानेका काम सौंपा, इस कारण मेरी भी ख्याति खूब बढ़ी।

साइबेरियामें काम सम्भालनेके पूर्व मुझे मास्कोमें बहुतसे काम करने थे। वहाँ पहुँचने पर मैट्रोपोल होटलमें मुझे एक बहुत सुन्दर कमरा दिया गया। होटलका खर्च उठानेके सिवाय सरकारने मुझे जेब खर्चके लिए एक मोटी-सी रकम भी दे डाली। जिस चीजकी मुझे इच्छा होती थी वही मिल जाती थी। आखिर मैं केन्द्रीय कमिटीकी आँखोंमें चढ़ चुका था, जो कोई मामूली बात नहीं थी। यदि आप किसी ऊँचे पद पर आरूढ़ हों तो आपकी आँखोंमें तानाशाहीका रूप ही बदल जाता है। साधारण जनता जो जोर-जुल्म देख पाती है वह आपको दिखाई ही नहीं देता। मेरे नए पदकी खबर हमारे नगरके पत्रोंमें भी छपी और मेरी

माँ को विश्वास हो गया कि हमारे बुरे दिन बीत गए हैं। माँने पत्रमें लिखा : "मेरे बेटे, भगवान तुम्हें बनाए रक्खे, तुम्हें सौभाग्य और सफलता दे। पीछे तुम्हारे साथ जो कुछ हुआ है वह सब भुला देना। आगेकी ओर देखते रहना। अपने देश और अपनी जनताके सुखके लिए जी लगाकर मेहनत करना।"

मेरा स्तर बदल गया था। अब मैं एक विश्वस्त कर्मचारी था। तो भी पुलिसने मेरा पीछा नहीं छोड़ा। वह तो अपना कर्त्तव्य निभाती रही। कई बार होटलमें लौटकर मैं समझ जाता था कि मेरा सूटकेस खोला गया है और मेरे कमरेकी अच्छी तरह तलाशी हुई है। कुछ नए नए आदमियों ने मुझसे परिचय बढ़ाकर राजनैतिक चर्चा चलाना चाहा। किन्तु मैं सब कुछ समझता था। निकोपोलमें जो काली रातें मैंने बिताई थीं उनके फलस्वरूप मैं सावधान रहना सीख गया था। जब कभी मैं किसीको बातें करनेके लिए अधिक लालायित देखता था तो मेरा मुँह अपने आप बन्द हो जाता था।

नीपरोपेट्रोस्कमें भी मुझे कुछ काम था, इसलिए सरकारी खर्च पर ही मैं घर भी हो आया। बढ़िया रेल गाड़ीमें मुझे फस्ट क्लासका टिकट दिया गया। मैंने सुन्दर कपड़े पहिने थे और बहुत आरामके साथ मेरी यात्रा बीती। मुझे देखकर कोई भी समझ सकता था कि मैं मजेका जीवन बिताने वाला उच्चपदस्थ सरकारी आदमी हूं। रेलके कन्डक्टरने मेरी बड़ी देखभाल की। किन्तु मन ही मन यह सब देखकर मैं कुढ़ रहा था। जिस असाम्यतासे मुझे नफरत थी, उसीका प्रतीक बनाकर मुझे जनताके सामने पेश किया जा रहा था।

माता पिताको देखकर लगा कि कुछ बूढ़े हो चले हैं। उनके तीन बेटे कमाऊ थे, इसलिए और लोगोंकी अपेक्षा उनका जीवन अच्छा बीतता था। फिर भी कठिनाइयां अनेक थीं। रुपया होने पर भी उनको

वैसा खाना नहीं मिल पाता था जोकि उनकी ढलती उमरमें उन्हें खाना चाहिए था। इसके सिवाय पिताजीको तो और एक दुःख था। मजदूरों पर जो नए-नए प्रहार होते थे, वे उनको बींध डालते थे। मेरी उनसे खूब बातें हुईं। वे उन दो-चार लोगोंमेंसे थे जिनके सामने मैं अपने मनकी बात कह सकता था। उनसे बात करते समय मुझे भय नहीं लगता था कि पुलिस सब कुछ जान लेगी। वे उत्तरोत्तर अधिक निराश होते जा रहे थे। मेरी अपनी निराशा उनकी निराशासे आगे बढ़ गई थी। मैं तो रूसकी नई सरकारसे घृणा करने लगा था। उनकी "समाजवादी" डींग सुनकर मुझे चिढ़ होती थी, उनके दमनचक्रसे मैं घबरा उठता था। मैंने कहा :

"पिताजी, मैं अकेला ही इस प्रकार नहीं सोचता हूं। पर्ज चलाकर स्टालिनका कोई भला नहीं हुआ। आप जब इतने लोगोंको मारते और यन्त्रणा देते हैं, तो न जाने कितने दिलोंमें नफरत और बदला लेनेकी भावना जड़ जमा लेती है।"

पिताजी फिर अपनी क्रान्तिकारी जवानी की कहानी कहने लगे। वे जानना चाहते थे कि रूसके लोगोंको यह हुआ क्या है। क्या रूसमें आदर्शवादी लोग नहीं रह गए, क्यों कोई इस सबके विरुद्ध आवाज नहीं उठा पाता? मैंने कहा :

"हममेंसे बहुतसे हैं जो इसका प्रतिवाद करना चाहते हैं, जो संसारको सच-सच बता देना चाहते हैं। किन्तु हम जानते हैं कि ऐसा करना असम्भव है। जो दो चार लोग बचकर निकल भागे हैं, वे ही ऐसा कर सकते हैं। यहाँ तो दमन पराकाष्ठा पर पहुँच चुका है। कोई उसके पंजेसे नहीं बच सकता। जो भी मुँह खोलता है, वही मौतके मुँहमें चला जाता है। यदि मैं कभी इस देशके बाहर जा सका और मैंने दिल खोल-

कर बोलनेका फैसला कर डाला तो आप पर और मां पर क्या बीतेगी, यह जानते हैं, पिताजी ?"

कहते-कहते मैंने उनकी आंखोंसे अपनी आँखें मिलाईं। मेरे मनमें एक स्वप्न अंगड़ाई ले रहा था। निकल भागनेका स्वप्न। पिताजीने उत्तर दिया :

"हमारी चिन्ता मत करो। हम तो बूढ़े लोग हैं। हमारा जीवन समाप्त हो चुका है। इसलिए, बेटा, तुम जो कुछ करना चाहो, करो। कर्त्तव्य निभाना ही ठीक है। और किसी बात के कोई मायने नहीं। अपने आप दुःख दर्द उठाना तो कोई बड़ी बात नहीं है। यह जानकर और भी अधिक दुःख होता है कि तुम्हारे कारण और लोगोंको तकलीफ हो रही है। मैं तो यह सब बहुत अच्छी तरह जानता हूं, बेटा। अपनी प्रियतमा पत्नी और लाड़ले बच्चोंको छोड़कर जेल जाते हुए मैं तिलमिला उठता था। मैं सब जानता हूं, बेटा।"

घरसे लौटा तो मां मेरे साथ चली आईं। मेरे साथ मास्को आनेके लिए उनको काफी समझाना पड़ा था। मैंने ही नहीं समझाया, सारे परिवारने हठ करके उन्हें भेजा था। वे कभी मास्को नहीं गई थीं और उनको वह नगर दिखाकर मुझे बड़ी खुशी हुई। इसके सिवाय मैं चाहता था कि घरके काम-काजसे उनको कुछ दिनके लिए छुट्टी मिल जाए। मैंने उन्हें बहुत समझाया कि फस्ट क्लासके यात्रियोंको रास्तेमें खाने पीनेके लिए सब कुछ मिलेगा, तो भी उन्होंने अपने सूटकेसमें बहुतसा सामान भर लिया। किन्तु फस्ट क्लासका डिब्बा और मास्को होटलका ठाठ-बाट देख कर मां चौंधिया गई। मैंने भी दो हफ्ते तक मास्कोको उनकी आँखोंसे देखा। कई महीने पहले आयरीना नामकी एक महिलासे मेरा परिचय हुआ था। हम घूमने जाते तो आम तौरपर वह भी साथ रहती थी।

एक दिन सांझको होटलके रेस्तरांमें हमलोग बैठे थे कि अचानक मांने पूछा :

"बेटा, तुमने मुझे मास्कोमें लानेकी हठ क्यों की ?"

"यह भी क्या सवाल है, मां। मैं तुमको प्यार करता हूँ। तुम्हें सब कुछ नहीं दिखाऊँगा भला ?"

"हाँ, सो तो ठीक है। किन्तु, शायद तुम यह भी चाहते हो कि मैं आयरीनाको अच्छी तरह देख लूँ। देखो, शरमाओ नहीं, बेटा। मैं समझ गई हूँ कि तुम लोग प्रेम करते हो।"

"मैं मानता हूँ, मां। तुम ठीक कहती हो। किन्तु प्रेमकी बात नहीं है। मैं अकेलेपनसे ऊब उठा हूँ और आयरीना मुझे बहुत अच्छी लगती है।"

"मैं तो इतना ही कहूँगी कि तुमने बहुत अच्छा साथी खोजा है। क्या तुमने विवाह कर लिया ?"

"नहीं। किन्तु फैसला हो चुका है। आयरीना यहाँ काम करती है और मेरे साथ नहीं जा सकती। मैं भी साइबेरिया में एकदम जाते ही घर बसाना नहीं चाहता।"

आयरीना छरहरे वदनकी सुन्दर लड़की थी। बड़ी-बड़ी नीली आँखें, हलके रंगके भूरे बाल। उसके पिता फ्रेंच थे और माँ रूसी। वह मास्कोके कई प्रतिष्ठानोंके लिए जर्मन और फ्रेन्च भाषाओंके साहित्यका अनुवाद करके अपनी जीविका चलाती थी। पहले-पहल हमारी भेंट एक पार्टीमें हुई थी। एक मित्रके साथ मैं वहाँ गया था। उसको देखकर मैं मोहित हो गया। न जाने उसमें क्या था जो मुझे अच्छा लगा ! शायद उसके हाव-भावकी लावण्यता, अथवा उसकी चाल-ढालमें शान्ति और आत्म-विश्वासकी टेर। उस रातको मैंने उसके साथ एक भी बात नहीं की। किन्तु मेरा मन उसीकी ओर लगा रहा।

और पार्टी समाप्त होने पर जब मैंने उससे कहा कि मैं उसको घर तक छोड़ आऊँगा तो उसने इन्कार नहीं किया। मानों मन-ही-मन वह भी यही सोचे बैठी थी।

हमारा मिलन साधारण ढंगसे ही हुआ था। तो भी कुछ ही दिनोंमें हम समझ गए कि हमें साथ-साथ जीवन बिताना है। हमारे सम्बन्धमें दिखावा कम था, गहराई अधिक। जब मैंने उसे अपनी माँसे मिलाया तो मुझे चिन्ता नहीं हुई। मैं जानता था कि वे एक दूसरी पर लट्टू हो जाएँगी। साँझके भोजनके बाद जब आयरीना हमारे पास पहुँची तो माँने उठकर उसको आलिंगनमें बाँध लिया और उसका मुख चूमा। बस अब कहने-सुननेको कुछ नहीं रह गया था।

(२)

राष्ट्रीय सुरक्षाके दृष्टिकोणसे साइबेरियाका पश्चिमी प्रदेश बहुत महत्वपूर्ण था। एशिया अथवा योरुपमें रूसका युद्ध छिड़ जाने पर वहाँसे बहुत काम निकलनेकी आशा थी। उस प्रदेशको आबाद करनेमें हमारे युद्ध-विभागका उतना ही हाथ था जितना कि उद्योग-विभागका। और उस सारी व्यूह-रचनामें स्टालिस्क नगर सबसे महत्वका स्थान माना गया था।

इसीलिए जब मैंने कहा कि कारखाना बनानेका काम हाथमें लेनेके पूर्व मैं वह स्थान देखना चाहता हूँ, तो सब चौंक उठे। मैंने कहा :

"मुझे आप एक ऐसा कारखाना बनानेका काम सौंप रहे हैं, जिस पर पन्दरह करोड़ रूबल खर्च होंगे। कम-से-कम इतना तो मेरे लिए उचित है कि वह स्थान देखकर जाँच-पड़ताल कर लूँ कि वहाँ ठीक प्रकारसे मजदूर और कच्चा माल मिलेंगे कि नहीं।"

कामरेड मरकुलोवने कहा : "किन्तु कारखानेके लिए बजट पास हो चुका है। लेनिनग्राडमें कारखानेकी पूरी योजना बन चुकी है। कई

महीनेसे तैयारी चल रही है। तो भी मैं सोचता हूँ कि तुम्हारा वहाँ जाकर सब देख लेना ही ठीक रहेगा। किन्तु इतना याद रखना, क्राव-चेन्को, कि पार्टीका फैसला बदल नहीं सकता।"

मैं रेलमें चढ़कर चार दिनमें स्टालिंस्क पहुँचा। मेरे साथ चीफ इञ्जीनियर गेराडोव भी था। मैंने उस शहरका नाम बहुत सुना था, किन्तु वहाँका गन्दा-सा, छोटा स्टेशन देखकर निराशा हुई। शहरके भीतर भी गन्दगी और अव्यवस्था मिली। मैंने देखा कि मीलों तक मकान बन रहे हैं। किन्तु उनको बनानेवाले मजदूरोंके रहन-सहनका कोई प्रबन्ध नहीं किया गया था। दो-चार साल पहले उस नगरकी आबादी कुल तीस हजार थी। अब वहाँ डेढ़ लाख आदमी भरे पड़े थे। इसके सिवाय आस-पासके गुलामखानोंसे प्रायः आठ हजार कैदी भी काम पर आते थे। उन सबके रहनेके लिए शहरके बाहर चारों ओर काठके मकानोंकी बस्तियाँ बसी थीं। फिर भी सबको स्थान नहीं मिला। बाकी मजदूरोंने धरतीमें गढ़े खोदकर रहना शुरू कर दिया। इन गढ़ों पर लकड़ी और फूस इत्यादि ढांप कर किसी प्रकार काम चलाया जाता था। रूसमें जहाँ भी नया काम उठाया जाता है वहीं ये गढ़े बनने लगते हैं। इसका कारण यही है कि बढ़ती हुई आबादीको बसानेके लिए कोई योजना नहीं बनाई जाती।

जब हमने वह स्थान देखा, जहाँ हमारा कारखाना बननेकी बात थी, तो हम पागल हो गए। शहरसे बहुत दूर, नदीके किनारे एक दलदल पड़ी थी। न वहाँ बिजली थी, न गैस। न वहाँ तक रेल जाती थी, न ट्राम। और न कोई सड़क ही बनाई गई थी कि बस इत्यादि जा सके। हमारे सामने किसी बसे-बसाये शहरमें एक नया कारखाना बनानेका सवाल नहीं था। हमें तो एक बीहड़में एक नया नगर बसानेके लिये कहा जा रहा था। और उस कामके लिये हमें न काफी धन मिला

था, न पर्याप्त समय। इसके अतिरिक्त, वहाँकी धरती उस प्रकारके कारखानेके लिये सब प्रकारसे अनुपयुक्त थी। पाइप बनानेके लिये जो बड़े मकान बनाने और भारी मशीनें बैठानेकी जरूरत थी, वे उस धरती पर नहीं टिक सकते थे। यह बात कोई भी समझ सकता था। वहाँ काम शुरू करनेका मतलब था कि हम अपने हाथों अपना गला घोंट लें।

और मैंने जब अपनी रिपोर्ट लिखकर मास्को भेजी, तो वहाँ एक भूकम्प-सा आ गया। सब एक दूसरेका मुँह ताकने लगे। सबको अपनी जानकी फिक्र पड़ी थी। इस भयानक भूलको लेकर और एक पर्ज शुरू हो सकती थी। मैंने सब बातें साफ-साफ लिख भेजी थीं। किसी प्रकार के तर्कके लिये कोई स्थान नहीं छोड़ा था।

स्टालिंस्कसे १६० मील दूर, केमेरोवो नामक स्थान पर एक और उद्योग-केन्द्र स्थापित किया जा रहा था। जब वहाँकी योजना बनी थी, तो किसीने सलाह दी थी कि पाइप बनानेका नया कारखाना वहीं बैठाया जाये। अब मेरी रिपोर्टसे घबराकर मास्कोकी नौकरशाहीने केमेरोवोके नारे लगाने शुरू कर दिये। और इस प्रकार स्टालिंस्क छोड़कर मुझे केमेरोवोमें जाना पड़ा। मैं नया स्थान भी देखना चाहता था। मुझे इस बार तुरन्त इजाजत मिल गई। नया स्थान बहुत अच्छा था। वहाँ लगभग सवा लाखकी बस्ती थी। सड़कें चौड़ी बनी थीं, बड़े-बड़े पार्क थे, नए-नए मकान बहुतसे मिल सकते थे तथा कर्मचारियोंके लिये सुन्दर बँगलोंका प्रबन्ध था। वे काठके घरौंदे और धरतीमें बने गढ़े मैंने वहाँ भी देखे; किन्तु अपेक्षाकृत वह स्थान मुझे पसन्द आया।

मैं मास्को लौट आया। फिर मैंने लेनिनग्राड जाकर नई योजनाको पूरी करानेमें कई सप्ताह बिताये। इसी बीचमें हमारे लिये काफी मोटी रकम केमेरोवोके बैंकमें भेज दी गई और नए आदमी साथ लेकर मैं

अपने नये काम पर चला गया। आयरीना स्टेशन पर मुझे छोड़ने आई। विदाकी घड़ियाँ दुखदायक थीं। हाँ, एक खुशीकी बात मैं उसे बता सका। कामके सिलसिलेमें बार-बार मुझे मास्कोमें आनेकी आशा थी।

निराशापूर्ण जीवनमें कठोर परिश्रम एक प्रकारके नशेका काम देता है। कमसे कम मेरे साथ तो यही हुआ। मैंने खूब डटकर नया काम संभाला और जी-तोड़ मेहनत की। जितना ही अधिक काम मैं अपने शरीरसे लेता था, उतनी ही अधिक अच्छी नींद मुझे रातको आती थी। कामके सम्बन्धमें चिन्ता करते-करते मैं देशकी चिन्ताको भुलाये रहता था। मुझे उस आतंकवादी शासनसे घोर नफरत थी। किन्तु उसी शासनके लिये मन लगाकर काम करते हुए उसकी काली करतूतें भुलानेमें मैं सफल हो गया।

हमारे काममें नौकरशाही बार-बार रोड़े अटकाती थी। मुझे सामान और कल-पुर्जे इकट्ठे करने थे, उनको एक स्थानसे दूसरे स्थान पर पहुँचाना था। मुझे हजारों मजदूरोंकी जरूरत थी। उनको रखनेके लिये घरोंकी जरूरत थी, भोजन-वस्त्रकी जरूरत थी। साधारणतया इन सब बातोंका प्रबन्ध करनेमें कठिनाई नहीं होनी चाहिये। किन्तु हमारे सोवियत् देशमें एक जरा-सी बातके लिये सैकड़ों दफ्तरों को विचार करना पड़ता है। कोई भी अपने ऊपर उत्तरदायित्व लेना नहीं चाहता।

पर्जके दिनोंमें केमेरोवोमें बहुत लोग पकड़े गए थे और उनकी क्षति अभी पूरी नहीं हो पाई थी। बड़े-बड़े कारीगर और कर्मचारी डरे बैठे थे। उन्होंने वहाँ खून बहता देखा था। मास्कोमें जो मुकदमे चले थे, उनमें इस नगरका नाम बार-बार लिया गया था। कहा गया था कि "विनाशकारी" लोग इस नगरके उद्योग धन्धोंको विशेष रूपसे नष्ट करना चाहते थे। विरोधी दलके नेताओं द्वारा चलाया हुआ एक "गुप्त छापाखाना" भी यहाँ मिला था। इस शहरके सबसे बड़े षडयन्त्रकारीका

नाम था कामरेड नारकिन। पियाटाकोवके मुकदमेमें वह भी एक अभियुक्त था और मुकदमा समाप्त होनेके चन्द घण्टे बाद उसको फाँसी दी गई थी। मुझे जिस आफिसमें बैठकर काम करना पड़ रहा था, वह एक समय नारकिनका आफिस था। कहा जाता था कि उसी आफिसमें बैठकर नारकिनने अपना षड्यन्त्र चलाया था। मेरे साथ काम करने वालोंमें कई लोग ऐसे थे, जिन्होंने नारकिनके साथ भी काम किया था और उसके विरुद्ध गवाही भी दी थी। उन लोगोंसे मेरा परिचय बढ़ा, तो बातचीतमें नारकिनका नाम भी आने लगा। मैंने देखा कि सहसा उनका मुख लाजसे लाल हो उठता था। वे मुझसे कहना चाहते थे कि उन्होंने अपनी जान बचानेके लिए पुलिसके दबावमें आकर झूठी गवाही दी थी। एकने तो मेरे सामने सबकुछ सच-सच बता दिया। आखिर वे मनुष्य थे। उनकी अन्तरात्मा बहुत बार उनकी समझ-बूझ पर विजय पा लेती थी।

केमेरोवोका नाम मुकदमोंमें बार-बार आनेके कारण वहाँ एक भीतिका वातावरण बना था। मास्को इत्यादिसे पक्का आदेश पाए बिना वहाँ कोई कुछ भी नहीं करना चाहता था। और इसके पूर्व कि हम वहाँ अपने कामको पूरा कर पाते, सरकारकी नीति फिर एक बार बदली और हमारा किया कराया धूलमें मिल गया।



बीसवां अध्याय

जब योरुप लड़ रहा था

जिस समय स्टालिन और हिटलरमें समझौता हुआ और उसके फलस्वरूप योरुपमें महायुद्ध छिड़ गया तो मैं साइबेरियामें काम पर लगा था। केमेरोवोमें एक दिन वह समझौता धूमकेतुकी नाई उदय होकर हमको चकित कर गया। पार्टीके सदस्योंके लिए विश्वास करना कठिन हो गया। हम सब सन्न रह गए। हमने कभी नहीं सोचा था कि फासिस्ट जर्मनी रूसके साथ समझौता करके अपनी शक्तिका प्रयोग अन्य किसी दिशामें करेगी। हम तो हमेशा यहीं सोचते आए थे कि नाजियोंका एकमात्र शत्रु सोवियत् राष्ट्र है।

हमें विश्वास तभी हुआ जब कि हमने वे फिल्म देखीं जिनमें मोलोटोव और रिबनट्राप हाथ मिला रहे थे। मास्कोमें हंसिया और हथौड़ेवाली पताकाके साथ-साथ स्वस्तिक पताका भी उड़ने लगी। और तुरन्त ही मोलोटोवने हमें समझाना शुरू किया कि फासिज्म कोई बुरी बात नहीं, अपनी-अपनी रुचिका सवाल है। स्टालिनने अपने दूसरे तानाशाह मित्र हिटलरसे कहा कि हमारी मित्रता खूनसे सींची गयी है। और सोवियत् यूनियनमें तो लोगोंके साथ तर्क करनेकी जरूरत नहीं पड़ती। पार्टीका रुख देखकर वे सब समझ जाते हैं। कोई आफत मोल लेना नहीं चाहता। अपनी-अपनी जान बचानेके लिए सबको

पार्टीकी बात पर विश्वास करना और दिखाना पड़ता है। चाहे पार्टी कैसी ही बेवकूफी करे, कितनी ही बेतुकी बातें कहे। पार्टीके सब लोग एक ही दलील देते हैं—कि महान स्टालिन सब कुछ जानता है, कि रूसके लिए क्या अच्छा है, क्या बुरा है, यह सब सोचना उसीका काम है।

पार्टीकी बहुत-सी सभाओंमें उस समझौतेको लेकर चर्चा चली। घरोंमें और आफिसोंमें भी बातें हुईं। हम सब यह कहना चाहते थे कि इतने बड़े मामलोंमें भला हम क्या जानते हैं, हमारा काम तो यही है कि कारखाने बनाएँ और चलाएँ। हम सबको विश्वास करना पड़ता था कि हमारे नेता कोई भूल नहीं कर सकते। हम तो यही समझ सके कि हमारा देश उस खून-खराबीसे बच गया जो कि समस्त योरुपमें चल रही थी। और हमने उस भलाईके लिए स्टालिनको धन्यवाद दिया। इसके सिवाय हमको बिना लड़े ही लूटका माल मिल रहा था—आधा पोलेण्ड, बसरेबिया, तीन बाल्टिक देश। यह सब क्रेमलीनकी बदौलत था। क्रेमलीनने बहुत चतुराईसे काम लिया था।

यहाँ मैं एक बात साफ कर देना चाहता हूँ। स्टालिनने हिटलरके साथ समझौता करनेमें इमान्दारी ही बरती थी। उसको विश्वास था कि हमें जर्मनीसे लड़ना नहीं पड़ेगा। यदि वह जानता कि एक-न-एक दिन हमें जमनीसे लड़ना पड़ेगा तो जर्मनीके विरुद्ध फैली हुई घृणाका कुछ-न-कुछ अंश बचाकर रक्खा जाता। हम इस प्रकार अपना फासिस्ट-विरोधी प्रचार एकदम छोड़कर अमेरिका और ब्रिटेनके विरुद्ध प्रचारका तूफान नहीं उठाते। कम-से-कम कुछ विश्वस्त लोगोंको समझा दिया जाता कि जर्मनीका खतरा खतम नहीं हुआ है। मैं सरकारके बहुतसे उच्चपदस्थ लोगोंको जानता था। किन्तु किसीके मुँहसे मैंने नहीं सुना कि जर्मनीसे हमें कोई भय है।

अचानक वातावरण ही बदल गया। जर्मनीके विरुद्ध एक शब्द कहना अथवा हिटलर द्वारा पददलित लोगोंके प्रति तनिक-सी सहानुभूति दिखाना, एक घोर अपराध बन गया। कहा जाने लगा कि फ्राँस, ब्रिटेन और नारवे इत्यादिके जंगबाज अपनी करनीका फल पा रहे हैं।

जब जर्मनीसे हमारा युद्ध छिड़ा तो एक नयी बातका प्रचार किया गया। कहा गया कि स्टालिनने हिटलरसे समझौता इसलिए किया था कि कुछ दिनकी मोहलत मिल जाए और वह युद्धकी तैयारी कर सके। स्टालिनने जो भूल की थी उसको छुपानेके लिए ही इस नए सिद्धान्तको जन्म दिया गया है। किन्तु वास्तवमें मोहलत पाकर रूसने कोई तैयारी नहीं की। मैं जिन कारखानोंमें काम करता था उनका सम्बन्ध युद्धसे खूब गहरा था। मैंने तो यही देखा कि समझौतेके बाद सब तरफ एक प्रकारकी ढिलाई पड़ने लगी। सबका यही खयाल था कि स्टालिनने अपनी राजनैतिक बुद्धि लड़ाकर हमारे लिए शान्ति प्राप्त की है और हमको किसी प्रकारका भय नहीं करना चाहिए। फ्राँसका पतन होने तक किसीको चिन्ता नहीं हुई। उसके बाद कुछ तैयारी अवश्य होने लगी।

(२)

१६३७ में मेरे विभागको चार करोड़ सत्तर लाख रूबल मिले थे। १६३८ के अन्त तक सब तैयारियां हो चुकी थीं और हम कारखाने की बिल्डिंग बनानेका काम हाथमें लेना चाहते थे। बिल्डिंग बनानेका काम एक विशेष विभागको दिया गया था। जरूरतके मुताबिक मजदूर इकट्ठा करना उसी विभागका दायित्व था। किन्तु, चूंकि मुझे उस काममें दिलचस्पी थी, इसलिए मजदूर जुटानेके काममें हाथ बंटाना मैंने उचित समझा। और इस प्रकार पहले पहल मुझे एक बड़े पैमाने पर गुलाम मजदूरोंसे वास्ता पड़ा। प्रादेशिक पार्टीके सेक्रेटरी कामरेड वारकोव तथा

केमेरोवो नगर पार्टीके सेक्रेटरी कामरेड सिफ्रोव भी मजदूर जुटानेमें लगे थे। केमोरोवोकी सोवियत् भी उसी काम पर डटी थी। कुछ मजदूर तो साधारण कोटिके मिले, किन्तु अधिकतर काम गुलाम मजदूरोंसे चलाना पड़ा।

स्थानीय पुलिस विभागने पूछताछ करनेके बाद आरम्भमें दो हजार गुलाम मजदूर देने स्वीकार किए। उनका कहना था कि ज्यों ज्यों काम बढ़ता जाएगा वे और गुलाम मजदूर देते जाएंगे। इन सब बातोंका बन्दोबस्त करनेके लिए मुझे कई बार पुलिसके दफ्तरोंमें जाना पड़ा। गुलाम मजदूरोंके बारेमें काफी खींचतान होती थी। वे कैसे होने चाहिएँ तथा उनको कितना वेतन देना होगा, यह सब तय करना जरूरी था। यदि कोई अजनबी आकर सहसा हमारी बातें सुनता तो उसे ऐसा लगता जैसे गधे घोड़ोंका मोलभाव हो रहा है। उसकी समझमें नहीं आता कि हम आदमियोंके बारेमें बातचीत कर रहे हैं।

पुलिसने हमें बताया कि गुलामों की कमी नहीं है और उनमें कुछ लोग तो शिक्षित भी हैं जो फोरमैन इत्यादिका काम भी कर सकते हैं। वे पाँच हजार, दस हजार, अर्थात् जितने हमें चाहिएँ उतने गुलाम जुटा सकते थे। बातें करते समय पुलिसवाले ऐसा भाव दिखाते थे जैसे वे घोड़ोंके व्यापारी हों, जिनको कि अपने घोड़ों की नसलपर अभिमान है। उनको एक ही चिन्ता थी। जितने गुलाम उनके पास थे उन सबको रखनेका समुचित प्रबन्ध नहीं था। आसपासमें जितने गुलामखाने थे, उनमें अधिकसे अधिक पन्द्रह हजार गुलाम रक्खे जा सकते थे। पुलिस सोच रही थी कि क्या वे हमारी जरूरत पूरा करनेके लिए जल्दीसे एक नया गुलामखाना खोल सकते हैं। कभी-कभी वे सोचते थे कि पुराने गुलामखानोंमें ही कुछ नए कठघरे बना डालें। हमने कहा कि इन बातोंका फैसला करनेसे पहिले हमको एक गुलामखाना दिखाया जाए।

और एक दिन हम एक बढ़िया कारमें बैठकर गुलामखाना देखने चले। सुबहका वक्त था। हवा चल रही थी और सरदी अधिक थी। हमलोग चार आदमी थे। एक पुलिसका आदमी, पार्टीकी नगर कमिटी का सेक्रेटरी तथा दो हम कारखानेके प्रतिनिधि। बरफ पड़नेके कारण गाड़ी धीरे चल रही थी, किन्तु लगभग बीस मिनटमें हमलोग ठीक स्थान पर पहुँच गए। एक नालेके किनारे पर ऊँचीसी जगह पर वह गुलामखाना बनाया गया था। एक चौकोर-सा घेरा था। कांटेदार झाड़ियां तथा तार लगाकर उसे सुरक्षित बनाया गया था। चारों कोनों पर चार मीनार बने थे। दरवाजे पर सन्तरीके खड़े होनेका स्थान था। वहाँ हम उतर पड़े। घेरे की बाड़के साथ-साथ काठकी बैरकें बनी थीं और बीचमें एक बड़ासा मैदान छोड़ा गया था। उन चार मीनारोंमें जो मशीनगन लगी थीं, उनकी सीधमें वह मैदान पड़ता था। कोई गड़बड़ होनेपर चारों तरफसे गोलाबारी की जा सकती थी।

हम लोगोंका इन्तजार किया जा रहा था और तुरन्त ही हमको आफिसमें पहुँचाया गया, जहाँ हम उस गुलामखानेके अध्यक्षसे मिले। उसने हमारी बहुत आवभगत की। वह एक नाटासा, मोटा ताजा, गोरा चिट्टा आदमी था। नखसिख से सुन्दर। उसको देखकर ऐसा लगा कि पुलिस और पार्टीके प्रतिनिधियोंसे बहुत घबराता है। वैसे तो मुझे गुलामखानोंमें जानेका अवसर कई बार मिला था, किन्तु फिर भी वहाँका पूरा अनुभव मुझे नहीं था। मेरे भीतर वहाँका सब कुछ देख लेनेकी तीव्र जिज्ञासा थी। मेरे मनकी अवस्था वही समझ सकता है जो कि उस कैदखानेको देखने जाए जहाँ कि उसको किसी दिन रहना हो। खिड़की में से झाँककर मैंने देखा कि लगभग पन्द्रह स्त्रियाँ सरदीमें ठिठुरती हुई एक मकानके पास लकड़ियाँ इकट्ठी कर रही हैं। उनमेंसे एकने अपने सिर पर बोरी बाँधी हुई थी। कइयोंके हाथों पर चिथड़े लिपटे हुए थे।

इसके बाद कई स्त्रियोंको बाल्टियोंमें पानी ढोते हुए देखा। पानीमेंसे भांप निकल रही थी।

मैंने अध्यक्षसे पूछा : "ये क्या कर रही हैं ?"

"सूअर और मुर्गोंको खिला-पिला रही हैं। हम अपने खाने लायक मांस यहीं पैदा कर लेते हैं।" उसने अभिमानसे कहा।

"सारे कैदियोंके लिए ?"

वह मेरी बात सुनकर हंसने लगा। जैसे मैंने को मूर्खता की बात कही हो। बोला : "कैदियोंके लिए मांस ! क्या हम इन देश-द्रोहियों को मांस खिलानेके लिए यहां बैठे हैं। यह कोई होटल या रेस्तरां थोड़े ही है। हमारा और पहरेदारोंका काम चल जाए, यही क्या कम है।"

"वे वहाँ खड़े हुए तीन बूढ़े कौन हैं ?"—मैंने उन दो आदमियों की तरफ संकेत करके कहा जो एक पत्थरोंके ढेर पर काम कर रहे थे। उनके कपड़े फटे हुए थे और सिरों पर उन्होंने कपड़ा लपेटा हुआ था।

"वे। पादरी हैं। वे इतने कमजोर हैं कि चल फिर नहीं सकते। इसलिए केमेरोवोके कारखानेमें न ले जाकर हम यहीं उनसे काम करवाते हैं।"

कारखानेके प्रतिनिधिने कहा : "बड़ी अजीब बात है। क्रान्तिके इन शत्रुओंको जब कैम्पमें बन्द कर दिया जाता है तो ये ठीक-ठीक काम करने लगते हैं। बाहर तो इन पादरियोंकी नवाबीका ठिकाना नहीं था। मैंने कई कैम्पोंमें इनको काम करते देखा है।"

वार्डनने उत्तर दिया : "बिल्कुल ठीक बात है। मेरा भी ऐसा ही खयाल है।"

दफ्तर में बैठकर हम अपनी समस्या सुलझाने लगे। उस गुलाम-खानेमें लगभग तीन हजार कैदी थे और काफी भीड़ मची थी। किन्तु वार्डर की राय थी कि वह एक हजार कैदी और वहाँ रख सकता है,

यद्यपि उनको काफी कष्ट होगा। किन्हीं किन्हीं बैरकोंमें तो कैदियोंकी दो-दो जमातें रह रही थीं। एक जमात काम पर जाती थी तो दूसरी काम परसे लौटकर वहाँ सो रहती थी। किन्तु कई बार कैदियोंको ऐसा काम करना होता था कि उनको इस प्रकार दो टोलियोंमें बाँटा नहीं जा सकता था। फिर भी इसका खयाल था कि उन्हीं बैरकोंमें एक ओर खाना बनाकर कुछ और कैदी रक्खे जा सकेंगे। हंसकर कहने लगा: "भीड़ तो हो जाएगी, किन्तु बीचमें सोनेवाला कैदी सरदीसे बच जाएगा। चलो एक फायदा तो होगा।"

अपनी योजनाको ठीक तरहसे हमें समझानेके लिए वह हमको अपने साथ लेकर बैरकें दिखाने चल पड़ा। अपने हैट और ओवर कोट पहिन कर हम उसके पीछे हो लिए। मैंने पूछा: "एक-एक बैरकमें कितने लोग रहते हैं?"

"मौके की बात है। साधारणतया तीन सौ साढ़े तीन सौ लोग रक्खे जाते हैं।"

एक बैरकका द्वार गार्ड खोलने लगा तो वार्डनने कहा: "इस बैरकमें तीन सौ दस औरतें रहती हैं।"

द्वार खुला। एक लम्बा, अन्धकारपूर्ण, नीची छत वाला हॉल था। गार्डने चिल्लाकर सबको खड़े होनेका आदेश दिया। कैदी स्त्रियाँ सकपका कर खड़ी हो गईं। जो ऊपरके खानोंमें पड़ी थीं वे कूद कर नीचे उतर आईं। सबको देखने पर लगा कि सहमी हुई हैं। केवल दो-तीन जनी लेटी रहीं। वे इतनी बीमार थीं कि हिल-डुल नहीं सकती थीं। उनमें सब देशोंकी जवान और बूढ़ी स्त्रियाँ थी। किन्तु सबके तन पर एकसे चीथड़े थे और चेहरों पर एक-सी मुर्दनी छाई थी। चारों ओर मानो पसीनेकी बदबू भरी थी। खटमलोंकी बूके कारण मुझे मतलीसी होने लगी। मोटी जाली लगी खिड़कियों में से थोड़ा-सा प्रकाश

भीतर आ रहा था। छतमें दो-चार छोटे छोटे बिजलीके बल्ब भी लटके देखे पर उस समय वे जल नहीं रहे थे।

बैरकमें इतनी सरदी थी कि हमारी साँस जमकर हमें दीखने लगी। किन्तु अधिकतर स्त्रियोंको मैंने अर्धनग्न अवस्थामें पाया। एक-दो ने अपरिचित पुरुषोंको आया देखकर अपनी छातियाँ ढांकनेकी कोशिश की, किन्तु अधिकतर तो बिल्कुल बेपरवाह बन चुकी थीं। उनमें नारी-सुलभ लाज-संकोच मर चुके थे। कुछ मुखों पर मैंने जवानीकी छाप देखी। किन्तु अधिकतर चेहरों पर झुर्रियाँ पड़ चली थीं। फिर भी मैंने देखा कि अधिकतर स्त्रियोंकी आयु बीस-तीस बरसके लगभग है। कइयोंके चेहरे और कपड़ोंके भग्नावशेष देखकर मैं समझ गया है कि वे पढ़ी-लिखी नारियाँ हैं। उनके चेहरे गन्दे हो गए थे, उन पर बुढ़ापा छा गया था, तो भी उनकी शिक्षा और संस्कार छुपे नहीं रह सके।

गुलामखानेमें पहुँचते ही कैदियोंके पाससे पत्र, फोटो तथा अन्य सब ऐसी वस्तुएँ छीन ली जाती थीं, जिनसे कि उन्हें अपने सगे-सम्बन्धियों और स्वाधीन जीवनकी याद आ सके। इसके साथ ही उनके बिस्तर, टूथब्रश तथा कंची वगैरह भी छीन लिए जाते थे। उनको कुछ धातुके बर्तन तथा लकड़ीके चम्मच दिए जाते थे। इस "सामान" को वे या तो "बिस्तर" पर रख लेते थे अथवा दीवार पर टांग देते थे। पुस्तकें, कागज, पैन्सिल इत्यादि रखनेकी सख्त मनाही थी और न ही रेडियो सैट वहाँ रक्खा जा सकता था। सगे-सम्बन्धियोंसे पत्र व्यवहार करनेकी न तो सम्भावना थी, न इजाजत ही दी जाती थी।

एक तरफ दीवारमें एक लोहेका बेसिन तथा एक नल लगा था। हमको समझाया गया कि वह कैदियोंके लिए हाथ-मुँह धोनेका स्थान है। इसके बाद उसने बताना शुरू किया कि किस प्रकार कुछ और खाने बनाकर वहाँ एक सौ कैदी और रक्खे जा सकते हैं। जैसे जानवरोंके

सम्बन्धमें बातें हो रही हों। कैदी खड़े खड़े सब सुन रहे थे। एक दीवार पर मैंने एक लाल कपड़ा टंगा देखा जिस पर श्वेत अक्षरों में लिखा था : "परिश्रम द्वारा नया जीवन मिलता है।"

बाहर निकल कर मैंने पूछा : "क्या ये सब स्त्रियाँ जरायम पेशा हैं ?"

वार्डरने उत्तर दिया : "नहीं। ये सब राजनैतिक आसामी हैं। कुलक तथा क्रान्ति की शत्रु। आदमियोंकी बैरकोंमें तो हम सब प्रकारके लोगोंको एक साथ रख देते हैं। किन्तु स्त्रियोंकी बैरकोंमें वेश्याओं तथा जरायम पेशा औरतोंको अलगसे रखना ठीक समझा जाता है। हमने देखा है कि औरतोंको अनुशासनमें रखना अपेक्षाकृत कठिन है।"

इसके बाद वह हमको एक दूसरी बैरकमें ले गया। वह कुछ छोटी थी। वहाँ सब स्त्रियाँ जरामय पेशा थीं, अथवा वेश्याएँ। हमारे भीतर जाते ही वे सब उठ कर खड़ी हो गईं। साधारण पुरुषकी आँखोंके लिए उससे वीभत्स और कोई दृश्य नहीं हो सकता। पुरुषमें स्त्रियोंके प्रति एक रसात्मक भावना होती है। किन्तु उन चीथड़ोंमें लिपटी, भद्दी स्त्रियोंको देखकर किसीके भी अन्तरका रस सूख सकता था। द्वारके पास मैंने देखा कि एक चार्ट टंगा है। उस पर कुछ कायदे-कानून इत्यादि लिखे थे और उनको भंग करनेवालोंके लिए दण्डका विधान भी। कैदियोंसे कहा गया था कि सफाई रक्खें और अनुशासन भंग न करें। मैं दण्ड-विधान पढ़ने लगा। पहले अपराधके लिए दो दिन तक भोजन बन्द ; दूसरीबार अपराध करने पर एक सप्ताहका एकान्त कारावास ; तीसरी बार अपराध करने पर अधिकारियोंकी इच्छा-नुसार कारावासकी अवधि बढ़ाई जा सकती थी अथवा कैदीको गोलीसे उड़ाया जा सकता था। मृत्युदण्डको रूसमें समाजरक्षाका सर्वोत्तम उपाय कहा जाता है।

बैरकसे बाहर निकलकर मैंने वार्डनसे पूछा कि क्या कभी उसने कैदियोंको मृत्यु दण्ड दिया है। उसने कहा कि पिछले साल बलवा हुआ तब कुछ लोगोंको मृत्युदण्ड दिया गया था, उसके बाद नहीं। शायद उसने सोचा होगा कि केमेरोवोमें पदाधिकारी होनेके नाते मुझे बलवेके बारेमें सब मालूम है।

इसके बाद हम पुरुषोंकी एक बैरकमें पहुँचे। स्त्रियोंवाली बैरक जैसी ही बैरक थी। दो बैरकें देखनेके बाद वहाँकी गन्दगी और दुर्गन्ध मेरे लिए सह्य हो गई थी। अतः मैं वहाँके कैदियोंको अच्छी तरह देख सका। उनमें अधिकतर बन्दी रूसके रहनेवाले थे, किन्तु बहुतसे उजबेक, तुर्कमन, तातार, आरमीनियन, यहूदी, पोल और कुछ चीनी भी मैंने देखे। उन सबकी हजामत बढ़ी थी। सब बेहद गन्दे थे और सूखकर कांटा हो चले थे। फिर भी कुछ लोगोंके चेहरे देखकर मैं समझ गया कि वे पढ़े लिखे बुद्धिशाली लोग हैं। मनने गवाही दी कि वे लोग इन्जीनियर, प्रोफेसर, साहित्यकार तथा पार्टीके लाञ्छित नेता होंगे। मैंने देखा कि एक लम्बे चौड़े सीने वाला कैदी सीधा खड़ा होकर मेरी ओर घूर रहा है। मैं समझ गया कि वह फौजमें रह चुका है। बिना वर्दीके भी उसके हावभावसे सब कुछ जाना जा सकता था। हाँ, अधिकतर लोग किसी समय साधारण किसान और मजदूर रहे होंगे।

एक बैरकका ओवरसीअर एक बहुत मोटा-ताजा बलिष्ठ आदमी था। उसकी नाक टूटी थी और आँखें धँसी हुई। वार्डनने कहा: "यह हमारा मूसल है"

"मूसल कैसा?"

"ओह, यह एक प्रसिद्ध तिजोरी तोड़नेवाला डाकू है। दस-बारह प्रान्तोंमें लोग इसके कारनामोंसे परिचित हैं। राजनीतिक आसामियोंकी

अपेक्षा ये जरायम पेशा लोग अच्छी तरह ओवरसीअरका काम करते हैं। इनके दिलमें दया नहीं होती ना।"

पुलिसमैनने कहा : "ये जरायम पेशा लोग राजनीतिक कैदियोंको नीची निगाहसे देखते हैं। ठीक भी है। ये लोग देशद्रोही तो नहीं हैं। ये बदमाश हैं, कानून भंग करते रहते हैं। बस।"

हममेंसे एकने पूछा : "यहाँ राजनीतिक कैदियोंकी अपेक्षा जरायम पेशा कैदी अधिक हैं या कम ?"

"यहाँ सारे कैदियोंमें दस-पन्द्रह प्रतिशतके लगभग जरायम पेशा लोग हैं। वेश्याओंको मिलाकर। लेकिन हमारी आँखोंमें तो राजनीतिक कैदियोंमें और इनमें कोई अन्तर नहीं।"

घर लौटते हुए मैंने उस पुलिसमैनसे और भी कुछ जानकारी प्राप्त की। मुझे मालूम हुआ कि बैरकोंमें कैदी लोग बीड़ी-सिगरेट नहीं पी सकते। उनके सगे-सम्बन्धियोंको अधिकतर उनके विषयमें कुछ पता नहीं रहता। जिन लोगोंको छोटी छोटी सजाएँ मिलती हैं, उनको भी इन गुलामखानोंमें रख दिया जाता है। इसलिए गुलामखानोंमें रहनेवाले स्त्री-पुरुषोंमें कोई पाँच सालकी कैद काटता है, कोई आठ या दस साल की। कुछ ऐसे भी लोग होते हैं जिनको उमरकैदका दण्ड मिला है। लेकिन कारावासकी अवधिसे कोई अन्तर नहीं पड़ता, क्योंकि गुलामखानेसे बहुत कम कैदियोंको छोड़ा जाता है। कैदीको छोड़नेके लिए मास्कोका आदेश चाहिए। अवधि पूरी होनेपर अपने-आप छोड़ देनेका नियम नहीं है। और मास्कोवाले बार-बार अवधि बढ़ा देते हैं, क्योंकि उनको अधिकाधिक गुलामोंकी जरूरत रहती है। जिनको छोड़ा जाता है, वे अपने घर वापिस नहीं जा सकते। उनको किसी विशेष प्रदेशमें जाकर बसना पड़ता है। साइबेरिया इत्यादि सुदूर पूर्व और उत्तरके प्रदेशोंमें अधिकतर आबादी इन गुलामखानोंसे छूटे हुए लोगोंकी है।

सुदूर पूर्व, उत्तर तथा साइबेरियाके गुलामखानोंमें कैदियोंकी संख्या साधारणतया तीस-चालीस हजार हो जाती है। गुलामखानोंमें लोग मरते अधिक हैं, इसलिए कैदियोंकी एक टुकड़ी तो उनको दफनानेके काममें ही बारह-चौदह घण्टे रोज बिताती है। कैदियोंका भोजन अधिकतर मोटी रोटी है। वह भी सबको भरपेट नहीं दी जाती। उनके कामकी मात्राके अनुसार किसीको एक पाव और किसीको अधिक रोटी दी जाती है। रोटीका बड़ा-से-बड़ा राशन तीन पाव तक है। इसके सिवाय उनको आलूका पतला सा सूप, कुछ तरकारी, दलिया और कभी-कभी सूखी मछली भी मिल जाती है। काम पूरा न होने पर इस राशनको कम कर दिया जाता है। भोजन कम मिलनेके कारण स्कर्वी, पेचिश तथा सर्दी इत्यादि रोग वहाँ बहुत फैलते हैं। जितने भी कैदी मैंने देखे सबके शरीर पर घाव थे, जिनमेंसे पीप बह रही थी। सबकी आँखें सूजी हुई थीं, सबका स्वास्थ्य छिन्न-भिन्न हो चुका था। एक सच्ची दास-प्रथाके अन्तर्गत गुलामोंकी कुछ कीमत होती है। काम करनेवाले ढोरोंकी भी देख रेख की जाती है। किन्तु रूसके गुलामखानोंकी कहानी बहुत दर्द-नाक है। गुलामोंकी कोई कमी नहीं और उनकी मालिक, सोवियत् सरकार, उनको खिला-पिलाकर जिन्दा रखनेका खर्च उठाना नहीं चाहती। इसलिए दलके-दल कैदी मरते जाते हैं और उनके स्थानमें दूसरे कैदी तुरन्त आ जाते हैं।

मैंने पूछा : "जिस विद्रोहकी बात आप कह रहे थे, वह किसलिए हुआ था?"

पार्टीके मन्त्रीने उत्तर दिया : "ओह, वह तो सन् १९३८ की घटना है। कुछ कैदियोंने काम करनेसे इन्कार कर दिया। कहने लगे कि उनको जो भोजन मिलता है वह मनुष्यके खाने योग्य नहीं। सरकारने सख्तीसे काम लिया, विद्रोहियोंके नेताओंको गोलीसे उड़ा दिया गया।

उनमें बारह पुरुष और दो स्त्रियाँ थीं। इसी कैम्पमें उनको मृत्युदण्ड मिला था। सारे कैदियोंको उनका अन्त देखनेके लिए खड़ा किया गया था। फिर प्रत्येक बैरकसे कुछ आदमी लेकर कब्रें खुदवाई गईं। यहीं, इस बाड़के उस पार। जब तक इन कैदियोंको वह कहानी याद रहेगी, दूसरा विद्रोह करनेका साहस इन्हें नहीं हो सकेगा। प्रत्येक गुलामखानेके मालिकको यह अधिकार रहता है कि चाहे जब इन गुलामोंको मृत्युदण्ड दे दे। ये लोग जनताके शत्रु हैं। इनके प्रति उदारता दिखाना ठीक नहीं।"

शायद यह आखिरी वाक्य मन्त्रीने जान-बूझकर कहा था। पुलिसका आदमी हमारे साथ था। यद्यपि वह मन्त्रीका मित्र था, तो भी जोखिम उठानेसे क्या लाभ होता।

(३)

दिसम्बरके अन्तमें मुझे सहसा मास्को बुलाया गया। मुझे नहीं मालूम था कि कैमोरोवोमें मेरा किया-कराया सब बेकार जाएगा। मैं तो समझा था कि कुछ कामकी बातें करनेके लिए मेरी तलब हुई है। हाँ, एक फायदा हुआ। आयरीनाके साथ क्रिसमस मनानेका अवसर मुझे अनायास मिल गया।

मास्को पहुँचने पर कामरेड कोझेवनिकोवने कहा :

"विक्टर, मेरे पास तुम्हारे लिए बुरा समाचार है। पार्टीकी केन्द्रीय कमिटीने फैसला किया है कि फिलहाल केमेरोवोमें पाइपका कारखाना न बने। उसके लिए जो रुपया मन्जूर हुआ था वह घटाकर बहुत कम कर दिया गया है। वहाँ जो काम हो चुका है उसको बचाकर रखने भरकी व्यवस्था है।"

मैं आश्चर्यसे उसका मुँह देखता रह गया। मैंने कहा : "पर यह हो कैसे सकता है ? हमने कितनी कठिन मेहनत की है। अब तो काम सुचारु रूपसे चल निकला है। फिर भला यह नई बात कैसी ?"

"मुझसे क्यों पूछते हो ? मैं क्या कर सकता हूँ। मेरी किसीने राय ली होती तो दूसरी बात थी। मुझे तो केवल हुक्म दिया गया है। और तुमसे एक बात कहता हूँ, किसीसे कहना नहीं। यह हुक्म पाकर मुझे भी इतना ही ताज्जुब हुआ है, जितना कि तुम्हें।"

मैं पज देख चुका था, इसलिए खतरेकी आशंकासे कांप उठा। मैं जानता था कि भूल तो बड़े लोग करते हैं, किन्तु दण्ड भुगतना पड़ता है छोटे अधिकारियोंको। कैमोरोवोमें काम बन्द करवाना मुझे एक बड़ी भारी भूल लगी। कामरेडने समझाया :

"मेरी यही सलाह है, विक्टर, कि तुम चुप करके बैठो। कैमो-रोवोका काम समेट कर यहाँ चले आओ। काम बन्द करनेका हुक्म वहाँ पहले ही जा चुका है।"

जिन देशोंमें सरकार सारी योजनाएँ बनाती है, वहाँ भी काम करनेवालोंको अपने कामसे लगाव हो जाता है। मैंने कैमोरोवोके कार-खानेके लिए बड़ी लगनसे परिश्रम किया था। मैं जानता था कि वह बड़ा कारखाना बननेके बाद साइबेरियाका भविष्य बदल जाएगा। मेरी आँखोंके सामने उस महान कारखानेका चित्र खड़ा रहता था और मैंने उसके तैयार करनेमें कोई कसर नहीं रख छोड़ी थी। यहाँ तक कि उसके लिए मैंने अनेक छोटे मोटे अधिकारियोंसे झगड़ा भी किया था। इसलिए मेरे लिए यह मानना कठिन हो गया कि अब अचानक वह सब किया कराया मिट्टीमें मिल जाएगा।

मैं नए कामके लिए बाट जोहने लगा। वेतन मुझे बराबर मिलता रहा। बहुत दिनके बाद छुट्टी मिली थी। मुझे अच्छी लगी। मैं रोज

रातके समय आयरीनाको लेकर थिएटर अथवा नाचगान देखने चला जाता था। अधिकतर रूसियोंकी तरह मुझे भी मास्कोमें सरदी बिताना पसन्द है। दिन छोटे-छोटे होते हैं। बरफसे सारा शहर ढक जाता है। और रातें खूब आनन्दसे बीतती हैं। इसके सिवाय मैं अपने खाना-बदोश जीवनसे तंग आ चुका था। मैं चाहता था कि कहीं एक जगह जम जाऊँ और घर बसाकर रहूँ। इसलिए भी मैं मास्कोमें रहनेके लिए लालायित था। देशके अन्य स्थानोंकी तुलनामें मास्को स्वर्ग है। मुझे कुछ सांठगांठ करनी पड़ी। पौलिटब्यूरोके सदस्य आन्द्रीयेवकी शिफारिश के कारण मुझे मास्कोमें ही काम मिल गया। शहरके बाहर एक बड़ा कारखाना था। उसीमें मैं कामपर लग गया। नौकरी बड़ी नहीं थी। पहले मैं जिन पदों पर रह चुका था, उनसे नीचेका पद ही मुझे मिला।

कारखाना क्रान्तिके पूर्व बना था, किन्तु बादमें उसको बढ़ाया गया था और अनेक सुधार भी हुए थे। उसमें प्रायः एक हजार आदमी काम करते थे। लोहे की पत्ती और पाइप ही वहाँ अधिक बनते थे। असिस्टैन्ट चीफ इन्जीनियर की हैसियतसे उत्पादनका भार मुझे ही सम्भालना पड़ा।

मेरा कारखानेका काम, पार्टीमें जाना आना, सभा सोसाइटियोंमें उठना बैठना तथा अन्य टैक्निीकल काम आयरीना की समझमें बिल्कुल नहीं आए। वह दूसरे वातावरणमें पली, पनपी थी। हम दोनों अलग-अलग दुनियाके निवासी थे। इसलिए झगड़ा होनेका कोई कारण नहीं रह गया। साधारणतया सोवियत् सरकारके अधिकारी अपनी पत्नियोंको अपने काम-काज तथा राजनीतिक व्यस्तताके विषयमें अनभिज्ञ रखते हैं। अनुभव उन्हें बतलाता है कि उनका परिवार उनके विषयमें जितनी कम जानकारी रक्खे, उनके लिए उतना ही अच्छा है। सरकारका कुठार

सदा उनके सिर पर उठा रहता है। इसलिए वे अपने सगे-सम्बन्धियोंको कुछ न बताकर उनकी रक्षा करना चाहते हैं। आयरीना समझदार थी और मुझसे उसे बहुत सहानुभूति थी। तो भी मैंने उसे कभी कुछ नहीं बताया। बहुत बार मैं चाहता था कि अपने मनकी बातें उससे कह दूं। किन्तु मुझे डर लगता रहता था कि कहीं वह भी किसी दिन मेरे "अपराधों" की साझीदार न मान ली जाए। इतना मैं कहूंगा कि इस घोर आतंक की छायामें रहकर पारिवारिक जीवन बिताना मेरे लिए दूभर हो गया।



इक्कीसवां अध्याय

अप्रात्याशित महायुद्ध

बाईस जून सन् १९४१ को सुबह ही सोवियत् रूसके नगरों और विमान-घाटों पर बम बरसने लगे। एक विशाल मोरचे पर पड़ी रूसी सेनाएं जर्मनीके टैंको की मारसे घबराकर तितर-बितर होने लगी। समस्त संसारके पत्रोंमें छप गया कि जर्मनीने रूस पर आक्रमण किया है। और उसी दिन प्रातःकाल, सूरज निकलनेसे पहले, रूसकी खुफिया पुलिसने सहस्रोंकी तादादमें उन लोगोंको गिरफ्तार करना शुरू कर दिया जिन पर कि सोवियत् सरकारको तनिक भी सन्देह था। किन्तु आफतका जो पहाड़ मेरे देशकी बीस करोड़ जनताके सिरपर टूटा था, उसका मुझे तनिक आभास भी नहीं हुआ। उस दिन प्रातःकाल जब मैं अपने दफ्तरमें पहुँचा तो किसीको भी नहीं ज्ञात था कि रूस पर आक्रमण हुआ है। समाचार पत्रोंमें पहले दिन की घटनाओंके समाचार छपे थे। उनमें लिखा था कि किस प्रकार हिटलरके शत्रुओंके छक्के छूट गए, और किस प्रकार "पूँजीवादी गीदड़ों" तथा "धनतन्त्री जंगबाजों" ने मुँहकी खाई।

हिटलरके साथ स्टालिनका समझौता होनेके बाद सोवियत् सरकारने जो प्रचार इंगलैंड और फ्रांस आदिके विरुद्ध शुरू किया था उसमें कोई अन्तर नहीं आया था। नाजियोंने जिन देशोंको कुचल डाला था उनके

लिए हमारे प्रचारमें सहानुभूतिका एक शब्द भी कभी नहीं छपा। हिटलरके खूनी भेड़ियोंपर भूल कर भी कभी छींटा नहीं कसा गया। रूसकी आम जनताको यही कहा जाता रहा कि कि सोवियत्-नाजी गुट-बन्दी बड़े सुचारु रूपसे निभ रही है यदि कोई इसपर सन्देह करता तो समझा जाता कि उसे स्टालिनकी अचूकता पर विश्वास नहीं है। और इस प्रकार वह बाईस जूनका दिन आ पहुँचा। किसीको गुमान तक न हुआ कि क्या होनेवाला है।

उस दिन हमारे कारखानेका काम धड़ल्लेसे चल रहा था कि अचानक एक नया आदेश आ पहुँचा। हमसे कहा गया कि मोलोटोव कोई महत्वपूर्ण ऐलान करनेवाले हैं। ऐसा पहले कभी नहीं हुआ था और हम सब भय और आशंकासे काँप उठे। और मोलोटोव की हकलाती हुई, रोनी आवाज सुनकर तो हम सन्न रह गए। सहसा हमारी समझमें नहीं आया कि उन सनसनीदार बातोंका क्या अर्थ लगाएं। मोलोटोव कह रहा था कि हिटलर बदमाश और दगाबाज़ है, कमीना और मूर्ख है; कि हिटलरने हमारे देशपर चढ़ाई की है; कि हमारा देश लगातार दो बरस तक अपना पेट काटकर हिटलरको भोजन, ईंधन, धातुएं तेल और गोलाबारूद देता रहा; कि हमारी सहायतासे ही हिटलरने समस्त योरुप पर काबू पाया है; कि हमने हिटलरकी सहायतामें सामान ही नहीं दिया बल्कि समस्त संसार में प्रचार करके तथा कूटनीतिक उपायोंसे उसकी सहायता की है; कि इस सबके बदलेमें हमारे साथ हिटलरने विश्वासघात किया है!

दो-तीन घण्टे बाद पार्टीका प्रचारक आ खड़ा हुआ। हमने एक सभा बुलाई। मजदूर सन्नाटेमें आये हुये थे, फिर भी आदतके अनुसार उन्होंने बार बार तालियाँ बजाकर प्रचारकका भाषण सुना और चुपचाप अपने-अपने काम पर लौट गए। रोजकी नाईं उस दिन भी हम काम

करते रहे। किन्तु युद्धके समाचारने हमको हिला दिया था और हमारे मनसे पुरानी बेबसीका भाव मिटने लगा।

उस दिन मुझे खबर मिली कि हमारी शिफ्टके इञ्चाज स्मोल्यानिनोव काम पर नहीं आये हैं और टेलीफोन करने पर भी उनका कुछ पता नहीं लग रहा। मैंने टेलीफोन उठाकर उसका नम्बर मांगा। मैंने पूछा : "क्या यह स्मोल्यानिनोवका घर है ?"

किसीने अकड़कर उत्तर दिया : "पहले स्मोल्यानिनोव यहाँ रहता था।"

"दया करके उसको बुला दीजिये।"

"तुम कौन हो ?"

"मैं कारखानेका असिस्टैन्ट चीफ इञ्जीनियर बोल रहा हूं।"

"वह यहाँ नहीं है। कभी आएगा भी नहीं।"

"आप कौन हैं ? मैं आफिसकी तरफसे बोल रहा हूँ।"

"मैं भी आफिसकी तरफसे बोल रहा हूं। मैं खुफिया पुलिसका अधिकारी हूं।"

मेरे हाथसे चौंगा छूट गया। मैं समझ गया कि मेरा मित्र स्मोल्यानिनोव पकड़ा जा चुका है। उसके क्रान्तिकारी जीवनका ऐसा अन्त होगा, यह किसीने नहीं सोचा था। वह योग्य इञ्जीनियर था। उच्च शिक्षित भी। क्रान्तिके दिनोंमें उसने खूब काम किया था और वह लेनिनका प्राइवेट सेक्रेट्री भी रह चुका था।

किन्तु युद्ध छिड़ते ही जो आतंक फैला, उसमें शिकार होने वालोंकी कोई गणना नहीं रही। स्मोल्यानिनोवका मामला तो पहले पहल मेरे सामने आया था। उसके बाद दो-चार दिनमें ही दर्जनों और मेरे परिचित गायब हो गए। बहुत दिन पूर्व खुफिया पुलिसमें काम करने वाले एक मित्रने मुझे बताया था कि युद्ध होते ही समस्त "संदिग्ध"

लोगोंको मिटा दिया जाएगा। हरेक गांव, नगर और कस्बेमें "संदिग्ध" लोगोंकी एक लम्बी लिस्ट तैयार रहती थी। लाखों लोगोंको गिरफ्तार कर लिया गया। मेरे मित्रने सच-सच कहा था। युद्धके प्रथम दिनोंमें रूसने एक ही तैयारीमें सरगर्मी दिखाई—"देशके भीतर वाले शत्रुओं" की पकड़-धकड़। रणक्षेत्रके पीछे इस "तैयारी" की योजना बहुत पहले ही बनाई जा चुकी। अब स्टालिनने उस योजनाको पूरा कर दिखाया।

कई साल बाद जब मैं अमेरिकामें रहने लगा, तो मैंने एक चण्डूखाने की बात सुनी। समझदार अमरीकन भी उस बात पर विश्वास करते दीख पड़े। वे कहते थे कि स्टालिनने बार बार पर्ज करके समस्त "देशद्रोहियों" को कुचल डाला था और युद्ध शुरू होनेके समय कोई "पंचम वाहिनी" रूसमें नहीं बच रही थी। अमरीकाके भूतपूर्व राजदूत जोजेफ डेवीजने भी अपनी मूर्खतापूर्ण पुस्तकमें इस घृणित मिथ्याका प्रचार किया था। मुझे ताज्जुब हुआ कि किस प्रकार मास्कोका तुच्छसे तुच्छ प्रचार भी दूसरे देशोंमें इतना असर कर जाता है।

हाँ, मैं उस प्रचारको मिथ्या कहता हूँ। इसका प्रमाण स्वयं सोवियत् सरकारने दिया। वह सरकार चिल्ला-चिल्लाकर कहने लगी कि सारे देशमें द्रोहियोंका जाल बिछा है! युद्धके प्रथम दिन ही सरकारके रेडियो, समाचारपत्र तथा प्रचारक चीत्कार कर उठे कि देशमें फैले द्रोहियोंका खून पी लेना चाहिये, कि देशके कोने-कोनेमें भेदिये, अफवाह फैलाने वाले, अराजकता उपजाने वाले, तोड़-फोड़ मचाने वाले, नाज़ी-गुप्तचर मौजूद हैं। और पुलिसने तुरन्त ही लाखों आदमियोंको पकड़ लिया, हजारोंको मौतके घाट उतार दिया! सरकारने युद्धके लिये कमर कसनेसे पहिले ही इस कामको सरंजाम दिया। रूसकी जेलें और गुलाम-खाने ठसाठस भर गए। हमारी सरकार भी डरे हुए भेड़ियोंकी तरह बौखला उठी।

युद्ध शुरू होनेके कुछ दिन बाद मास्कोमें फ़ौजी अदालतें बनाई गईं। सारे शहरमें और आसपासकी बस्तियोंमें उनका आतंक छा गया। यही हालत दूसरे शहरोंकी भी हुई। इन अदालतोंको अधिकार दिया गया कि चाहे जिसको पकड़ लें, चाहे जिस पर गुप्त रूपसे मुक़दमा चला दें और चाहे जिसको मौतका दण्ड दे दें। सारे रूस पर एक घनी, काली रातकी तरह ये अदालतें छा गईं। युद्धके प्रथम छः महीनोंमें अकेले मास्कोमें ही हजारों लोगोंको फौजी कानूनके अन्तर्गत गोलीसे उड़ा दिया गया। जो भी तनिक-सा सन्देह या भय दिखाता अथवा शिकायतका एक शब्द कह देता, उसीको अदालतमें घसीट लिया जाता था। हजारों जासूस चारों तरफ फैल गए। दूकानोंके सामने लगी लाइनोंमें, बाजारोंमें, कारखानोंमें, थियेटरों और ट्राम-बसोंमें, तथा रेलके स्टेशनों पर वे जासूस कान लगाए रहते थे कि कहीं कोई सरकारकी नुक्ता-चीनी तो नहीं कर रहा अथवा निराशा तो नहीं जता रहा। प्रत्येक मकानके भीतर कमिटियाँ बनीं, जो सारे किराएदारोंके बारेमें रिपोर्ट देती थीं! प्रत्येक नौकर अपने मालिक पर जासूसी करने लगा।

रूसके भीतर जो आतंक फैला, उसके विषयमें अतिशयोक्ति सम्भव नहीं। उन युद्धके दिनोंमें यह एक नया युद्ध और छिड़ गया। क्रेमलीन में बैठे सत्ताधीशोंको रूसकी जनता पर तनिक भी विश्वास नहीं था। इस अविश्वासकी अभिव्यक्ति आतंकके रूपमें हुई। अविश्वासका एक दूसरा प्रमाण भी तुरन्त मिल गया। बीस सालसे जिन "समाजवादी" नारोंको लगा लगाकर हम नरक-यातना भोगते रहे थे, वे सब नारे एकबारगी बन्द कर दिये गये। बीस साल तक जनताको कम्युनिज्मका पाठ पढ़ाया गया था। किन्तु अब अचानक सोवियत् सरकारने राष्ट्रीयता और देशभक्तिकी दुहाई देना शुरू किया, रूसी जातिके नाम पर नारे लगाए, यहाँ तक कि धर्मके नाम पर भी लोगोंसे अपील की। युद्धोन्माद जगाने

का यह पुराना तरीका ही कारगर साबित हुआ। कम्युनिज्मको बचानेके लिये मानो कोई भी नहीं लड़ना चाहता था। हमसे यह नहीं कहा गया कि 'समाजवादी देश' की रक्षाके लिये लड़ो। इसके विपरीत हमें रूसी मातृभूमि, स्लाव जाति और हमारे सनातन भगवानके नाम पर लड़नेके लिये उभारा गया। कोई नहीं सोच सकता था कि सोवियत् सरकार इस प्रकार अपना "धर्म" छोड़कर ऐसी बातोंके नाम पर अपील करेगी, जिनको वह अभी तक "अधर्म" कहती आई थी।

हाँ, तो युद्धके पहिले दिनोंकी बात कह रहा था। एक साँझको मैंने देखा कि डायरेक्टरके आफिसमें स्वयं मान्तूरोव विराजमान हैं। मेगोरोव और लैगीनोव भी बैठे थे। युद्धके विषयमें बातचीत होने लगी। रेडियो भी खोल रक्खा था। नई खबरोंके लिये हम मुँह बाएँ रहते थे। सहसा गाना बन्द हुआ और एक भारी भरकम स्वर बोल उठा। रूसी भाषामें किया गया युद्ध घोष था:

"रूसके नागरिको, रूसके वासियो, सुनो, ध्यानसे सुनो। जर्मन सेनाके प्रधान शिविरसे हम अपनी बात कर रहे हैं।"

हमने डरकर एक दूसरेकी ओर देखा। मान्तूरोव बोला:

"इस बदमाशको सुननेकी क्या जरूरत है। रेडियो बन्द न कर दें?"

"जहन्नुममें जाये, साला। लेकिन सुनें तो सही कि हरामजादा कहना क्या चाहता है?"—येगोरोव बोला।

और रेडियोमें वही आवाज बोल रही थी:

"बीस साल तक तुम लोग भूख और आतंक सहते रहे हो। तुमको एक स्वतन्त्र जीवनके सपने दिखाकर गुलाम बनाया गया है। तुमको भोजनका लोभ देकर अकालसे पीड़ित किया गया है। आज तुम पूरे गुलाम बन चुके हो। मानवके नाते आज तुम्हारे कोई अधिकार नहीं। तुममेंसे हजारोंको रोज गुलामखानोंमें मरना पड़ता है, हजारों साइबेरिया

के हिमांचलोंमें जमकर रह जाते हैं। तुम इस देशको अपना नहीं कह सकते। अपना कहने लायक तो तुम्हारा अपना जीवन भी नहीं है। स्टालिन तुम सबका मालिक है। तुम्हारी हालत तो गुलामोंसे भी गई गुजरी है। तुम्हारे करोड़ों भाई आज जेलों और गुलामखानोंमें सड़ रहे हैं। तुम्हारी सरकारने तुम्हारे सनातन धर्मको ध्वंस करके भगवानके स्थान पर स्टालिनको बैठा दिया है। कहाँ है तुम्हारा बोलनेका स्वाधीन अधिकार ? कहाँ गई तुम्हारी प्रेसकी आज़ादी ?

"हम तुम्हारे उत्पीड़कोंको मार भगाना चाहते हैं। इस निरंकुश सरकारके विरुद्ध तुम भी विद्रोह करो।"

इसके बाद गालियाँ दी गईं और बहुत-सी वे भद्दी बातें कही गईं, जो प्रायः ही हम जर्मन रेडियो पर सुन सकते थे। यगोरोव चिल्लाया : "बन्द करो"। मान्तुरोवने झटपट रेडियो बन्द कर दिया। उसके बाद जो सन्नाटा छाया उसमें हमारा दम घुटने लगा। हमें एक दूसरेसे आँखें मिलानेका साहस नहीं हुआ। कुछ सहमे हुएसे हम एक दूसरेसे बिदा हुए। प्रायः एक घण्टे बाद मैं मान्तुरोवके आफिसमें फिर गया। स्मोल्यानिनोवके स्थान पर नये आदमीके बारेमें सलाह करनी थी। आदतके मुताबिक बिना द्वार खटखटाए ही मैं भीतर घुस गया। और मुझे यह देखकर अत्यन्त आश्चर्य हुआ कि मान्तुरोव और यगोरोव दोनों बैठे रेडियो पर जर्मनीका ब्राडकास्ट सुन रहे हैं। उनके मनका कौतुहल मैं अच्छी तरह समझ गया। बीस बरसके बाद पहले पहल सोवियत् सरकार की छीछालेदर खुले शब्दोंमें सुनी जा सकती थी। अभी तक सोवियत् सरकारको ही अपने नागरिकोंकी छीछालेदर करनेका अधिकार था। रेडियोमें कोई कह रहा था :

"ये पर्चे लेकर हमारे पास आओ। हम तुमको शरण देंगे। जर्मन सेना तुमको मुक्त करने आई है। तो फिर आतंक और गुलामीकी रक्षा के लिये कौन लड़ना चाहेगा ?"

मान्तुरोवने फिर गाली देते-देते रेडियो बन्द कर दिया। यगोरोव तो मुझे देखकर इतना घबराया कि उठकर कमरेके बाहर चला गया। मैं स्मोल्यानिनोवके मामले पर तथा दूसरी कामकी बातें करने लगा। मान्तुरोवने मेरी बात काटकर कहा :

"एक बात सुनो, कामरेड क्रावचैन्को। हमारे जमन रेडियो सुनने की बात किसीसे नहीं कहो तो अच्छा होगा। तुम तो समझदार हो। भगवान उनकी रक्षा करता है, जो अपनी रक्षा स्वयं करना जानते हैं।"

मैंने कहा : "मैं तो जानता हूं कि आधा मास्को यह रेडियो सुन रहा होगा।"

"कलसे यह सब बन्द हो जाएगा। मुझे अभी टेलीफोन पर खबर मिली है कि कलसे सब रेडियो सेट जब्त कर लिये जायेंगे।"

"जब्त ? क्यों ?"

"रेडियो सेटोंको सम्भालकर रखनेके लिये। और क्या ?"

और वही हुआ। सारे मास्को और सारे देशमें रेडियो जब्त हो गए। मुनादीकी गई कि जो नागरिक अपना रेडियो पुलिसको सौंपनेमें आनाकानी करेगा, उसको मौतकी सजा दी जाएगी। इसके बाद मैंने देखा कि ढेरके ढेर रेडियो सेट ठेला लारियों पर लदे जा रहे हैं। जब तक युद्ध चलता रहा, तब तक सारे रूसमें केवल लाउड स्पीकर सुननेकी इजाजत रही। उनके द्वारा केवल सरकारी रेडियो ही सुना जा सकता था। दूसरे देशोंमें शत्रुका रेडियो सुनना अपराध माना जाता था, लोगोंके रेडियो उनके पास रहते थे। रूसमें किन्तु सरकार जनता पर इतना विश्वास भी नहीं करती थी। सबको अपने-अपने रेडियोसे हाथ धोना पड़ा। और सत्यका गला घोंटकर जनताको घोर अन्धकारमें रखनेकी दिशामें सोवियत् सरकारका यह पहला क़दम था।

सरकारी विज्ञप्तियोंसे कुछ भी नहीं जाना जा सकता था। चारों तरफ अनेक अफवाहें फैलती थीं और विज्ञप्तियोंसे धांधली और भी बढ़ जाती थी। रणक्षेत्रसे जो शरणार्थी भाग कर आते थे, उनको पुलिस शहरोंसे दूर रखती थी, ताकि जनतामें सत्यका प्रचार न हो सके। फिर भी उनमेंसे इक्के-दुक्के लोग पुलिसकी आँखोंको बचाकर आ जाते थे और सारी बातें जनताको मालूम हो जाती थीं। सरकारी विज्ञप्तियोंके अनुसार रूसकी सेनाओंने कोई हार नहीं खाई थी। किन्तु शरणार्थियोंके मुँहसे विडम्बनाका कच्चा चिट्ठा मालूम हो जाता था। सरकारी विज्ञप्तियाँ तो यहाँ तक कहती थीं कि रूसकी सेनाएँ आगे बढ़ रही हैं। किन्तु जिन स्थानोंके नाम लिये जाते थे, उनको सुनकर कोई भी जान सकता था कि आक्रमणकारी बढ़ रहे हैं और युद्ध मास्कोके निकट आता जा रहा है। फिर भी अपने देशकी पराजयका कारण हमारी समझमें नहीं आता था। बीस बरस तक हम पर अनेक ज्यादतियाँ की गई थीं। हमें भूखा मारा गया था। इसीलिये तो कि देशकी सामरिक शक्ति बढ़ानेके लिये यह सब 'आवश्यक' था। हमारे नेता नित्यप्रति कहते रहते थे कि सोवियत् सरकारकी सामरिक तैयारी अद्भुत है, कि हमारे देशकी सेनासे कोई लोहा नहीं ले सकता। और अचानक उन्हीं नेताओंने चिल्लाना शुरू कर दिया कि हमारी सेनाएँ मैदान छोड़कर इसलिये भाग रही हैं कि हमारे पास तोप, बन्दूकें, बारूद और वायुयान नहीं।

सारे देशमें सैनिककरण की धूम मच गई। हाय तोबा बहुत बढ़ी। रिजर्वमें पड़े लोगोंको मोरचे पर भेजनेके पहिले इतना समय भी नहीं दिया गया कि वे अपने परिवारसे विदा ले लें और वह उस समय हुआ जब कि संसारकी सबसे बड़ी सेना हमारे पास थी और जब कि उस सेनाको फिनलैण्ड इत्यादि पड़ोसी राष्ट्रोंपर आक्रमण करके हम आजमा भी चुके थे। जुलाईके एक प्रातःकाल मुझे पार्टीके दफ्तरमें बुलाकर

यगोरोवने आदेश दिया कि सेनामें भरतीके लिए एक सभा बुलाऊँ। मैंने कहा कि पार्टीका नेता होनेके नाते उसीको वह सभा बुलाना चाहिए। वह बोला :

"नहीं, नहीं, विक्टर। यह काम नेताओंकी ओरसे नहीं, जनता की ओरसे होना चाहिए। मजदूर लोग तुमको बहुत चाहते हैं। तुम्हारे लिए यह काम मेरी अपेक्षा आसान रहेगा।"

बड़ी-सी सभा जुड़ी। मजदूरोंके मुखपर अविश्वासकी छाप थी। मैंने उनको रूसी कह कर पुकारा। सोशलिस्ट अथवा कम्युनिस्ट शब्द मेरे मुँहसे नहीं निकल सके। उन सबकी नाईं मुझे भी अपने देशसे प्यार था। मैं जानता था कि मेरा देश एक बात है और वह डाकुओंकी टोली जो उसपर राज्य कर रही है दूसरी बात। इसलिए देशके नामपर सेनामें भरती होनेकी अपील मैं हृदयसे कर पाया। मैं सच्चे दिलसे अपने देशकी विजय चाहता था। मेरे मनमें देशके शासकोंके प्रति विद्रोह था, फिर भी देश पर आक्रमण करनेवाले शत्रुसे प्रेम नहीं घृणा ही हुई। मेरे मानसकी इस भावधाराको जान लेनेपर कोई भी समझ सकता है कि रूसकी जनताने वह युद्ध किस प्रकार लड़ा और अन्तमें जीत किस प्रकार प्राप्त की। रूसकी जनताने स्टालिनके लिए युद्ध नहीं किया, बल्कि स्टालिनको भुलाकर ही वह उस घमासानमें उतर पाई। क्रेमलिनमें रहनेवाले वे बदमाश यह बात अच्छी तरह समझते थे। इसीलिए उन्होंने भी देशके नामपर अपील की, स्टालिनके नामपर नहीं।

एक मिसाल पेश करनेके लिए मैंने सबसे पहले अपना नाम स्वयंसेवकोंमें लिखवाया। मेरी देखादेखी दर्जनों मज़दूर और आफिसके कर्मचारी तथा कारखानेके मिस्तरी इत्यादि भरती होनेके लिए तैयार हो गए। किन्तु उच्चपदस्थ अधिकारियोंमेंसे कोई भी आगे नहीं आया। मजदूरोंकी आँखें उन्हें घूर रही थीं और उनको लाजसे सिर झुकाना

पड़ा। किन्तु उनमेंसे किसीने भी अपना नाम लिखवानेके लिए जबान नहीं हिलाई। जिला कमिटिका आदेश पाकर मेरा नाम लिस्टसे काट दिया गया। यदि मुझे लड़ाईपर भेज दिया जाता तो मान्तुरोव तथा यगोरोवको बहुत खुशी होती। मैंने उनको भरती करनेकी कोशिश की, इस बातको वे नहीं भुला सके। सारे कारखानेमें बात फैल चुकी थी। उस समय उनके लिए बचावका एकमात्र बहाना यही रह गया था कि क्रावचेंन्को इत्यादि उच्च अधिकारियोंके नाम लिखे जाकर भी काट दिए गए।

युद्ध आरम्भ होनेके एक सप्ताहके भीतर मास्कोमें रोटी दुर्लभ हो गई। याद रहे कि मास्कोमें रसद पहुँचानेका प्रबन्ध हमारे अन्य शहरोंकी अपेक्षा बहुत अच्छा था। अल्प राशन लेनेवालोंकी लाइनें लम्बी होने लगीं और लाइनके अन्तमें खड़े होनेवालोंको इतनी भी आशा नहीं थी कि दूकान तक पहुँचते-पहुँचते उनके लिए भोजनका सामान तथा किरासीन इत्यादि बच रहेगा। बमबारीसे बचानेके लिए ठीक प्रकारके रक्षागृह भी रूसकी राजधानीमें नहीं थे। रूसके पश्चिम तथा दक्षिणमें जो कल-कारखाने थे उनको हटानेका भी कोई प्रबन्ध उस समय तक नहीं किया गया जब तक कि देशपर आक्रमणकारी छा न गए। पीछे चलकर रूसकी सरकारने बहाना बनाया कि रूस तो आक्रमणात्मक युद्धकी तैयारी कर रहा था, कि रूसने भला कब सोचा था कि उसकी भूमि ही रणांगणा बन जाएगी। सच जो भी हो, हमारा करोड़ों टन कच्चा माल, युद्धका सामान, खाद्य सामग्री, ईंधन, और हमारे करोड़ों नागरिक उन क्षेत्रोंमें रह गए और आक्रमणके पहले झोंकेमें ही जर्मनीने उनको हथिया लिया।

इतने बड़े युद्धके सामने हम निस्सहायसे चीत्कार कर रहे थे। हिटलरने अपने जादूसे स्टालिनको इतनी गहरी नींद सुलाया था कि अमेरिका और ब्रिटेनके लाख जगानेपर भी उसकी आँखें नहीं खुलीं।

इसलिए रूसकी जनताने अपने खून पसीनेसे जो कल-कारखाने और समृद्धि पन्द्रह सालमें खड़ी की थी, वह सब हिटलरके हाथमें जा गिरी। यूक्रेन और श्वेत रूसमें समस्त बड़े-बड़े कारखाने, मशीन, ट्रेक्टर स्टेशन, बिजली बनानेके कारखाने तथा उनमें काम करनेवाले करोड़ो मजदूर नाजी लुटेरोंके शिकार हुए। उन सबको बचानेकी चेष्टा भी हमसे नहीं बन पड़ी। सेनाके प्रमुख नेता तो पर्जके दिनोंमें मारे जा चुके थे, और हमारी सेनाको सम्भालने लायक नए नेता अभी तैयार नहीं हुए थे। वोरोशिलोव तथा बुडैनी जैसे अयोग्य व्यक्तियोंको मैदान सम्भालना पड़ा और उनके छक्के छूट गए। अक्तूबरके पूर्व किन्तु उन नालायकोंको हटाकर दूसरे कमाण्डर नहीं रक्खे गए। यह स्टालिनकी बेवकूफीका एक और उदाहरण था। माना कि स्टालिन अन्तमें विजयी हुआ, किन्तु इतिहास उसकी इस बड़ी बेवकूफीको कभी माफ नहीं करेगा। उसकी बेवकूफीके कारण ही इतने रूसी नागरिक बेमौत मरे और देशमें इतनी बड़ी तबाही हुई।

मैं डंकेकी चोट कहना चाहता हूँ कि नाजी सोवियत्-संधिके लिए जो बहाना बनाया जाता है कि वह एकदम सफेद झूठ और कुत्सित प्रचारके सिवाय कुछ नहीं। स्टालिनने कभी नहीं सोचा था कि जर्मनी से उसको लड़ना पड़ेगा। इसलिए यह कहना कि तैयारीके लिए समय लेनेके लिए ही उसने वह समझौता किया था, सरासर बेईमानी है।

(२)

रूसकी जनताकी कमर टूट गई और कई महीने तक जर्मनीका घोर अत्याचार सहनेके बाद ही उसमें आक्रमणकारीके विरुद्ध रोष जाग पाया। दो बरस तक रूसकी जनताको सिखाया गया था कि हिटलर रूसका मित्र है, कि हिटलर शान्ति चाहता है। हिटलरके प्रति घृणा जगानेके लिए उनको नए-सिरेसे सच-सच बतानेकी आवश्यकता पड़ी।

यहाँ हमें यह याद रखना चाहिए कि युद्धके प्रथम कुछ दिनोंमें लाल सेनाकी कई टुकड़ियोंने हथियार फककर लड़नेसे इन्कार कर दिया था और शत्रुकी बन्दी बन गई थीं। अगर आक्रमणकारियोंमें इन्सानियत होती और वे राजनैतिक दूरदर्शिताका प्रदशन कर पाते तो कभी भी उनके विरुद्ध वह गुरिल्ला युद्ध नहीं किया जाता जोकि पीछे चलकर उन्हें भुगतना पड़ा। किन्तु जर्मन सेना तो नाजीवादके पैशाचिक जाति-सिद्धान्तका शिकार हो चुकी थी। इसलिए उन्होंने रूसमें पकड़े हुए कैदियोंको मारना और सताना शुरू किया। उनके अग्निकाण्ड और बलात्कार ही जनता देख पाई।

युद्धस्थलसे लौटे हुए शरणार्थी तथा जर्मनीकी कैदसे भागे हुए युद्ध-बन्दी जब लौटे, तो जर्मनीके अत्याचारोंकी कहानी जनताको मालूम हुई। हमको ज्ञात हुआ कि नाजी लुटेरोंकी आँखोंमें समस्त स्लाव जाति मनुष्य कहलाने योग्य नहीं थी। और हमको उनसे जो घृणा हुई, उसके सामने रूसी सरकारके प्रति हमारी घृणा हलकी पड़ गई। यदि हमारा किसी गणतान्त्रिक देशसे युद्ध हुआ होता, तो हमको आशा होती कि हमें राष्ट्रीय-स्वतन्त्रता या व्यक्ति-स्वतन्त्रता मिलेगी। तब तो कहानी ही दूसरी होती। किन्तु रूसके सामने एक दूसरा प्रसंग प्रस्तुत था। हमारे सामने दो जल्लाद थे—एक देशी, एक विदेशी। दोनोंमें से हमें एकको चुनना पड़ा। हमने देशी जल्लादको चुना। यह ठीक है। किन्तु इसके कारण रूसके तानाशाहोंको गर्व करनेकी जरूरत नहीं। हम उनके लिए नहीं, अपने देशके लिए लड़े हैं।

जर्मनीकी सेनाओंपर हमारे छापामारोंकी वीरगाथाए हमारे इतिहास में स्वर्णाक्षरोंसे लिखी जाएँगी। हमने दिखा दिया कि हम कितने साहसी और धैर्यशील लोग हैं, कि हमें अपनी मातृ-भूमिसे कितना गाढ़ा प्रेम है और हम मुसीबतके सामने किस प्रकार डटकर खड़े होना जानते हैं।

किन्तु रूसकी जनताकी इस बहादुरीको जब बाहरके कुछ लोग स्टालिनकी तानाशाहीके गुण गानेके लिए उपयोग करते हैं, तो हमें बुरा लगता है, हमें हँसी आती है। हाँ, इतना मैं अवश्य मान लेता हूँ कि शत्रु द्वारा दबाए हुए प्रदेशोंमें रूसकी खुफिया पुलिसने भी खूब हाथ दिखाए। उनको छापामारीकी लड़ाईके लिए विशेष तौरपर सजाया गया था। और उनके साथ-साथ सेनाकी कुछ सिद्धहस्त टोलियोंको छतरी द्वारा जर्मन फौजकी पीठपर बार-बार छोड़ा जाता था। बाहरवाले लोग एक और बात नहीं जानते। मैं बताए देता हूँ। मैदानसे भागनेवालोंको रोकनेके लिए हमारी सेनामें विशेष दस्ते तैयार किए गए थे। वे खुफिया पुलिस तथा सेनाके राजनीतिक-विभागके साथ मिलकर काम करते थे। उनका काम था कि भागते हुए सैनिकोंको रोकें और बिना आज्ञा मिले पीछे हटती हुई सेनाओंको आगे धकेलें। बिना आज्ञा पाए जो कोई भी सेनासे इधर-उधर डिगता था, उसको गोली मार देनेका अधिकार इन दस्तोंको दिया गया था। और इस अधिकारको काममें लानेका अवसर भी उन्हें खूब मिला।

रोज ही हम देखते थे कि भागे हुए सिपाहियोंकी भीड़-की-भीड़ जेलोंसे निकालकर पुलिसवाले ले जाते थे। अनुमान यही था कि उनको किसी एकान्तमें ले जाकर गोलीसे उड़ा दिया जाता है। उनके सिर घुटे हुए होते थे। चेहरों पर पीलापन लिए वे सूखकर काँटा बने अभागे फटी हुई वर्दियोंमें दाँत किटकिटाते चले जाते थे। मुझे विश्वस्त सूत्रोंसे मालूम होता रहता था कि सेनासे भागनेवालोंकी संख्या बहुत अधिक है। हमारे हताहतोंकी विशाल संख्या पर करोड़ों बार प्रशंसाके गीत गाए गए हैं। मैं यह जताना चाहता हूँ कि हमारे सिपाहियोंको मारनेमें हमारी सरकार भी जर्मनोंसे पीछे नहीं रही।

हमने अगस्त, १९४१ में मास्को खाली करना शुरू कर दिया और

उस समय तक खाली करते रहे, जब तक कि १९४२ में मास्कोके घेरेका भय बिल्कुल मिट न गया। युद्धके एक महीने बाद मुझे फौजमें ले लिया गया। तब तक मैं अपने कारखानेकी मशीनोंको उखाड़ कर यूराल प्रदेश भिजवानेका प्रबन्ध करता रहा। ज्यों-ज्यों जर्मनोंकी बमबारी बढ़ती गई, मास्कोके निवासी अपने-आप शहर छोड़कर जाने लगे। अपने-आपको खास बहादुर समझनेवाले कुछ लोगोंने इस भागनेको कायरता कहकर पुकारा। किन्तु शीघ्र ही आसपासके स्टेशनों पर तिल धरनेकी जगह न रह गई और रेलगाड़ियाँ उस जनताको ढोनेमें असफल होने लगीं। तब हममें से बहुतोंने सोचा कि यदि हमारी सरकार इस "कायरता" को समझ लेती और ठीक प्रकार लोगोंको बाहर निकालनेकी व्यवस्था कर देती, तो बहुत अच्छा होता।

सितम्बरके आरम्भमें मेरी बस्तीके भरती-दफ्तरने मुझे बुलाया। दो मिनटमें मेरी शारीरिक जाँच-पड़ताल पूरी हो गयी। मुझे सेनामें भरती होकर बहुत सन्तोष हुआ। आखिरकार मैं अपने देशके योद्धाओंकी पंक्तिमें खड़ा हो गया था। जबसे मैंने स्वेच्छापूर्वक भरती होनेका प्रयत्न किया था, तबसे मान्तुरोव और यगोरोवने मेरा नाम उस लिस्टपर से काट दिया, जो कि कारखानेके लिए आवश्यक लोगोंकी मांग करनेके लिए उन्होंने बना रक्खी थी। मुझे कैप्टेनका पद मिला और मास्कोसे बीस मील दूर बोल्शेवोके युद्ध-सम्बन्धी इञ्जीनियरिंग कालिजमें मेरी नियुक्ति हुई। मुझे और भी ऊँचे पदपर पहुँचानेके लिए एक विशेष-विभागमें लिया गया, जहाँ खास किस्मकी ट्रेनिंग दी जाती थी। सैकड़ों और इञ्जीनियरोंके साथ मैंने भी युद्ध-सम्बन्धी इञ्जीनियरिंग तथा ठेठ लड़ाई लड़नेकी शिक्षा प्राप्त की।

और बोल्शेवो मास्कोके इतना निकट था कि मुझे और आयरीना को एक-दूसरेका वियोग नहीं रहना पड़ा।

बाईसवाँ अध्याय

मास्कोमें आतंक

बोल्शेवोमें मुझे पार्टीका व्यवस्थापक बनाया गया और इस प्रकार मैं अपने साथी अफ्सरोंका नियन्ता हो गया। हाँ, समस्त फौजी मामलोंमें मैं कर्नल वार्वाकिन तथा उनके सहयोगियोंकी आज्ञानुसार काम करता था। हमारे देशपर छाई हुई विभीषिकाने हम सबको एक गाढ़े सम्बन्धमें बाँध दिया था। दिलसे मैं अपनी सरकारका पक्का शत्रु था। मैं सरकारके अत्याचारोंसे घोर घृणा करता था। जब मैंने उस सरकारकी अयोग्यताके प्रमाण अपने चारों ओर पाए, तो वह घृणा और भी गहरी हो गई। हिटलरके साथ स्टालिनके समझौतेको "यथार्थवाद" के नामपर बहुत सराहा गया था। वह 'चाल' जब इतनी बुरी तरह उल्टी पड़ गई, तो उस समझौतेके हिमायतियोंको उसकी याद करके ही लाज आने लगी। किन्तु मुझे अपने देशसे प्रेम था और अपने देशवासियोंकी विडम्बना देखकर मैं दर्दसे कराह उठा।

मास्कोमें जानेके मुझे अनेक अवसर मिलते थे। मैंने देखा कि वहाँ पराजयकी भावना बढ़ती जा रही है। ज्यों-ज्यों लोग वहाँसे भागे और जर्मनीकी सेनाएँ निकट आती गईं, त्यों-त्यों उस बदहवासीको रोकनेके लिए पुलिसका दमन भी बढ़ने लगा। और इस प्रकार आतंक तथा

घबराहटकी वह पराकाष्ठा आ पहुँची, जब कि जनताने खुलकर लूट-मार करनेमें आगा-पीछा नहीं देखा। ये सब घटनाएँ बाहरके संसारसे छुपाई गई हैं। सितम्बरके अन्त तक एक भयानक विस्फोटके समस्त कारण उपस्थित हो चुके थे। मास्कोसे लोगोंको बाहर निकालनेमें सरकारी अधिकारियोंने बहुत पक्षपात दिखाया और मास्कोके निवासी क्रोधसे बावले हो गए। जिनके पास सत्ता थी, उनका फर्नीचर तथा अन्य सामान बाहर भेजनेकी व्यवस्था हो रही थी; उनकी प्रेमिकाएँ तथा उनके परिवार भी आरामसे अन्यत्र पहुचाए जाने लगे। किन्तु हजारों निरीह परिवार अपने बर्तन-भाण्डे तथा स्त्री-बच्चोंके साथ स्टेशनोंपर सड़ते रहे। उनको इतनी आशा थी कि शायद किसी-न-किसी गाड़ीपर किसी दिन पाँवकी अँगुलियाँ टिकाने लायक ठौर मिल जाए। दिन-पर-दिन उन लोगोंकी संख्या बढ़ने लगी और उनका हंगामा तथा गोलमाल भी बढ़ गया। उनकी भायातुरता देखकर शहरके अन्य लोग भी डरने लगे। और उनकी आँखोंके आगे बड़ी-बड़ी सुन्दर कारोंमें अपना सामान तथा परिवार लेकर शासकवर्ग बाहर निकल पड़ा। युद्ध और मुसीबतकी पृष्ठ-भूमिकामें शासकवर्ग और जनताके बीचकी वह खाई और भी विशाल लगने लगी।

अक्टूबरके पहले सप्ताहमें तो मास्को काबूके बाहर हो गया। जिस प्रकार कोई व्यक्ति होश-हवास खो देता है, उसी प्रकार एक नगर भी बौखला जा सकता है। ट्राम और बसोंका सिस्टम गड़बड़ा गया। दूकानें खाली हो गईं, किन्तु भूखे लोगोंकी कतार फिर भी खड़ी रहती थी। आयरीनाके पास अन्य लोगोंकी अपेक्षा अधिक रुपया था और उसकी जान-पहिचान भी बड़े लोगोंसे काफी थी, फिर भी उसको भोजनकी तंगी सहनी पड़ी। घरों और आफिसोंको आग जलाकर गरम रखना असम्भव हो गया। पानी और बिजलीका प्रबन्ध बिगड़ चला।

उधर पुलिसके थानोंकी चिमनियोंसे दिन-रात धुएँके बादल उठते रहते थे। यही हालत बड़ी अदालत, विदेश-विभाग तथा अनेक सरकारी और पार्टीके दफ्तरोंकी थी। नेता लोग पुराने कागज-पत्र जलाकर अपनी काली-करतूतोंको छुपानेकी कोशिश कर रहे थे। ऊपरसे आदेश मिला मालूम होता था। और अक्टूबरकी वह हवा जले हुए कागजोंके गुबारसे लद गई। एक रातको अत्यधिक गुप्त रूपसे एक सन्दूक पुलिसकी लारीपर लादकर लाल चौकसे बाहर ले जाया गया। उसमें लेनिनका शव था। एक स्पेशल गाड़ीमें उस शवको साइबेरियाके ट्यूमेन नगरमें पहुँचाया गया और युद्ध समाप्त होने तक प्रायः चार साल तक वह शव वहीं रहा। इसी प्रकार क्रैमलीन और मास्कोके अजायबघरसे बहुत-सी बहुमूल्य वस्तुएँ बाहर ले जाई गईं। मास्को पर बमबारी प्रति दिन घोरतर होती जा रही थी। हाँ, जितने विनाशकी हम आशंका करते थे, उससे कम ही हुआ।

१३ अक्टूबरके बाद हम बोल्शेवोके जंगलोंमें पहरा देने लगे। चारों तरफ बरफ फैली थी। उधरसे मास्कोको एक रास्ता जाता था और यह खयाल किया जाता था कि जर्मन छतरीबाजोंकी एक टुकड़ी उतर कर उधरसे जरूर जाएगी। वहाँका टैम्परेचर जीरोंसे भी नीचे गिर चुका था; किन्तु मैंने सूती कपड़ोंके ऊपर एक पुराना कोट ही पहना था। मेरे जूते भी कैनवसके बने थे। मेरे पास एक ट्रेनिंग राइफल थी और केवल तीन गोलियाँ। हम सब लोग कहनेको तो अफसर थे, किन्तु किसीके पास भी मेरेसे अच्छे कपड़े नहीं थे और किसी भाग्यवानके पास ही शायद पाँच गोलियाँ हों। हैडक्वार्टरने जो गोला-बारूद भेजनेका वायदा किया था, वह हमारे पास नहीं पहुँचा। बरफमें बिताई वे रातें और दिन मुझे सदा याद रहेंगे। मेरे बहुतसे साथियोंको पाला मार गया तथा बहुतोंको ज्वर आने लगा। किन्तु कपड़ों और गोला-बारूदकी

तंगीसे भी अधिक टोंचने वाली एक बात थी—मास्कोसे निकलकर भागने वाले निरंकुश शासकोंकी भारी-भरकम कारें। मेरे बराबरमें बरफ पर बैठे एक अफसरने कह ही दिया :—"यदि इन हरामजादोंकी कोई और कार इधरसे निकली तो मैं गोली चलाकर उसकी छलनी बना दूँगा।"

मैंने उसे समझाया : "नहीं भाई, ये गोलियाँ तो जर्मनोंके लिये बचाकर रक्खो।"

सोलह तारीखकी प्रातःकाल कर्नल वार्वार्किनसे मुझे मास्को भेजा। मैंने देखा कि सारे शहर पर घोर आतंक छाया है। चारों ओर बुरी-बुरी अफवाहें फैल रही थीं। कहीं कहा जाता था कि क्रेमलीनमें हेरफेर हुआ है और स्टालिनको गिरफ्तार कर लिया गया है। कोई कहता था कि जर्मनों ने चारों ओरसे शहरको घेर लिया है। अधिक घबराए हुए कुछ लोग तो यहाँ तक कहते थे कि उन्होंने अपनी आँखों जर्मन छतरीबाजोंको लाल चौकमें उतरते देखा है। इधर-उधर कुछ दंगा-फसाद और लूट-पाट होने लगी थीं। ऐसा विश्वास फैलने लगा था कि सरकार ध्वस्त हो चुकी है और लाखों मास्को निवासियोंको बिना भोजन, ईंधन और हथियारोंके मरना पड़ेगा। अनुशासन ढीला पड़कर अराजकता बढ़ रही थी। सेवाय, मैट्रोपोल इत्यादि बड़े-बड़े होटलोंमें घबराई हुई स्त्रियाँ तथा मामूली वेश्याएँ सेनाके उन अफसरोंके साथ नाच-गान और व्यभिचारमें लगी थी, जो कि अभी भी शहर छोड़ कर नहीं भागे थे। शराबके झरने बहने लगे थे। शायद वहाँ इतनी मस्ती न भी हुई हो, जितनीकी सुनी जाती थी। फिर भी इस प्रकारके समाचार फैलना अपने आपमें एक प्रमाण था कि जनतामें अविश्वास बढ़ रहा है।

साँझ होते-होते मैं बोल्शेवो लौट आया। वहाँ पहुँचकर देखा कि एक अस्तव्यस्त भीड़ हमारे मकानके भीतर चक्कर काट रही है। मैं बोल्शेवोसे मास्को गया, उसके थोड़ी देर बाद लूटपाट शुरू हो गई थी

और लगातार कई घण्टे तक चलती रही। स्थानीय जनतामें आसपास के गांवोंसे किसान भी आ मिले थे। हमारे कमांडिंग अफ्सरोंका पता ही नहीं था। फौजके रसदखानोंके द्वार टूटते ही, फौज़के अफ्सर भी भीड़के साथ मिलकर लूटमें लग गए। उनको विशेष तौर पर गरम कपड़ोंकी तलाश थी। और वह टिड्डी दल वहाँसे कम्बल, चादरें, वर्दियाँ, जूते, खानेका सामान वगैरह जो भी हाथ लगा ले भागा। ऐसा लगता था जैसे ग़दर मचा हो। चारों ओर बरफमें पैरोंके निशान बने थे और फेंकी हुई चीज़-बस्त बिखरी पड़ी थी।

उधर मास्कोमें स्त्री, पुरुष और बच्चोंकी भीड़ने उमड़कर स्टेशनका घेरा डाल दिया। सतरह तारीखको भीड़ने भोजनकी तलाशमें गोदामों पर हल्ला बोल दिया, बाजार और दूकानें लूट लीं। पुलिस हाथ पर हाथ धरे खड़ी रही। अठारह अक्टूबरको भी वह हंगामा चलता रहा। हजारों कम्युनिस्टोंने समझ कर कि वे घिर गए हैं और उनकी खैर नहीं, अपने पार्टी कार्ड फाड़ डाले, किताबें फेंक दीं और स्टालिनकी तस्वीरें जला डालीं। आज मैं पूरे विश्वासके साथ एक भेदकी बात कह सकता हूं। मैंने सैकड़ो विश्वस्त सूत्रोंसे यह बात सुनी है कि यदि जर्मनी वाले कुछ कोशिश करते तो बिना युद्ध किए ही मास्कोको हथिया सकते थे। छतरीबाजोंकी तीन चार टुकड़ियाँ ऊपरसे उतारनेकी देर थी, शहर आत्म समर्पण कर देता। शहरके इर्दगिर्द जो मजदूरोंकी टोलियाँ जल्दी-जल्दी इकट्ठी करके पहरे पर तैनात की गईं थीं, उनके पास पूरे हथियार नहीं थे और शहरके भीतर सरकारको लकवा मार गया था। जर्मनीके जो टैंक पहले-पहल हिम्कीमें पहुँचे उनको विशेष मुसीबत नहीं उठानी पड़ी। फिर भी जर्मन सेना क्यों मास्कोका घेरा छोड़कर लौट गई यह एक भेद की बात है जो शायद उनके सिवाय कोई नहीं जानता। शायद उनको मास्कोका हाल मालूम नहीं हुआ और वे समझ बैठे कि

अधिक शक्ति की जरूरत पड़ेगी। शायद उन्होंने सोचा कि अगली बसन्तमें जब उनके पास कुमुक पहुँचेगी, तब मास्को लेने की कोशिश करेंगे। और उधर उन्नीस तारीखके बाद मास्कोकी स्थिति सुधरने लगी। साइबेरिया और सुदूर पूर्वसे संधि हुई तथा विश्वस्त सेनाएं आ पहुँची। पुलिसने भी अपना आलस त्यागकर हाथ पांव हिलाए।

फौजी अदालतें दिन रात काम करने लगीं। उन अदालतोंके हुक्मसे हजारों लोगोंको पकड़ा गया, हजारोंको गोलीसे उड़ा दिया गया। फिर भी उस आतंकके कारण लोगोंकी घबराहट दूर हुई हो यह नहीं कहा जा सकता। घबराहट मिटनेका कारण एक नई खबर थी जो कि मोरचे परसे भागे हुए सैनिक और किसान मास्कोंमें लाए। उन्होंने बतलाया कि साइबेरिया ओर सुदूरपूर्वसे आई सेनाओंकी मारसे जर्मन सेनाएं पीछे हट रही हैं और शायद सरदीका घेरा डालने की तैयारी कर रही हैं। इसी समय हमें बोल्शेवो खाली करनेका हुक्म मिला। सरकारके आदेशानुसार हमने राजनैतिक किताबें तथा फौजके कागज पत्र जला डाले। किन्तु ज्योंही हम शहर खाली करनेके लिए तैयार हुए, एक उल्टा आदेश आ पहुँचा। और दो तीन दिन बाद फिर एक बार हमें हुक्म मिला कि पीछे हट जाओ। यह तीसरा हुक्म नहीं बदला गया।

मेरे लिए ये सब मुसीबतें तो थीं ही, साथ ही मेरे दाँतमें बड़े जोरका दर्द हो गया। मैं फौजके हस्पतालमें दिखाने गया तो उन्होंने थोथे दाँतको भींगी रुईसे भर कर सीमेन्टकी सील लगा दा। डाक्टरने सोचा कि जब तक मैं दूसरे स्थान पर पहुँचूंगा तबतक काम चल जाएगा। किन्तु मुझे सतरह दिन तक तो मालगाड़ीमें बैठकर जाना पड़ा। सर्दी बला की थी, गाड़ीमें भीड़ बहुत हो गई। इसके बाद छः दिन पैदल चलना पड़ा। पांवमें रबरके तलेवाले कपड़ेके जूते थे। इसलिए मेरी व्यथा कई बार तो सहनकी सीमा पार गई। गाल सूजकर फूलने लगे और नस-नसमें दर्द बिजलीकी तरह दौरा करने लगा।

सुदूर पूर्वकी सेनाओंको कड़ी सर्दीमें जापानके विरुद्ध तैयार रक्खा जाता था। सीमान्त पर जापानियोंसे कुछ लड़ाई-भिड़ाईका भी उन्हें अनुभव था। अब वे एक महाद्वीप पार करके रूसके पाश्चात्य सीमान्तकी रक्षाके लिए दौड़ रही थीं। साथ ही साथ पाश्चात्यकी सेनाओंको धीरे-धीरे पूर्वकी ओर हटाया जा रहा था, ताकि यूरालके पार ले जाकर उन्हें भी नई ट्रेनिंग दी जा सके। उनमें अधिक तो नए रंगरूट थे, किन्तु कुछ ऐसे भी सैनिक थे जिनके डिवीजन शत्रुसे लड़ते-लड़ते नष्ट-भ्रष्ट हो गए थे और इसलिए जिनको खूनखराबीका कुछ कड़ा अनुभव हो चुका था। उन सबको नए सिरेसे ट्रेनिंग देकर, नए प्रकारसे सुसज्जित करना था। जर्मनीके विरुद्ध एक असली लड़ाईकी तैयारियाँ इस प्रकार शुरू हो रही थीं।

किन्तु चूंकि यह तैयारी ठीक समय पर नहीं हुई थी, इसीलिए हिटलर रूसमें इतना आगे बढ़ सका। नेपोलियनने भी इतने इलाकेको पददलित नहीं किया था। रूसके इतिहासमें किसी भी पाश्चात्य आक्रमणकारीको इतनी सफलता नहीं मिली थी। करोड़ोंकी इस प्रकार निरर्थक हत्या हुई, करोड़ों आहत होकर बेकार हो गए। हमारे मालिकोंकी बेवकूफीका हमको इतना भारी मूल्य चुकाना पड़ा। और अन्तमें रूसकी नई सेनाओं ने जब शत्रुके दाँत खट्टे कर दिए, तो उसी बेवकूफीको बुद्धिमत्ता कहकर सराहा जाने लगा। हँसी भी आती है, आँसू भी।

हमारी इञ्जीनियरोंकी टुकड़ी धीरे-धीरे पूर्वकी ओर रेंग रही थी। हमें भी नई ट्रेनिंग पाकर नए सिरेसे तैयार होना था। हमारे डिब्बेमें एक मामूलीसा स्टोव कुछ गरमी पैदा करनेके नाकाम कोशिश कर रहा था। बारी-बारीसे उसके आगे बैठकर हम थोड़ा-बहुत गरम हो लेते थे। चन्द दिनोंमें ही हमारी टुकड़ीके आधे लोग सर्दीके आघातसे बीमार पड़ गए। और मेरे जबाड़ेमें तो नरक किलबिला ही रहा था।

और इस प्रकार दुःख सहते हुए हमने सतरह दिनमें उतना रास्ता तय किया जितना एक साधारण पैसेन्जर ट्रेन चौबीस घण्टेमें पार कर जाती है। रोज़ ही हमारी गाड़ीको साइडिंगमें डाल दिया जाता था ताकि फौज और सामानको मोरचे पर ले जानेवाली गाड़ियाँ पहले निकल सकें। बात हमारी समझमें आती थी। किन्तु हमारी गाड़ीको इसलिए भी तो रोका जाता था कि रूसके भगोड़े शासकवर्ग को पूर्वकी ओर पहुँचानेवाली सुन्दर, विलासपूर्ण गाड़ियाँ आगे निकल जाएँ।

हमारे गन्तव्य स्थानके विषयमें हमारी टुकड़ीके दो-चार अफ्सर ही कुछ जानते थे। उनमेंसे मैं भी एक था। मैं जानता था कि तातार राज्यके मैन्जेलिंस्क नगरकी ओर हमें जाना है। उस राज्यकी राजधानीका नाम कजान है। मैन्जेलिंस्क नगर कामा नदीके किनारे पर बसा है। कामा नदी वोलगामें गिरती है। कजान पहुँचनेके पूर्व एक जंकशन पर हमारी गाड़ीको एक ओर लगा दिया गया, ताकि दूसरी गाड़ियाँ निकल जाएँ। हमको भी थोड़ा घूम-फिर लेनेकी इजाजत मिल गई। कुछ साथियोंको लेकर मैं निकटवर्ती जंगलकी ओर चल निकला। वहाँ वृक्ष काटे जा रहे थे। वहाँ पहुँच कर देखा कि काम करनेवाले वे दीन-हीन स्त्री-पुरुष रूसके नागरिक नहीं थे। उन्होंने रूसी ढंगके जूते तो अवश्य पहिने थे, किन्तु शेष वेश-भूषा उनकी विदेशी थी। कपड़े फट गए थे, और उन पर धूल जम गई थी, तो भी हमारी आँखोंने सत्यको तुरन्त ही पकड़ लिया। पासमें खड़े एक पुलिस गार्डने बतलाया कि वास्तवमें वे लोग विदेशी हैं। लैट्विया, लिथुवानिया, एस्तोनिया, पोलैण्ड इत्यादिके रूसी अधिकृत क्षेत्रोंसे प्रायः बीस लाख लोगोंको पकड़ा गया था। बर्लिन-मास्को समझौतेकी आड़में जब इन देशों पर रूसने छापा मारा तो इन अभागोंको तरह-तरहके दोष लगाकर पकड़ लिया गया था। इनमें यहूदी भी काफी तादादमें थे। हम अपना-सा मुँह

लेकर स्टेशन पर लौट आए। ये कैदी उन दिनोंकी यादगार थे जब कि रूस और जर्मनीका "भाईचारा" चल रहा था। और अब उन दिनोंकी प्रत्येक यादगार रूसी नागरिकोंके लिए लज्जाका कारण बन गई थी।

सत्रहवें दिन हम एगिज नामके नगरमें पहुँचे। वह हमारी लम्बी यात्राका पहला पड़ाव पड़ा। वहाँ रातको पहुँचे थे। रातभर तो एक टूटे-फूटे स्कूलके मकानमें बिता दी। सुबह होते ही हमको हुक्म मिला कि छः दिनके भीतर-भीतर हमें मैग्नेटोगोर्स्क पहुँच जाना चाहिए। हम दुविधामें पड़ गए कि छः दिनमें वहाँ कैसे पहुँचें। यही समझमें आया कि पैदल चलकर ही छः दिनमें पहुँचा जा सकता है। भाग्य जागा तो रास्तेमें शायद कहीं-कहीं कोई सवारी भी मिल जाए। रूसके हमदर्द किसानों पर आशा बांधी थी। इसलिए अलग-अलग टोलियोंमें विभक्त होकर हम चल निकले। मेरी टोलीमें बारह व्यक्ति थे। सरदीको भगानेके लिए हम लम्बे लम्बे डग भरते जाते थे। हमारी पीठों पर छः दिनका राशन और हमारा जो सामान बँधा था, वह प्रति पद पर भारी होने लगा। रबड़के तलेवाले हमारे कपड़ेके जूते बरफ पर चलनेके लिए तो बने नहीं थे। इसलिए कदम-कदम पर मेरे पाँवकी व्यथा दाँतकी व्यथाके साथ एकाकार होकर मुझे मुर्दा बनाने लगी। उसी समय किसीने एक देहाती राग छेड़ा। गानेमें दर्द था। रूसके अधिकतर देहाती गानोंमें एक अनवरत वेदनाकी पुट रहती है। उस गानेको सुनकर मेरी शिकायत कुछ हलकी पड़ गई।

तीसरे दिन रात ढले हम कामा नदीके किनारे पर बसे क्रास्नीबोर नामक छोटेसे नगरमें पहुँचे। मेरी हालत बहुत बुरी थी। पाँवकी अंगुलियाँ जमकर ठँठ बन गई थीं, पाँवोंमें छाले पड़े थे और सारी देह दर्दसे टूटी जा रही थी। और मेरे जबड़ेमें पीप पड़कर टीस उठने लगी थी। मैं एक पल भी नहीं सो सका। सुबह उठकर आँधी-तूफानको

पार करके मैं वहाँके दवाखाने पर जा पहुँचा। उस नगरसे तीन मील बाहर वह दवाखाना था। उसका नाम तो बहुत सुना था, किन्तु आँखोंसे देखा कि एक लकड़ीके बने हुए भद्देसे मकानमें एक अधेड़ आयुकी स्त्री डाक्टर बैठी हैं। वह मेरी हालत देखकर बहुत दुखी हुई, क्योंकि वह मेरी कुछ भी सहायता करनेमें असमर्थ थी। खूब अच्छी तरह देखकर वह बोली :

"तुम्हारे मसूढ़ेकी हड्डीमें सूजन आ गई है। दाँतमें लगी बीमारी सारे शरीरमें फैल रही है। तुम्हें शीघ्रातिशीघ्र मैन्जेलिंस्क पहुँच कर हस्पतालमें जाना चाहिए। यहाँ मैं तुम्हारे लिए कुछ भी नहीं कर सकती।"

"किन्तु यह गला-सड़ा दाँत तो आप निकाल सकती हैं" —मैंने कहा।

"नहीं। मेरे पास दवा नहीं है। कुछ दवा पड़ी है, बस दस साल पुरानी होनेके कारण बेकार हो चुकी है। फिर इन्जैक्शन लगानेकी नई सूई भी तो मेरे पास नहीं।"

फिर भी मैंने दाँत निकालनेके लिए उससे बहुत अनुनय-विनय की। हारकर वह तैयार हो गई और एक पुराने ढंगकी चिमटीसे दाँत खींच दिया। दाँतके निकलनेके साथ-साथ मसूढ़ेमें भी बड़ी चोट लगी। उन पन्द्रह मिनटोंमें मुझे जो व्यथा झेलनी पड़ी, उसको बयान करनेके लिए मेरे पास शब्द नहीं हैं। प्रायः एक घण्टे तक बिस्तर पर पड़कर मैं आराम करता रहा और फिर थोड़ीसी शराबके सहारे मैं क्रासनीबोरके लिए चल पड़ा। दाँत निकल जानेसे मेरी दशा कुछ सुधरी, और छठे दिन हम मैन्जेलिंस्कमें पहुँच गए।

वह एक साधारण ढंगका तारतार नगर था। तंग गलियाँ, सर्वत्र फैली हुई एक विशेष प्रकारकी गन्ध। हमें फिर एक स्कूलके मकानमें

ठहराया गया। उसमें न बिजली थी, न पानी। कई लोहेकी अंगीठियाँ जलाकर रखी गईं, किन्तु सरदी नहीं मिट सकी। हमारे सारे साथी जम कर पत्थर हो चुके थे, सबके पाँवोंके छाले फूटकर लहू बह रहा था। मैं तो हिलने-डुलनेमें भी असमर्थ था। दर्द सहते-सहते शरीरका बोझ पहाड़-सा हो चला था। मैं एक फूसके बिस्तर पर दो दिन तक पड़ा-पड़ा यन्त्रणा सहता रहा। तीसरे दिन मुझे मैन्जेलिंस्कके सैनिक अस्पतालमें पहुँचाया गया। मुझे जोरका बुखार चढ़ आया था। धीरे-धीरे वह कम पड़ा तो होशमें आकर मैंने चारों ओर आँखें दौड़ाईं। एक महिला डाक्टर मेरा तापमान ले रही थी। उसका चेहरा सुन्दर था। नयनोंमें दया-माया। मेरी ओर मुस्करा कर आश्वासनके स्वरमें बोली :

"कामरेड क्रावचैन्को, आप ठीक हो जाएँगे। ज्योंहीं आप जरा चंगे हों, आपको इलाजके लिए मास्को लौट जाना चाहिए। इस बीचमें आपको आराम पहुँचानेके लिए हमसे जो बन पड़ेगा हम करेंगे।"

एक रातको बारह बजनेसे कुछ पूर्व एक नौकर लैम्प लेकर हमारे वार्डमें आ पहुँचा। उसके पीछे-पीछे वह डाक्टर भी आई। वह साधारण कपड़े पहने हुए थी, और उसकी सज्जामें कुछ आकर्षण था। नित्य-प्रति वह अपने काले केशभारको लपेट कर गर्दन पर लटकाए रहती थी। आज किन्तु बहुत सुन्दर ढंगसे उसने केश संवारे थे। सारे रोगी उचक-उचक कर उसकी ओर घूरने लगे। जब उसने मेरे निकट आकर खाना परोसा तो मुझे मालूम हुआ कि उसने सेन्ट भी लगाई है। वह कहने लगी :

"नए सालकी बधाई।" फिर कुछ शरमा कर उसने हमें समझाया : "मेरे मनने गवाही दी कि शायद आजके दिन आपलोग एक सजी-सजाई महिलाको देखना चाहें। नए वर्षका आगमन है ना। आप-लोगोंको घरकी याद सता रही होगी।"

एक कमीसारने भावप्रवण होकर मन्द स्वरमें कहा : "मेरी आँखें इस नए सालके उपहारको देखकर धन्य हुई हैं।"

एक बूढ़े किसान सिपाहीने कहा : "गाँवमें मेरी बुढ़ियाने कभी इतनी अच्छी सज्जा नहीं की। युजीना, तुम्हें धन्यवाद। नए वर्षकी बधाई स्वीकार करो।"

जनवरीका अन्त आते-आते मेरी सुनाई हो गई। मुझे इलाजके लिए मास्को लौटनेकी इजाजत मिली। राजधानीमें पहुँच कर मैं घर पर ही ठहरा। किन्तु रोज हस्पताल जाकर दिखा आता था। आयरीनाकी देखभालमें मैं स्वस्थ होने लगा। मेरा जबड़ा ठीक हो गया और शरीर भरने लगा। और एक दिन जब अस्पतालसे छुट्टी मिल गई तो मैं आगेका आदेश पानेके लिए दफ्तरमें जा हाजिर हुआ। उन्होंने दो मिनटमें मुझे देख-भालकर मोरचे पर जानेके लिए ठीक ठहरा दिया। अस्पतालसे तो मुझे यही आदेश मिला था कि कुछ दिन और आराम करूँ।

मैंने आयरीनासे फिर विदा ली। बहुत दिन तक उसे दोबारा देखने की आशा मुझे नहीं थीं। किन्तु जब मैं दोबारा दफ्तरमें पहुँचा तो मुझे बताया गया कि मेरे लिए एक नया आदेश आया है। मेरे जैसे उच्च टैकनीकल शिक्षाप्राप्त लोगोंको उद्योग धन्धोंमें काम करनेके लिए ही रक्खे जाने की बात थी। बात समझदारी की थी। फिर भी मुझे ऐसा लगा जैसे मेरे साथ ठगाई हुई है। मैं युजीनाके लिए, रूसके किसानों, मछेरों, मजदूरों और अपने कई महीनेके साथियोंके लिए अपने प्रणोंकी बाज़ी लगाना चाहता था। वे मेरे देशके लोग थे और उनको मैं राजनीति तथा आदर्शवादके परे मानता था।

(३)

एक सौ तीस वर्ष पूर्व नेपोलियनने मास्कोको भस्मीभूत किया, तबसे मास्कोने इतनी कड़ाके की सरदी कभी नहीं देखी थी। इस साल सर्दी

उस मात्राको भी पार कर गई। आक्रमणकारी हमारे नगरमें नहीं घुस पाए। जैसे गोन्द लगे कागज पर मक्खियाँ फँस कर दम तोड़ती हैं, उसी प्रकार रूसके बरफीले मैदानोंपर जर्मन सेनाएँ ढेर होने लगीं। भूखे और तंगहाल बाल्कन देशोंमें तो जर्मन सेनाओंको खाने पीनेकी कुछ सामग्री उपलब्ध हो जाती थी, किन्तु रूसमें हमने पीछे हटते समय सब कुछ जला डाला था और आक्रमणकारीके हाथ कुछ नहीं लगा। किन्तु आक्रमणकारी की मुसीबतें देखकर ही हम अपनी मुसीबतें नहीं भुला सकते थे। मास्कोमें बत्तियाँ नहीं जलती थीं। चारों ओर भूखे लोग सरदीसे मर रहे थे। शत्रु की बमबारीसे शहर छलनी हुआ जाता था। नगरकी हिम्मत टूटी-सी जान पड़ती थी और निराशा की सीमा पार कर चुकी थी। बमबारीसे बचनेके लिए बार-बार सबको तहखानों और भूगर्भ रेलवे लाइनोंपर जाकर प्राण बचाने पड़ते थे।

सरकार की ओरसे जो राशन सबको मिलने की बात थी, उसमें किसीका भी पेट भरना कठिन था। किन्तु दूकानों पर लाइन लगाकर उतना भी लोगोंको नहीं मिलता था। इसलिए जर्मनीके बम डालनेवाले वायुयानोंसे बढ़कर भूख और सरदी हमें सताने लगी। युद्धको शुरू हुए आठ नौ महीने भी नहीं हुए थे कि इतने बड़े देशकी राजधानीमें रहने वाले लोग आलूके आटेसे बनी रोटियां खानेके लिए मजबूर हो गए। यहाँ तक कि उन्होंने अपने कुत्ते बिल्लियोंको भी मारकर खा लिया। फिर कव्वे पकड़ने लगे। युद्धके लिए की गई स्टालिन की "तैयारी" का यह असली नकशा था।

आयरीना दुबली हो रही थी। जिस दफ्तरमें वह काम करती थी वहाँ सबको खाना बहुत कम मिलता था, इसलिए आयरीना अपना राशन सबको बाँट देती थी। हमारे घरमें आग जलाकर गरम करनेका कोई प्रबन्ध नहीं था, इसलिए ओवरकोट, शाल और दस्ताने पहिनकर

हम काम चलाते थे। अधिकतर हमें बिजली भी नहीं मिलती थी और बहुत बार पानी भी बन्द हो जाता था। और बहुत बार तो पाखानेकी नालियाँ जमकर बन्द हो जाती थीं। इस प्रकार जीवन कठोर और आनन्दविहीन होता जा रहा था। पच्चीस साल तक मास्कोमें जिस निरंकुशता और नौकरशाहीका बोलबाला रहा था, उसका मूल्य अब हमें चुकाना पड़ रहा था।

पार्टी कमिटीने मुझे प्रोमटेस्टका चीफ इञ्जीनियर नियुक्त किया। मेरे नीचे विभिन्न प्रकारके नौ कारखाने थे, जो सबके सब युद्धक्षेत्रके लिए सामान तैयार करते थे। एक दिन अपनो मेज पर मैंने लिखा पाया कि मैं अमुक नम्बर पर तुरन्त टेलीफोन करूँ। मैंने नम्बर मिलाकर अपना नाम बता दिया। किसीने कहा :

"हाँ, कामरेड क्रावचेन्को, आप बड़े दफ्तरमें आइए। ठीक बारह बजे। आपके लिए दरवाजे पर पास की व्यवस्था रहेगी।"

बड़े दफ्तरसे मेरा मतलब खास रूसके सरकारी दफ्तरसे है। सोवियत् यूनियनके अन्तर्गत रूस ही सबसे बड़ा प्रान्त है। और सब प्रान्तोंको एक साथ मिलानेपर भी रूस प्रान्त बड़ा है। और दूसरे प्रान्तों पर रूसका पूर्ण प्रभुत्व भी रहता है। कहनेको तो सब प्रान्त स्वाधीन हैं, किन्तु रूसके सिवाय किसी अन्य प्रान्तको इतनी भी स्वाधीनता नहीं जितनी कि संयुक्तराष्ट्र अमेरिकाके विभिन्न राज्योंमें देखी जाती है। और रूसी सरकार भी एक दिखावा है। वास्तवमें वह सरकार यूनियन सरकार की ही एक शाखा मात्र है! उस सरकार की राजधानी भी मास्को है और उसके सारे कामों पर यूनियन सरकार की आँखें रहती हैं। उस सरकारके पास न तो अपनी पुलिस है और न अपनी कम्युनिस्ट पार्टी। इसलिए यदि रूसी सरकार और यूनियन सरकारको एक ही कहा जाए तो अधिक युक्तिसंगत होगा।

मैं कुछ देर तक बाहरके कमरेमें इन्तजार करता रहा। फिर एक महिला सेक्रेट्री मुझे कामरेड आन्द्री इवानोविच उत्किनके कमरेमें ले गई। वे रूसी सरकारके उपप्रधान थे। उन्होंने मुझसे बैठनेके लिए कहा। उन्होंने मुझसे प्रश्न पूछे और उत्तरमें मैंने एक प्रकारसे लैक्चर दे डाले। रूसमें हमको ऐसी आदत पड़ जाती है। अपनी बातोंको बढ़ा-चढ़ाकर कहना पड़ता है। तीन घण्टेकी बातचीतके बाद उत्किनने अपना सिर हिलाया, अपनी तेज आँखोंसे मुझे देखा और पूछ बैठे :

"रूसी सरकारके लिए काम करना तुम्हें कैसा लगेगा ?"

"किस प्रकारका काम है, यह जानकर बता सकूंगा।"

"हमें एक इञ्जीनियरकी जरूरत है। पार्टीका मेम्बर होना चाहिए। हम उसे युद्ध सम्बन्धी शस्त्रास्त्र-इञ्जीनियरिंग विभागका मुख्य बनाएंगे। मेरा खयाल है तुम वह काम संभाल सकते हो। मेरा यह मतलब नहीं कि बातका फैसला आज ही हो जाएगा। लेकिन और बातोंकी छानबीन होनेसे पहिले तुम्हारा हाँ कहना आवश्यक है।"

इसके बाद मैंने कुछ फौर्म भर दिए। कई दिनके बाद मुझे रूसी सरकारके प्रधानसे मिलनेका निमन्त्रण मिला। उसका नाम था कौन्स्टैन्टाइन पाम्फिलोव और स्टालिनके आस-पास रहनेवाले सशक्त व्यक्तियोंमें उसकी गिनती थी। उसका सुसज्जित कमरा, उसके बैठनेकी कुर्सी, उसके कमरेमें लगा स्टालिनका चित्र—सब उत्किनके कमरेसे बड़े थे। फर्नीचर इत्यादि भी अधिक बढ़िया था। उसके सामने बैठकर फिर मैंने प्रश्नोंका उत्तर देना शुरू किया। मेरेसे पूछे जानेवाले सवाल और मेरे सम्बन्धमें और बातें लिखकर उसकी मेजपर रक्खी हुई थीं। आखिरमें उसने कहा :

"कामरेड क्रावचैन्को, तुम दायित्वपूर्ण पदों पर रह चुके हो। फिर भी सरकारके काम करना एक अलग बात है। हम सब पार्टीके सेवक हैं

और सरकारका काम सर्वप्रथम पार्टीका काम है। आखिर पार्टी ही तो देश पर राज कर रही है।"

मैंने सिर हिलाकर उसे समझा दिया कि वह सब मैं जानता हूं। फिर पाम्फिलोवने कामरेड उत्किनको सम्बोधित करके कहा : "कामरेड उत्किन, अभी कोई जवाब आया क्या ?"

"अभी तो नहीं, कामरेड पाम्फिलोव।"

पाम्फिलोवने टेलीफोनोंके जालमेंसे एक उठाकर नम्बर मिलाया। फिर बोला :

"मैं पाम्फिलोव बोल रहा हूँ। क्रावचैन्कोके बारेमें क्या बात है ?"

वह दो तीन मिनट रिसीवर थामे बैठा रहा। कमरेके सन्नाटेमें मेरा दम घुट रहा था। शायद दूसरी तरफ कुछ पूछ-ताछ हो रही थी। आखिर पाम्फिलोव फिर बोला :

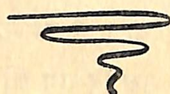
"अच्छा........अच्छा........तो कोई विरोध नहीं। बहुत अच्छा।"

उसने रिसीवर रख दिया। मैं समझ गया कि पुलिसके सातवें विभागसे बात कर रहा था। उस विभाग की इजाजतके बिना कोई बड़ी सरकारी पदवी नहीं दी जाती। पाम्फिलोवने मुझसे कहा : "अच्छा, कामरेड क्रावचैन्को, अब तुम जा सकते हो। सारी बातें पक्की होनेपर तुम्हें खबर दे दी जाएगी।"

कुछ दिन बाद ही पार्टीकी केन्द्रीय कमेटीने भी मेरे नए पदको पक्का कर दिया। मैंने सरकारके विशेष विभागको लिखकर गारन्टी दी कि मेरे दफ्तरमें जो कुछ होगा उसके सम्बन्धमें एक शब्द भी किसीसे नहीं कहूँगा। मेरा दफ्तर उत्किनके दफ्तरके बराबरमें था। मेरी पीठ पीछे दीवार पर टंगी स्टालिन की तस्वीर उत्किनके कमरेवाली तस्वीरसे कुछ छोटी थी। मेरे कमरेके बाहर पुलिसका सन्तरी पहरा देता था और बाहरके कमरेमें दो सेक्रेट्री बैठी हुई मेरे आदेशोंकी राह देखती थीं।

अब मैं सही मायनोंमें सरकारका नौकर था। मुझे एक लाल रंगका कार्ड मिला जिस पर सुनहरी अक्षर लिखे थे। वह कार्ड जादूका असर रखता था। वह सत्ताका प्रतीक था।

यह सब मई १९४२ की बातें हैं, जब कि जर्मनोंका दूसरा आक्रमण आगे बढ़ रहा था। वह आक्रमण बढ़कर सारे यूक्रेनको निगल गया। काकेशसमें दूर तक जर्मन सेनाएं धंस गईं और वोल्गाके किनारे स्टालिन-ग्राड नामके स्थान तक जा पहुँची।



तेइसवाँ अध्याय

युद्धकाल में क्रेमलीन

रूसी भाषामें एक शब्द है—व्लास्ट। इस शब्दका साधारण अर्थ है सत्ता। किन्तु प्रयोगमें इसका आशय होता है सरकार अथवा सर्वश्रेष्ठ सत्ता। शब्दका अर्थ और भी बृहद् है—स्टालिन, पौलिटब्यूरो, खुफिया पुलिस, स्टालिनके चाटुकार, चाहे वे सरकारी नौकर हों अथवा योंही इर्द-गिर्द रहनेवाले, इन सबको व्लास्ट कहा जाता है। रूसके नागरिक जब इस शब्दका उच्चारण करते हैं, तो उनके स्वरमें भय और ईर्ष्या दोनों मिलते हैं। सत्ताशालीके प्रति इन दोनों भावनाओंका होना अनिवार्य है; क्योंकि सत्ताधीश और साधारण जनताके बीच रूसमें बहुत बड़ी खाई है।

सरकारी दफ्तरमें मैं व्लास्टके अत्यन्त निकट जा पहुँचा था। अब मैं आँखें खोल कर अपनी आँखोंके नीचे विस्तरित संसारको देख सकता था। सत्ताधीशोंकी दृष्टिमें मानव जीवनके कोई मायने नहीं थे। वे मनुष्योंको इसी प्रकार हिलाते-डुलाते, इधर-उधर हटाते और मारते रहते थे जैसे मनुष्य काठ और चूना हों। अचानक मैं ऐसे लोगोंके बीच पहुँच गया, जो भूखे मरते हुए लोगोंके बीचमें बैठकर बड़े आरामसे पेट भर भोजन डकार सकते थे। इस आत्मपोषण पर उनकी आत्मा विद्रोह नहीं करती थी; बल्कि वे तो यही मानते थे कि इतिहासने उनको अत्यन्त कामका आदमी समझ कर ही उन्हें विशेष सुविधायें दी हैं।

कुछ दिनके लिये मेरा भी भाग्य चमका, इसलिये मैं शेखी बघारना नहीं चाहता। किसी सत्ताधीशके मनमें सनक आई और मैं ऊपर उठ गया। उसी प्रकार एक उँगली छुआकर मुझे वे ऊपरवाले नीचे धक्का दे सकते थे। मुझसे ऊपर वालोंको भी उसी प्रकार अपनेसे ऊपर वालोंकी दया पर जीना पड़ता था। बिना सावधान किये ही उनका सत्यानाश किया जा सकता था। पौलिटब्यूरोके किसी बड़े आदमीके सामने काँपते हुए मैंने पाम्फिलोव और उत्किन को न जाने कितनी बार देखा। उनको ऐसी ऐसी गन्दी गालियाँ दी जाती थीं, जो शायद अपने नौकर-चाकरों को भी कोई नहीं देता। तानाशाहीमें सत्ता और भयका एक सन्तुलन उत्पन्न हो जाता है। जो जितना शक्तिशाली होता है, उसको पतनका उतना ही भय लगा रहता है।

हमारे दफ्तरमें हम प्रायः तीस अफसर लोग ग्लावस्टका प्रतिनिधित्व करते थे और हमारे नीचे बहुतसे क्लर्क इत्यादि थे, जिनके जीवनसे हमारे जीवनका तारतम्य अनेक प्रकारसे देखा जा सकता था। हमारे दफ्तर जिस तल्लेमें थे, उसमें सन्नाटा रक्खा जाता था और पुलिसके सन्तरी चारों ओर तैनात थे। हमारे दफ्तर बड़े-बड़े थे और उन पर डबल दरवाजे लगे थे, ताकि बाहरसे कोई भीतर झाँक भी न सके। हमारे लिये हमारी मेजों पर ही बढ़िया नाश्ता और सान्ध्य-भोजन प्रस्तुत किया जाता था, सो भी मुफ्त। दूसरे वक्तोंका खाना हमें एक खास डायनिंग रूममें बड़े सस्ते दामों पर दिया जाता था। हमारा पेशाबघर भी अलग था और बाहर खड़ा एक संतरी यह देखता रहता था कि कोई ऐरा-रा उसमें न घुस जाए। नीचेके लोगोंके लिये एक अलग, मामूली-सा पेशाब-घर बना था।

एक बार हमारे दफ्तरमें एक किस्सा छिड़ा। एक नए क्लर्कको जो किसी कामसे हमारे तल्लेमें आया था, अचानक जोरकी शंका हुई और

सन्तरीकी आँख बचाकर वह हमारे पेशाब-घरमें घुस गया। जब वह बाहर निकला तो पकड़ा गया और सन्तरीने सारे मामलेकी रिपोर्ट उच्चाधिकारियोंसे की। कई खुफिया पुलिसवालोंने तुरन्त आकर वह पेशाब-घर छान मारा। वे देखना चाहते थे कि कहीं कोई बम इत्यादि तो नहीं रख दिया गया है। फिर नौकरानियोंने आकर वहाँ खूब धुलाई सफाई की और उस "काफिर" के "अनधिकार प्रवेश" से जो "भ्रष्टता" फैली थी, उसको दूर किया।

अपने साधारण जीवनमें मैं चाहे कितना ही अकिंचन हूँ, किन्तु यदि मैं सरकारी दफ्तरमें काम करता हूं, तो मुझे एक "राष्ट्रीय खजाने" की नाई सुरक्षित रक्खा जाता था। मेरी इजाजत पाये बिना बाहरका कोई आदमी मुझसे मिलने नहीं आ सकता था। जब कोई मिलना चाहता था, तो मैं अपने दफ्तरसे एक पास देता था, जिस पर मेरी अपनी मुहर अंकित होती थी। वह पास दरवाजे पर पहुँचता तो द्वारपाल फोन करके पूछ लेते थे कि अमुक पास मैंने वास्तवमें दिया है या नहीं। और मेरी जगह और कोई फोन पर झूठमूठ कुछ कहकर पुलिसको न बहकाने पाए, इसलिये मुझे एक गुप्त संकेत मिला हुआ था, जो कहकर मैं पुलिससे बातचीत आरम्भ करता था। मेरा गुप्त संकेत था—"लैना नम्बर सतरह"। पास मिलने पर मुझसे मिलने वाला व्यक्ति कई इन्स्पैक्टरोंके पास अपनी शनाख्त कराता हुआ मेरे पास पहुँचता था। बहुत बार जब मुझसे मिलने वाला व्यक्ति कोई वृद्ध अथवा विशेष परिचित होता था, तो मुझे बहुत लाज आती थी। किन्तु वह अग्नि परीक्षा दिये बिना तो हमारे दफ्तरमें कोई प्रवेश पा नहीं सकता था। किसीको कितने ही जरूरी कामसे मिलना हो, मेरेसे नीचेका कोई कर्मचारी पास नहीं दे सकता था। यदि मेरे नीचे काम करनेवाले किसी कमचारीसे मिलनेके लिये कोई आना चाहता हो, तो उस कर्मचारीको मेरे पास आकर सारी

बात मुझे समझानी पड़ती थी और मैं ठीक समझता तो पास दे सकता था।

इसके सिवाय भी एक और इन्तजाम था। क्रेमलीनके भीतर, पार्टी की केन्द्रीय कमिटी, हमारे दफ्तर तथा अन्य कुछ स्थानोंमें एक योजना के अनुसार सावधानी बरती जाती थी। उस योजनाको हम "शतरंजकी चाल" कहते थे। यदि हमारे सन्तरी ही साजिशमें मिलकर किसी हत्याकारी अथवा ऐसे ही किसी आसामीको दफ्तरके भीतर घुसाना चाहते, तो सारा खेल ही बिगड़ सकता था। इसलिये सन्तरियोंको दस-दस मिनटके बाद इधर-उधर तैनात किया जाता था। कोई सन्तरी अधिक देर तक एक स्थान पर नहीं रक्खा जाता था और किसको हटाकर किस स्थान पर भेजा जायगा, यह कोई सन्तरी नहीं जान सकता था। सारी हेरफेर एक बहुत पेचीदा तरीकेसे की जाती थी। इसीलिये किसी सन्तरीको ठीकसे मालूम नहीं हो सकता था कि अमुक समय वह अमुक स्थान पर होगा। इस प्रकार पाँच-चार सन्तरियोंके मिलकर षडयन्त्र द्वारा किसीको अनधिकार भीतर घुसानेकी कोई सम्भावना नहीं रह जाती थी। सावधानीकी एक और भी बात थी। केवल सरकारके कुछ बड़े अध्यक्षोंकी गाड़ियाँ ही द्वारके भीतर आ सकती थीं। बड़े-बड़े कमीसारों को भी अपनी गाड़ियाँ द्वारके बाहर छोड़ देनी होती थीं। भय था कि कोई हत्याकारी किसी गाड़ीमें टाइमबम रखकर क्रेमलीनको उड़ानेकी कोशिश न कर बैठे।

किन्तु मेरे नये बड़प्पनके असली प्रतीक यह पहरेदारी और पास देने की क्षमता नहीं थे। असली प्रतीक तो एक दूसरी वस्तु थी, जो साधारण होने पर भी हम सोवियत् कर्मचारियोंके जीवनमें विशेष स्थान रखती थी। वह थी एक तिजोरी जिसके तालेको खोलनेका भेद मुझे ही मालूम था। मेरे सिवाय यदि दूसरा कोई उस भेदको जानता था, तो वह

हमारी खुफिया पुलिस थी। इस प्रकार मेरे ऊपरके अधिकारी भी मेरे गुप्त कागज-पत्र देखनेमें सर्वथा असमर्थ थे। वह तिजोरियाँ उन्हीं लोगों को मिलती थीं, जिनको विशेष रूपसे विश्वस्त समझा जाता था और जिनके ऊपरके अधिकारी उनको कुछ गुप्त कागजात देते रहते थे। देश भरमें यदि कोई ऐसी तिजोरी थी, जिसको खोलनेका भेद पुलिसको भी नहीं मालूम था, तो वह स्टालिनके कमरेमें थी।

मेरी तिजोरी मेरे कमरेकी सजावटका प्रधान अंग थी। जब कभी पाम्फिलोव अथवा उत्किन मुझे अपने कमरेमें न बुलाकर मेरे कमरेको पवित्र करते थे, तो वे भी भेदभरी आँखोंसे उस तिजोरीको देख लेते थे। उनको कौतुहल होता होगा कि न जाने उनके आदेशों पर क्या टीका-टिप्पणी लिखकर मैंने उस तिजोरीमें रख छोड़ी है। इसीलिये पुलिसके लिये वह तिजोरी विशेष महत्व रखती थी। मेरे कागज-पत्रोंको देखनेका उनका अधिकार इतना जाना-पहिचाना अधिकार था कि वे मेरी तिजोरी खोलनेके बाद यह बात छुपानेकी कोशिश भी नहीं करते थे कि तिजोरी खोली गई है। यदि कोई अपनेसे ऊपरके कर्मचारीका सत्यानाश करना चाहता, तो उसे पुलिसमें सीधी रिपोर्ट करनेकी जरूरत नहीं थी। उसके लिये यही काफी था कि अपनी टीका-टिप्पणी लिखकर उस तिजोरीमें रख दे।

मेर लिये सबसे बड़ी बात यह हुई कि अब मैं सरकारके नाममें काम कर सकता था। अपने विभागसे सम्बन्धित सारे काम मेरी देखरेखमें होते थे और उस अंशमें सारे रूस प्रान्तमें मेरा दबदबा था। मैं स्थानीय अधिकारियों तथा कमीसारोंसे उनके कामकी पूरी रिपोर्ट मांग सकता था। मैं उनको आदेश दे सकता था और किसी काममें असफल रहने पर उनकी ताड़ना भी कर सकता था। मैं रात-दिन किसी भी समय उनको अपने दफ्तरमें बुला सकता था, जब कि उन्हें मुझको बुला भेजनेका

कोई अधिकार नहीं था। मैं चाहता तो किसी कमीसारकी बात मान सकता था, चाहता तो उसकी अनसुनी कर सकता था। मुझे भीतरकी बात मालूम रहती थीं और मैं जानता था कि अमुक कमीसारके विषयमें सरकारका क्या रुख है, किसको तरक्की मिलेगी, किसको धूलमें मिलाया जायेगा। धीरे-धीरे मुझे पता चलने लगा कि सरकारकी हांडीमें किसी समय क्या पक रहा है। बहुधा ऐसा होता था कि बाहरसे देखने वाले किसी कमीसारकी तड़क-भड़क पर आँखें जमाए रहते थे, जब कि भीतर की बात जानने वालोंको उस बेचारेकी होने वाली दुर्दशाकी बात सोचकर उस पर दया आती थी।

नये काम पर मैं अपने पहिले दिनको कभी नहीं भुला पाऊँगा। मैं प्रातःकालके दस बजे दफ्तरमें पहुँचा था। मेरे सेक्रेट्री और नीचे वाले लोग पहले ही अपने-अपने स्थान पर पहुँच चुके थे। जो कागज-पत्र मुझे देखने थे, वे सब बड़ी अच्छी तरह मेरी मेज पर रक्खे थे। मैंने द्वार पर रुककर उस बड़ेसे सजे हुए कमरेको आँख भरकर देखा; दीवारों पर टँगी नेताओंकी तस्वीरोंको निहारा; और मेरी कुर्सीके पीछे वाली दीवार पर लगी स्टालिनकी बड़ी-सी तस्वीरको देखा। मुझे निको-पोल होटलका वह दिन याद आ गया, जब मैंने स्टालिनकी तस्वीरके टुकड़े करके नालीमें बहा दिया था। आज उस बड़ी-सी कुर्सी पर बड़ी-सी स्टालिनकी तस्वीरके नीचे मेरे बैठते ही टेलीफोन बज उठा। पुलिसका अधिकारी बोल रहा था। स्वरमें बहुत नम्रता और मिठास था। वह दो-चार मिनट बाद आकर मुझसे मिलना चाहता था। जीवनमें पहली बार उस भयानक संस्थाके एक सदस्यने मुझसे आकर मिलनेकी इजाजत चाही थी। मैंने उसे आनेके लिये कह दिया।

आते ही उसने एक रबरकी स्टाम्प मेरे हाथमें देकर कहा: "यह आपकी व्यक्तिगत सील है। आनेवालोंको पास देना हो तथा और

कामके कागजों पर इसे लगाइएगा। कृपया इसे सदा तालेमें बन्द रखिए और अब मैं आपको यहाँके दूसरे कायदे-कानून समझाए देता हूं। आप यहाँ नए आए हैं ना।"

"कहिए। मैं सुन रहा हूँ।"

उसने मिलनेवालों के प्रति बरते जानेवाले तरीके मुझे बताए और गुप्त संकेत समझा कर उसे गुप्त रखनेका अनुरोध किया। चाहे कोई कितना ही बड़ा आदमी हो, किसीकी उपस्थितिमें वह गुप्त संकेत मुझे मुखसे नहीं निकालना चाहिए। फिर उसने मुझे मेरी मेजके पास रक्खे हुए अनेक टेलीफोनोंका भेद बताया। उनमेंसे एक तो क्रेमलीनका अपना एक्सचेंज था जिसके द्वारा सरकारी दफ्तर तथा पार्टीका सम्बन्ध जुड़ा था। यदि सरकारी कामसे सम्बन्धित बातचीत हो तो उस टेली-फोनके सिवाय किसी दूसरे पर बात करनेकी मुझे मनाही थी। वह कहने लगा :

"यह याद रखिए कि इस दफ्तरमें कागजका एक-एक पुरजा सर-कारी सम्पत्ति है। यदि आप कोई भी चिट्ठी, कागज अथवा कारबन कापी असावधानीसे रक्खेंगे तो आपको दायित्व उठाना पड़ेगा। यदि आपको किसी कागज अथवा कारबन कापीकी जरूरत न रहे तो उसे फक मत दीजिए। उस कागज पर अपना आदेश लिखकर पुलिस-विभागके पास पहुँचा दीजिए। वे उसे जलानेकी व्यवस्था कर देंगे।"

लगभग ग्यारह बजे मेरी सेक्रेट्री भीतर आई। वह एक सुन्दर-सी, समझदार स्त्री थी। पूछने लगी : "विक्टर महाशय, आप नाश्ता करेंगे?"

"हाँ। और तुम? तुमने नाश्ता कर लिया?"

"मुझे तो यहाँ एक गिलास चाय और एक चीनीकी डली मिलती है। रोटी तो मैं घरसे अपने साथ लाती हूँ। लड़ाई छिड़ी है ना। कोई क्या करे?"

तुरन्त ही खानेका सामान लेकर एक नौकरानी आ पहुची। वह तीस पैंतीस बरसकी स्त्री थी। साफ कपड़े पहिने थी और सिर पर एक सफेद टोपी भी। उसने चुपचाप बड़ी सावधानीसे मेज पर कपड़ा बिछाया और खाना परोस दिया। दो अण्डे, कुछ उबला हुआ मांस, सफेद रोटी, मक्खन, चायका एक बड़ा सा प्याला, चीनीकी कई डलियां और कुछ तली हुई मिठाई। चाय और अण्डोंके सिवाय जो भी सामान था वह सब अमेरिकासे हमें उधारखाते में मिला था।

(२)

इतना कह देना चाहता हूँ कि मेरी कोटिके कर्मचारी सोवियत् नौकरशाही में विशेष भाग्यवान् नहीं माने जा सकते। हमारे ऊपर दायित्व बहुत थे, किन्तु हमें अधिकार कुछ नहीं था। हमको खूब जी खपाकर काम करना पड़ता था, किन्तु उसका सारा श्रेय हमारे ऊपरवालों को मिलता था। हमारेसे नीचेके लोग तो हाथ-पाँव ढीले छोड़कर थोड़ी सांस ले सकते थे; हमारेसे ऊपरवाले कामसे जी चुराकर असफलताका दोष हमारे सिर मढ़ सकते थे। किन्तु हम बीचके लोगोंको न तो ढील दिखानेकी छूट थी और न हम दायित्व ही किसी औरके सिर पर लाद सकते थे। हमारी सबसे बड़ी विडम्बना की रतजगा। शायद ही कोई ऐसा दिन होगा जब कि मैं पाँच घंटेसे अधिक सो पाया। आफिसके साधारण कर्मचारी तथा विशेषज्ञ नौसे पाँच बजे तक काम करके छूट जाते थे। कभी-कभी कोई खास काम हुआ तो कोई घण्टा आध घण्टा और रुक जाता था। एकाधको घर पर खाना कर लौट आनेके लिए भी कभी-कभी आदेश दिया जाता था। किन्तु मुझे तो सुबह दस-ग्यारह बजेसे लेकर रातके तीन-चार बजे तक डटे रहना पड़ता था। कभी-कभी तो और भी देर हो जाती थी। महीने बीस दिनमें एकाध बार साँझको दो-चार घंटे किसी तरह निकाल कर अपनी पत्नीके साथ बितानेका अवसर मुझे मिल पाता था।

राजधानीकी सारी नौकरशाही को स्टालिनके ढंग पर जीवन बितानेकी आदी बन गई थी। ऊपरके तमाम कर्मचारी स्टालिनके दफ्तर पहुँचनेके पहिले कमर कस कर तैयार हो जाते थे और स्टालिन जब दफ्तर छोड़ता, तभी दफ्तरसे बाहर निकलते थे। और राजधानीके साथ टेलीफोन द्वारा जुड़े रहनेके कारण बाकी देशमें भी वही टाइमटेबुल बनता जा रहा था। और इस प्रकार एक नाटे, तगड़े, चेचकसे दागी मुखवाले जार्जियनकी आँखोंके इशारे पर सारा देश नाचता था। हाँ, एक विभाग ऐसा था जो चौबीस घंटे काम करता रहता था। वह था पुलिसका विभाग। उसको कभी किसी टाइमटेबुल की जरूरत नहीं पड़ी, क्योंकि वह तो कभी सोता ही नहीं था।

सुबहके दस बजते ही हरी खिड़कियों वाली पैकार्ड गाड़ियाँ मांस्क रोडपरसे दौड़ती हुई नगरके विभिन्न दफ्तरोंकी ओर जाती हैं। उन कारोंको इस ढंगसे बनाया गया है कि गोली उनको न वेध सके। एक-दन चारों ओर भोंपू बोल उठते हैं और हड़बड़ाए हुए पुलिसके सन्तरी चारों तरफका यातायात रोककर उन कारोंके लिए रास्ता साफ कर देते हैं। सारे मास्को निवासियोंको मालूम हो जाता है कि स्टालिन, मोलोटोव, बेरिया, मैलेनकोव, मिकोयन, कगानोविच तथा दूसरे नेताओंने नगरमें प्रवेश किया है। प्रत्येक नेताकी कारके आगे और पीछे एक-एक लिकंन गाड़ी रहती है जिसमें सादा कपड़े पहने हुए पुलिसके लोग शस्त्रास्त्रसे तैयार रहते हैं। और खतरेको कम करनेके लिए नेतालोग एकसाथ नहीं आते, बल्कि एक-एक करके बारी-बारीसे। नेताओं तथा ऊँचे कर्मचारियोंकी सुरक्षाका भार पुलिसके एक खास विभाग पर है और वेही लोग गुप्तरूप से यह निर्णय करते हैं कि कौन कार किस रास्तेसे निकाली जाए। उस रास्तेके एक-एक इंच पर पुलिस तैनात रहती है। उस रास्तेके दोनों ओर रहनेवाले नागरिकोंके बारेमें पुलिस पूरी जानकारी रखती है और किसी पर शुबा होते ही उसको तुरन्त उसके मकानके बाहर कर

दिया जाता है। खास-खास स्थानों पर हजारों पुलिसवाले सादा कपड़े पहिने तथा वर्दीमें खड़े रहते हैं। उनके हाथ अपनी पिस्तौलों पर रहते हैं, ताकि पलक झपकते गोली चला सकें। वे जानते हैं कि उन दुर्भेद्य कारोंमें बैठे नेताओं पर किसी किस्मकी वारदात हुई तो उन सबको जानसे हाथ धोने पड़ेंगे। और जब स्टालिन तथा दूसरे नेता कहींसे गुजरते हैं, तो मास्कोके निवासी एक नजर उनको देख लेनेका साहस भी नहीं कर सकते। समझदार नागरिक रास्ता छोड़कर एक ओर हट जाते हैं। वे अपने शासकोंकी आँखों तले नहीं आना चाहते।

कुछ नीचे स्तरके कर्मचारियों—उदाहरणके लिए पाम्फिलोव और उत्किन इत्यादि—ने अपना नियम बना रक्खा था कि स्टालिनके दफ्तरमें पहुँचनेसे पहिले वे अपनी-अपनी मेजों पर बैठ जाँए और स्टालिनके चले जाने पर दफ्तर छोड़ें। इसी प्रकार मैं अपने ऊपरके अफसरोंके दफ्तरमें पहुँचनेसे पहिले वहाँ हाजिर होना चाहता था और मेरे पहुँचनेसे पहले मेरे नीचे काम करनेवाले लोग। जब तक मेरे ऊपरवाले अधिकारी अपना काम खत्म करके मुझे घर जानेकी इजाजत देते हुए खुद घर नहीं चले जाते थे, तब तक मैं दफ्तर नहीं छोड़ सकता था। इसलिए मुझे नित्यप्रति प्रायः सतरह-अठारह घण्टे दफ्तरमें बिताने पड़ते थे। जिस प्रकार स्टालिन या मोलोटोव किसी वक्त भी टेलीफोन उठा कर उत्किन इत्यादिसे बातें कर सकते थे, उसी प्रकार उत्किन इत्यादि किसी समय मुझे टेलीफोन कर सकते थे। इसलिए ऊपरवालेको दफ्तरमें छोड़ कर नीचेवालेका चला जाना असम्भव बात थी। किसी भी अन्य देशकी सरकारका जीवन इस प्रकार एक व्यक्तिके जीवन पर नहीं ढल पाता। किन्तु रूस.........

हमारा दफ्तर उन दिनों राजकीय रक्षा-कमिटीका केन्द्र था। रूस प्रान्तसे युद्धके लिए जितना सामान जाता था, उसको तैयार कराकर ठीक

समय पर पहुँचाना हमारा दायित्व था। यूक्रेन और श्वेत रूस तो जर्मनोंके अधिकारमें जा चुके थे, इसलिए रूस प्रान्त ही ऐसा बचा था जहाँ कि हमारे बाकी उद्योग तथा आबादी केन्द्रित थी। इस प्रकार युद्धको चलानेका भार एक प्रकारसे हमारे ही प्रान्तको वहन करना पड़ रहा था। मेरी मेज पर नित्य ही सैकड़ों आदेश, शिकायतें तथा धमकियाँ आती थीं, जिनपर स्टालिन तथा उसके निकटतम सहकारियोंके हस्ताक्षर होते थे। उन लोगोंमें मुख्य-मुख्य थे बेरिया, मोलोटोव, मिकोयन, वोस्नेसैन्स्की, मैलीशेव और कासीगिन। और समस्त देशमें फैले हुए दफ्तरों तथा कारखानोंसे टेलीफोन द्वारा बातचीत करनेका अवसर मुझे मिलता था। कभी-कभी एक घण्टे भरके भीतर मुझे गोर्की, स्वर्डलोस्क, नोवोसीबिस्क तथा चेलियाबिंग आदि नगरोंसे फोन मिलाकर वहाँके उत्पादनका हिसाब लेना पड़ता था। इस प्रकार मेरा जीवन एक संघर्ष बन कर रह गया। मुझे कच्चे माल, ईंधन तथा मजदूरोंकी व्यवस्था करनी पड़ती थी। योजनाके अनुसार उत्पादन होकर ठीक समय पर सामान मिलना चाहिए और इसके लिए मास्कोसे लेकर साइबेरिया तक मुझे शोर मचाना पड़ता था। मेरे ऊपरवाले कर्मचारी तथा रक्षा-कमिटीके लोग मेरा सिर खा लेते थे, मुझे उलटी-सीधी सुनाते रहते थे।

काँटेदार तार काटने की कैंचियां, बेलचे, लालटैन वगैरह तैयार करानेके लिए मुझे हफ्तों तक संघर्ष करना पड़ता था। एक रातको लाल फौजका एक जेनरल मेरे दफ्तरमें बैठकर आँसू बहाने लगा। उसको काँटेदार तार काटनेवाली कैंचियों की सख्त जरूरत थी। कहने लगा कि इस मामूलीसी चीजके अभावमें हमारे हजारों सैनिक मारे जा रहे हैं। उसके सामने ही मैंने टेलीफोन पर कारखानों तथा उद्योग-विभागसे बातें कीं। किन्तु बातोंसे क्या बनता। कारखानोंके पास कैंचियां

बनानेके लिए न तो लोहा था, न आवश्यक मशीनें। और इस प्रकार प्रतिदिन मुझे अपने देशकी असफलताओंका ज्ञान होता रहता था। हमारे सामने जीवन-मरणका प्रसंग उपस्थित था। मुझे लाल फौजके बड़े-बड़े अफसरोंने बताया था कि अमेरिकासे आनेवाले शस्त्रास्त्र तथा मशीनोंके कारण ही युद्धमें हमारी जीत हो सकी। शायद अमरीकाके लोग इस बात पर विश्वास न करें, किन्तु रूसके नेता सच बात जानते हैं। हां, भगवान साक्षी है, कि अमेरिकाकी उस सहायताका मूल्य हमने असंख्य जानें लड़ाकर दिया। किन्तु यह तो मानना ही होगा कि उस सहायताके बिना हम कुछ नहीं कर पाते। अमेरिकाने हमें वायुयान दिए, मोटर लारियाँ, टेलीफोन और हजारों दूसरी चीजें जो हमारे पास नहीं थीं और जिनके बिना हम युद्ध नहीं चला सकते थे। रूसकी विजयका हिसाब लगाने पर रूसका उत्पादन, रूसकी वीरता और रूसका बलिदान सबसे पहिले मानने पड़ेंगे; स्टालिनग्राडमें हमारी विजय होनेके बाद ही बाहरकी सहायता हमारे पास पहुँची। किन्तु उसके तुरन्त बाद ही मित्रदेशोंसे आनेवाली सहायताने ही हमें बचा रक्खा।

मैंने पहिले कभी इतना सख्त काम, इतने लम्बे समय तक नहीं किया था। और न ही कभी मुझे काममें इतनी निराशाका सामना करना पड़ा था। मेरा चेहरा पीला पड़ गया, आँखें लाल रहने लगीं और हमेशा बुखार-सा चढ़ा रहने लगा। मैं बेहद थक गया था और मेरे चारों ओर काम करने वाले सभी स्त्री-पुरुषोंकी मुझ जैसी दशा थी। रूसमें देश-प्रेम का तूफान उठा था। रूसके इतिहास और रूसकी आत्माने दुहाई दी और हममेंसे कोई भी उस आह्वानको लौटा नहीं पाया। और स्टालिनके वे चाटुकार जो इस देशभक्तिको बाल्शेविक चमत्कार कहकर पुकारते थे, हमारे रूसका अपमान करते थे।

जितने दिन मैंने क्रेमलीनके दफ्तरमें बिताये, उतने दिन युद्ध खूब

घमासानका रहा। वे १६४२ की गर्मियोंके दिन थे, जब कि जर्मन सेनाएँ रूसमें बहुत आगे बढ़ आई थीं। उन्हीं दिनोंमें जर्मन वोल्गा पर पहुँचे और स्टालिनग्राडका वह मोर्चा हुआ, जिसका कि नाम मैराथों और वाटरलूके साथ इतिहासमें सदा लिया जायगा। किसी भी जातिके भीतर एक ऐसा तत्व रहता है, जिसे भेदा नहीं जा सकता, जो कि निरन्तर और दुर्जय है। जर्मनीको स्टालिनग्राडमें रूसके उसी तत्वसे लोहा लेना पड़ा था। इतना रक्तपात होनेपर तथा इतना विनाश सहकर भी हमारा वह तत्व अक्षुण्ण रहा। और वह तत्व बनानेमें कार्ल मार्क्स अथवा स्टालिन का कोई हाथ नहीं रहा।

हमारे सामने सैन्यशक्ति जुटानेका सवाल भी था। अपनी युद्धकालीन अर्थ-व्यवस्थाको चलानेके लिये हमें करोड़ों गुलामोंकी बेगारसे फायदा उठाना पड़ा। यह बात चाहे बुरी लगे, पर माननी होगी। जो कल-कारखाने उठाकर हम साइबेरिया तथा यूरालके प्रदेशोंमें ले गए थे तथा जो कारखाने उन प्रदेशोंमें नए बनाए गए थे, उनके द्वारा अपार युद्ध-सामग्री तैयार करानेकी आवश्यकता थी। किन्तु उन कारखानोंको चलाने के लिये सिवाय गुलामोंके और लोग हमारे पास नहीं थे। जो लोग हमारी विजयका श्रेय हमारी अर्थ व्यवस्थाको देते हैं, वे यदि उस अर्थ-व्यवस्थाके अन्तर्गत गुलामोंके गुण गाएँ, तो सत्यके अधिक निकट होंगे। जर्मनीमें भी युद्ध-सम्बन्धी अधिकतर उत्पादन रूसकी नाईं गुलामों द्वारा कराया जाता था। किन्तु एक अन्तर था। जर्मनीमें काम करनेवाले गुलाम दूसरे देशोंसे पकड़कर लाए गए थे, जब कि रूसके तानाशाहोंने अपने देशके लोगोंको ही गुलाम बना डाला था।

जब मैं कारखानोंसे कहता था कि उत्पादन बढ़ाओ, तब वे कहते थे कि कामके लिये पूरे आदमी नहीं मिल रहे। यह बात सरकारको पूरी तरह मालूम थी। इसीलिये बार-बार पाम्फिलोवको आदेश दिया जाता

था कि पुलिससे मजदूरोंकी मांग करे। वह किसी न किसी कारखानेके लिये पुलिससे मजदूर मांगता ही रहता था। कई बार तो उसे सीधे मोलोटोव अथवा बेरिया तक बात पहुँचानी पड़ती थी। गुलामखानोंका सारा भार एक विशेष विभागके हाथमें था, जिसका प्रधान उन दिनों नेडोसेकिन था। नेडोसेकिनको सुरक्षा-कमिटीकी तरफसे हुक्म मिलते रहते थे कि गुलामों की भर्ती बढ़ाता रहे। उन हुक्मनामों पर स्टालिन, मोलोटोव, बेरिया तथा अन्य सोवियत् नेताओंके हस्ताक्षर रहते थे। एक दिन मैं भी उत्किन का आदेश पाकर उस विशेष विभागके एक अधिकारीसे मिलने गया। किसी कारखानेके लिये तुरन्त ही सैकड़ों गुलामोंकी जरूरत थी। पाम्फिलोवने हमको बुरी तरह धर दबाया था और हम जानते थे कि उस बेचारे पर भी ऊपरसे डांट-डपट हुई होगी। इसलिये मैं भी विशेष विभागसे झगड़ा करने पर उतारू हो गया। अधिकारी बोला :

"पर कामरेड क्रावचैन्को, अकेले आपके विभागसे ही तो गुलामोंकी मांग नहीं आती। सुरक्षा-कमिटीको गुलाम चाहियें, कामरेड मिकोयन इसी सम्बन्धमें हमको रोज गाली सुनाते हैं, मैलेन्कोव तथा वोस्नेसैंस्की हमारे पीछे पड़े रहते हैं और वोरोशिलोव कहता रहता है कि सड़कें बनाने के लिये आदमी चाहिये। इन सबमें प्रत्येक यह मानता है कि उसका अपना काम सबसे ज्यादा जरूरी है। फिर हम क्या करें ? हमने जो पकड़-धकड़की योजना बनाई थी, वह हम अभी तक पूरी नहीं कर सके हैं। इसलिये मांग रसदसे अधिक पड़ रही है।"

पकड़-धकड़की योजना ! आज भी वे शब्द मेरे कानोंमें गूँजते हैं और मैं सिहर उठता हूं। और सबसे अधिक मुझे यह खटका कि उस अधिकारीको अपनी बातकी क्रूरताका तनिक भी आभास नहीं था। उसके लिये दूसरे आदमियोंको पकड़कर गुलाम बनाना एक नित्यका काम बन गया था। उसके कहनेका यह मतलब नहीं था कि रूसमें

गुलामोंके पकड़नेकी कोई योजना बनाई जाती है। वह तो मुझे यही समझाना चाहता था कि जो करोड़ों गुलाम उसके विभागने जुटाए हैं, उनसे गुलामोंकी मांग पूरी नहीं हो रही। रूसमें बच्चोंसे जो बेगार कराई जाती है, उसके विषयमें रूसके बाहर कोई जानकारी नहीं है। रूसके भीतर भी इस बातको छुपाया जाता है और गुलाम बच्चोंके सम्बन्धमें झूठे नारे लगाए जाते हैं। किन्तु यदि उस शब्दजालको हटाकर देखें, तो बात समझमें आ जाती है। करोड़ों बच्चोंको उनके माता-पिताकी सलाह के बिना घरसे बाहर ले जाया जाता है और उनसे कारखानोंमें काम कराया जाता है। यह व्यवस्था युद्धकालमें ही लागू की गई होती, तो भी शायद कुछ मार्जना सम्भव थी। किन्तु इसका सूत्रपात १९४० में हुआ और युद्ध समाप्त होनेके बाद भी यह जारी रही है।

(३)

युद्ध सामग्रीके सम्बन्धमें हमारे घोर अभावका अनुभव मुझे आरम्भ में ही हुआ। स्टालिनके एक विश्वस्त और शक्तिशाली सहकारी, एलेक्सी कासीगिन, ने एक दिन क्रेमलीनमें एक सभा बुलाई और वास्तविक स्थिति की रूपरेखा सबके सामने रख दी। चूँकि उस सभाका सम्बन्ध मेरे विभागसे अधिक था, इसलिये उत्किनने मुझसे कहा कि कासीगिनके अत्यन्त निकट बैठकर मैं सब सुनूं। उत्किनने मुझे यह भी समझा दिया कि जब तक मुझसे कुछ पूछा न जाये, तब तक मुझे मुँह नहीं खोलना चाहिये। प्रातःकालके एक बजे सभाका समय था। उसके पूर्व ही पाँच कमीसार वहाँ इकट्ठे हो गए। कोई बड़ा अधिकारी नहीं था, इसलिये हमने कुछ खुलकर बातें करनी शुरू कीं। हम सबमें अच्छा परिचय था। ब्लास्टके सारे अङ्गोंका एक दूसरेसे अच्छा सम्बन्ध हो ही जाता है। हम मिलकर एक दूसरेके साथ मज़ाक करते थे और गप्पें लड़ाते थे।

निर्माण कार्यका कमीसार कामरेड जिन्सबर्ग एक मोटा-सा आदमी था। सिर गँजा, आँखोंपर मोटे काँचका चश्मा। वह एक ओर बैठकर चाय पीने लगा और कुछ मिठाई खाने लगा। वस्त्र विभागके कमीसारका नाम था, एकीमोव। वह एक लम्बा-सा आदमी था। उस दिन वह रंगीन कपड़े पहने हुए बैठा बैठा एक सेब खा रहा था। मैंने भी उसकी देखादेखी कुछ फल उठानेके लिए हाथ बढ़ाया। हलके उद्योगका प्रधान लूकिन मेरी ओर देखकर मुस्कराया। वह अपने मसखरेपनके कारण प्रसिद्ध था। कहने लगा :

"यहाँ बैठकर न जाने कितनी देर यन्त्रणा भुगतनी पड़ेगी। मैं तो कुछ खाना चाहता हूँ। सूअरका मांस, अण्डे, और साथ ही एक प्याला वोडका भी—ताकि सब कुछ गलेके नीचे उतर जाए।"

दूसरेने कहा : "हाँ, आज रातको तुम्हें मजबूती दिखानी पड़ेगी। खूब गालियाँ मिलेंगी, तुमको। सो खा-पीकर चंगे हो लो।"

सब हँस पड़े। किन्तु कामरेड सोखिन उदास बैठा रहा। वह वास्तु-विभागका प्रधान था। लम्बा आदमी, सूखेसे चेहरेवाला। हम उसकी उदासीको समझ सकते थे। उसका काम ही बड़ा मुशकिलका था। और हरेक सभामें बड़े अधिकारी उसको खूब लताड़ते थे।

उसी समय जेनरल कालियागिनको साथ लेकर मार्शल वोरोशियोव आ पहुँचा। युद्धके मैदानमें इञ्जीनियरिंगका काम करनेवाली सेनाके सम्बन्धमें वोरोशियोव स्टालिनका सहकारी था। उसको मेरे विभागसे बहुत काम पड़ता था और हम एक-दूसरेको अच्छी तरह जानते थे। हमने उठकर एक-दूसरेसे हाथ मिलाया। हम दोनोंको एक-दूसरेकी जरूरत थी और वह तथा कालियागिन अच्छी तरह जानते थे कि मैं युद्ध की आवश्यकताओंकी पूर्तिके लिए कितना जी-तोड़ परिश्रम करता हूँ। हम चाय पी रहे थे और गप्पें मार रहे थे, पर हमारी आँखें कालीगिनके

कमरेके द्वारपर जमी थीं। आखिर वह द्वार खुला और एक सेक्रेटरीने आकर कहा कि हम सब सभाके लिए भीतर जा सकते हैं।

चारों तरफ सन्नाटा छा गया। हँसी बन्द हो गई। सबने अपने कर्मचारीपन का बुरका ओढ़ लिया। कासीगिन स्टालिनके अत्यन्त निकट रहनेवाला व्यक्ति था, इसलिए सब उससे घबराते थे। उसका कमरा पूर्णतया अण्डाकार बना था, बहुत बड़ा और ऊँची छतवाला। क्रीम रगकी दीवारोंपर पौलिटब्यूरोके सारे सदस्योंकी तसवीरें बड़े करीनेसे टँगी थीं। एक विदेशका बना हुआ बहुत बड़ा रेडियो सेट कमरेमें रखा था। वह चीज़ रूसके साधारण नागरिकोंकी पहुँचके बाहर थी। अपने मेज़पर बैठा हुआ कासीगिन विदेशी ढंगके कपड़ोंसे सुसज्जित था। उसके चेहरेपर कठोरताके साथ थकानके चिह्न भी स्पष्ट थे। मेरी तरह वह भी बहुत दिन तक सोया नहीं था। हम सबको बैठनेके लिए कहकर उसने वोरोब्रियोव से अपनी रिपोर्ट पढ़नेके लिए कहा। किन्तु कासीगिनने मार्शलका नाम न लेकर उसके विभागके नामसे उसे सम्बोधित किया। हम सब और वोरोबियोव भी समझ गए कि कासीगिनका मिजाज बिगड़ा हुआ है। उसकी डाँट-डपटके लिए हम तैयार हो गए।

मार्शल वोरोब्रियोव अपने कागज उलट-पलटकर पन्द्रह मिनट तक बोलता रहा। आँकड़े-पर-आँकड़े बताकर उसने एक निराशाजनक चित्र खींचा। उसने कहा कि नदियाँ पार करनेके लिए हजारों मोटर-बोट नहीं हैं, इसलिए हजारों जानें जा रही हैं। इसी प्रकार उसने और कितनी ही चीज़ोंका अभाव बताया। कासीगिन अपने सामने रखे कागज के पैडपर आँखें जमाए पेन्सिलसे लकीरें खींचता रहा। उसका मुख देखकर हम समझ गए कि उसका पारा चढ़ता जा रहा है। मेरे मनमें वही पुराना प्रश्न चक्कर लगा रहा था—इतने क्रूर शत्रुसे लड़नेके लिए हमारे पास सब साधन क्यों नहीं हैं, हमने वे दो साल क्यों बरबाद किए?

मार्शल भर्राई हुई आवाज़में कह रहा था : "इसी क्षण युद्धके मैदानमें हजारों लोग प्राण दे रहे हैं। हम उनको मामूली तार काटनेकी कैंचियाँ, बेलचे और कुल्हाड़ी नहीं दे सकते। कैंचियाँ न होनेके कारण हमारे जवान अपने शरीरोंको क्षत-विक्षत करके रास्ता निकालते हैं। बड़ी ही लज्जाकी बात है, कामरेड। टॉर्चोंकी बात जाने दीजिए, उनके पास साधारण किरासीन-वाली लालटैन भी नहीं हैं। पिछले दो-तीन महीनेमें कामरेड स्टालिन आठ बार ये लालटैनें माँग चुके, किन्तु अभी तक तैयार नहीं हो पाईं। इसी प्रकार हमारे पास छद्मवेशका सामान नहीं है। मैं अपने सिपाहियोंके नामपर आप लोगोंसे जवाब माँगता हूँ। आप उद्योगोंके प्रधान हैं।"

मार्शल बैठ गया और कासीगिनने कहा :

"बात तो साफ है। हमें कैसी लालटैनें चाहिएँ?"

मार्शलके पास बैठे एक कर्नलने एक पुराने ढंगकी मामूली-सी लालटैन उठाकर दिखा दी। कासीगिन लाल-पीला होकर गरज उठा : "और ये लालटैनें हम नहीं बना सकते।"

मुझे इस सम्बन्धमें कुछ जानकारी थी, इसलिए मैंने कहा :

"मुझे बात समझानेकी इजाजत दीजिए। लालटैनें इसलिए नहीं बन सकतीं कि हमारे पास न तो लोहेकी चादर हैं, न मशीनें, न काँच। चादर बनानेका कारखाना उठाकर अन्यत्र ले जाया गया और अभी तक दोबारा चालू नहीं हो पाया। काँच तो क्रास्नोयार्स्कसे आना चाहिए। शायद कामरेड सोस्निन बता सकते हैं कि काँच क्यों नहीं आ पा रहा।"

सहसा कासीगिनने मेजपर घूँसा मारकर चीत्कार किया : "लालटैनें बननी ही चाहिएँ। मैं कहता हूँ कि यह सुस्ती खत्म हो जानी चाहिए। यदि मुझे बदमाशोंकी चमड़ी भी उधेड़नी पड़ी, तो उधेड़ दूँगा। लेकिन कामरेड स्टालिन जो माँगते हैं, वह मिलना ही चाहिए। सोस्निन, बोलो क्या कहते हो?"

सोस्निन बेचारेके प्राण सूख रहे थे। वह बड़ी मुश्किलसे कुछ बड़बड़ाया। कहने लगा कि कारखानेमें मशीनोंकी अवस्था खराब है, बिजली-घरसे बिजली नहीं आती। ठीक प्रकारके कारीगर नहीं मिलते...........कासीगिनने फिर एकीमोव इत्यादि दूसरोंकी रिपोर्ट सुनीं। और इस प्रकार घण्टों तक वह सभा चलती रही। प्रत्येक रिपोर्ट सुनकर हमारी निराशा गाढ़तर होती गई। कासीगिनने सहज स्वरमें बोलना छोड़ दिया, सवाल पूछने बन्द कर दिए। वह चिल्ला-चिल्लाकर सबको हुक्म देने लगा कि अमुक चीज़ अमुक परिमाणमें अमुक तारीख तक बन जानी चाहिए। सारे कमीसार शरमसे मुँह लटकाए बैठे थे, जैसे स्कूलके बच्चोंपर हेड मास्टर बरस रहा हो। हम एक-दूसरेसे भी नहीं बोल सकते थे। हम सब जानते थे, और कासीगिन भी समझता था, कि साधनोंका अभाव वास्तविक है और हममें से कोई जादू नहीं दिखा सकता।

कासीगिन कामरेड जिन्सबर्ग पर बरस रहा था कि टेलीफोन बज उठा। कासीगिन समझ गया कि किसका फोन है। उसका स्वर, चेहरे का हाव-भाव, बैठनेका तरीका—सब एकदम बदल गए। फोनमें कहने लगा : "हाँ, कामरेड स्टालिन........जरूर........सब हो जाएगा........मैं अभी सब प्रबन्ध करता हूँ।" स्टालिनका नाम सुनकर हम सब भय और श्रद्धा से विजड़ित हो गए। कासीगिनने बड़े धीरेसे रिसीवर रख दिया, जैसे वह कच्चे काँचका बना हो। और अपनी पुरानी क्रोध और गाली-गलौज की मुद्रा लौटा लानेमें उसको पाँच मिनट लगे।

सुबहके साढ़े चार बजे हमारी छुट्टी हुई। हममें से हरेकके सिरपर आदेशोंका बोझ लदा था। पाँच लाख यह चीज़, दस लाख वह। हम सब जानते थे कि इतना सब हमसे हो नहीं सकेगा। यदि पूरे कामोंका ७५ प्रतिशत भी हम बना पाते, तो खुशीसे धूम मच जाती और चारों तरफ बोनस बँटते। हम यह अच्छी तरह जानते थे कि जान-बूझकर

हमको ज्यादा माल तैयार करनेके लिए कहा जाता है, ताकि हम कोई कोर-कसर न उठा रखें। और यह बात भी हमसे छुपी नहीं थी कि देश की जरूरतें तो उससे बहुत अधिक थीं, जितना कि हमसे माँगा गया था।

घर पहुँचकर मैं अन्धेरे ज़ीनेसे ऊपर चढ़ा और अन्धेरेमें रास्ता टटोलता हुआ अपने कमरे तक पहुँचा। आयरीनाने करवट बदली। आँखें मलते हुए उसने पूछा कि मुझे इतनी देर क्यों हो गई। मैंने उससे कहा कि एक और कान्फ्रेंस थी और उसे फिरसे सुला दिया। मैंने उस किस्मकी दर्जनों कान्फ्रेंसोंमें हिस्सा लिया होगा। सब स्टालिनके सहकारियोंने बुलाई थीं, जिनमें वोसनेसेंस्की तथा साबुरोव इत्यादि प्रमुख थे। किन्तु सब कान्फ्रेंसोंमें वैसा ही वातावरण रहता था, जैसा कि ऊपर बता चुका हूँ। स्टालिनके आदेश बताकर हमारे सामने माँगें प्रस्तुत की जाती थीं, हम अपनी कठिनाइयोंका लेखा देते थे और हमारी अनसुनी करके हमसे कहा जाता था कि काम पूरा होना ही चाहिए।



चौबीसवाँ अध्याय

दो-दो सत्य

सरकारी दफ्तरमें इतना ऊँचा पद पाकर भी मेरी आमदनी उस समयसे कम थी, जब कि मैं कल-कारखानोंमें काम करता था। उस समय मुझे बार-बार बोनस भी मिलता रहता था। हाँ, देशमें सब प्रकारकी चीज़ोंका अभाव होनेपर रुपयेकी कोई कीमत नहीं रही थी। ऐसी हालतमें यह ज्यादा महत्वकी बात थी कि आपको कितना राशन मिलता है और कौन-सी दूकानोंसे आप सौदा खरीद सकते हैं। इस दृष्टिकोणसे मैं सरकारी नौकरी पानेके बाद बहुत ऊँचे स्तरपर जा पहुँचा था।

विदेशके जो लोग स्टालिनकी नीति और सोवियत् दिमाग़को समझनेके लिए रूसके अखबार पढ़ते हैं तथा क्रेमलीनकी करतूतोंको जाँचते हैं, उनके पल्ले सिवाय वितण्डावादके कुछ नहीं पड़ता। हजारों विदेशियोंमें कोई एकाध यह बात जान पाया है कि बॉल्शेविकोंके लिए सत्य एक प्रकारका नहीं, दो प्रकारका है—एक वह "सत्य", जो वे रूसकी जनता और शेष संसारके सामने रखते हैं और दूसरा वह, जो पार्टीके भक्त और ठीक प्रकारसे दीक्षित लोगोंको समझाया जाता है। बहुत बार जब कि खुले तौरपर एक "सत्य" का प्रचार किया जाता है, तो गुप्त तौर पर पार्टीके सदस्यों और भक्तोंसे कह दिया जाता है कि उनको उस

प्रचारपर विश्वास करनेकी जरूरत नहीं, कि वास्तवमें "सत्य" उस प्रचारका ठीक उल्टा है।

महायुद्धकी घोर स्थितिमें यह आवश्यक समझा गया कि दिखावेके लिये लेनिनवादका सिद्धान्त त्याग दिया जाए और रूस तथा पूर्वी योरुप की पिछड़ी हुई जनताको अपने साथ रखनेके लिये धर्मकी दुहाई दी जाए। इसके सिवाय पुराने ढंगकी देश-भक्तिको उभारकर पूरा काम निकालना भी आवश्यक हो गया। कुछ दिन पीछे कम्युनिस्टोंकी अन्त-र्राष्ट्रीय संस्था कार्मिटनको छुपाकर हिटलरके विरुद्ध लड़ने वाले पूँजीपति देशोंसे "दोस्ती" का ढोंग भी स्टालिनको रचाना पड़ा। बाहरके लोगों तथा रूसकी जनताने समझा कि क्रेमलीनमें हृदय-परिवर्तन होनेके कारण यह सब उलट-फेर हो रहा है। मैंने अपनी आँखोंसे कितनी ही पुस्तकें और लेख देखे, जिनमें कहा गया था कि क्रेमलीनने विश्व-क्रान्तिका सिद्धान्त त्याग दिया है। कुछ ऐसे "विशेषज्ञों" से भी मेरा पाला पड़ा, जो अपनी मूर्खताके कारण यह प्रचार करने लगे थे कि सोवियत् यूनियन तानाशाहीका रास्ता छोड़कर पूँजीवादकी ओर बढ़ रही है। यदि इन लोगोंमेंसे कोई हमारी पार्टीकी गुप्त सभाओंमें बैठकर हमारी बातें सुनता, तो उसका सिर चकरा जाता। क्योंकि हम तो पक्के तौरसे जानते थे और कहते थे कि लेनिनवादसे पीछे हटनेकी बात हम केवल कूटनीतिक चालके रूपमें उठा रहे हैं। धर्मके साथ समझौतेकी बातें उठाना हमारे आत्म-सम्मानको ठेस पहुँचाता था, किन्तु हम जानते थे कि वह आवश्यक है। और चूँकि हमारी पार्टी और सरकारको उस कठिन समयमें इस प्रकारके समझौते करने पड़े, इसलिये हमको समझाया गया कि सच्चे लेनिनवादी सिद्धान्तोंमें हमारा विश्वास और भी दृढ़तर हो जाना चाहिये। हमें बतलाया गया कि आगे बढ़ने और सफलता प्राप्त करनेके लिये ये सब ऐसी चालें है, जो स्टालिन ही चल सकता है।

पार्टीके भीतर हमको उस "गहन परिवर्तन" का आभास भी नहीं हुआ, जो कि बहुत लोगोंके मतमें सोवियत् यूनियनके भीतर हो रहा था। पार्टीमें अब भी उसी प्रकारकी बातें होती थीं, जैसी कि युद्धके पहिले हुआ करतीं। हाँ, युद्ध चल रहा था इसलिये उसके सम्बन्धमें कुछ चर्चा अधिक हो जाती थी। अन्यथा हमारे विश्वास वही पुराने थे, हमारा कार्यक्रम भी वैसा ही पुराना। एक बार रातके दस बजे हम पार्टी की सभा के लिये एकत्र हुए। लेनिनकी एक बड़ी-सी तस्वीरके नीचे बैठे कामरेड मिरोनोव सभापतित्व करने लगे। मंच पर उनके साथ पार्टीके अन्य महारथी बैठे थे। उस दिनके प्रमुख अभ्यागत थे कामरेड युदिन। वे सरकारके प्रकाशन विभागके प्रमुख थे, किन्तु उस दिन हमारी सभामें पार्टीकी केन्द्रीय-कमिटीके प्रचार विभागकी ओरसे प्रतिनिधि बनकर आये थे। हम जानते थे कि वे स्टालिनवादी शास्त्रज्ञोंमें बहुत माने जाते हैं, इसलिये उनकी बातें सुननेके लिये हम सब बहुत उत्सुक थे। वे संसारव्यापी घटनाचक्र पर बोलना चाहते थे। उस घटनाचक्र पर खाली अपनी राय देना ही उनका काम नहीं था। वे तो सब पर एक ऐसा फतवा देनेवाले थे कि हममेंसे किसीको भी कहने सुननेके लिये न कुछ रह जाये। उनके फतवे पर ईमान न लानेका विचार तो किसी कम्युनिस्टको सपनेमें भी नहीं आ सकता था। युदिनका स्वर स्टालिनका स्वर था, पार्टी और सरकारका स्वर भी।

युदिनके बोलनेसे पूर्व एक अन्य कामरेडने हमको युद्धकी परिस्थिति समझाई। उसने हमारी महान क्षति अथवा खतरेकी भयानकताको छुपानेकी चेष्टा नहीं की। उसने हमें समझाया कि स्टालिनग्राडमें हमारी परीक्षा हो रही है, जिसमें हमको असफल नहीं होना चाहिए। उसका विश्वास था कि हम असफल नहीं होंगे। वह कहने लगा :

"यदि स्टालिनग्राडका पतन हो गया और जर्मन सेनाएँ वोल्गाके इस पार आ पहुँचीं, तो हमें तेल मिलना बन्द हो जाएगा और हमारा

सारा परिश्रम बेकार जाएगा। इतना ही नहीं। साथियो, हमको यह नहीं सोचना चाहिए कि स्टालिनग्राड भी अन्य शहरोंकी तरह एक और शहर है। इस नगरका नाम स्टालिनके नामपर है। स्टालिन कम्युनिस्ट संसारका नेता है। स्टालिनग्राडमें जीवनके दो दर्शन एक दूसरे से भिड़े हैं—पूँजीवादका फासिस्ट स्वरूप और कम्युनिज्म, हिटलरकी सेनाएँ और स्टालिनके सिद्धान्त। लेनिनने प्रश्न उठाया था कि कौन किसको जीतेगा। इसलिए स्टालिनग्राडको हम किसी हालतमें भी नहीं छोड़ सकते। हमें चाहे कितना ही भारी मूल्य चुकाना पड़े। एक-एक पत्थर और एक-एक ईंटके लिए हम लड़ेंगे। इस युद्धके लिए हम कितने ही आदमियोंको तैयार कर रहे हैं, कितनी ही सामग्री जुटा रहे हैं। हमें जर्मनोंको उनके रक्तकी नदीमें डुबाना है। संसारको मालूम होना चाहिए कि स्टालिन-जैसे प्यारे नामका हम क्या अर्थ लगाते हैं। हमारे नेताका नाम सदियों तक जिन्दा रहना चाहिए और स्टालिनग्राड उस स्मृतिका जीता-जागता स्मारक रहेगा।"

तालियोंसे हॉल गूंज उठा। तब कामरेड युदिन बोलनेके लिए खड़े हुए। हमारे शरीरका रोम-रोम उनकी बात सुननेके लिए तरस रहा था। वे मार्क्सवादके विशेषज्ञ थे, किन्तु उस दिन उन्होंने अपना भाषण व्यंगसे शुरू किया। उन्होंने हिटलरका ही नहीं, तमाम गलित, विगलित, पतित पूंजीवादी संसारका मज़ाक उड़ाया। कहने लगे :

"इंगलैण्ड और अमेरिकाकी जनतामें सोवियत्-प्रणालीके लिए बड़ी श्रद्धा उमड़ रही है। लास्की और प्रीस्टलेको पढ़कर देखो, वे क्या कह रहे हैं। रूजवेल्ट, चर्चिल तथा उनके गुलाम समाजवादी नेता उस श्रद्धाका गला नहीं घोंट सकते। इंगलैण्डका समाजवादी फासिस्ट एटली कितनी ही बार फासिस्ट लेडी एस्टरका आतिथ्य ग्रहण करता है। इसीसे आप उनके सच्चे सम्बन्धको समझ सकते हैं।

"इंगलैण्डके पूंजीवादी वर्ग जानते हैं कि युद्धके कारण जनतामें क्रान्ति की लहर दौड़ रही है। इसीलिए वहाँके शासकवर्ग जर्मनी ो पराजित करनेमें अपना सम्बल लड़ानेकी बजाय उस क्रान्तिका गला घोंटनेके लिए अधिक प्रयत्नशील हैं। लेकिन जनताको धोखा देनेके लिए उनको लेबर पार्टीका सहारा लेना पड़ रहा है। लेबर पार्टीके फाँसेमें आकर जनता कम्युनिस्ट पार्टी और कोमिन्टर्नका नेतृत्व ग्रहण नहीं कर पा रही। चर्चिल और लेबर पार्टीके बीच होनेवाला संघर्ष वास्तवमें एक नाटकमात्र है। दोनों ही दल जनताका शोषण करनेवाले हैं और दोनों ही ब्रिटिश सम्राटके गुण गाते हैं। जहाँ तक हमारा और लेबर पार्टीका सम्बन्ध है, वे हमको उतना ही चाहते हैं, जितना कि हम हिटलरको।"

आखिरी बात सुनकर सब हँस पड़े। तालियाँ भी पिटीं। पार्टीकी सभाओंमें यदि कोई लेबर पार्टी और उसी प्रकारके "नकली जनवादियों" का मजाक उड़ाए, तो सुननेवाले गद्‌गद् हो जाते हैं। इसके बाद युदिनने अपना व्यंग जापान और टर्कीकी तरफ मोड़ा। चिल्लाकर कहने लगे :

"हम जानते हैं कि मत्सुओको, जिसको कामरेड स्टालिनने स्टेशन पर अपनी अभ्यर्थना द्वारा कृतार्थ किया था, चाहता था कि जिस समय जमन हमारे देशमें बढ़ रहे थे, उस समय जापान भी हमपर आक्रमण कर दे। हमपर आक्रमण करनेके लिए उसने जापानके सम्राटको उत्साहित भी किया था। लेकिन हिटलरसे फुसत पाकर हम मत्सुओको और उसके सम्राटको अच्छा पाठ पढ़ाएँगे।

"और अब अमेरिकाके बारेमें सुनिए। वह पूंजीवादका सबसे बड़ा अड्डा है, इसलिए वहांकी जनतामें विशेष रूपसे सोवियत् देशके प्रति प्रेमकी भावना है। किन्तु रूजवेल्ट सोवियत् देशके साथ खिलवाड़ करके अपना काम निकालना चाहता है। जनताको इसी कारण रूजवेल्टपर क्रोध आता है। जनताके विरुद्ध वहाँके विगत प्रधान हरबर्ट हूवर तुले हैं। हूवरके

पक्षमें अमेरिकाके कुछ प्रतिक्रियावादी सैनेटर भी हैं। कुछ और लोगोंको भी वहाँके अमीरोंने रुपया देकर खरीद लिया है और ये खरीदे हुए लोग हार्स्ट तथा मैकोर्मिकके पत्रोंमें सोवियत् विरोधी मिथ्या प्रचार करते रहते हैं।

"एक बातपर हमको हँसी आती है। अमेरिकाके ये प्रतिक्रियावादी मान बैठे हैं कि रूजवेल्ट रूस और कम्युनिज्मका मित्र है। वे यह नहीं जानते कि एटलीकी तरह रूजवेल्ट भी कम्युनिज्मके मार्गमें अन्तिम रोड़ा है। वे यही नहीं समझते कि युद्धके समयमें हमारे साथ रूजवेल्टका मेल-मिलाप उसका स्वार्थ सिद्ध करता है। हमको पूंजीवादसे उतनी ही घृणा है, जितनी कि पूंजीवादियोंको हमसे। हमारे लिए इतिहासने जो ध्येय निश्चित किया है और लेनिन तथा स्टालिनने जिस मार्गपर हमें बढ़ाया है, उससे हम कभी भी मुख नहीं मोड़ेंगे। युद्धकालमें हमारा और पूंजीपतियों का जो साथ बना है, उसके कारण हमको किसी खाम-खयालीमें नहीं पड़ना चाहिए। हमें अपने मौलिक सिद्धान्तों पर डटे रहना चाहिए। हमारे बीच जो खाई है, उसपर कभी-कभी एक पुल बन सकता है। प्रस्तुत युद्धमें ऐसा ही हुआ है। किन्तु हम निश्चित रूपसे जानते हैं कि यह पुल अधिक नहीं टिक सकता, एक-न-एक दिन इसका टूट जाना अनिवार्य है। तब हमारे सामने यही प्रश्न उठता है कि कौन किसको जीतेगा। भविष्यमें हमें इसी एकमात्र समस्याका समाधान करना है।

"जब तक हमारे चारों ओर पूंजीवादका घेरा बना हुआ है, तब तक हमें हमेशा खतरा बना रहेगा। यह बात आप कभी मत भूलिए। आज अमेरिका हमको सामान भेज रहा है, इस कारण हमको धोखेमें नहीं पड़ना चाहिए। यह तो एक सौदा है। उस सामानका मोल हम अपने खून और धरतीसे चुका रहे हैं। इसलिए इस नई और अस्वाभाविक

दोस्तीके कुछ और अर्थ हमें नहीं लगाने चाहिएँ। हमें याद रखना चाहिए कि पार्टीके सदस्य होनेके नाते हम सब लेनिन और स्टालिनके अनुयायी हैं और हम सब पूंजीवादकी असलियतको पहिचानते हैं।"

युदिनका वक्तव्य समाप्त होते ही हम सबने खड़े होकर अन्तर्राष्ट्रीय [illegible]। दूसरे लोग चाहे सोचते रहे हों कि हम सच्चे कम्युनिस्ट [illegible] हैं। हम अच्छी तरह जानते थे कि ऐसा कुछ नहीं हो रह[illegible] मोहलत दे रहे हैं। अन्तर्जातीय कम्युनिस्ट आन्दोलन[illegible] सकते हैं, किन्तु यह तो कोई मूर्ख ही सोच सकता है [illegible] मूल-भूत सिद्धान्तोंमें कोई हेर-फेर होनेकी गुँजायश [illegible]

एक-दूसरी सभामें बोलनेवाले का नाम था व्लादिमीर पोति[illegible] वह एक प्रसिद्ध रूसी कूटनीतिज्ञ माना जाता था। उसने भी वही[illegible] कहीं, जो कि हम युदिनसे सुन चुके थे। रूसमें नई बात कहनेका ता[illegible] किसीको अधिकार ही नहीं है, कोई अधिक विस्तारसे, कोई संक्षिप्त रूपमें, सब एक सी घुटी-घुटाई बात कहते हैं। पोतियोम्किन एक कूटनीतिज्ञकी हैसियतसे, विदेशोंके विषयमें अधिक बोला। उसने हमको समझाया कि योरोपके देशोंका भविष्य कैसा होगा। उसकी बातें सुनकर कोई भी समझ सकता था कि उन देशोंके विषयमें पार्टी तथा केन्द्रीय कमिटीका क्या रुख है। पार्टी कहती थी कि जब-जब कम्युनिस्ट पीछे हटता है, तब-तब वह नए सिरेसे आगे बढ़नेकी तैयारी करता है। उसको विश्वास था कि युद्धके समाप्त होनेपर मुक्त-देशोंकी सरकारोंमें कम्युनिस्टोंका भी समावेश होगा। उस अवसरकी तैयारीके लिए क्रान्तिकी सेनाओंको अभीसे तैयारी करनी चाहिए। एक समय ऐसा आएगा, जब कि पूंजीवादपर दोहरा आक्रमण किया जा सकेगा—ऊपरसे सरकारोंमें घुस कर कम्युनिस्ट आक्रमण करेंगे और नीचेसे जनता।

युद्धके समय जो सबसे बड़ा समझौता हमने किया था, वह था धर्मके साथ। इस सम्बन्धमें कामरेड मिरोनोवने हमसे कहा :

"साथियो, हमको धर्मप्राण लोगोंके प्रति यह सहिष्णुता इसलिए दिखानी पड़ी है कि लाल सेनाके अधिकतर सिपाही उन पिछड़ी हुई देहातों से आए हैं, जहाँ धर्म-विश्वासका अभी भी जोर है। इसके सिवाय शत्रु प्रचार कर रहा है कि हम धर्मका उन्मूलन करना चाहते हैं। इसलिए धर्मके साथ एक समझौता करके हमने उस प्रचारको झुठला दिया है। एक और भी बात है, जिसका ध्यान हमें रखना पड़ेगा। बहुत शीघ्र हमारी सेनाएँ दूसरे स्लाव देशोंमें प्रवेश करेंगी, जहाँ कि अभी तक कम्युनिज्म नहीं आया है। उन देशोंमें धमका बोलबाला है। यदि हम धर्मके प्रति अपना पुराना रुख रक्खें, तो स्लाव जातियोंकी एकता वाला नारा झूठा पड़ने लगेगा। धर्मके प्रति हमारी नई नीति हमारे विरुद्ध पादरियोंके प्रचारको बेकार कर डालेगी। इसलिए आप लोगोंको पार्टीकी बुद्धिमानी पर सन्देह नहीं करना चाहिए। आनेवाले भविष्यमें हमको एक विशाल दृष्टिकोणसे सोचना और काम करना चाहिए। धर्मके प्रति सहिष्णुता दिखाकर हम दूसरे देशोंकी धर्म-संस्थाओंको अपने साथ रख सकेंगे और खींच लेंगे। इस प्रकार मास्को तीसरा रोम बननेमें सफल होगा।"

हम सब समझ गए। धर्मके प्रति यह नई नीति भी एक चाल थी, जिसका घर और बाहर—दोनों ओर उपयोग किया जा रहा था। किन्तु साथ ही हमें यह भी मालूम था कि साधारण जनताके साथ इस नीतिकी बात करते समय हमें उनको यह चाल समझानेकी जरूरत नहीं। जनताको तो हम यही कहते थे कि धर्मके प्रति हमारा दृष्टिकोण वास्तवमें और सदा-सर्वदाके लिए बदल गया है।

मई, १९४३ में जब कामिन्टर्नको "तोड़ा" गया, तो मैं सरकारी

दफ्तरमें काम नहीं करता था। किन्तु पार्टीकी सभाओंमें बड़े-बड़े कम्युनिस्टोंने उसका जो आशय हमें बताया, वह वही था जो कि युदिन और पोतियोम्किन आदिने दूसरी नीतियोंके विषयमें समझाया था। हमें विश्वास दिलाया गया कि कामिन्टर्नको केवल दिखावेके लिए "भंग" किया गया है। वास्तवमें तो उस संस्था और उसमें काम करनेवालोंको और भी दृढ़ताके साथ आगे बढ़ाया जा रहा था। अब कामिन्टर्नको गुप्त रूपसे काम करना था; क्योंकि समस्त संसारमें एक नई क्रान्तिकी लहर आनेवाली थी और हमें और भी तीव्रतर संघर्षके लिए तैयार होना था। कामिन्टर्नके "भंग" होनेकी बात सुनकर चारों ओर बहुत कुछ हो-हल्ला मचा। किन्तु किसीने भी यह नहीं सोचा कि स्टालिनकी पुस्तक—लेनिनवादकी समस्याएँ—अभी भी कम्युनिज्मका महाशास्त्र समझी जाती रही। इस पुस्तकमें स्टालिनने डंकेकी चोट कहा है कि "विजयी मजदूर-वर्ग" अर्थात् रूसको पूरा अधिकार है कि बल-प्रयोग द्वारा दूसरे देशोंमें कम्युनिज्म स्थापित करे। अधिकार ही नहीं, स्टालिनने तो यह एक पवित्र कर्त्तव्य बताया है कि रूस सशस्त्र क्रान्तिके लिए दूसरे देशोंकी कम्युनिस्ट पार्टियोंकी सहायता करे। स्टालिनने लिखा है: "क्रान्ति द्वारा जो राज्य स्थापित हो जाए, उसको विश्व-क्रान्तिके लिए सचेष्ट रहना चाहिए। जरूरत पड़नेपर वह राज्य गैर-कम्युनिस्ट देशोंपर सैन्य-बलका प्रयोग भी कर सकता है।" इसी प्रकार स्टालिनका लिखा हुआ पार्टीका इतिहास भी पार्टीके लोगोंमें चालू रहा। आज भी संसार-भरके कम्युनिस्ट और उनके सहकारी इस पुस्तकको बाइबिलकी तरह पढ़ते हैं। इस पुस्तकमें साफ-साफ लिखा है: "रूसकी कम्युनिस्ट पार्टी मार्क्सवाद-लेनिनवादके क्रान्तिकारी सन्देशको मानती रही है और मानती रहेगी। पार्टीका इतिहास पढ़कर स्टालिन और लेनिनके आदर्शकी अन्तिम विजयमें कोई सन्देह नहीं रह जाता। वह आदर्श है समस्त संसार पर कम्युनिज्मका बोलबाला।"

चूँकि रूसने अपने इन विश्वासोंको बदला नहीं है, इसलिए यह सोचकर कँपकँपी आती है कि यदि अमरीका की बजाय रूसने पहले-पहल एटम बम बनाया होता, तो क्या होता। जिस समय कामिन्टर्नके "भंग" होनेके प्रचारपर रूसके पूंजीवादी दोस्त खुशियाँ मना रहे थे, उसी समय मैं उस प्रतिष्ठानका गोदाम देखने जा पहुँचा, जहाँसे कि संसार-भरकी भाषाओंमें कम्युनिस्ट साहित्य प्रकाशित हो रहा था। वहाँ मैंने देखा कि लाल सेना द्वारा निकट भविष्यमें "मुक्त" होनेवाले देशोंके लिए ढेर का ढेर कम्युनिस्ट साहित्य तैयार किया जा रहा है। दिखावेके लिए कामिन्टर्न मर चुका था, किन्तु वास्तवमें पार्टीकी केन्द्रीय कमिटी सारे यूरोपको कम्युनिस्ट बनानेकी तैयारी कर रही थी। सैनिक सफलताके साथ-साथ सिद्धान्तका प्रचार अत्यन्त आवश्यक था। गुप्त कामिन्टर्नके अधिकारियोंको बड़ी सरगर्मीसे इस नए कामके लिए शिक्षा दी जा रही थी। जर्मनी, फ्रांस, पोलैण्ड, हंगरी, इटली तथा अन्य देशोंमें बहुत-सा काम करना था।

(२)

सरकारके उच्चपदस्थ अधिकारियोंको सबसे बड़े इनामके रूपमें जो मिलता है, वह है एक अलग-थलग बंगला। मैं बहुत दिनसे वह इनाम पानेकी चेष्टा कर रहा था। और आखिरकार मुझे सफलता मिल ही गई। सारे रूसमें मोझैस्क रोड सबसे सुन्दर मार्ग है। वह कोलतारकी बनी है और उसपर खूब सफाई रक्खी जाती है। यह वही सड़क है जो स्टालिनके देहाती बंगलेकी ओर जाती है और जिधरसे जाकर पौलिटब्यूरो के सदस्योंके बंगलोंपर भी पहुँचा जा सकता है। और रूसके "प्यारे" नेताकी जान बचानेके लिए इस सड़कपर हमेशा कड़ा पहरा रहता है। मोटर साइकिलोंपर चढ़े हुए पुलिसके भड़कीले अफसर इस सड़कका दौरा करते रहते हैं। जिस स्थानपर यह सड़क मास्कोसे मिलती है,

वहाँ इसके साथ कुछ बड़े सुन्दर मकान बनाए गए हैं। इन्हीं मकानोंमें से सरकारकी सिफारिशसे एक बंगला मुझे भी दिया गया। दो कमरे और एक रसोई-घर था। मास्को की स्थिति देखते हुए इतना बड़ा मकान स्वर्ग कहा जा सकता था। मकानमें एक पृथक स्नानागार था। मकान को गरम रखने और रौशन करनेका भी पूरा प्रबन्ध था। हाँ, एक कमी थी। मकानकी खिड़कियाँ सामने सड़ककी ओर न होकर पीछेकी ओर एक आँगनमें खुलती थीं। किन्तु यह तकलीफ बहुत साधारण मानी जाती थी। सरकारका हुक्मनामा, पार्टी-कार्ड तथा अपने और कागज-पत्र लेकर एक दिन मैं उस मकानपर कब्जा पानेके लिए जा पहुँचा। दफ्तरमें बस्तीका मैनेजर मुझे देखकर बोला :

"विक्टर, मकान सब तरहसे ठीक-ठाक है। अब तुम जाकर जिले की पुलिसको अपनी रिपोर्ट दे आओ। फिर यहाँ चले आना। यह सब खानापूरी करनी ही होती है।"

"पुलिसका भला इस बातसे क्या सम्बन्ध है ? इन कागजोंसे आप सब समझ सकते हैं।"

"मेरी अपनी तसल्लीके लिए तो ये कागज काफी हैं। किन्तु यह एक सरकारी सड़क है ना। यहाँसे पौलिटब्यूरोके सदस्य नित्य-प्रति आते-जाते हैं। इसलिए इस सड़कके किनारे रहनेवालोंको एक विशेष दृष्टिसे देखा जाता है।"

मैं बात समझ गया। हालाँकि मेरे मकानकी खिड़कियाँ सड़ककी ओर नहीं खुलती थीं, तो भी उस सड़कपर रहनेकी इजाजत मुझे उस समय तक नहीं मिल सकती थी, जब तक कि पुलिस यह न कह दे कि मेरे वहाँ रहनेसे स्टालिन की जानको कोई खतरा पैदा नहीं होगा। इस लिए मैं पुलिसके पास चला गया। उन्होंने मुझसे कुछ सवाल पूछे और

मुझे वहाँ बसने की इजाजत दे दी। किन्तु वहाँ बसना मेरी किस्मतमें नहीं लिखा था। जो मकान मेरे हिस्से आया वह नया बना था और व्यवस्थाएं पूरी नहीं हो पाई थीं। इसके सिवाय फर्नीचर इत्यादि की व्यवस्था करनेमें और समय लग गया। इन्हीं दिनों मेरे बाहर भेजे जाने की बात उठ रही थी। अभी तक मैंने बाहर जानेके सपने ही देखे थे। अपना देश त्यागनेकी बात सोच कर मुझे ग्लानि भी होती थी। पर अब तो बात चल पड़ी थी। मैंने सोचा कि जब तक बात तय न हो जाए, तबतक नए मकानमें जाकर क्या करूँगा।

इंगलैण्ड, कनाडा और अमेरिकासे आनेवाली सहायता की मात्रा दिन-ब-दिन बढ़ती जा रही थी। इसलिए सैकड़ों विशेषज्ञोंको देख-भालके लिए इन देशोंमें भेजना आवश्यक हो गया। सोवियत् रूसके इतिहासमें इतने लोगोंको बाहरका संसार देखनेका अवसर पहिले कभी नहीं मिला था। मैं एक अत्यन्त कुशल और अनुभवी इन्जीनियर माना जाता था, इसलिए मुझे इस कामके लिए अधिक उपयुक्त माना गया। पर्जके दिनोंमें मेरी अग्निपरीक्षा हुई थी, किन्तु उसमें पूरा उतरनेके कारण राजनैतिक दृष्टिसे मेरा दामन बिल्कुल पाक था। फिर भी यदि बाहर जानेकी बात मैं अपने आप चलाता तो मेरे लिए बुरा होता। बाहर जानेके लिए किसी की लालसा जितनी अधिक तीव्र होती थी, वह उतना ही अधिक उसे छुपाता था, ताकि कहीं गलतफहमी न हो जाए।

हमारे विदेश-व्यापार विभागके एक उच्च अधिकारीसे मेरी मित्रता थी। एक रातको मैं उसके साथ बाहरसे आनेवाली सहायताके विषयमें बातें कर रहा था। मैंने बड़ी निपुणतासे बातोंका रुख अपनी ओर बदला। मैंने खुलकर उससे नहीं कहा कि उसके सामने एक ऐसा योग्य व्यक्ति बैठा है जो विदेशमें जाकर उसकी सहायता कर सकता है। उसे ऐसा

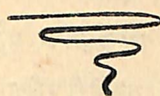
लगा जैसे स्वयं ही उसका ध्यान मेरी ओर खिंचा है। सहसा वह कहने लगा :

"विक्टर, तुम अमेरिका जाना चाहते हो क्या ? हमें वहाँ कुछ जानकार आदमियों की जरूरत है।"

"अच्छा। लेकिन मैंने तो इस विषयमें कभी कुछ सोचा नहीं। इसके सिवाय यहाँ भी मैं एक अत्यन्त दायित्वपूर्ण कामपर लगा हूँ। तुम तो जानते ही हो। फिर भी यदि युद्धके काममें मैं कुछ अधिक सहायक हो सकता हूं तो मुझे कोई उज्र नहीं।"

मेरा मित्र बुद्धू नहीं था और मेरा ऊपरी संकोच देखकर वह धोखेमें नहीं आया। वह बोला : "कोशिश करके देखूंगा। तुम विश्वास रखो कि ठीक प्रकारके लोगोंके सामने इस विषयमें चर्चा चला दूंगा।"

मैंने उसको धन्यवाद दिया। फिर भी मुझे विश्वास नहीं था कि वह अपना वायदा पूरा करेगा और मेरा मनोरथ पूरा हो सकेगा। यह दिसम्बर १६४२ के अन्तिम दिनोंकी घटना है।



पच्चीसवाँ अध्याय

अमेरिका जानेकी तैयारी

जनवरी १६४३ में मेरे बाहर जानेकी बातें पक्की होने लगीं और जुलाईमें मेरा पासपोर्ट भी बनकर तैयार हो गया। उन छः महीनोंमें मुझे ऐसा लगा जैसे मैं एक सूईमें टँगी हुई तितली हूँ, जिसको प्रयोग-शालामें रखकर विभिन्न विशेषज्ञ, विभिन्न दृष्टिकोणोंसे जाँच रहे हैं। मुझे खूब ठोक-बजा कर देखा गया कि कहीं मुझमें त्रुटियाँ तो नहीं हैं। मेरे बारे में जाँच-पड़ताल करने के लिए एक महान सरकार ने आकाश-पाताल एक कर डाला। मेरा सारा जीवन-इतिहास टटोला गया, मेरे सगे-सम्बन्धियों तथा मित्र-परिचितोंका ब्योरा लेकर एक एकके विषयमें खोज-खबर इकट्ठी की गई। हमारी सरकार अविश्वास पर टिकी थी और उस अविश्वासको उन्होंने पराकाष्ठा पर पहुँचा दिया था। मेरे अन्तरतम की थाह लेनेके लिए हफ्तों तक मेरी परीक्षा होती रही। उन्होंने मेरा रोम-रोम टटोल कर देखा, किन्तु आश्चर्यकी बात है कि वे मेरा भेद जान लेनेमें नितान्त असफल रहे। मैं सोवियत् देशसे निकल भागने का फैसला कर चुका था, किन्तु मेरे इस मनोभावकी किसीको गन्ध तक न मिली।

रूसी जनताकी सन्तान, कम्युनिस्ट पार्टीके सदस्य और सोवियत् इन्जीनियर, विक्टर क्रावचेन्कोके विषयमें जाँच-पड़तालका सूत्रपात पहिले

पहल हमारे व्यापार विभागमें हुआ। मुझे एक छोटेसे अधिकारी कामरेड इट्रबने बुलाकर सवाल पूछने शुरू किए। मोटे काँचका चश्मा पहिने हुए वह बड़ी भद्रतासे पेश आया। उसके लिए सारे आदमी एक जैसे थे। कामरेड इट्रबने पहिले तो मेरे जन्मसे लेकर उस क्षण तक मेरा व्यक्तिगत इतिहास पूछा। फिर मेरे माता-पिता, दादा दादी, नाना-नानी, भाई-बहिन और अनेक सम्बन्धियोंके इतिहास मुझे बताने पड़े। रिश्ते-दारोंकी कहानियाँ पूरी होने पर मेरे मित्रों, परिचितों और सहकर्मियोंकी बारी आई और धीरे-धीरे मेरे जीवनका कोना-कोना कॉमरेड इट्रबने टटोल लिया। उस तरफसे तसल्ली हो जाने पर, उसने अगला क़दम उठाया। उसने मुझे छपे हुए प्रश्नोंकी एक तालिका दी और उसको भर कर अगले दिन लौटानेका अनुरोध किया। उसने मुझे चेताया कि प्रश्नोंमें एक भी शब्दको काटनेकी मुझे इजाजत नहीं है, पूरे प्रश्नका उत्तर चाहिए। प्रश्नोंका काटना तथा बदलना, मानसिक पापका प्रमाण माना जाता था।

मैंने आदेशका पूर्णतया पालन किया। मेरे उत्तरोंकी जितनी प्रतियां, जितने समयमें, जिस जगह पहुँचानी थीं, मैंने पहुँचा दीं। दो-चार दिनके बाद मुझे एक सन्देश मिला—"अपने प्रस्तुत काम पर जुटे रहो। अगर तुमको बाहर भेजनेकी जरूरत हुई तो तुमको खबर दे दी जाएगी।" सोवियत् राष्ट्रकी भाषामें इसका यह अर्थ था कि मेरे विषयमें खूब जांच-पड़ताल हो रही है और शायद कुछ दिन और चलती रहेगी। इस प्रकार तीन महीने और बीत गए। मैं प्रायः निराश हो चला। मैंने मन मार कर यही सोचा कि मेरे अथवा मेरे परिवारके नाम पर सरकारकी आँखोंमें कोई धब्बा लगा हुआ है। किन्तु एक दिन कामसे बेहद थक कर मैं घर पर पहुँचा तो मेरे लिए एक अजीब-सा सन्देश वहाँ मिला! मुझसे एक विशेष नम्बरके टेलीफोन पर बातें करनेका अनुरोध किया गया था।

रूसी सरकार सदा इस प्रकारकी अजीब हरकतें किया करती है। इस प्रकार व्यक्तिके मनमें कुछ क्षणके लिए भय और आशा, दोनों ही भरे जा सकते थे। ऐसे सन्देशका अर्थ यह भी हो सकता था कि पाने वाला पुलिसका शिकार होने वाला है या यह भी कि उसका भाग्य चमकनेमें अब देर नहीं।

मैंने टेलीफोन किया। हमारे विदेश-व्यापार विभागके एक अधिकारीने उत्तर दिया कि मुझे उससे मिलना चाहिये। मेरी समझमें नहीं आया कि इस प्रकार घुमा-फिराकर बातें करानेमें क्या उद्देश्य निहित है। मैं जाकर उससे मिला। तीन घण्टे तक हम बैठे-बैठे अतीत जीवनके बीहड़में विचरते रहे। वह टटोल-टटोलकर मेरी राजनैतिक नब्ज देखना चाहता था। इसलिये उसने अपनी बातोंमें खूब दाँव-पेचसे काम लिया। कभी वह मेरी बात सुनता रहता था, कभी मुझे धर दबाता था। वह मंजी हुई बिल्लीकी तरह मुझ पर घातें कर रहा था। किन्तु अबकी बार उसका पाला बड़े अनुभवी और पके हुए चूहेसे पड़ा था। गर्शगोर्न और दोरोगन जैसे आचार्योंके नीचे मैंने रातें बिताकर जो शिक्षा प्राप्त की थी, वह मेरे खूब काम आई। प्रातःकालके दो बजे होंगे, जब कि बिल्ली और चूहे, दोनोंने थककर, काम बन्द कर दिया। उसने मुझसे कहा कि दो-चार दिनके बाद एक बार फिर उससे मिलकर कुछ विशेष प्रकारके फौर्म पूरे कर जाऊँ।

आखिरकार मुझे सबूत मिल गया कि मेरे बारेमें सब ठीक-ठाक है। मुझसे कहा गया कि सरकारी अस्पतालमें जाकर अपने स्वास्थ्यकी जाँच कराऊँ और सरकारी फोटोग्राफरसे अपना फोटो खिंचवाकर शनाख्तके लिये छोड़ जाऊँ। दो दिनके बाद मुझे हुक्म मिला कि कामरेड लेबेडेव से जाकर मिलूँ। वह मिकोयनका विश्वस्त सहकारी था। मैंने उससे बातें कीं तो उसके दोनों ओर बैठे दो कर्मचारियोंने बार-बार उसको मेरे

विषयमें विविध कागज-पत्र दिखाए। उसकी मेज बहुत सुन्दर थी। और बढ़िया कालीनोंसे लदे हुए एक बड़ेसे कमरेके बीचोंबीच रक्खी गई थी। दीवारों परसे स्टालिन, मोलोटोव, मिकोयन इत्यादि हमें घूर रहे थे। लेबेडेवके सामने एक बहुत मोटी फाइल पड़ी थी, जिसमें मेरे सम्बन्धमें विशद जानकारी बटोरी गई थी।

अभिवादनके बाद कामरेड लेबेडेव मुझसे सवाल करने लगा: मेरा नाम, जन्मस्थान, पार्टीमें भर्ती होनेकी तारीख। उसने कोई ऐसा सवाल नहीं पूछा, जिसका उत्तर कि मैं दर्जनों बार पहिले नहीं दे चुका था। किन्तु उसको भी वह कर्मकाण्ड निभाना ठहरा। मैंने अपनी ओरसे खूब चावके साथ प्रश्नोंके उत्तर दिए, मानों वैसे प्रश्न कभी किसीने मुझसे नहीं पूछे हों। मैं उसको विश्वास दिलाना चाहता था कि प्रश्न पूछनेमें कोई उससे होड़ नहीं ले सकता। अन्तमें गम्भीर होकर उसने पूछा:

"कामरेड क्रावचेन्को, तुम क्या विदेशमें अपने कामका महत्व समझते हो?"

"अवश्य। मैंने इस सम्बन्धमें बहुत सोचा है"

"पार्टी तुम पर जो विश्वास दिखा रही है, उसके अनुरूप योग्यता तुम्हें दिखानी होगी"

मैंने बड़ी नम्रता, किन्तु बड़ी उत्सुकतासे कहा: "मैं पूरी कोशिश करूँगा"

"तो आगेका आदेश तुम्हें ठीक समय पर मिल जाएगा। हमारी मुलाकात फिर होगी"

पाँच दिनके बाद मुझे विश्वस्तरूपसे ज्ञात हुआ कि कामरेड मिकोयन ने अपने हाथसे सही करके यह सिफारिश पार्टीकी केन्द्रीय कमिटीके पास भेजी है कि मुझे अमेरिका भेज दिया जाए। कामरेड मिकोयन पौलिट ब्यूरोका सदस्य था, सोवियत् मन्त्रीमण्डलका उपप्रमुख, सुरक्षा-कमिटीका

सदस्य और विदेश-व्यापारका मन्त्री भी। इसके बाद मैं अपना पुराना काम करता रहा, पर मेरा एक मन दूर देशके चक्कर लगाने लगा। कुछ दिन बाद फिर पुलिसका एक सन्देश मिला कि अमुक नम्बर पर टेलीफोन कर लूँ। फिर वही पुरानी बात निकली। एक महिला कर्मचारीने कहा कि साढ़े ग्यारह बजे मुझे व्यापार-विभागके दफ्तरमें हाजिर हो जाना चाहिये। वहाँ एक नए अधिकारीने एक मिनट तक मुझे देखा और फिर कहा :

"मुझे अपने बारेमें कुछ बताइये। आपके लिखे हुए उत्तर मैं सब पढ़ चुका हूं। उन्हें दोहरानेकी जरूरत नहीं। मैं तो आपका जीवन-दर्शन जानना चाहता हूँ, आपका राजनैतिक मतामत और ऐसी ही और बातें"

मैंने इधर-उधरकी बातें कह दीं। मैंने दिमाग पर जोर डालकर ऐसी बातें सोचनेकी कोशिश की जो कि मैं पहिले इन्हें नहीं बता चुका था। मुझे बीचमें टोक कर उसने सीधा सवाल पूछा : "क्या आपको कभी पार्टीकी किसी नीतिके औचित्य पर सन्देह हुआ था?"

"कभी नहीं"—मैंने तुरन्त उत्तर दिया। अपनी ओरसे मैं बात बढ़ाना नहीं चाहता था।

"खेतीके सामूहीकरणके दिनोंमें भी नहीं? पर्जके दिनोंमें भी नहीं, जब कि आपने स्वयं कुछ कष्ट उठाया था? क्या उन दिनोंमें भी आपको पार्टीकी नीति पर आपत्तिका अनुभव नहीं हुआ?"

"पार्टीकी नीति पर तो कभी नहीं"

"लेकिन १९३६-३७ में निकोपोलमें आप पर बहुत बुरी बीती थी। आपकी तहकीकात हुई और आपको बहुत कुछ सहना पड़ा था। तब आपने क्या सोचा था?"

"हाँ, मैं कुछ विस्मित अवश्य हुआ था, मुझे गुस्सा भी आया था। मैं जानता था कि मैं निर्दोष हूँ। मन पर कुछ मलाल तो हुआ ही।"

"वह तो ठीक भी था। आपको उस विषयमें दोषी नहीं माना जा सकता। लेकिन; कामरेड क्रावचैन्को, क्या अब भी उस चोटका कुछ असर बाकी है। क्या अब भी आपको गुस्सा आता है?"

"नहीं, बिल्कुल नहीं"—मैंने मुस्कराकर कहा, मानो वह प्रश्न ही फालतू हो। गर्शगोर्न और दोरोगन इत्यादिने मुझे पीटकर तथा मेरा अपमान करके मेरा कल्याण ही किया था!

प्राय: दो घण्टे तक वह भद्दा नाटक चलता रहा। मैं समझ गया कि वे मेरे राजनैतिक मतामत पर दिल खोलकर बातें करना चाहते हैं। न जाने उनको किस प्रकार यह भ्रम हो गया था कि रूसमें भी कोई दिल खोलकर बात कर सकता है। वहाँ तो दो पुराने दोस्त मिलते हैं, तो वे भी एक दूसरेसे झूठ बोलने और मिथ्याचार करनेके सिवाय कुछ नहीं कर पाते। हमारी बातें ज्यों-ज्यों आगे बढ़ीं, मेरा आत्म-विश्वास भी बढ़ता गया और मैंने रटे हुए नारे लगाने शुरू कर दिये। मुझे उन सबको उल्लू बनानेमें बड़ा मज़ा आ रहा था। किन्तु मन ही मन मैं कह रहा था:

"मैं अब भाग निकलनेमें समर्थ हूँगा। इस खयाली दुनिया और नरकयातना से मुझे छुट्टी मिल जाएगी। आखिर यह सम्भव हो सकेगा कि मैं दिलकी बातें कह सकूँ, और इनसे लोहा लूँ।"

मेरे परीक्षक पर मेरी बातोंका अच्छा असर पड़ा। उसने यही सोचा कि मेरे पास विचारोंका बाहुल्य नहीं है, पर जो भी दो-चार विचार मेरे पास हैं, वे सब ठीक किस्मके हैं—बहुत चटकीले न हों, पर विश्वास करने योग्य हैं। उसने विदा देते समय मुझसे कहा कि पाँच चार दिनमें मुझे केन्द्रीय कमिटीका फैसला मालूम हो जाएगा।

वह फैसला भी मेरे पक्षमें हुआ। एक हफ्ते बाद मैंने व्यापार विभागके एक दफ्तरमें जाकर अपने नए कामके विषयमें जानकारी प्राप्त कर ली। फिर मुझे केन्द्रीय कमिटीके सदर दफ्तरमें तलब किया गया।

इसके बाद मुझको दो भेद-भरी पुस्तिकाएं पढ़नेको मिलीं। मुझसे कहा गया कि मैं बड़े ध्यानसे उनको वहीं पढ़ लूं और फिर लौटाते समय एक फौर्म पर सही करके कह दूँ कि मैंने अच्छी तरहसे सब समझ लिया है। पुस्तिकाओंमें यह बताया गया था कि पार्टीके सदस्योंको विदेशमें किन किन नियमोंका पालन करना चाहिए और नियम भंग करने पर क्या क्या दण्ड मिलेगा। उन पुस्तिकाओंमें गैर-कम्युनिस्ट देशोंके सम्बन्धमें जिस घोर मिथ्याका प्रचार किया गया था, वह मैं कभी नहीं भूलूँगा। सर्वप्रथम तो यह आदेश था कि अपनेसे बड़े अधिकारियोंकी आज्ञाका पूर्ण पालन करना चाहिए। फिर पूंजीवादी देशोंमें पद-पद पर फैले हुए मायाजालके विरुद्ध हमको सचेत किया गया था। पूंजीवादी देशोंका वह चित्र एक-बारगी भयोत्पादक तथा आकर्षक था। वह चित्र यही बताता था कि वे अजीब, द्वेषपूर्ण, कलुषित और बदजात देश रूसी नागरिकोंको फँसाकर रूसके सम्बन्धमें भेदकी बातें जाननेके लिए तरह-तरहके जाल फैलाते हैं। इसी प्रकार विदेशी सरकारोंके बारेमें बताया गया था कि रूससे आए कम्युनिस्टोंको पथभ्रष्ट करनेके लिए वे कोई कोर-कसर नहीं रखतीं। चूँकि हमको वहाँ जाना ठहरा जहाँ कि राजनैतिक बदमाश, जूआचोर व्यापारी और सजीधजी वेश्याओंके अतिरिक्त कुछ नहीं, इसलिए हमें सावधानी बरतनी चाहिए। बिना मतलबके किसीसे बात करना मना है और राजनैतिक चर्चा तो किसी सूरतमें नहीं होनी चाहिए। यदि हमारे पास आकर कोई कहे कि सरकारी कागज या अन्य गुप्त भेद बताकर रुपये ले लो, तो हमें चाहिए कि उसे बरगला कर सोवियत् सरकारके दफ्तर तक पहुँचा दें। यदि कोई रूसके आन्तरिक जीवनके बारेमें पूछ-ताछ करे तो हमें समझ लेना चाहिए कि वह कोई गुप्तचर है।

एक और विषयमें तो नियम और भी कठोर थे। हमें किसी भी हालतमें उन रूसियोंसे नहीं मिलना चाहिए जो कि रूसके नागरिक नहीं

रह गए हैं और जो रूसकी प्रस्तुत सरकारका विरोध करते हैं। ऐसे रूसी जो अखबार इत्यादि छापकर रूस विरोधी प्रचार करते रहते हैं, वह भूलकर भी हमें नहीं पढ़ना चाहिए। चारों ओर सोवियत्-विरोधियोंका जाल फैला है—रेडियोमें, सिनेमाके परदे पर। इन सबसे हमें बचना चाहिए अन्यथा हमारा पतन अवश्यम्भावी हो जाएगा। कहनेका सारांश यह था कि पूंजीवाद भीतरसे अवश्य सड़ गल गया है, तो भी बाहरसे उसमें जो चमक-दमक है वह कम्युनिस्टोंको फँसाकर उनका धर्म नष्ट करनेके लिए काफी है। उस चमक-दमकके सामने हमें अपने ऊपर पूर्ण संयमसे काम लेना होगा। पूंजीवादी देशोंके बड़ेसे-बड़े होटल वास्तवमें वेश्यागृह हैं जहाँ भोले-भाले कम्युनिस्टोंको फँसानेके लिए विषकन्याएं घात लगाए रहती हैं!

न जाने वे कौनसे गहन भेद थे, जिनको छुपानेके लिए हमको इस प्रकार सावधान किया जा रहा था और जिनको जाननेके लिए बाहरका संसार इतना व्यग्र था। उन पुस्तिकाओंमें उन भेदोंका कहीं जिक्र नहीं था। किन्तु बात मैं समझ गया। हमको यही समझाया जा रहा था कि बाहरके लोग सोवियत् रूसके बारेमें जो सच-सच बातें जानते और कहते हैं, उनकी पुष्टि हम न कर बैठें। रूसको अनेक बातें छुपा कर रखनी थीं—वहाँके गुलामखाने, मनुष्योंको पशु बना डालनेकी विशाल योजनाएं इत्यादि। रूसके शासक नहीं चाहते थे कि उन्होंने और उनके चाटुकारोंने मिलकर मिथ्या प्रचार द्वारा जिस स्वर्गकी तस्वीर बाहरके लोगोंके सामने प्रस्तुत की है, उसपर कोई धब्बा आ जाए। इस प्रकार वे दो पुस्तिकाएं वास्तवमें रूसी शासकोंके अन्तरमें पले हुए पापका प्रतीक थीं।

और चूँकि हमारी पुलिस विदेशियोंके साथ बहुत गन्दी हरकत करती रहती थी, इस लिए वे सोच बैठे थे कि अन्य देशोंकी पुलिस भी

रूसवासियोंके साथ वैसा ही करेगी। इसीलिए उन्होंने हमें बतलाया कि अमेरिकाकी पुलिस छुप कर हमारे सामानकी तलाशी ले लेगी, हमारे पासपोर्ट चुराकर नकली पासपोर्ट बनाएगी, हमारे टेलीफोनों पर कान लगाएगी और हमारे पीछे औरतें लगाकर भेद जानना चाहेगी। रूसकी सरकार ये सब काम स्वयं करती है, इस लिए उसने सोच रक्खा है कि सभी सरकारें ऐसा करती होंगी। पुस्तिकाएँ पढ़कर मैंने लौटा दीं और उनको विश्वास दिला दिया कि सब कुछ मेरी समझमें आ गया है। तब मुझे केन्द्रीय कमिटिके एक कर्मचारीका लम्बा-सा लैक्चर सुनना पड़ा। कठोर स्वरमें वह कहने लगा :

"कामरेड क्रावचैंको, तुम अभी विदेश-यात्रा पर जा रहे हो। तुमको एक विरोधी वातावरणमें हमारा व्यापार सँभालना पड़ेगा। तुम्हें उन पूँजीपतियोंसे पाला पड़ेगा जिनपर हम विश्वास नहीं कर सकते और जिनसे हम नफरत करते हैं। वहाँका समाज पतनकी पराकाष्ठा पर पहुँच चुका है। इस लिए वहाँका भोग-विलास और चमक दमक देखकर तुम पथभ्रष्ट न हो जाना। तुम सोवियत् रूसकी नई संस्कृतिके प्रतिनिधि हो। इतिहासने तुम्हें एक दायित्व सौंपा है। वह भुला मत देना। यह सच है कि अमेरिका आज हमारी मदद कर रहा है, किन्तु हमें यह नहीं भूल जाना चाहिए कि उन्हें वह मदद बड़ा मन मार कर और अपने स्वार्थसे बाध्य होकर ही करनी पड़ रही है। यह भी सच है कि उनके कुछ उद्देश्योंसे इस समय हमारे कुछ उद्देश्योंका मेल खाता है, किन्तु हम ऐसे दो संसारोंके वासी हैं जिनका कि कभी समझौता नहीं हो सकता। तुम्हें हमेशा यह बात याद रखना चाहिये कि कम्युनिस्ट होनेके नाते तुम पूँजी-वादी समाजके कट्टर शत्रु हो और आज अमेरिका पूँजीवादका सबसे मजबूत गढ़ है। कम्युनिज्म और पूँजीवादका कभी समझौता नहीं होगा"

मैंने विश्वासकी मुद्रामें अपना मुख गम्भीर बना कर लैक्चर सुना।

मैं पार्टीका सच्चा हुआ आदमी था, इसलिए मुझे वैसा लैक्चर पिलाना उसकी घोर मूर्खता थी। किन्तु वह बेचारा भी कर्मकाण्ड निभा रहा था। इसी कामके लिए उसको वेतन मिलता था और न जाने रोज कितने लोगोंको सामने बैठाकर उसे वह तोतारटन्त सुनानी पड़ती होगी। वह कह रहा था:

"अमेरिका पहुँचने पर भी तुमको पार्टीका काम तत्परतासे करते रहना होगा। लेकिन यह बात अमेरिकाकी सरकारको नहीं मालूम होनी चाहिए। उनको तो यही कहना कि तुम कभी पार्टीके सदस्य नहीं बने। उन्हें बतलाते रहना कि तुमको राजनीतिमें कोई दिलचस्पी नहीं है। अमेरिकामें सोवियत् यूनियनकी कम्युनिस्ट पार्टी गुप्त रूपसे काम करती रहती है। तुम अपना पार्टी-कार्ड अपने साथ मत ले जाना, लेकिन तुम्हारे पार्टी मेम्बर होनेकी बात ठीक लोगोंको अपने आपके मालूम हो जाएगी। बाहरसे देखनेमें तुम केवल एक इञ्जीनियर रहोगे, और कुछ नहीं। तुम समझ गए?"

"हाँ, मैं समझ गया।"

अगले दिन मैं फिर पार्टीके बड़े दफ्तरमें पहुँचा। जूनका अन्त होने वाला था। मुझे अच्छी तरहसे धो-पोंछ कर तैयार किया जा रहा था। एक और ऊँचा कर्मचारी, पहिलेसे कुछ मेरी राह देख रहा था। दो और आदमी बैठे थे। एकको तो देखते ही मैं समझ गया कि पुलिसका आदमी है। पार्टीका कर्मचारी भारी-भरकम आदमी था, बढ़िया विदेशी कपड़ोंसे सजा हुआ। उसके हाथ पर बँधी विदेशी घड़ी और कोटकी जेबमें टँगा विदेशी पैन जता रहे थे कि वह अभी-अभी पूँजीवादके "मरुथल" से लौटा है। शायद लन्दन या वाशिंगटनमें रहा हो। उसने मुझसे कहा:

"कामरेड क्रावचेन्को, केन्द्रीय कमिटीने तुमको अमेरिका भेजनेका

फैसला कर लिया है। तुम्हारे ऊपर जो विश्वास दिखाया गया है, उसका पूरा अर्थ तुम जानते हो ?"

"हाँ।"

"तुमने सब कायदे-कानून पढ़ लिये ना ? भूल अथवा बेअदबीका परिणाम भी तुम जान गए होगे ?"

"हाँ, मुझे सब याद रहेगा।"

"तुम्हें एक बाल्शेविकके नाते खूब सावधान रहना पड़ेगा और पार्टीके प्रति तुम्हारी हार्दिक-भक्ति इस सतर्कतामें तुम्हारे काम आएगी।"

"हाँ, वह तो मैं जानता हूँ।"

"तुम जिस देशमें जा रहे हो, वहाँ पूँजीवाद अपनी पराकाष्ठा पर पहुँचा हुआ है। अमरीकी खुफिया पुलिस बहुत तेज है, उससे बचना भी कठिन है। तुमको अपने देशसे द्रोह करनेके लिये तरह-तरहके लोभ दिए जायेंगे। वहाँके पूँजीपति और रूससे भागे हुए लोग तुम्हारे ईमान को डिगानेमें कोई कोर-कसर नहीं उठा रक्खेंगे। वहाँके क्रान्ति-विरोधी समाचार-पत्र, विशेषकर हार्स्ट और मैकोर्मिकके पत्र, तुम्हारे विश्वासों पर चोट करेंगे। जो लोग हमारे देशके मित्र होनेका दम भरें, उनका भी कभी विश्वास न करना। खुलकर शत्रुता करनेवालोंसे ये "मित्र" अधिक खतरनाक होते हैं। आजकल कुछ रूससे भागे हुए लोगोंमें यह फैशन हो गया है कि हम लोगोंकी खूब चापलूसी करें। उनमें कुछ लोग वाम-पन्थी हैं, किन्तु बहुतसे वे भी हैं, जिन्होंने जारशाहीका समर्थन किया था। उनका कभी विश्वास मत करना। जिसने एक बार द्रोह किया है, वह सदाके लिये द्रोही हो गया। इसके सिवाय बहुतसे बैंकोंके मालिक, उद्योगपति और दूसरे पूँजीपति आज सोवियत् रूसके गुण गाने लगे हैं। उनके भी पास मत फटकना। हमारे लिये उनके गुणगानकी कानी-कौड़ी भी कीमत नहीं। वह गुणगान किसी पल भी विश्वासघातमें बदल सकता है।"

मैं भी उसकी हाँ में हाँ मिलाता गया। सरकारी जासूसों, रूसी भगोड़ों और बदमाश पूँजीपतियोंसे मुझे सचेत करनेके बाद उसने मुझे उस खतरेकी चेतावनी दी, जिसको वह सबसे बड़ा समझता था। अपने स्वरमें गहन आवेश भरकर उसने कहा कि पूँजीवादी देशोंमें पद-पद पर होटल और नाइटक्लब हैं, जिनमें सुन्दर स्त्रियाँ अपनी देह मुझे देना चाहेंगी और उनसे मुझे खबरदार रहना होगा। उससे पीछा छुटा तो एक तीसरे उपदेशकके सामने बैठना पड़ा। इस महाशयका काम मेरा धर्म बचाना नहीं था। एक इञ्जीनियरके नाते मेरे क्या-क्या कर्त्तव्य है, यही उसने समझाया। मेरा सबसे पहला कर्त्तव्य तो यह था कि अमरीका के सम्बन्धमें जो भी आर्थिक अथवा सैनिक खोज-खबर मुझे इधर-उधरसे मिले, वह मैं अच्छी तरह संजो लूँ; जिस भी कारखानेमें मैं जाऊँ, वहाँ के बारेमें पूरी बातें देखकर याद कर लूँ; जैसे कि कारखाना किस शहर में है, कैसा बना है, वहाँ वैसी मशीनें किस ढंगसे चलाई जाती हैं, क्या-क्या नए आविष्कार काममें लाए जाते हैं इत्यादि वे सब बातें जो कि हमारे देशको मालूम न हों। कहने लगा :

"अमेरिकामें पहुँचकर तुम्हें क्रान्तिकी आँखों से काम करना पड़ेगा। वाशिंगटनमें पहुँचते ही कामरेड सेरोवसे मिलना, पार्टीकार्ड यहाँ लौटाते समय तुमको जो संकेत दिया जाए, वह कामरेड सेरोवको बता देना। वह तुम्हारे बारेमें सब कुछ जानता है। सब समझ गए?"

"बिल्कुल समझ गया।"

"एक बात और। अपने विदेश जानेकी खबर इधर-उधर मत फैलाना। जिन दो-चार मित्रोंको तुम राजनैतिक दृष्टिसे विश्वासके योग्य समझते हो, उन्हींसे कह देना।"

जब मैं घर लौटा तो मेरी जेबमें रूसी सरकारका दिया हुआ लाल-रंग का पास-पोर्ट था। मेरी परिस्थितिमें वह कागजका टुकड़ा, उस दिन मेरे

लिये एक अपूर्व निधि बन गया। मैं बार-बार उसे छूकर देख लेता था। जानना चाहता था कि कहीं सपना तो नहीं देखा है। घर पर आयरीना मेरी बाट जोह रही थी। मेरा मुख देखते ही वह समझ गई कि सब ठीक-ठाक है। मैं जानता था कि वह अपने आँसू दबानेकी चेष्टा कर रही है। मेरे मनका भेद तो वह जानती ही नहीं थी। उसने मुझसे जो प्रेम किया था, उसका एक ही बदला मैं चुका सकता था। वह यह कि उसे अपने मनसूबेके बारेमें कुछ न बताकर सरकारकी आँखोंमें निरपराध रहने दूँ। दिलमें मैं जानता था कि शायद अपने देश और अपने लोगोंको फिर कभी नहीं देख पाऊँ। इसलिये देश छोड़नेके पूर्व कुछ दिनों तक मैंने आँखें भरकर सब देख लिया। दिल भारी तो हुआ ही। मैंने सबकी याद अपने सीनेमें रखनेका प्रण किया।

मेरे दर्जनों ऐसे मित्र थे, जिनसे बिदा लेना मैं जरूरी समझता था। लेकिन सरकारकी ओरसे मेरे चारों ओर जो घेरा डाला गया, उसके कारण सब कुछ मुश्किल हो गया। फिर भी कामरेड मिशा आदि दो-चार लोगोंसे तो मैं मिल ही लिया। मैंने उनसे बिदा लेते समय ऐसा भाव दिखाया कि कुछ दिन बाद फिर आ मिलूँगा। मैं नहीं चाहता था कि मेरा भेद कोई भी ताड़ जाए। जब मैंने उनको अपना पासपोर्ट दिखाया, तो वे सब स्तम्भित रह गए। स्टालिनके "स्वर्ग" से कुछ दिनके लिये भी छुट्टी पाना एक अत्यन्त कठिन बात मानी जाती है और जिसको वह अवसर मिलता है, उसके भाग्यका क्या कहना।

रेल-यात्रामें मेरे साथ एक सफेद बालों वाला, मृदुभाषी व्यक्ति भी था। हमने एक दूसरेसे परिचय प्राप्त किया। हमने एक साथ भोजन किया और युद्धके बारेमें बातें करने लगे। उसने पूछा कि मैं कहां जा रहा हूँ, तो मैंने कह दिया कि व्लाडीवास्टक तक। मैंने भी जब वही प्रश्न उससे पूछा, तो उसने भी उसी प्रकार टाल दिया। कहने लगा

यूराल पारके प्रदेशमें जा रहा है और साथ ही मुँह बिगाड़ लिया। रातको किसीने हमारा द्वार खटखटाया और पुलिसका एक अफ्सर भीतर चला आया। डरके मारे मेरा दिल बैठने लगा। मुझे विश्वास हो गया था कि मैं रूसके बाहर जा रहा हूं, तो भी मनमें खटका बना था। अफ्सरने बड़ी भद्रताके साथ हमारे कागज-पत्र मांगे। मैंने अपना पासपोर्ट दिखा दिया। अफ्सरने उसे ध्यानसे देखा, उस पर लगे फोटोसे मेरी शक्ल मिलाई और एक सैल्यूट मारकर वह लाल कागज मुझे लौटा दिया। फिर मैंने देखा कि मेरे साथीने भी वैसा ही लाल पासपोर्ट निकालकर अफ्सरको दिखाया। हम दोनों ही विदेश जा रहे थे और दोनोंने ही एक दूसरेसे झूठ बोला था। इसलिये हम दोनों ही कुछ-कुछ शरमा गए। अफ्सरके चले जाने पर साथीने पूछा :

"अच्छा, विक्टर, यह तो बताओ कि हमें इस प्रकार झूठ क्यों बोलना पड़ता है? हम एक दूसरेसे भय क्यों मानते है? हम दोनों रूसके वासी हैं। बहुतसे लोगों और स्थानोंको हम दोनों एक साथ जानते हैं। फिर भी हमको एक दूसरेसे डर लगता है। मुझे राजनीतिमें बिल्कुल दिलचस्पी नहीं। मैं मंगोलिया जा रहा हूं। वहाँ पशुपालनमें हाथ बंटाकर अपने देशके लिये मांस भेजनेकी कोशिश करूँगा। और कोई बड़ी बात नहीं। फिर भी, अफसोस है, मैंने तुमसे झूठ बोला।"

"और मैं अमेरिका जा रहा हूं। वहाँसे हमारे देशमें जो सामान आता है, उसकी देखरेख करूँगा। मैंने तुमसे झूठ बोला। माफकर देना। मुझे लाज आती है।"

"माफीकी क्या बात है। मैंने भी झूठ बोला है। हम सब एक-सा काम करते हैं। हम सबको एक दूसरे पर अविश्वास है, हम बच्चोंकी तरह एक दूसरेसे बातें छुपाते रहते हैं।"

हमें पता चला कि हमारी गाड़ीमें कुछ महत्वशील विदेशी मेहमान

भी हैं। वाल्टर सिट्रिनकी अध्यक्षतामें ब्रिटिश मजदूरोंका एक शिष्टमण्डल रूसमें आया हुआ था। वे एक अलग प्रकारके डिब्बेमें सफर कर रहे थे और उनके साथ कई सरकारी अफसर तथा अनुवादक भी थे। उनका खाना अलगसे एक रसोई घरमें बनाया जाता था और सब तरहसे ध्यान रक्खा जाता था कि रूसकी वास्तविकतासे उनका कोई सम्पर्क न होने पाए। पर स्टेशनों पर जो भूखे लोग और यतीम बच्चे इकट्ठे हो जाते थे, उनको कैसे छुपाया जाता। मुझे आशा हुई कि सर वाल्टर और उनके साथी अंग्रेज उन हृदयविदारक दृश्योंको देखकर रूसके सम्बन्धमें कड़वे सत्यका कुछ आभास पा गए होंगे।

सारे रास्ते मेरा दिल धड़कता रहा। बार-बार मेरे कागज-पत्रोंका मुआयना होता था और प्रत्येक बार मैं आशंकासे पागल हो उठता था। बहुत देर तक तो मुझे नींद ही नहीं आई और जब थककर सोया, तो सपना देखा कि पुलिसके गुण्डे मुझे गाड़ीसे नीचे घसीट रहे हैं। एक दिन सोते-सोते मैं दब गया। मेरे कानमें कोई कह रहा था: "तो तुम समझ बैठे थे कि हमको कुछ मालूम नहीं......तुम मान बैठे थे कि हम तुमको निकल भागने देंगे......" मैंने चारों ओर देखा तो पाया कि गशगोन खड़ा है। और मैं जागा तो पसीनेसे तर था।

ब्लाडीवास्टकमें मैं बड़े होटलमें ठहरा। प्रतिपल वहाँ गाना-बजाना चलता रहता था। शराबकी नदियाँ बह रही थीं। चारों तरफ पुलिसमें काम करनेवाली जासूस स्त्रियाँ अपना जाल बिछाए थीं। शहरके बाजार में मैंने देखा कि खाना कपड़ा तथा अन्य चीजें इतनी मात्रामें मिल रहीं हैं, जितनी कि रूसमें और कहीं मैंने नहीं देखी थीं। किन्तु उनके दाम भी अनाप शनाप थे। चारों तरफ चोरबाजार गरम था। अमेरिकासे उधारखातेमें जो सामान आता था, उसमेंसे रेल और नौसेना विभागके लोगोंने चुरा-चुराकर यह बाजार सजाया था।

प्रातःकाल होते ही मुझे बन्दरगाहमें बने कस्टमज् हाउसमें पहुँचाया गया। मेरे साथ और भी कई ऐसे लोग थे जिनको कि शान्त महासागर पार करना था। एक-एक करके हमको हमारे सामानों समेत एक बन्द कमरेमें ले जाया गया। तीन पुलिस वालोंने बड़े ध्यानसे हमारे सूटकेस तथा दूसरे सामानकी तलाशी ली। हमारे कपड़ोंकी जेबें टटोलीं, सिलाई को बारीकीसे देखा गया और बहुत बार तो कपड़ोंको झाड़-झाड़कर सन्देह मिटाया गया। फिर उन्होंने मेरी तलाशी ली। बहुत तत्परतासे। सारी जेबें उलट डालीं, कोटकी सिलाईको टटोल डाला। फिर मेरे बटवेको देखा गया तथा मेरी डायरीमें जो नाम, पते और टेलीफोनके नम्बर लिखे थे, उनकी नकल उतार ली गई। जब उन्होंने वह लिफाफा खोला जिसमें मेरे परिवारवालोंके फोटो थे, तो उनमें बहुत उत्सुकता उमड़ आई। प्रत्येक फोटोमें छपे व्यक्तिके बारेमें उन्होंने प्रश्न पूछने शुरू कर दिए। कस्टमज्के एक अधिकारीने एक फोटो मुझे दिखाकर पूछा :

"यह अफसर कौन है?"

"मेरा भाई, कौंस्टैन्टाइन"

"यह कहाँ है?"

"काकेशसके युद्धमें मारा गया"

"आप अपने साथ इतने फोटो क्यों ले जा रहे हैं?"

"ये सब मेरे परिवारके लोग हैं। आखिर मैं उनसे दूर जा रहा हूं और अकेलापन मुझे खाएगा"

"लेकिन आप तो लौटकर सोवियत् यूनियनमें आ जाएंगे"

मेरा दिल धड़कने लगा और गला सूख गया। एक क्षण मैं चुप रहा। किन्तु उसने वह प्रश्न यौंही पूछ डाला था, क्योंकि बिना उत्तरकी अपेक्षा किए ही उसने मुझे पास कर दिया। तुरन्त ही मैं कोमीलीज

जहाज पर जा चढ़ा। वह कनाडाके बन्दर वेन्कूवर की ओर जा रहा था। जहाज पर प्रायः बीस यात्री थे। सबको किसी न किसी कामसे अमेरिका भेजा जा रहा था। उनमें कुछ स्त्रियाँ भी थीं। अपने छोटे किन्तु आरामवाले केबिनमें बैठकर मैंने अपने आपको संभाला। फिर डेक पर जाकर आँखोंसे ओझल होती हुई रूसकी धरतीके अन्तिम दर्शन किए। मेरे अभागे देशमें करोड़ों नरनारी एक निरंकुश सरकारके आतंकसे कराह रहे थे। ऐसी निर्दय सरकार इतिहासने पहिले कभी नहीं देखी थी। और अब सरकारके जुल्मोंके साथ-साथ युद्ध की विभीषिका भी उनके सिर चढ़ आई। मैं बहुत देर तक डेक पर खड़ा नहीं रह सका। दिल भर आया और निराशाके भारसे बुद्धि दबने लगी। मन-ही-मन मैं अपने सगे-सम्बन्धियों और अपने अतीतसे विदा मांग रहा था। किन्तु आँखोंमें रुलाई आने लगी। इसलिए मैं अपने केबिनमें जाकर बैठ गया।

मेरे भीतर एक इच्छा जागी थी—स्वाधीनताके उस वातावरणमें जाने की जहाँ कि मैं रूसी जनताके दुःख और राजनैतिक दासता की कहानी सबको सुना सकूं, जहाँसे अपनी जनताको स्वाधीन करनेके लिए संघर्ष कर सकूँ। वह इच्छा धीरे-धीरे बहुत दृढ़ हो गई और मुझे याद भी नहीं रहा कि पहिले-पहल कब उसके अंकुर मेरे अन्तरमें उपजे। हाँ, इधर कई सालसे मैं जान बूझकर निकल भागनेकी योजना बना रहा था और मुझे इस शुभ घड़ी की प्रतीक्षा थी। और अब जब कि यह घड़ी आ पहुँची तो मैं आँसू नहीं रोक पाया। मुझे ऐसा लगा जैसे मैं मर रहा हूं और मुझे कब्रकी ओर ले जाया जा रहा है। सम्बन्धियोंसे वियोग मेरे लिए असह्य हो गया। मेरे अन्तरमें अपने देश और अपनी जनताके लिए जो अगाध प्रेम भरा था, वह ऊपर आकर मुझे सराबोर करने लगा।

मुझे अपने बचपन, जवानी, और परिपक्व जीवनकी याद आई। वे क्षण याद आए जब मैंने दुःख सुख देखा था और वे क्षण भी जब मेरा

अपमान किया गया और मुझे कष्ट दिया गया था। पहिले अकालमें अपनी अनुभूतियाँ याद आईं, खेतीके सामूहीकरण तथा सरकार द्वारा उत्पन्न किया गया दूसरा अकाल याद आए। निकोपोलकी वे रातें याद आईं जब कि पर्ज चल रही थी और हम सबने भूख-प्यास तथा सरदीकी मार सही थी। और वे गुलामखाने भी मेरी आँखोंमें फिरने लगे जो कि रूसके कोने-कोनेमें बने थे और जहाँ दर्जनों नहीं, सैकड़ों मित्र और सम्बन्धी नरकयातना भोग रहे थे। वे सारी स्मृतियाँ, कटु अथवा मधुर, मुझे भावविह्वल करने लगीं।

न जाने मेरी साहसी और कर्मठ मां अब कहाँ थी। न जाने मेरा वीर, ईमान्दार और स्वाधीनताका अटल पुजारी पिता कहाँ था। क्या वे जर्मनी की कैदसे जिन्दा वापिस लौटेंगे? क्या मेरे कारण उनको दुःख झेलना पड़ेगा? और आयरीना? क्या मेरे फैसलेका मोल उसे भी चुकाना पड़ेगा? मैंने उसको अपने भेदके बारेमें बिल्कुल अनजान रखा था। क्या वह मुझे क्षमा कर सकेगी? और मेरा भाई युजीन, जिसे राजनीतिमें कभी कोई दिलचस्पी नहीं रही, मेरे इस पलायनके बारेमें क्या कहेगा? मन-ही-मन मैंने सबको सम्बोधित करके कहा :

"मेरे मित्रो, मेरे प्यारो, चाहे तुम जीवित हो अथवा मृत, तुम यह समझने की कोशिश करना कि मैंने तुम सबका साथ किस लिए छोड़ा है। वास्तवमें मैंने तुम्हारे और भी निकट आनेकी कोशिश की है। समस्त संसारमें एक मिथ्या प्रचारका कुहासा छाया हुआ है। स्वर्गकी झाँकी पानेके इच्छुक लोग तुम्हारे बारेमें ऊटपटांग समझ बैठे हैं। मैं तुम्हारी सच्ची अवस्थाकी कहानी समस्त संसारको सुनाऊँगा। मैं बाहर जाकर तुम सबका प्रतिनिधित्व करूँगा।"

मैं सोवियत् रूसके जहाज पर चढ़ा था इसलिए कानूनकी दृष्टिसे मैं अब भी रूसकी भूमि पर था। इसलिए वही पुरानी आशंका मेर ऊपर

बार-बार सवार हो जाती थी और मुझे सोने नहीं देती थी। शायद रेडियोसे कोई आदेश आ पहुँचे, शायद मेरे मुखसे असावधानीमें निकला हुआ कोई शब्द जहाज पर फैले जासूसोंके कानमें पड़ जाए, और मेरा सत्यानाश हो जाए। हम जापानको पार कर गए। जापानके दो जंगी जहाज और एक बमबाज हमारे जहाजके पीछे चल रहे थे। उनको देख कर भी हमें डर लगता था। कई दिन बाद हमने फिर जमीन देखी। हमें बताया गया कि वह कोई टापू है जहाँ हम कुछ अमेरिकनोंसे मिल सकेंगे। अमेरिका द्वारा अधिकृत इस प्रथम स्थानको देखकर जहाजपर बैठे सभी लोग कुछ उत्कण्ठित हो उठे। टापूके निकट पहुँचकर हमने कुछ मकान देखे, जिन पर अमरीकाका झण्डा लहरा रहा था।

उन्नीसवें दिन हमको कनाडाकी धरती दिखाई दी। एक कनाडियन इन्स्पैक्टर जहाजपर चढ़ आया। वह टूटी फूटी रूसी भाषा बोल रहा था। किन्तु उसके मुखपर अम्लान मुस्कुराहट थी। कुछ क्षण बाद ही हम वेन्कुवरके बन्दर पर पहुँच गए। प्रायः बीस मिनटमें बिना किसी हँगामेके हमारा जहाज जेटीपर लग गया। कनाडियन कस्टमज् विभागके दो सिविल कर्मचारी और एक नौसेनाका अफसर जहाज पर चढ़ आए। हमने लाइनमें खड़े होकर अपने पासपोर्ट उनके सामने प्रस्तुत किए और एक सरसरी निगाहसे उनको देखकर हमें लौटा दिया गया। किसीने हमारे सूटकेसों की तलाशी नहीं ली, न किसीने हमारी जेबें उलटवाईं और न हमारे कोटकी सिलाइयां टटोलकर छुपे हुए कागजों की खोज की गई। जब किसीने हमसे एक प्रश्न भी न पूछा तो हमें विश्वास करना कठिन हो गया। सोवियत् नागरिक होनेके नाते जो भय हमें खाते रहते थे, उनका तो यहाँ कोई कारण ही नहीं देखा और न ही उस सावधानीकी जरूरत पड़ी, जो बरतने के लिए हमको इतनी बार उपदेश दिया गया था। जहाज जेटीमें लगनेके एक घण्टेके भीतर हम बाहर निकल आए।

हमारे भीतर जो बहुत कट्टर कम्युनिस्ट थे उनको भी अत्यन्त आश्चर्य हुआ। एक प्रकारसे उन्हें निराशा भी हुई। जिस प्रकार कि कोई छाता और बरसाती लेकर बाहर निकले और पानी बरसनेकी बजाय धूप चमचमाने लगे। पूँजीवादके अन्तर्गत जिस वर्गद्वेषका सिद्धान्त लेकर हमारे कम्युनिस्ट जीते थे, उसकी पुष्टिके लिए उनको यहाँ कुछ भी मसाला नहीं मिला। हमारे साथियोंने सोचा था कि हमको देखकर पूँजीवादी देशके नागरिक भय मानेंगे; किन्तु यहाँ तो सिवाय एक उत्सुकताके दूसरा कोई भाव ही नहीं दिखाई दिया। तो क्या ये लोग मूर्ख हैं? या इनको हमलोगों पर दया आती है, उसी प्रकार जैसे कि किसी बीमारको देख कर? हमारी समझमें कुछ नहीं आया।

वेन्कुवर नगरमें प्रवेश करनेके पूर्व मैं कुछ देर तक ठिठका। वे क्षण मेरे लिए बहुत महत्वके थे और मुझे उस महत्वका आभास था। अड़तीस सालमें मैं पहिले-पहल अपनी मातृभूमि रूसके बाहर निकला था। मुझे ऐसा लगा कि उमर सँभालनेके बाद पहिले-पहल मैं स्टालिन और उसकी पुलिसकी पकड़से बाहर निकल गया हूँ।



छब्बीसवाँ अध्याय

विदेशमें स्टालिनकी प्रजा

वेन्कुवर ! मैं भावावेशमें आ गया। विचारोंपर काबू नहीं कर पा रहा था। मैं स्वाधीन था। न जाने किसने लिखा है कि स्वाधीनता का अर्थ वे ही जान सकते हैं, जो कि कभी गुलाम रहे हों। अपने कुछ साथियोंके साथ शहरके बाजारोंका चक्कर लगाते हुए हमने कनाडाके लोग देखे। एक ही स्थानपर एक ही समय, इतने निर्भय और निश्चिन्त लोग हमने पहले कभी नहीं देखे थे। और उन दुकानोंकी सजावट देखकर तो हमारी आँखें चौंधिया गईं। खाने, पहिनने और अन्य आवश्यकताओंकी पूर्तिके लिए सब प्रकारके सामानोंका बाहुल्य था। पूँजीवादी देशमें अपनी पहली खरीदारी करनेके लिए हम दुकानोंमें घुसे। हमको चाहिए जितनी रोटी हम खरीद सकते थे, चाहिए जितनी कमीजें, चॉकलेट और दूसरी कोई भी चीज़। यह तो जादूका-सा देश मालूम पड़ा। चीज़ोंके दाम भी मिट्टीके बराबर थे। हम एक जूतेकी दूकान पर चढ़े। दूकानदारने मुस्कराकर हमारा स्वागत किया और भीतर ले जाकर बड़े तपाकसे गद्देदार कुर्सियोंपर हमें बैठा दिया। हमारेमें से एक कट्टर कम्युनिस्टने कहा : "सूअरका बच्चा जानता है कि हम विदेशी हैं, और जान-बूझकर यह अभिनय कर रहा है।"

जहाजपर लौटकर हमने अपनी खरीदी हुई चीज़ोंको एक बार फिर देखा और उस देशके सम्बन्धमें विचार-विनिमय करने लगे। रातको बहुत देर तक बातें होती रहीं। युद्धकी विभीषिकाओंसे दूर वह समृद्ध और स्वस्थ देश हमें बहुत पसन्द आया था। फिर भी हम ऊपरसे कहते रहे कि ये सब दिखावेकी बातें हैं और वास्तवमें तो वहाँ वही पतन और शोषण छुपा है, जो कि स्टालिनने अपनी पुस्तकोंमें हमें बताया है। आखिर हमें अपनी-अपनी जानकी भी तो चिन्ता थी।

कई दिन बाद हम एक रेलगाड़ीपर सवार हुए। दिनके समय भी मैंने देखा कि यात्री बहुत अच्छे वस्त्र पहिने हुए हैं। मैंने उनको ध्यान से देखा। अधिकतर वे लोग साधारण किसान, मजदूर और क्लर्क इत्यादि थे, किन्तु सबने चमड़ेके बढ़िया जूते और बढ़ियाँ कपड़े पहिने हुए थे। उनकी उस अमीरीपर मुझे विश्वास नहीं हो पा रहा था, वह कुछ बहुत ज्यादा लगती थी।

अगले दिन दो अमेरिकन हमारी गाड़ीमें आए। उन्होंने हमारे पासपोर्ट देखे और किसी प्रकारका सन्देह दिखाए बिना मुस्कराते-मुस्कराते लौटा दिए। हमको ऐसा लगा कि यहाँ बिल्कुल अराजकता फैली है, कि व्यक्तिगत स्वाधीनताको इतनी दूर तक ले जाना उचित नहीं। वे दो अमेरिकन दो-चार मिनट रुके। बोले कि रूसियोंसे मिलकर उनको बड़ी प्रसन्नता होती है। फिर हमारे लिए शुभ-यात्राकी कामना जताकर मुस्कराते हुए चले गए। मैं तो समझता था कि अमेरिकामें प्रवेश पाने के लिए न जाने कितने झंझट उठाने पड़ेंगे और न जाने कितना समय खराब होगा। मुझे तो यही विश्वास था कि बार-बार हमारी तलाशी ली जाएगी और बन्द कमरोंमें ले जाकर न जाने कितने प्रश्न हमसे पूछे जाएँगे। किन्तु यहाँ तो कुछ और ही हो रहा था।

वाशिंगटन तक की यात्रा मेरे लिए खूब दिलचस्प रही। इस नए देशके लिए मेरे मनमें अपार कौतुहल था और मैंने प्रत्येक नगरको खूब आँखें फाड़-फाड़कर देखा। गाड़ीकी खिड़कीमें से तारकोलकी लम्बी-चौड़ी सड़कें दीख पड़ती थीं—और दीख पड़ते थे खेतोंमें काम करते हुए अमेरिकाके किसान। यहाँके किसान हमारे किसानोंसे कितने अलहदा थे। मुझे यह देखकर और भी ताज्जुब हुआ कि यहाँके स्त्री-पुरुष बड़ी आसानीसे जान-पहिचान कर लेते हैं और बातें करते-करते नहीं अघाते। सबके सब स्पष्ट-भाषी और बच्चोंकी तरह निर्बोध मालूम होते थे।

१६ अगस्त, १६४३ के दिन मैं अमेरिकाकी राजधानी पहुँचा और सोवियत् दूतावासका एक प्रतिनिधि यूनियन स्टेशन पर मुझसे मिला। किसी अमेरिकन परिवारके घर मेरे लिए एक कमरा किराए पर लिया गया था। कमरा साफ-सुथरा, उजालेसे भरपूर और आरामदेह था। उसके साथ लगा हुआ एक प्राइवेट बाथरूम था। और उस परिवारके लोगोंने मेरा स्वागत किया। जिन रूसियोंपर उनको इतनी श्रद्धा थी, उन्हींमें से एकको अपने घरमें पाकर हर्षसे वे गद्गद् हो गए। उन्होंने मुझसे कोई कागज-पत्र नहीं माँगे, और न ही उन्हें जाकर मेरे बारेमें पुलिससे रिपोर्ट करनी पड़ी। रूसमें कोई हमारे घर जाकर ठहरे, तो हमें यह सब करना पड़ता है।

अगले दिन सुबह मैं कामपर जा पहुँचा। वाशिंगटनके बीचमें होकर भी हमारे आफिसके भीतर मैंने वही रूसी वातावरण देखा। जैसे अमेरिकाके प्रभावको ताले लगाकर बाहर रोक रक्खा हो। टाइपिस्ट, स्टैनोग्राफर, कुली, चपरासी इत्यादि कुछ छोटे काम करनेवाले अमेरिकाके निवासी भी उस दफ्तरमें थे। किन्तु उनकी उपस्थितिसे उस वातावरण में कोई अन्तर नहीं पड़ सका। उस वातावरणमें भय, आशंका और षडयन्त्रकी गन्ध भरी थी।

कामरड सरोव एक सुन्दर और प्रभावशाली व्यक्ति था, लम्बा, साँवला, हट्टा-कट्टा और अमेरिकामें बने हुए कपड़ोंसे सुसज्जित। पर मेरे साथ वह एक अफसरकी तरह मिला। उसकी दृष्टिसे शीतलता और सन्देह टपकते थे। मैंने अपने कागज उसके सामने रखते हुए कह दिया कि मैं पार्टीका सदस्य हूँ। उसने तड़ाकसे पूछा कि मेरा नम्बर क्या है। मैंने बता दिया—२४८६७५। कोई कम्युनिस्ट अपना नम्बर कैसे भूल सकता है। यदि भूल जाए, तो उसके पापका किनारा नहीं। भूलनेका अर्थ यही लगाया जाएगा कि उसका विश्वास टूट रहा है, और फिर उसकी खैर नहीं। सैरोवने और दो-चार सवाल पूछे और आखिर उसको विश्वास हो गया कि मैं वही क्रावचैन्को हूँ, जिसे उसके पास कामके लिए भेजा गया है। वह मुस्कराया और मास्को तथा मेरी यात्रा के सम्बन्धमें प्रश्न पूछने लगा। सैरोव पार्टीकी केन्द्रीय कमिटीका प्रतिनिधि था। इसलिए अमेरिका स्थित हमारे दूतावासमें उसका स्थान सबसे ऊपर था। फिर भी अमेरिकन लोगोंसे उसका कोई सीधा सम्पर्क नहीं रहता था। रूस और अमेरिकाके बीच जो बातें चलती थीं, उनमें भी वह भाग नहीं लेता था। और दूतावासका रजिस्टर देखने पर तो यही समझनेमें आता था कि वह एक साधारण कर्मचारी है। किन्तु वास्तव में वह अमेरिकामें सोवियत् सरकारका सबसे शक्तिशाली आदमी था। सोवियत् सरकारके अदना-से-अदना और बड़े-से-बड़े कर्मचारीके लिए सैरोवका एक-एक शब्द कानूनके बराबर था। सैरोव रूसकी कम्युनिस्ट पार्टीका प्रतिनिधि था, और पार्टी तो रूसपर राज करती है। उसकी तुलनामें हमारा राजदूत तो बेचारा सरकारके विदेश-विभागका ही प्रतिनिधित्व करता था। अमेरिकामें रहनेवाले सारे सोवियत् नागरिक सैरोव को अमेरिकाका स्टालिन मानते थे।

उसने भी मुझे वही पुराना उपदेश देना शुरू कर दिया कि मुझे

किन-किन खतरोंका सामना करते हुए क्या-क्या दायित्व उठाने पड़ेंगे, कि पार्टीने इतना बड़ा काम मुझे सौंपकर मुझपर कितना विश्वास दिखाया है। वह उपदेश सुनकर पहलेकी तरह मुझे गुस्सा नहीं आया। मन ही मन मैं अच्छी तरहसे जानता था कि बहुत शीघ्र ही मैं उस सर्वग्रासी तानाशाहीकी बेड़ियाँ तोड़कर मुक्त हो जाऊँगा। इसलिए उनके द्वारा किए जानेवाले अपमान, उपदेश अथवा भर्त्सनाका मेरे लिए कोई मूल्य नहीं रहा। मुझमें कुछ साहस भी भर गया। इसीलिए जब सैरोवने मुझे आदेश दिया कि रातको स्टाफकी सभामें मैं सबको घरकी खबरें सुनाऊँगा, तो मैंने थकानका बहाना करके इन्कार कर दिया। मैं जानता था कि सरकारी मिथ्या-प्रचारको दुहरानेके सिवाय और उस सभामें मैं कह ही क्या सकता था।

सैरोवने मुझे बताया कि मुझे अलैक्जाण्डर रास्टर्शंकके नीचे काम करना पड़ेगा। वह धातु-विभागका प्रमुख था और उसके नीचे काम करनेवाले दस विशेषज्ञोंमें से एक मैं था। करोड़ों डालरका सामान उधार-खातेमें अमेरिकासे रूस जा रहा था और मुझे अपने विभागसे सम्बन्धित सामानकी परीक्षा करके उसे स्वीकृत अथवा अस्वीकृत करनेका काम सौंपा गया।

(२)

हमारा दफ्तर क्या था मानो तानाशाही रूसका ही एक भू-खण्ड मास्को नदीके किनारेसे उखाड़कर पोटोमैक नदीपर बसा दिया गया हो। संसारके सबसे महान गणतन्त्रकी राजधानी वाशिंगटनमें सैकड़ों ऐसे स्त्री-पुरुष रह रहे थे, जिनके जीवनपर संसारकी सबसे बड़ी तानाशाहीका नियन्त्रण था। हम भले ही स्वाधीन नागरिकोंके बीच रहते और काम करते हों, किन्तु वस्तुतः तो हम पुलिस-राज्यकी प्रजा ही थे ना। हमको बारीकीसे बताया जाता था कि हम क्या सोचें, क्या पढ़ें, किससे मिलें—

मानो अभी भी हम सोवियत् यूनियनके भीतर रह रहे हों। हमारी प्रत्येक चाल-ढालपर, हमारे प्रत्येक शब्दपर पहरा बैठा दिया गया था और हमारे चारों ओर जासूस लगे थे। इस कामके लिए पार्टी तथा पुलिसका वैसा ही पूरा इन्तजाम था, जैसा कि रूसमें। यहाँ भी बड़ी-बड़ी गुप्त तिजोरियोंमें हम सबके बारेमें पूरी कैफियत संचित की जाती थी।

मेरा पक्का वेतन प्रायः तीन सौ डालर था, किन्तु चूकि मैं सफर करता रहता था और लोगोंको खिलाने-पिलानेका काम भी मुझे करना पड़ता था, इसलिए मेरी वास्तविक आय वेतनसे कहीं अधिक थी। जहाँ काम निकालना हो, वहाँ दिल खोलकर खर्च करनेकी मुझे छूट थी। पर जो बात मुझे अधिक खटकती थी—वह थी अमेरिकनोंसे खुलकर मिलने-जुलनेपर कड़ी पाबन्दी। जिन लोगोंके बीच मैं अब रह रहा था, उनसे मुझे बड़ा प्रेम होने लगा था। वे लोग हम रूसियोंसे ही नहीं, बल्कि यूरोपवालों से भी भिन्न थे, मानो किसी अलहदा प्राणी-जगत के जीव हों। किन्तु हमको कड़ा आदेश था कि कामके सिवाय कभी भूलकर भी उनसे मेल-जोल न करें। जब हम किसी अमेरिकनसे मिलते थे, तो उसके विषयमें हमें एक पूरी रिपोर्ट देनी पड़ती थी। वह कौन है, उसका राजनैतिक मतामत क्या है, सोवियत् देशके बारेमें वह क्या सोचता है इत्यादि सब बातें बतलानी पड़ती थीं। उसके बाद उस जान-पहिचान को आगे बढ़ने देना अथवा खत्म कर देना, यह ऊपरके अधिकारियोंकी इच्छा पर निर्भर था। केवल वे अधिकारी ही कह सकते थे कि कौन आदमी "अच्छा" है कौन "बुरा"। फिर भी वाशिंगटनमें मुझे दर्जनों अमेरिकनोंसे मिलनेका अवसर मिला। उनमें अधिकतर तो उधार-खाते के सम्बन्धमें काम सम्भालते थे और कुछ हमारे दफ्तरमें ही काम करते थे। वे सब बड़े मिलनसार थे, मैं जो देखना चाहूँ दिखा देते थे, और खूब खुलकर बातें करते थे। मुझे बड़ी लाज आती थी। इसके सिवाय

वे लोग मुझे बच्चे-से लगते थे। भयसे संतप्त और षडयन्त्रके वातावरणमें पलनेवाले सोवियत् कर्मचारीके लिए वास्तवमें वे बच्चे ही थे।

जब वे अमेरिकन उन पुराने रूसियोंकी सन्तान होते थे, जोकि कभी अमेरिकामें आकर बस गए थे, तो मामला और भी टेढ़ा हो जाता जाता था। उनके बारेमें हमेशा यह आशंका की जाती थी कि वे किसी न किसी स्टालिन-विरोधी दलबन्दीके समर्थक होंगे। लालसेनाके कारनामोंके कारण अमेरिकामें रूसके प्रति श्रद्धाका ज्वार आया था आर अमेरिकामें रहनेवाले रूसके नागरिकोंके लिए उसने एक नई समस्या पैदा कर दी थी। अमेरिकावाले हमारे प्रति अपना सद्भाव और भ्रातृत्व दिखाना चाहते थे। वे जोर देकर हमसे कहते थे कि हम उनके घर जाएँ, उनकी क्लबों अथवा होटलोंमें बैठकर उनके साथ दो घड़ी गपशप करें और खाएं पीएं। हम भला क्योंकर उनके आतिथ्यको ठुकराते चले जाते। किन्तु यदि किसीका निमन्त्रण हम स्वीकार कर लेते थे, तो हमारी आफत आ जाती थी। इसलिए अपनी जान बचानेके लिए हम निमन्त्रणसे लौटकर पूरी रिपोर्ट लिख डालते थे।

हाँ, जिन अमेरिकनोंसे हमें काम निकालना था उनसे मिलने पर इतनी कड़ी रोक-थाम नहीं थी। उनके लिए तो हमसे खूब खर्च करनेके लिए कहा जाता था, ताकि हमारे आदर-सत्कारसे वे मुग्ध हो उठें। उनसे पाला पड़ने पर हमें दिखाना पड़ता कि हम भी दुनियादार लोग हैं और हमारा देश भी शक्तिशाली, समृद्ध तथा उदार है। हमें यहाँ तक छूट थी कि कोई कामकी बात मालूम करनेके लिए यदि यौन-सम्बन्धकी जरूरत पड़े तो भी हमें चूकना नहीं चाहिए। एक दिन हमारे एक ऊँचे कर्मचारीने मुझे बुला भेजा। कहने लगा कि उसके सामने एक "समस्या" उपस्थित है। उसे युद्ध सम्बन्धी उत्पादन विभागसे एक बहुत जरूरी काम जल्दी पूरा करवाना था और उस विभाग की कर्त्ता-धर्त्ता

थी एक जवान औरत। उसने मुझे आदेश दिया कि मैं उस औरतसे दोस्ती गाठूँ, जरूरत पड़ने पर उसे नाइटक्लबोंमें ले जाऊँ और बहुमूल्य उपहार खरीद कर उसे भेंट दूँ। उसे आशा थी कि आगेका रास्ता मेरे सामने अपने आप खुल जाएगा। मैं सन्न रह गया और वह काम करनेसे मैंने साफ इन्कार कर दिया। मैंने कहा कि मुझे औरतोंको फुसलाना नहीं आता, मेरी अंगरेजी बहुत कमजोर है। अन्तमें बड़ी मुश्किलसे मेरी जान बची।

हम हमेशा ऐसा भाव बनाए रहते थे जैसे कि अमेरिकामें उपलब्ध स्वाधीनताका हमारे निकट कानी कौड़ी भी मूल्य नहीं। यदि भूलकर भी हम अमेरिकन जीवन-प्रणालीके प्रति सहनशीलता दिखा देते तो हमारी गर्दन मारी जाती। उस प्रणाली की तारीफ करनेका तो प्रश्न ही कभी नहीं उठता था। मैं जानता हूँ कि अपनी सारी बातों पर मैं अमेरिकन लोगोंको विश्वास नहीं दिला पाऊँगा। उदाहरणके लिए अपना एक अनुभव बतलाता हूँ। मित्या भी एक रूसी नागरिक था जो रूसके व्यापार-विभागमें काम करनेके लिए अमेरिका आया था। एक दिन मैं कामसे न्यूयार्क गया तो बिना इतला दिए ही मित्याके होटल पर जा धमका। और मैंने देखा कि वह एक बड़ा गहन अपराध करनेमें लगा हुआ है। वह रूसी भाषामें छपी हुई, पर रूस-विरोधी एक पत्रिका पढ़ रहा था। मैंने क्रोधका अभिनय करते हुए उसे धमकाना शुरू किया। वह बेचारा पीला पड़ गया। उसकी आँखोंमें आँसू आ गए वह समझ गया कि अब उसकी जान मेरे हाथोंमें है। यदि मैंने उसकी रिपोर्ट कर दी तो तुरन्त उसे रूस वापिस बुला लिया जायगा और वहाँ उसको पार्टीसे निकालकर न जाने क्या-क्या दण्ड दिया जाएगा। शायद उसके सारे परिवार पर भी आफत आ जाए। इसलिए उसने अपना बचाव करनेकी कोशिश की। पर हकलाकर रह गया। फिर गिड़गिड़ा

कर बोला : "विक्टर भैया, कम्युनिज्मकी कसम खाकर कहता हूं कि मैं यह पत्रिका यही जाननेके लिए पढ़ रहा था कि ये बदमाश हमारे बारेमें क्या लिखते रहते हैं। मेरा कसूर माफ कर दो। कितने सालसे हमारी तुम्हारी दोस्ती है। यदि तुमने रिपोर्ट कर दी तो मेरा सर्वनाश हो जाएगा।"

उसको इस प्रकार टूटा हुआ देखकर मुझे बहुत दया आई। मैंने उससे कहा कि उसके बारेमें मैं रिपोर्ट नहीं करूँगा, क्योंकि मैं स्वयं वह पत्रिका पढ़ता हूं।

एक बार मैं बीमार पड़ा और कई दिन तक बिस्तरसे नहीं उठ सका। कई अमेरिकन दोस्तोंने मुझे पत्र भेजे, जिनमें मेरे स्वास्थ्यके लिये शुभ कामनाएँ थीं। उन्होंने इन्सानियतके नाते ही ऐसा किया था और मन ही मन मैं बहुत प्रसन्न हुआ। किन्तु काम पर लौटकर मेरी आँखें खुलीं। मुझे अंग्रेजी अच्छी तरह नहीं आती थी, इसलिये मैं वे पत्र दफ्तरमें साथ ले गया और किसीसे उनका अनुवाद करा लिया। शीघ्र ही वह सारी घटना मैंने भुला दी। एक दिन अचानक कामरेड मैकरोव ने मुझे बुला भेजा। उसने खोद-खोदकर पूछना शुरू किया कि उन सब अमेरिकनोंसे मेरा क्या सम्बन्ध है, जिन्होंने कि मुझे वे पत्र लिखे थे। उसके मतमें मेरे जैसे दायित्वशील पार्टी-सदस्यके लिये उन "वर्ग-शत्रुओं" से इस प्रकार खुल्लमखुल्ला हेलमेल बढ़ाना किसी प्रकार भी वांछनीय नहीं हो सकता। और अन्तमें उसने वही पुराना उपदेश दोहराया—मुझे पूँजीवादी देशमें फैले जालमें फँसनेसे बचनेका पूरा प्रयत्न करना चाहिये। उस बार मैं सस्ता छूटा, इसलिये मैंने अपना भाग्य सराहा।

किन्तु कुछ दिन बाद पार्टीके अनुशासकोंने फिर मेरी छीछालेदर की। अनजानेमें ही मुझसे अनेक छोटे-मोटे "अपराध" हो गए थे। मैंने जेनरल तुखाचेवस्की द्वारा लिखी एक पुस्तक पढ़ी थी। तुखाचेवस्की

को गद्दार बताकर गोली मार दी गई थी—इतना मैं जानता था, किन्तु उसकी पुस्तक पढ़ना भी मना है, यह मुझे नहीं मालूम था। किन्तु पार्टीने कहा कि अपने आपको अनजान बताकर मैं बचाव नहीं कर सकता, क्योंकि पार्टीके सदस्यको मालूम होना चाहिये कि कौन-कौन लोग "जनताके शत्रु" ठहराए जा चुके हैं। इसके सिवाय मैंने एक उपन्यास भी पढ़ा था। किसी समय सारे रूसमें उस उपन्यासकी धूम थी, किन्तु न जाने किस कारण उस पर पाबन्दी लगा दी गई। मुझसे पूछा गया कि मैंने वह "क्रान्ति-विरोधी" पुस्तक क्यों पढ़ी, और विशेषकर अमेरिकामें आकर। पार्टीकी नजरोंमें मैं बहुत बुरी तरह गिर चुका था। मैंने पार्टीका "अनुशासन" तोड़ा था।

हमारी विचारधारा पर नियन्त्रण रखनेका एक अस्त्र तो हमारा पुस्तकालय था। अमेरिकन लोगोंसे हमारा सम्पर्क नहीं हो पाता था, और अधिकतर हम लोग अंगरेजी नहीं जानते थे। इसलिये हमें रूसी भाषामें छपी पुस्तकें ही पढ़नेको मिलती थीं। और पुस्तकालयका क्लर्क बैठा-बैठा यह ताकता रहता था कि कौन क्या-क्या पुस्तक और पत्रिकाएँ पढ़ता है। जो किताब हम उलट-पलटकर धर देते थे, उसकी भी रिपोर्ट हो जाती थी। इस प्रकार हमारी मनस्थितिका अनुमान लगाकर हमारे सम्बन्धमें खुली फाइलोंमें लिख दिया जाता था।

जिस प्रकार रूसके नागरिकों पर विदेशमें जासूसीकी जाती है, वह वास्तवमें विश्वासके योग्य नहीं। हम सबको हिदायत थी कि पार्टीके ईमानदार सदस्य होनेके नाते हमको एक दूसरेकी हरकतों और बातचीत की पूरी रिपोर्ट करते रहना चाहिये। अपनी-अपनी जान बचानेके लिये भी हम ऐसा करते थे। हम चाहे व्लाडीवास्टकमें हों, चाहे मास्कोमें और चाहे शिकागोमें, यह तो हमारा न्यूनतम कर्त्तव्य था। इसके सिवाय सारे दफ्तरमें पार्टीके जासूसोंका जाल बिछा था। अनेक लोग कहनेको

तो दफ्तरका कोई काम संभालते थे, किन्तु वास्तवमें उनका काम था हम सब पर आँखें रखना। और उसके परे भी कुछ ऐसे पुलिसके जासूस थे, जिनके बारेमें हमें भी कोई पता नहीं चल सकता था, किन्तु जो अपने काममें सिद्धहस्त थे। यहाँ तक कि हमारे दफ्तरके प्रधान और कामरेड सैगोव पर भी जासूसोंकी आँखें रहती थीं। ये जासूस एक दूसरेको नहीं जानते थे और न ही हमको आसानीसे पता लग सकता था कि कौन जासूस है और कौन साधारण कर्मचारी। इसलिये हम यही मान लेते थे कि हमारे सिवाय ओर सब जासूस हैं। इसी प्रकार मानकर सतर्क रहनेमें भलाई थी। जब भी कोई सहकारी हमसे मेलजोल बढ़ानेकी अधिक कोशिश करता था, तो हमारे कान खड़े हो जाते थे और हम यही अनुमान लगाते थे कि वह हमारे भेद लेनेके लिए ही दोस्ती करने आया है। हम यह भी जानते थे कि इस प्रकार हमसे दोस्ती गांठकर कुछ नाजुक मामलों पर हमसे बहस छेड़ी जाएगी और इस प्रकार हमारे मनकी बातको जानना आसान होगा। जासूस ही नहीं, पार्टीके कट्टर भक्त भी बहुधा इस प्रकार एक दूसरेकी परीक्षा लेते रहते थे।

सोवियत् नौकरशाहीमें मैंने बहुत दिन बिताए थे, इसलिए, और विशेषकर रूस-प्रान्तकी सरकारके पदाधिकारी होनेके कारण, बहुतसे उच्च-पदस्थ लोगोंसे मेरा परिचय हो गया था। वाशिंगटनमें आकर मैंने देखा कि उनमें से कुछ लोग बड़े ही छोटे छोटे कामोंपर नियुक्त हैं। मुझे ताज्जुब हुआ। पर तुरन्त ही मेरी समझमें आ गया कि वे अमेरिकामें काम करनेके लिए नहीं, बल्कि किसी अन्य आशयसे भेजे गए हैं। रूस और अमेरिकाके बीच जो सन्धि हुई थी, उसके अनुसार थोड़ेसे रूसी अफसर ही दूतावासका पासपोर्ट लेकर अमेरिकामें आ सकते थे। इसलिए जासूस-विभागमें काम करनेके लिए बहुतसे अच्छे अफसरोंको साधारणसे आर्थिक अथवा टेकनीकल कामके बहाने यहाँ लाया जाता था। एक

दिन मैं आफिस की लिफ्ट पर चढ़ा तो एक एक सज्जनसे मेरी भेंट हो गई। मास्कोमें वह ऊँचा अधिकारी था। मेरी स्मृति जाग उठी। एक बार मैं उसके साथ नाटक देखने गया था और उसके साथ पुलिसके दो बहुत बड़े अफसर मैंने देखे थे। अब उसने मुझे देखकर ऐसा भाव बनाया जैसे मुझे पहिचानता ही न हो। सांझको वह मेरे घर पहुँचा और मुझे खबरदार कर दिया कि मैं उसे पहिचाननेकी कोशिश न करूँ और न ही किसीको बताऊँ कि वास्तवमें वह कौन है, क्योंकि वह एक बड़े विशेष कामसे अमेरिकामें आया है। अमेरिकन सरकारकी दृष्टिमें वह एक साधारण कर्मचारी था। किन्तु वास्तवमें वह मास्कोकी पार्टी कमिटीका एक बहुत बड़ा आदमी था।

आर्थिक विभागमें काम करते हुए हमारे अनेक दायित्व थे, किन्तु सबसे पहले हमारा दायित्व यह था कि अमेरिकाके व्यापार, उद्योग, कारखानों, विज्ञान तथा सेना सम्बन्धी जितना भी मालूम हो सके जानकर रिपोर्ट देते जाएं। रूसके बाहर आनेके पहिले बड़े स्पष्ट शब्दोंमें मुझे इस प्रकारका आदेश मिला था और यहाँ पहुँचनेपर बार-बार वह आदेश दोहराया गया। जब पार्टी की सभा होती थी तो इस बात पर खुल्लमखुल्ला बातें होती थीं कि जब भी हम किसी दफ्तर अथवा कारखानेको देखने जाएँ तब-तब हम बड़े ध्यानपूर्वक काम की सब बातें नोट कर लें। हमसे बार-बार कहा जाता था कि युद्ध की परिस्थितिमें हमें अमेरिका तथा तथा ब्रिटेनसे "मित्रता" करनी पड़ी है, किन्तु इसका यह मतलब नहीं कि हम उन "मित्रों" का विश्वास भी करने लग जाएं। पार्टीके मतमें ये पूँजीवादी ठग मौका मिलते ही हमारा सत्यानाश करनेकी कोशिश करेंगे। इसीलिए कामरेड सेरोवने पहली ही मुलाकातमें मुझसे कहा था :

"अमेरिकाके साथ हमारे सम्बन्धके विषयमें तुम्हें कोई गलतफहमी नहीं रहनी चाहिए। आजकल सैनिक और कूटनीतिक दृष्टिसे यह सम्बन्ध

हमारे लिए लाभदायक है। किन्तु इसका यह मतलब मत लगा लेना कि हमारे और उनके स्वार्थोंका कोई मेल खाता है। युद्धकालमें और शान्ति स्थापित हो जाने पर भी हमारे और इनके रास्ते जुदा-जुदा है, मंजिल अलग-अलग। यदि यह बात तुमने हृदयंगम कर ली तो तुम्हारी समझमें आसानीसे यह बात भी आ जाएगी कि हमें क्यों जागरूक, सन्देहशील और अलग-अलग रहना चाहिए।"

(३)

अमेरिकामें "हमारे वीर रूसी दोस्तों" के प्रति जो भक्तिका ज्वार आया था, उसकी प्रसादी मुझे भी मेरे अधिकारसे अधिक मिली। कई बार उस भक्तिके आधिक्य पर मुझे हँसी आने लगती थी। यह जानकर मुझे हर्ष होता था कि मेरे रूसी भाइयोंके बलिदानकी महिमा मानी जा रही है। किन्तु उस बलिदानका जब उल्टा-सीधा अर्थ निकाला जाता था, तो मुझे झुँझलाहट भी खूब होती थी। रूसकी जनताने जो खून-पसीना बहाया था, उसको अमरीकामें इस बातका सबूत समझा जाने लगा था कि स्टालिनशाही एक अत्यन्त उत्तम व्यवस्था है। और अमेरिका के लोग गला फाड़-फाड़कर स्टालिनके गुण गाने लगे। हिटलर पर रूसकी सेनाओंने विजय पाई, तब तो स्टालिनकी तारीफ करना कुछ समझमें भी आता था। किन्तु अमरीकाके लोग तो यहां तक मान बैठे थे कि जब हिटलर रूसमें बढ़ रहा था, तब भी स्टालिनशाहीकी तारीफ होनी चाहिए थी। स्टालिनकी हारका उन्होंने यह मतलब नहीं निकाला कि स्टालिनशाही निकम्मी है, बल्कि कहने लगे कि जर्मनी इतना बलवान है कि उसके सामने कोई भी हार खा सकता है। कहनेका अर्थ यह है कि उन दिनों अमेरिकाके लोग बाल्शेविज्मके विरुद्ध कुछ भी सुनना नहीं चाहते थे।

रूसकी जनताने बड़े जीवटके साथ युद्ध किया था। यह मैं स्वयं

किसी भी अमेरिकनकी अपेक्षा ज्यादा अच्छी तरह जानता था। किन्तु मैं कहना चाहता था कि यदि रूसकी जनताकी पीठ पर उस घृणित और निरंकुश तानाशाहीका बोझ नहीं लदा होता, तो वह बहुत पहिले ही और बड़ी अच्छी तरह हिटलरके दाँत खट्टे कर देती। उस युद्धमें कुछ बातें हमारे पक्षमें थीं और अन्तमें उन्हीं बातोंके कारण हमारी जीत भी हुई। एक तो युद्ध हमारी धरती पर हो रहा था, दूसरे हमारे पास जर्मनीकी अपेक्षा मानवशक्ति अपार थी और तीसरे हमको अमेरिकासे इतनी भारी सहायता प्राप्त हुई थी। फिर न जाने क्यों ये अमेरीकन विजय का समस्त गौरव बाल्शेविज्मको देते रहते थे। एक सोवियत् कर्मचारीकी हैसियतसे मैं सत्यके पक्षमें मुँह नहीं खोल सकता था और न ही मुझे इतना अधिकार था कि एक घृणित तानाशाहीका भण्डाफोड़ करके अपनी जनताके जीवटकी ओर इन विदेशियोंका ध्यान खींचूँ। इसलिये हजारों बार मैंने चुपचाप बैठकर स्टालिनका गुणगान सुना और खूनका घूँट पिया।

रूसके भीतर हम लोगोंको स्टालिन-हिटलरके समझौतेकी याद करके ही शरम आती थी और उस सम्बन्धमें हम कभी बातें नहीं करते थे। किन्तु यहाँ अमेरिकामें तो उस समझौतेके प्रसंगको लेकर भी स्टालिनकी बुद्धिशीलताका लोहा माना जाता था। एक ही सांसमें ये लोग म्यूनिच वाले समझौतेकी भर्त्सना करते थे और स्टालिन-हिटलर पैक्टके गुण गाते थे। कहा जाता था कि तैयारी करनेके लिये कुछ और समय निकालनेके उद्देश्यसे ही क्रेमलीनने वह समझौता करके हिटलरको फ्रांस पर आक्रमण करनेका निमन्त्रण दिया था। और म्यूनिचके विरुद्ध यह आक्षेप था कि अंग्रेज और फ्रांस हिटलरको रूससे लड़ाना चाहते थे। यह दोहरा मापदण्ड मेरी समझमें नहीं आया। यदि मान भी लिया जाये कि म्युनिचका समझौता करके मित्रपक्ष हिटलरको रूससे लड़ाना चाहते

थे, तो उनकी माजनामें भी हम कह सकते हैं कि वे तैयारीके लिये समय निकालना चाहते थे। किन्तु अमेरिकाके लोग तो सब प्रकारसे स्टालिनकी भक्ति करने पर तुले हुए थे। गणतन्त्रकी बुराई करते भी वे नहीं अघाते थे। इसको अन्धविश्वासके सिवाय और क्या कहा जाता। स्टालिन और उसके कारिन्दे चाहे कुछ भी करें और उनकी भूलोंके कारण रूसकी जनताको चाहे कितना ही खून क्यों न बहाना पड़े, किन्तु स्टालिनको दोष नहीं दिया सकता था।

मूर्खतावश मैं आशा कर बैठा था कि रूसकी जनताके बलिदानके प्रति विदेशके लोगोंमें कुछ भावना अवश्य जागी होगी। मैं उनके मुख से सुनना चाहता था : "रूसके लोग इतने बहादुर हैं, तो अवश्य उनको स्वाधीनता और गणतन्त्र मिलने चाहियें।" किन्तु मैंने सब कुछ अपनी आशाके ठीक विपरीत पाया। रूसकी जनतासे तो किसीको सहानुभूति ही नहीं थी। किसी हद तक तो अज्ञानके कारण ऐसा हुआ था। अज्ञान को क्षमा किया जा सकता है। किन्तु मैंने तो अधिकतर यही देखा कि लोगोंको रूसकी जनताको बिल्कुल परवाह ही नहीं है। मुझे बहुत बुरा लगा, क्योंकि यह हमारा अरमान था। हंगरी और कोरियाके लोगोंकी आकांक्षाओंको अमेरिकावाले मानते थे और उनका समर्थन करते थे, किन्तु रूसकी जनताकी भी कुछ ऐसी ही आकांक्षाएँ हैं, यह कहना एक प्रकारका द्रोह माना जाता था। अमेरिकामें पदार्पण करते ही मैं समझ गया कि किसी ओरसे कुछ षडयन्त्र हुआ है, जिसके फलस्वरूप जो मैत्रीभाव अमेरिकामें रूसकी जनताकी प्रति उमड़ा था, वह स्टालिनकी भक्तिमें रूपान्तरित हो गया। जिन तथ्योंके आधारपर रूसकी जनताके लिये स्वाधीनताकी मांग की जा सकती थी, उन्हींका आश्रय लेकर लोग रूसकी तानाशाहीका समर्थन करने लग गए। मैंने बड़े खेदके साथ यह देखा कि अमेरिकनोंके दिमागों पर भी स्टालिन का उतना ही

प्रभुत्व है, जितना कि रूसियोंके दिमागों पर। एक अमेरिकनसे मैंने एक दिन कहा :

"आखिर ब्रिटेन भी तो तुम्हारा मित्र है। फिर इतनी बुरी तरह क्यों तुम ब्रिटेन पर आक्षेप करते हो ? उस दिन तुम स्वयं कह रहे थे कि अँग्रेजोंकी जनताको टोरी साम्राज्यवादियोंके विरुद्ध विद्रोह करना चाहिये। उसी ईमान्दारीके साथ तुम रूस पर भी टीका-टिप्पणी क्यों नहीं करते ?"

"वह और बात है"

"तो तुम्हारा मतलब यह है कि रूसकी जनता ही एकमात्र ऐसी जनता है, जिसको स्वाधीनता मांगनेका अधिकार नहीं"

"यह तो मज़ाककी बात हुई, विक्टर"

मैंने गम्भीर होकर उत्तर दिया :

"जर्मनीके विरुद्ध प्रथम महायुद्धमें भी हम रूसके लोग इतनी ही मर्दानगीसे लड़े थे और उस समय भी हममेंसे करोड़ोंने अपने प्राण दिए थे। उस समय भी क्या अमेरिकन लोग जारशाहीके गुण गाते-गाते पागल हो उठे थे ! क्या उस समय भी तुमने कहा था कि रूसकी जनता अपनी बेड़ियोंसे प्यार करती है और बेड़ियाँ पहने रहनेके लिये मर मिटना चाहती है !"

"वह और बात थी।"

मैं समझ गया कि उस पागलपनके विरुद्ध कोई तर्क, कोई दलील काम नहीं कर सकती। क्योंकि उस विश्वास की तहमें रूसका वह "समाजवादी" स्वप्न था, जो कि बरसों तक मिथ्या प्रचार द्वारा स्टालिनने लोगोंके दिमाग पर लाद दिया है। यदि कोई आकर अमेरिकन लोगोके उस स्वप्नको तोड़नेकी कोशिश करता, यदि कोई उनको रूसके भीतर फैले शोषण और अत्याचार दिखलाना चाहता, तो उस पर बिगड़ बैठना उन

लोगोंके लिए स्वाभाविक ही था। अपने सपने कोई नहीं खोना चाहता। फिर भी मेरे लिए विश्वास करना कठिन हो गया कि अमेरिकाके लोग इस प्रकार स्टालिनकी तानाशाही और रूसी जनताको एक मान बैठे हैं। रूसके भीतर भी स्टालिनने कभी इतनी भक्ति नहीं पाई थी और इस लिए उसने जनताको पकड़-पकड़ कर कारागार और गुलामखाने भर डाले थे। किन्तु अमेरिकामें उसको बहुत सफलता मिली। अमेरिकाके कितने ही और मित्रदेश थे—ब्रिटेन, पोलैण्ड, चैकोस्लोवाकिया, चीन। उनके विरुद्ध कुछ भी कहनेका हक़ सबको मिला था। स्वयं अमेरिका की अपनी सरकारके विरुद्ध समाचारपत्रों में काफी कुछ छपता रहता था। किन्तु रूसकी तानाशाहीके विरुद्ध एक शब्द भी लिखना असम्भव हो गया था। चारों ओरसे दवाब डालकर उस तानाशाहीके विरुद्ध बोलने या लिखने वालेका मुंह बन्द किया जाता था। मुझे कितने ही ऐसे लोगोंसे पाला पड़ा जो प्रेसीडेन्ट रूजवेल्टको डिक्टेटर कह कर पुकारते थे। किन्तु उनके सामने यदि स्टालिनको कोई डिक्टेकर कह देता तो वे आगबबूला हो उठते थे।

और उधर सोवियत् यूनियनमें उसी पुराने ढंगसे पूंजीवाद विरोधी प्रचार चल रहा था। ब्रिटेन और अमेरिका की युद्ध सम्बन्धी-नीतियों की नित्य ही तीव्र आलोचना होती थी। किन्तु अमेरिकामें क्रेमलीन की नीतिके प्रति तनिक-सा संशय दिखाना भी गुनाह समझा जाता था। एक उदार प्रकाशकने तो यहाँ तक कह डाला कि रूसकी सरकारका विरोध करनेवाली किसी भी पुस्तकको न बेचना चाहिए, न पुस्तकालयोंमें रखना चाहिए! मुझे विश्वस्त सूत्रोंसे पता लगा कि कई प्रकाशक लोग सरकारके दबावसे या ऐसे ही किसी कारणवश वे पुस्तकें छापनेसे इन्कार कर रहे हैं जिनसे कि स्टालिनके रुष्ठ होनेका डर है। दो-चार पत्रिकाएँ ही ऐसी थीं जिनमें कि स्टालिनके विरुद्ध लेख छापनेका साहस

देखा। मास्कोमें स्थित अमेरिकन संवाद-दाताओंके द्वारा जो रूस की खबरें अमेरिकामें आती थीं, वे एकदम बेकार थीं। रूसमें रहते-रहते हम सरकारी खबरोंके बारेमें एक चेतना प्राप्त कर चुके थे। उन खबरों को ठीकसे समझ कर उनमेंसे सार निकालना हमको आता था। किन्तु अमरिकाके लोग यह विद्या नहीं जानते थे। और इसीलिए अमेरिकन संवाददाता रूसकी सरकारी विज्ञप्तियोंके आधार पर जो खबरें उनके पास भेज देते थे, उन्हीं पर उनको विश्वास हो जाता था। इस प्रकार क्रेमलीनका सारा मिथ्या-प्रचार अमेरिकन संवाददाताओंका समर्थन प्राप्त करके परम सत्य बन जाता था। ये लोग गणतन्त्र के स्वाधीन वातावरणमें पले पनपे थे। उनको भला कोई क्योंकर समझा पाता कि तानाशाहीके भीतर सरकार सत्यको मिथ्या और मिथ्याको सत्य बनाती रहती है।

मैंने देखा कि कम्युनिस्ट व्यवस्थाके विषयमें अमेरिकन लोगोंकी धारणाएं अजीब हैं। उनको पता ही नहीं था कि हमारे देशमें गुलाम-खाने हैं, पुलिस की निरंकुश सत्ता है, बार-बार पर्ज होती है, जीवनस्तर बहुत नीचा है। उन्होंने सुना ही नहीं था कि १९३२-३३ में हमारे यहाँ बहुत बड़ा अकाल पड़ा था, कि खेतीके सामूहीकरणमें घोर नृशंसता से काम लिया गया था, कि सरकारने बच्चोंसे मजदूरी करवाई थी। रूसके भीतर रहनेवाला प्रत्येक व्यक्ति इन बातोंको खूब अच्छी तरह जानता था। हममेंसे कुछ कह देते थे कि यह सब करना क्रान्तिके लिए आवश्यक था, कि उन सब परिस्थितियोंमें हमारी सरकारके लिए दूसरा रास्ता ही नहीं था, किन्तु यह तो सभी मानते थे कि ये अत्याचार और बलात्कार रूसमें हुए और हो रहे हैं। पर मैंने जब जब किसीके सामने ये बात बतलाई तब-तब या तो वे आँखें फाड़कर अविश्वासकी मुद्रासे मुझे ताकने लगे, या मेरी बातोंको खण्डन करने पर तुल गए। इसीलिए मैं

पूरी तरह समझ गया कि यदि सोवियत् सरकारको कहीं पूर्ण सफलता मिली है तो विदेश-प्रचारके क्षेत्रमें। मैं सोचने लगा कि अगले बीस बरसमें भी यदि सोवियत् सरकार उन कामोंमेंसे आधे काम कर पाई जो कि अमेरिकनोंकी रायमें उसने अभी पूरे कर लिए हैं, तो निश्चय ही इतिहासमें इस सरकारका जोड़ नहीं मिलेगा।

कुछ ऐसे भी लोगोंसे मेरा सम्पर्क हुआ जो कि सोवियत् यूनियनके बारेमें सच-सच बातें जानते थे। किन्तु उनके भीतर मैंने एक अजीब भावुकता देखी। न जाने वे क्यों यह कहते रहते थे कि स्टालिनके कारण रूसमें यह सब हुआ और सारा दोष उस एक आदमी पर लाद देते थे। धीरे-धीरे उनकी यह धारणा बन गई थी कि रूसमें तभी तक दु:ख तकलीफ रहेगा जबतक कि स्टालिन जिन्दा है और उसके बाद स्वर्ग आ जाएगा। रूसमें भी मुझे कुछ ऐसे लोगोंसे वास्ता पड़ा था जो अकेले स्टालिनको कोस कर अपना मन समझा लेते थे। किन्तु अमेरिकामें यह धारणा बहुत अधिक देखी। किन्तु दुर्भाग्यकी बात है कि सारी सोवियत्-व्यवस्था ही दोषपूर्ण है और स्टालिनके मरनेसे कोई विशेष अन्तर नहीं आएगा। कोई दूसरा तानाशाह या गुटबन्दी स्टालिनका स्थान ले लेगी।

एक बार मैं एक छोटेसे नगरमें गया, जहाँ कुछ कारखाने थे। मेरे साथ कुछ कट्टर किस्मके पूँजीपति थे, जो मजदूरका कोई अधिकार माननेके लिये तैयार नहीं होते थे। उन्होंने मुझे बताया कि वे सोवियत् व्यवस्थाका विरोध ही नहीं करते, बल्कि उस व्यवस्थासे घृणा करते हैं और मानते हैं कि रूसका असर अमेरिकाका सत्यानाश कर देगा। मैं यह जाननेके लिये उत्सुक हो उठा कि आखिर रूसके सम्बन्धमें उनकी धारणायें क्या हैं और मुझे यह जानकर बहुत आश्चर्य हुआ कि उनके मतमें रूसमें मजदूरोंका राज्य हो गया है, वहाँ किसान लोग कोपरेटिव बनाकर रहते और सब एक समान माने जाते हैं। मेरे साथ एक और

सोवियत् कर्मचारी भी था, इसलिये मुझे चुप रहना पड़ा। अन्यथा मैं उन्हें बता देना चाहता था कि अमेरिकामें मजदूरों और उनकी ट्रेड यूनियनोंके पास जितनी ताकत है, अमेरिकामें जितनी कोपरेटिव ढंगकी खेतीबाड़ी देखी जाती है और जितनी व्यक्तिगत स्वाधीनता मिलती है, उसकी तो रूसके वासी स्वप्नमें भी कल्पना नहीं कर सकते। हमारे दफ्तरके पुस्तकालयमें मुझको हेनरी वालेस की लिखी कई पुस्तकें मिलीं। अङ्गरेजी जाननेवाले एक साथीने उनमेंसे उन अंशोंका अनुवाद करके मुझे सुनाया जिनमें वालेसने रूसके बारेमें अपना मत जताया था। मुझे अपने कानों पर विश्वास करना कठिन हो गया। एक गणतान्त्रिक सरकार का उप-प्रधान स्टालिनकी तानाशाहीको "आर्थिक गणतन्त्र" कहकर उसकी प्रशंसा कर रहा था। या तो मिस्टर वालेस को मालूम नहीं था कि हमारे देशमें पुलिसका राज्य है, प्रत्येक कारखाने पर पुलिसका नियन्त्रण है, ट्रेड यूनियन सरकार चलाती है, मजदूरोंको अपने वेतनका दर नियुक्त करवानेमें कोई साझा नहीं, हड़ताल करने या कराने पर मौत की सजा मिलती है, हड्डी तोड़ देने वाला काम लेकर बहुत कम मजदूरी दी जाती है, सबको लेबर बुक रखनी पड़ती है, काम पर बीस मिनट लेट हो जाने पर कठोर कारावासका दण्ड दिया जाता है और चारों ओर गुलामखाने बने हैं---या फिर जान-बूझकर उन्होंने इन सब बातोंको "आर्थिक गणतन्त्र" कहकर पुकारा था।

मैंने बड़ी मेहनत करके वेण्डल विल्की की पुस्तक—एक संसार—पढ़ डाली। जब वे रूसमें गए, तो मैं सरकारी दफ्तरमें काम करने लगा था। और मुझे मालूम था कि मिस्टर विल्की की आँखोंमें धूल झोंकनेके लिए क्या-क्या जाल रचा गया है। जो कुछ भी मिस्टर विल्कीने रूसमें देखा वह वहाँकी सरकारने जान-बूझकर उन्हें दिखाया था। मुझे तब विश्वास नहीं हुआ था कि हम इस प्रकार मिस्टर विल्कीको मूर्ख बना सकते हैं।

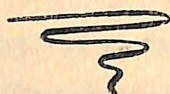
अब किताब पढ़कर मैंने समझा कि वे पूरी तरह हमारे झांसेमें आ गए हैं। मुझे आश्चर्य हुआ कि किसी आदमीको इतनी जल्दी इतना बड़ा बेवकूफ कैसे बनाया जा सकता है! मिस्टर विल्कीने लिखा था कि किस प्रकार उसने मास्कोके एक होटलमें रूसके कुछ पत्रकारोंको इकट्ठा करके उनके साथ "दिल खोलकर" बातें की। उन्होंने दरवाजा भीतरसे बन्द कर लिया और अपना अपना दिल चीरकर दिखा दिया। मुझे हँसी आई। यदि मैं भी अमेरिकनों जैसा बेवकूफ होता, तो मैं भी वैसी ही बातें करता। न जाने मिस्टर विल्की और उनके साथियोंको कैसे विश्वास हो गया कि होटलका दरवाजा बन्दकर लेनेसे ही उनको सचाईका पता लग जाएगा। उनको मालूम नहीं था कि रूसका प्रत्येक पत्रकार तथा अधिकारी निरन्तर सरकारकी आँखों तले रहता है। किसी दूसरे रूसी नागरिकके प्रस्तुत रहते कोई भी रूसी नागरिक अपने मनकी बात कहने का साहस नहीं कर सकता। मिस्टर विल्कीको क्या मालूम था कि उनके कमरेमें डिक्टाफोन लगा था, जिसकी याद आते ही कोई भी रूसी नागरिक सच नहीं बोल सकता। और जितने पत्रकार मिस्टर विल्कीके पास आए थे, सबने वापिस जाते ही पुलिसमें पूरी रिपोर्ट लिखा दी थी, सबने अपनी स्तालिन-भक्तिका प्रमाण पेश कर दिया था। उन पत्रकारोंके सामने दूसरा रास्ता ही नहीं था।

एक सांझको मैं वाशिंगटनके एक सिनेमा हाउसमें गया। उससे बुरी सांझ शायद ही और मेरे लिये अमेरिकामें आई हो। हालमें अन्धेरा था, इसलिये मैं अपने आँसू छिपा पाया। मेरे साथ एक और सोवियत् कर्मचारी भी था। वह भी अपनी सीट पर बैठा-बैठा तिलमिलाने लगा। उसको भी मेरी ही तरह आँसू आ रहे होंगे। फिल्मका नाम था "मिशन टू मास्को।" मास्कोमें अमेरिकाके भूतपूर्व राजदूत जोसफ डेवीसने रूसके सम्बन्धमें जो पुस्तक लिखी थी, उसीके आधारपर फिल्म बनाई गई थी।

मैंने देखा कि सारी फिल्ममें मेरे देशका अपमान किया गया है। पुस्तक में काफीसे ज्यादा मूर्खता भरी थी, फिर भी कहीं-कहीं सत्यका उद्घाटन भी हुआ था। किन्तु फिल्ममें सत्यका गला पूर्णतया घोंटकर केवल कल्पनासे काम लिया गया था। फिल्मके निर्माताओंको जब-जब सत्य एवं मिथ्या और वास्तविकता तथा कपोलकल्पना के बीच चुनाव करना पड़ा था, तब-तब उन्होंने मिथ्या और कपोलकल्पना को चुना था। पर्ज के मुकदमोंमें जिस साइबेरियन कारखानेका हवाला दिया गया था, उसको मैं बहुत अच्छी तरह जानता था। किन्तु हालीवुड वालोंने उसका जो कार्टून बनाया था, वह देखते ही बनता था! सोवियत् सरकार द्वारा बनाई हुई फिल्म भी सत्यके साथ इतना वीभत्स बलात्कार नहीं कर सकती थी। किन्तु अमेरिकन निर्माता जानते थे कि अमेरिकाके दर्शक रूसके विषयमें नितान्त अनभिज्ञ हैं और उन्हें जो भी दिखा दिया जाये, वे मान लेंगे। इस दृष्टिकोणसे वह फिल्म अमेरिकाका भी उतना ही अपमान करती थी, जितनाकी रूसका। इसीलिये मास्को के 'प्रावदा' ने मिस्टर डेवीस तथा उनकी पुस्तककी इतनी भारी प्रशंसा की। डेवीसकी गवाही देते हुए 'प्रावदा' ने लिखा कि रूसका "न्यायविधान सर्वाङ्गसम्पूर्ण है", कि पर्ज द्वारा "देशद्रोहियों" का ही सफाया किया गया था और बाल्शेविक क्रान्तिके कर्णधारोंको मारकर स्टालिनने कोई पाप नहीं किया। रूसकी जनताको रूसके बारेमें "सत्य" का दर्शन करानेके लिये अब रूसी सरकार अमेरिकन लोगोंकी सहायता ले रही थी! हे भगवान!

जब मैं सिनेमा हालसे निकला, तो मेरी हथेलियोंमें खून बह रहा था। क्रोधको दबानेके लिये मैंने अपने ही मांसमें अपने नाखून गाड़ लिए थ। मेरे साथीका भी वैसा ही हाल था। हमने एक दूसरेसे कुछ कहा नहीं, किन्तु आँखें मिलते ही एक दूसरेके मनकी अवस्था हम समझ गए। उस रात मुझे नींद नहीं आई और बिस्तर पर पड़ा-पड़ा

मैं करवटें बदलता रहा। मैं अपने आपसे प्रश्न पूछ रहा था कि ये अमेरिकन लोग मेरे त्रस्त, संतापित देशमें स्वर्ग देखनेका हठ क्यों करते हैं! स्टालिनकी समस्त नृशँसता और बाल्शेविकोंके क्रूर अत्याचारकी मार्जना ये अमेरिकन क्यों करते हैं! रूसमें रहते-रहत हममेंसे किसीने नहीं सोचा था कि स्टालिनके मिथ्या प्रचारको रूसके बाहर इतनी सफलता मिली है। रूसके भीतर जब सरकार "समाजवाद" की डींग मारती है, तो हम सब समझते हैं कि एक तानाशाही अपने मुँह मियाँ मिट्ठू बनना चाहती है। किन्तु स्वाधीन संसारमें जो लोग जनमतके निर्माता हैं, उनके लिये वही डींग वेदवाक्य बन जाती है और वे बड़े भक्ति भावसे उसे स्वीकार करके दूसरोंको सुनाते है!



सताइसवाँ अध्याय

अन्यायसे पलायन

समाचार पत्रोंमें जब मेरे भाग निकलनेकी खबरें छपीं, तब यह कहा गया था कि अमेरिकाकी स्वाधीनताका अनुभव होने पर ही मैंने स्टालिनकी तानाशाहीमें विश्वास खो दिया है। इस बातमें नाटकीयताका समावेश तो था ही, साथ ही साथ अमेरिकाकी भी तारीफ की गई थी। किन्तु यह बात सत्य नहीं थी। वास्तवमें अमेरिका पहुँचनेके बहुत पूर्व ही मैं तानाशाहीकी बेड़ियाँ तोड़नेका फैसला कर चुका था और अवसरकी खोजमें था। यदि मुझे अमेरिकामें न भेजकर चीन अथवा किसी अन्य देशमें भेजा गया होता, तो भी मैं स्वाधीनता प्राप्त करनेके लिये वैसा ही प्रयत्न करता। मैं तो बहुत दिनसे ऐसा करनेकी सोच रहा था, यद्यपि आज यह कहना मेरे लिये कठिन है कि ठीक किस दिन मेर अन्तरमें वह निश्चय परिपक्क होकर ऊपर आया। धीरे-धीरे मेरे अन्तरमें जो भावनाएँ जोर पकड़ती आई थीं, उन्हींका यह अनिवार्य परिणाम था। मेरे समस्त व्यक्तित्वकी यह मांग थी। अपने शैशवकालमें मैंने पिताजीका निर्मल आदशवाद देखा था, माँके गम्भीर धर्मभावका अनुभव किया था। उनकी अच्छाई, उनका मानवप्रेम, कुछ दूसरे शब्दोंमें, दूसरे प्रकारसे व्यक्त होते थे, तो भी मेरे अपने आदर्शवादसे उनका खूब मेल खाता था। और वह मेल आखिर तक मुझमें बना रहा।

इसके सिवाय अपने देशके इतिहाससे भी मैंने वही प्रेरणा पाई थी। उस इतिहासके अन्धकारपूर्ण दिनोंमें जब कि देश पर निरंकुश और क्रूर शासकोंका पंजा था, कितने ही विद्रोहियोंने सिर उठाकर स्वाधीनता का उद्घोष किया था। और मैं यह भी जानता हूं कि सोवियत् साम्राज्यकी चारदीवारीमें रहते हुए यदि मैं स्वाधीनताके लिये लड़ सकता, तो देशके बाहर कभी भी पांव नहीं देता। मैं देशके भीतर ही डटा रहता। यदि स्वप्नमें भी मुझे यह आशा हो जाती कि सोवियत् सरकारके नेता विश्व-क्रान्तिका ध्येय त्यागकर देशके कल्याण की ओर ध्यान देंगे और धीरे धीरे देशमें राजनैतिक एवं आर्थिक स्वाधीनता का समावेश हो जायगा, तो भी मैं वहीं डटा रहता। किन्तु दुर्भाग्यसे मैंने यही देखा कि सोवियत् सरकार क्रान्तिके मानवीय आदर्शोंकी ओर न झुक कर, दिन-प्रति-दिन, उन आदर्शोंसे दूर हटती जा रही है। इसलिए आशा की किरण नित्यप्रति मन्दतर होने लगी। स्वाधीनताको अधिकाधिक क्रूरतासे पीसा जाने लगा। यहाँ तक कि जनताके मनसे स्वाधीनता की स्मृति-मात्र मिटने लगी। निरंकुशता की मात्रा और क्षेत्र उत्तरोत्तर बढ़ने लगे। युद्धके दिनोंमें जब एटलाण्टिक घोषणापत्र की खबर हमने सुनी तो हमको एकबार आशा हुई थी कि स्वाधीनताके वे चार सिद्धान्त हमारे देशमें भी लागू होंगे। किन्तु वह भ्रम भी तुरन्त मिट गया। हम समझ गए कि जहाँ तक हमारे देशका प्रश्न है, वह घोषणापत्र एक कोरे कागजसे अधिक कुछ नहीं।

तो प्रश्न उठता है कि अमेरिकामें पहुँचनेके बाद भी सात मास तक मैं क्यों वे बेड़ियां पहने रहा। मेरा उत्तर यही है कि छलांग लगानेके पूर्व मैं सब प्रकारसे अपनी तसल्ली कर लेना चाहता था कि कहाँ गिरूँगा और मुझपर क्या क्या बीतेगी। जब कोई कैदी जेलसे भाग निकलनेका इरादा कर लेता है तो उसे पास पड़ौसकी सरेजमीन देखनी होती है

और चौकीदारोंकी आदतें समझकर घात लगानी पड़ती है। सोवियत् रूसमें जो पला पनपा है वह जब गैर-सोवियत् संसारमें जाता है तो उसको बहुत उलझनें होती हैं और वह अपने आपको सर्वथा असहाय पाता है। वह देखता है कि उसके चारों ओर रहने वाले लोगोंका सोचने और समझनेका तरीका उसके अपने तरीकेसे एकदम जुदा है। इसलिए उसके लिए अनेक समस्याएं खड़ी हो जाती हैं। तानाशाहीके भीतर रहते-रहते उसको जो आदतें पड़ गई थीं, उनको धीरे-धीरे छोड़नेमें समय लगता है और अनेक गुत्थियाँ सुलझानी पड़ती हैं।

मैं किस प्रकार निकल भागा, यह मैं पुस्तकके आरम्भमें ही बता चुका हूँ। अचानक मैंने अपने आपको अनाथ बना डाला था। मेरा कोई देश नहीं रह गया था। अमेरिकाके कम्युनिस्ट और उनके सहयात्रियों की तीव्र घृणाका मैंने आवाहन किया था। और संसारकी सबसे मजबूत तथा हिंस्र सरकारकी आँखोंमें मैं एक कांटा बन बैठा था। मेरे सामने एक अंधकार फैला था। भविष्यमें कुछ भी निश्चित नहीं था। गुलामीके जीवनमें मुझे अनेक सुविधाएं थीं, आराम थे। तो भी जान बूझकर मैंने स्वाधीनता की काँटों भरी राह पर पांव बढ़ाया था। आधुनिक तानाशाहीके नीचे जो रह चुका है, वही ठीकसे जानता है कि उस सरकारका भय किस प्रकार सर्वव्यापी है और किस प्रकार वह मनुष्यको पंगु बना देता है। इसके सिवाय निकल भागनेके पूर्व मुझे यह भी मालूम हो गया था कि तुरन्त ही मेरी उन्नति होनेवाली है और मुझे और भी अच्छा पद मिलनेवाला है। कुछ दिन उपरान्त मुझे नए पदपर आरूढ़ कर दिया जाता और जब मैं रूस लौटता तो एक अनुभव-प्राप्त व्यक्तिके नाते मेरा खूब सम्मान होता। कहा जाता कि मैं स्टालिनके उन सुपुत्रोंमें से हूं जो कि पूंजीवादी संसारके समस्त प्रलोभनोंको ठुकरा कर अपना संयम बनाए रहे। स्टालिन की नौकरशाहीमें मैं बहुत ऊपर तक पहुँच

सकता था। किन्तु मैं जानता था कि कितना ही ऊपर पहुँच जाऊँ, रहूँगा गुलाम ही, जो कि अपनी जनताकी सेवा कर पानेके बदले अत्याचारियोंका हाथ बँटाता है। इसीलिए मैंने बाहर रहनेका फैसला किया। तानाशाहीसे युद्ध करनेके लिए मुझे स्वाधीनताकी आवश्यकता थी। और वह स्वाधीनता प्राप्त करनेके लिए मैं दुःख तकलीफ तथा जानका खतरा भी उठानेके लिए तैयार हो गया। उस दिनसे विक्टर क्रावचैन्को एक प्रकारसे मर गया। उसका नाम ही मिट गया। कभी वह एक इटालियन बना, कभी यूगोस्लाव, कभी पुर्तगीज़। लेकिन अपने आपको रूसी बताना कठिन हो गया। न जाने मुझे कितने नाम बदलने पड़े हैं।

मैनहाटनके एक सड़ेसे, अन्धेरे होटलमें मैंने वह वक्तव्य लिखा, जिसका एक अंश ४ एप्रिल १९४४ के दिन 'न्यूयार्क टाइम्स' तथा कुछ अन्य पत्रों में छपा। आज युद्ध समाप्त होनेपर जब मैं उस वक्तव्यको दुबारा पढ़ता हूं तो मुझे ऐसा लगता है कि उसमें एक अनुस्वार भी बदलनेकी आवश्यकता नहीं। इसके विपरीत उस समय मैंने जो-जो आशंकाएं जताई थीं और जो-जो चेतावनी दी थी, वे सब आज आँखोंके सामने सिद्ध हो रही हैं। मैंने कहा था कि जिन ध्येयों की पूर्तिके लिए क्रेमलीन युद्ध लड़ रहा है, उनका अमेरिका तथा ब्रिटेनके ध्येयोंसे बिल्कुल मेल नहीं खाता। मैंने कहा था कि दिखावेके लिए कामिन्टर्न तोड़कर भी रूस समस्त कम्युनिस्ट पार्टियोंका नेतृत्व गुप्त रूपसे कर रहा है। पोलैण्ड, बाल्कन प्रदेश, चैकोस्लोवाकिया, ऑस्ट्रिया तथा दूसरे देशोंका जिक्र करते हुए मैंने कहा था कि स्टालिन गणतन्त्रका गला घोंटकर अपना साम्राज्य बढ़ानेकी तैयारीमें संलग्न है। मैंने लिखा था :

"आज फासिज्मके पंजेसे छुटे हुए देशोंमें सोवियत् सरकार गणतन्त्र की स्थापनाके लिए हो हल्ला कर रही है, किन्तु रूसके भीतर जनताको साधारण अधिकार देनेकी दिशामें वही सरकार कोई कदम नहीं उठा

रही। पहिले की नाई आज भी रूसकी जनता पर बलात्कार हो रहे हैं, वर्णनातीत अत्याचार किए जा रहे हैं। हजारों जासूसों की मददसे रूस की पुलिस रूसकी जनताको अपने कर्कश पंजेमें दबाए बैठी है। और जर्मनीके आक्रमणसे मुक्त हुए देशोंमें भी सोवियत् सरकार उसी प्रकार की क्रूर एवं हिंसात्मक व्यवस्थाके बीज बो रही है। रूसमें आज भी अनेक गुलामखाने और कारागार पहिलेकी तरह विद्यमान हैं। युद्धके आरम्भमें रूसकी जनताने राजनैतिक एवं सामाजिक सुधारोंकी जो आशा लगाई थी, वह मृग-मरीचिका बनती जा रही है।

"मेरा दावा है कि आज रूस की जनताको साधारण राजनैतिक अधिकार प्राप्त करनेका सबसे ऊँचा अधिकार है। उन्हें प्रेस और बोलने की स्वाधीनता मिलनी चाहिए। भय और भूखसे उन्हें मुक्त करने की आवश्यकता है। अभी तक रूस की सरकारने झूठमूठ इन स्वाधीनताओं की दुहाई दी है। कितने ही बरसों तक रूसकी जनता अत्याचार और अभाव सहती आई है। आज अपने अपूर्व और अतुल्य बलिदानोंके बल पर रूसकी जनताने समस्त अधिकारोंके लिए अपनी पात्रता सिद्ध कर दी है। उन बलिदानोंने हमारी मातृभूमि की ही नहीं, सोवियत् सरकारकी भी रक्षा की है। फासिज्म पर करारी चोटें मारकर रूसकी जनताने इतिहासका प्रवाह बदला है।"

किन्तु जिस दिन मैंने ये शब्द लिखे थे, उस दिनसे आज तक रूसमें कुछ भी नहीं बदला है। तानाशाही उसी प्रकार सिंहासनासीन है और उसका क्रूर चक्र उसी तेजीसे चल रहा है। गणतन्त्र देशोंके निवासियोंको तानाशाहीका असली स्वरूप मैं अच्छी तरह नहीं समझा सकता। जिन्होंने नाजी युद्ध-अपराधियोंको दण्डित किया है, उन्होंने तानाशाहीकी बर्बरताका नकशा बहुत हद तक ठीक खींचा है। वही नकशा सोवियत् तानाशाही का भी है। उस नकशेमें यदि हम कुछ भी न बदलें और केवल नाजीके

स्थानमें कम्युनिस्ट लिख दें तो क्रेमलीनका ठीक-ठीक परिचय मिल जाएगा।

नाजियोंके ऊपर दिए गए परिचयमें नेतावादका सिद्धान्त सबसे महत्व-पूर्ण माना गया है। फासिज्म की समस्त करतूतें उसी सिद्धान्तके परिणाम हैं। किन्तु वही सिद्धान्त तो क्रेमलीनका भी सिद्धान्त है। नाजियोंके ऊपर दिए गए फतवेमें लिखा है: "इन षडयन्त्रकारियों ने नाजी पार्टीके सिवाय अन्य सब पार्टियोंको मिटा दिया, धारासभामें केवल अपनी पार्टीके लोग भर दिये, जनप्रिय चुनावोंकी स्वाधीनताका हरण किया, चुनावोंके स्थानमें आतंकसे काम लिया, और अपनी सत्ताके विरोधियोंको बड़ी निर्दयतासे कुचल डाला।" इस फतवेमें कुछ नाम बदल देनेसे, यह साराका सारा सोवियत् तानाशाही पर भी लागू होता है। फिर भी बहुतसे लोग जो हिटलर की भर्त्सना करते हैं, वे सोवियत् तानाशाहीके विरुद्ध और रूसी जनताके पक्षमें मुँह नहीं खोलना चाहते। रूसमें होनेवाली क्रूरताके विरुद्ध संसारकी अन्तरात्माको जगानेका काम अभी बाकी है।

(२)

जो आशंकाएँ लेकर मैंने नया जीवन शुरू किया था, वे समस्त मेरे सामने आ गईं। जब समाचार पत्रोंमें मेरे भाग निकलनेकी खबर छपी तो सोवियत् दूतावासने पहिले तो कह दिया कि वे जानते ही नहीं मैं कौन हूँ। वे बेचारे मास्कोके आदेशकी प्रतीक्षामें थे। फिर उन्होंने मान लिया कि मैं उन्हींका आदमी हूँ और मेरे चरित्र पर कालिख लगानेके लिये उन्होंने अपने वक्तव्य देने शुरू कर दिए। उन्होंने एक बड़े पतेकी बातका आविष्कार किया। कहने लगे कि मैं अभी भी लाल सेनाका कप्तान हूँ। और इस प्रकार मैं राजनैतिक शरणार्थी नहीं, बल्कि सैनिक दृष्टिसे फरार आसामी ठहराया गया। कानूनके अनुसार सेनासे फरार व्यक्तिको अमेरिकासे निकालकर रूस पहुँचाना आवश्यक था। इस प्रकार

स्टालिन मुझे अपनी गोलीका निशाना बनानेकी तैयारी करने लगा। वास्तवमें तो मुझे दो साल पूर्व बीमार पड़ जाने पर सेनासे छुट्टी मिल चुकी थी। इसलिये मैं साधारण सिवीलियन कर्मचारी था। मुझे अमेरिकामें भेजनेसे पहिले हमारे विदेश-व्यापार विभागने मुझे सब प्रकारके सैनिक दायित्वोंसे पूर्णतया मुक्त करा दिया था।

साथ ही कम्युनिस्ट और उनके सहायक समाचार-पत्र जी-तोड़कर मेरे विरुद्ध आक्रोश कर उठे। ५ एप्रिलको "डेली वर्कर" में एक लेख निकला। लेखका नाम था—'एक तुच्छ भगोड़ेका मामला : हिटलरकी अमेरिकामें आखिरी कोशिश'। लिखने वाले कोई स्टैरोबिन महाशय थे। पार्टीके साहित्यमें साधारणतया जो गाली-गलौज भरा रहता है, उसीकी भाषामें लेख लिखा गया था। फिर भी उसके भीतर एक भेद की बात थी, जो शायद सबकी समझमें न आई हो। मुझे खुले आम धमकी दी गई थी। स्टैरोबिनने लिखा था :

"यह आदमी जो अपना परिचय सोवियत् कर्मचारी कहकर दे रहा है, वास्तवमें एक घृणित देशद्रोही है। ट्राट्स्कीसे लेकर क्रावचैंको तक, ऐसे अनेक गद्दारोंसे हमारा पाला पड़ा है। ये किसीकी आँखोंमें धूल नहीं झोंक सकते। प्रगतिशील मानवजातिका सतर्क पंजा उनको आखिर पकड़ ही लेता है और फिर उनका नाम-निशान नहीं रहता।"

वे शब्द पढ़कर मुझे याद आया कि उस "सतर्क पंजे" ने एक दिन एक कुदाल पकड़ कर मैक्सीको नगरमें ट्राट्स्कीकी खोपड़ी चूर कर दी थी। स्टैरोबिनने भी साफ-साफ लिखा था : "क्रावचैन्कोके आखिरी दिन आ पहुँचे।"

मैंने अमेरिकन जनमतकी शरण मांगी थी, इस बातका उल्लेख करते हुए उसने लिखा :

"हमारा देश कोई सराय नहीं कि हमारे मित्र-देशोंके शत्रु और

हमारे अपने युद्धप्रयत्नके घातक यहाँ आकर ठहरें। जिस दिन अमेरिका इस प्रकारके कुत्तोंके लिये शरणस्थल बन जाएगा, वह दिन बहुत बुरा होगा। ये कुत्ते बीअर पी-पीकर 'न्यूयर्क टाइम्स'में अपना रोना रोते हैं, किन्तु सोवियत् यूनियनकी जनताके सामने इनका मुँह नहीं खुलता।"

'डेली वर्कर'के जो पाठक अत्यन्त मूर्ख थे, उनको यह समझानेकी कोशिश की गई थी कि सोवियत् यूनियनमें कोई भी साहसी व्यक्ति जनताके सामने अपने मनकी बात कह सकता है। किन्तु उसी लेखमें यह भी माना गया था कि सोवियत् पुलिस यदि मेरे मनका भेद जान लेती, तो बहुत पहिले ही मेरा खात्मा हो चुका होता! और अब कामरेड स्टैरोबिन मुझे धमकी दे रहे थे कि "प्रगतिशील मानवता" मुझे मिटा कर रहेगी। कहनेका यही अर्थ था कि सोवियत् रूसके जासूस मुझे मारनेकी कोशिश करेंगे। बात मेरी समझमें आ गई। मुझसे कहा गया था कि यदि मैंने बोलना और लिखना बन्द नहीं किया, तो मेरी खैर नहीं। संसारमें कुदालोंकी कमी नहीं थी। शायद कुछ लोग समझें कि 'डेली वर्कर'में फिजूलकी डींग हांकी गई थी। किन्तु मैंने जिस सरकारके विरुद्ध विद्रोह किया था, उसके तौर-तरीकोंसे मैं बहुत अच्छी तरह परिचित था। मैं जानता था कि उसके दलाल चारों ओर घात लगाये बैठे हैं।

मैंने बहुत सावधानीसे काम लिया था, तो भी सोवियत् सरकारके जासूसोंने पता लगा लिया कि न्यूयार्कमें मैं कहां रहता हूं। और मैंने देखा कि मेरे होटलके सामने वाले फुटपाथ पर वे लोग चक्कर लगाते रहते हैं। मैंने कई बार नाम बदलकर होटल बदल डाले। कई बार मुझे ऐसा भी लगा कि मैं उनकी आँखोंसे बच निकला हूँ। किन्तु तुरन्त ही मैंने देखा कि वही आदमी फिर मेरे नए वासस्थान पर मण्डरा रहे हैं। बार बार मैंने उनको चकमा देकर निकल जानेकी कोशिश की। हारकर मैंने एक बन्धुके घर कुछ समय बितानेका इरादा किया। वे मध्य-पश्चिम अमेरिका

के किसी बड़े शहरके पास रहते थे। 'कास्मोपोलीटन' पत्रमें मेरा एक लेख निकला था, उसीको पढ़कर उन मित्रने मेरा पता लगाया था। वे अमेरिकन थे। मैंने अपने जानेके बारेमें किसीसे जिक्र नहीं किया और रेल पर चढ़ा तो मुझे विश्वास था कि कोई मेरा पीछा नहीं कर रहा है। किन्तु वह मेरी भूल थी। स्टेशन प्लेटफार्म पर जो मित्र मुझे लेने आए थे, वे डर गए। उन्होंने देखा कि तीन आदमी कुछ दूर खड़े हुए बड़े ध्यानसे हमारी तरफ घूर रहे हैं। मुझे कोई संदेह नहीं रहा कि वे तीनों मेरे ही पीछे लगे हैं। उनमेंसे एकने अपना दाहिना हाथ कोटकी पाकेटमें डाल रक्खा था। उसकी नजर मुझ परसे एक क्षणके लिए भी नहीं डिगी। जब हम कारपर चढ़े तो वे अजनबी भी अपने आपको छुपानेकी कोशिश किए बिना एक दूसरी गाड़ीमें सवार होकर हमारा पीछा करने लगे। उनसे पीछा छुड़ानेके लिए हम शहरमें इधर-उधर गाड़ी घुमाने लगे। हारकर हम एक थानेके सामने रुके तो देखा कि पीछेवाली गाड़ी हमसे आगे निकल कर गायब हो गई। हमने उसका नम्बर नोट किया और पीछे जब खोज की गई तो मालूम हुआ कि उन्होंने नम्बर प्लेट किसी और गाड़ीसे चुरा कर लगाई थी।

कई दिन तक वही गाड़ी फिर उस घरका चक्कर काटने लगी, जहाँ कि मैं ठहरा हुआ था। न्यूयार्कसे कई टेलीफोन मेरे लिए आए जिनमें अपने आपको मेरे "मित्र" बतानेवाले लोगोंने मुझसे कहा कि मेरा जीवन खतरेमें है और मुझे तुरन्त कहीं छुप जाना चाहिए। बात साफ थी। मेरे शत्रु चाहते थे कि भय मान कर मेरे मित्र मुझे अपने घरसे बाहर ले जाएं और किसी ऐसे दूर अपरिचित स्थानमें छुपा दें जहाँ कि मेरी हत्या आसानीसे की जा सके। मुझे ऐसा लगा जैसे कि मैं अमेरिकामें नहीं, सोवियत् यूनियनमें ही रह रहा हूँ। मुझे विश्वास होने लगा कि फिर कभी मैं जान जोखों उठाए बिना साधारण भावसे काम नहीं कर पाऊँगा।

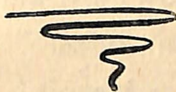
किन्तु इन सारी धमकियोंके सामने मेरे मित्रोंने खूब साहस दिखाया। मैं उनका एहसान कभी नहीं भूलूंगा। घरके मालिक रातको सोनेसे पहिले अपने बराबरमें एक तेजसी कुल्हाड़ी रख लेते थे। घरमें और कोई हथियार तो था नहीं। कुछ और अमेरिकनों तथा अमेरिकामें बसे रूसियोंने भी मुझे निमन्त्रण दिया कि उनके घर जाकर मैं ठहरूँ तो वे मेरी रक्षा करेंगे। अपनी प्रस्तुत पुस्तक पूरी करनेके लिए मुझे उनकी रक्षा प्राप्त करनेकी आवश्यकता भी थी।

अब यह पुस्तक पूरी हो गई है। अपनी कहानी मैंने कह दी है। "प्रगतिशील मानवता" का प्रतिनिधित्व करनेवाले हत्यारे शायद किसी दिन मुझे मिटा डालनेमें सफल हो जाएं। शायद मेरे सांस पूरे हो जाएं। किन्तु मैंने जो लिख दिया है उसे वे नहीं मिटा सकते। जिस रूसी जनता की कोखसे मैंने जन्म लिया है, उसीको अपनी यह पुस्तक समर्पित करता हूँ। मुझे यह आशा है कि एक दिन वे लोग भी सच्ची स्वाधीनता और आर्थिक गणतन्त्रका उपभोग कर सकेंगे। वह दिन जब आएगा तब तक हम संसारकी एकताके काफी निकट पहुँच चुके होंगे। जब तक संसारके छठे भूभागपर तानाशाहीका साम्राज्य है और बौद्धिक स्वाधीनताकी हत्या होती रहती है तब तक विश्व-शान्ति खतरेमें पड़ी रहेगी। आज तो उस तानाशाहीने कई छोटे छोटे राष्ट्रोंको उदरस्थ करके अपना पक्ष और भी मजबूत बना लिया है।

संसारमें यदि शान्तिको सुदृढ़ बनाना है तो विश्वव्यापी संस्थाएं बनानेसे काम नहीं चलेगा। संस्थाएं तो बननी ही चाहिएँ। किन्तु रूसकी जनताका तानाशाहीके पंजेसे मुक्त होना सबसे आवश्यक है। जिस दिन रूसमें गणतन्त्रका समावेश हो जाएगा, उस दिन आजके संसारमें फैली खींचतान अपने आप मिट जाएगी और आपसका सहयोग सम्भव हो सकेगा। शायद कोई कहने लगे कि रूसमें गणतन्त्र की उपलब्धि

रूसी जनताका दायित्व है, और कोई उसका बोझ क्यों उठाए। किन्तु ऐसा सोचना बहुत भारी भूल है। रूसकी जनताका मुक्ति-संग्राम समस्त मानवताका मुक्ति-संग्राम है और उस जनताको मुक्ति दिलाए बिना संसार शान्तिका जीवन नहीं बिता सकता।

मैं इतना उतावला नहीं हूं कि किसी चमत्कार की बाट देखने लगूं। मैं जानता हूं कि बीस पच्चीस बरस तक वह मुक्ति प्राप्त नहीं हो सकती। किन्तु एक बात पर मुझे पक्का विश्वास है। यदि गणतन्त्रवादी सरकारें एक बार पूरी तरहसे समझ जाएं कि सोवियत् रूसके भीतर क्या-क्या हो रहा है, तो तानाशाहीको तोड़नेवाली शक्तियाँ अपने आप खड़ी होने लगेंगी। आज संसार भरका जनमत क्रेमलीन की क्रूरताका समर्थन करता है। एक दिन वही जनमत रूसकी जनताके लिए स्वाधीनता की मांग करेगा। यह पुस्तक एक ऐसे रूसी की जीवन-गाथा है जिसके भीतर कि स्वाधीनता की चाह कुचली नहीं जा सकी। वह चाह बहुतसे रूसी लोगोंके हृदयोंमें संचित है। मैं अपनी जनताके नामपर अमेरिका और संसार की गणतान्त्रिक अन्तरात्मासे अपील करता हूँ।



उपसंहार

सोवियत् दूतावाससे भागने के बाद तुरन्त ही यह पुस्तक लिखनेका काम मैंने शुरू किया था। मेरी जानकी जोखम बनी रहीं और महीनों तक मैं इधर-उधर भाग-दौड़ करता रहा। किन्तु यह पुस्तक लिखना मैंने चालू रक्खा। मैं एक शहर से दूसरे शहर में गया। कभी होटलोंमें रहा, कभी लोगोंके घरोंपर। न जाने मैंने कितने नाम बदले और अपने-आपको किस-किस देशका वासी बतलाया। आज मैं उन सबको हृदयसे धन्यवाद देता हूँ, जिन्होंने उन आड़े दिनोंमें मुझे अपना नैतिक समर्थन दिया था। यदि सोवियत् सरकारके जासूस उस समय मुझे पकड़ पाते, तो या तो मेरा खात्मा हो जाता या रूसमें ले जाकर मेरी गत बनाई जाती। भाग्यसे ऐसा नहीं हुआ और जीवनमें पहिली बार मैंने खुलकर अपनी जनताकी, अपने देशकी और स्वयं अपनी बात कहनेका अवसर प्राप्त किया।

जब मैं दूतावाससे भागा, तो युद्ध चल रहा था। सोवियत् तानाशाही और पाश्चात्य गणतन्त्रोंके बीच सहयोग आवश्यक था, इसलिए मेरी बोलनेकी स्वाधीनता पर कुछ प्रतिबन्ध लगाए गए। मैंने हँसी-हँसी वे प्रतिबन्ध स्वीकार कर लिए। युद्धमें सफलता पाना मेरे लिए भी चरम ध्येय था। किन्तु अब, जब कि युद्धमें हमारी जीत हो चुकी है, मैं यह सम्भव ही नहीं, बल्कि आवश्यक भी समझता हूँ कि मुक्त-कण्ठसे अपनी बातें कहूँ। इसीलिए यह पुस्तक सबके सामने है।

मैं एक और कारणसे भी अपनी बात कहनेके लिए उत्सुक हूँ। युद्ध के बाद कई देशोंने, इच्छा अथवा अनिच्छासे, वामपन्थका मार्ग अपनाया है। यह बहुत अच्छी बात है, किन्तु यह ध्यान रखना चाहिए कि उस मार्ग से चलकर वे देश कहीं सोवियत् कम्युनिज्मकी मंजिल पर न पहुँच जाएं। दुर्भाग्यसे जिन देशोंमें सोवियत् सेनाका पदार्पण हुआ है, उनके लिए

तो उस मंजिल पर पहुँचना अनिवार्य हो गया है, किन्तु और देशोंको अपनी मंजिल बनानेकी अभी भी छूट है।

मेरे देशकी जनता आज तानाशाहीके पंजेमें दबी है। वे अपने दुःख-सुख, आशा निराशाकी बातें संसारसे नहीं कह सकते। इसलिए इस पुस्तकमें रूसी तानाशाहीका जो भी चित्र खींचा गया है, उसीसे अन्य देशोंकी जनता तथा सरकारोंकी आँखें खुल जानी चाहिएँ। एक सुख-शान्तिपूर्ण संसारकी स्थापनाके लिए विविध देशोंकी जनताके बीच मैत्री और समझ-बूझकी आवश्यकता है। विविध सरकारोंके बीच पारस्परिक समझौतोंसे काम नहीं चलेगा।

रूसकी कम्युनिस्ट तानाशाही रूसकी जनताकी ही समस्या नहीं है। अकेले गणतन्त्रवादी देशोंको ही उससे खतरा है, ऐसा भी मैं नहीं कहूँगा। वह तानाशाही आज समस्त मानव-जातिकी समस्या है। दुनियाके छठे भागमें बसी हुई मानव-जाति इस प्रकार कुचली जाती रहे और बाकी लोग पीठ फेरकर सुखका जीवन बिताएँ, यह कभी भी सम्भव नहीं। रूसमें आज "देवतातुल्य नेताओं" का राज्य है। उनके हाथमें एक बड़ी व्यवस्थित पार्टी और पुलिसकी मशीन है। सोवियत् यूनियनके करोड़ों लोगोंको अपने भाग्य-निर्माणमें कोई साझा नहीं और दूसरे देशोंकी जनता तथा विचारधारासे उनको पूर्णतया अलग कर दिया गया है। फिर भी सोवियत् तानाशाही और उसके विदेशी अनुचर संसारको यह विश्वास दिलाना चाहते हैं कि उनके साम्राज्यमें एक दूसरे प्रकारकी "स्वाधीनता" उपलब्ध है। वे उस व्यवस्थाको "सच्चा" गणतन्त्र कहकर "पुराने" गणतन्त्रसे तुलना करते रहते हैं।

× × ×

मैंने यह पुस्तक अपनी मातृ-भाषा रूसीमें लिखी थी। अंग्रेजीमें इसका अनुवाद किया गया है और अनुवादकने अमेरिकाकी जनताके

दृष्टिकोणसे इसकी शैलीमें कुछ काट छाँट की है। इस बातका ध्यान रक्खा गया है कि अनुवादमें मूलके तथ्योंसे कोई मतभेद न रहे। जो भी तथ्य, घटनाएँ, चरित्र-चित्रण मैंने रूसी हस्तलिपिमें दिए हैं, उनको शत-प्रतिशत अनुवादमें दिया गया है। अंग्रेजी अनुवाद तैयार होते ही, मैंने स्वयं उसको अच्छी तरह पढ़कर उसकी भूलें दूर कर दी हैं।

मैंने पुस्तकको आत्म-कथाकी शैलीसे लिखा है, इसलिए बहुत सी जरूरी बातें मैं इसमें नहीं बता पाया। रूसकी राजनैतिक-व्यवस्था, शासन-व्यवस्था तथा पुलिस-तन्त्रके विषयमें अनेक और बातें जानने योग्य हैं। उन सबको एक और पुस्तक लिखकर प्रस्तुत करनेकी चेष्टा करूँगा।

निरपराध लोगोंको सोवियत् सरकारके पंजेसे बचाने के लिए कई बार मैंने उनके नाम बदल कर लिखे हैं, उनकी परिस्थितियोंमें उलट-फेर कर डाला है। किन्तु घटना-क्रममें कोई अन्तर नहीं आया है और उनके कथानकमें महत्वकी कोई बात नहीं छोड़ी है।

मैं यह पुस्तक रूसकी जनताको समर्पित करता हूँ। मैं उसी जनतामें से एक हूँ।

मैं यह पुस्तक उन लाखों शहीदोंको समर्पित करता हूँ, जिन्होंने निरंकुशताका विरोध करके अपने प्राण खोए हैं; जो क्रेमलीनके अगणित कारागारों और गुलामखानोंमें सड़ रहे हैं; जो अपनी मातृभूमिकी रक्षाके लिए और अपनी जनताके सुन्दर भविष्यके लिए लड़ते-लड़ते मर मिटे हैं।

मैं यह पुस्तक समस्त संसारके प्रगतिशील और सामाजिक-चेतना रखनेवाले लोगोंको समर्पित करता हूँ। वे रूसमें गणतन्त्रकी स्थापना करानेमें हमारी सहायता करेंगे। रूसके स्वाधीन हुए बिना संसारमें शान्ति की स्थापना असम्भव है।

न्यूयार्क,
११ फरवरी, १९४६

—विक्टर क्रावचैन्को

तीन म

दूस

पत्थर

आर्थर कोयस्

रिचार्ड

स्

बतलाते हैं कि

और उन्होंने

अंग्रेजी में जिस प्

उस

G

प्रथम

आज ही

मूल

डिमाई अठपेजी

उपरोक्त छः लेखकोंके

प्रत्ये